. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

...rsity, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हि·५66

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

rsity, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हाई स्कूल हिन्दी व्याकरण

और

रचना

चन्द्रमौलि सुकुल, एम० ए०, एल० टी०,
वाइस-प्रिंसिपल, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज,
हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस।

एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस
बनारस

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

...ity, Balmeeki Campus, Kathman...

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हाई स्कूल हिन्दी व्याकरण

और

रचना

चन्द्रमौलि सुकुल, एम॰ ए॰, एल॰ टी॰,
वाइस-प्रिंसिपल, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज,
हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस।

बनारस
एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस
संशोधित संस्करण] १९४८ [मूल्य १॥)

Shri Haribamsha Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय बास्कोटा
Ishwarinivas, Nepalganj, (Banke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके)
P. O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U. P.)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्रकाशक—ब्रजकिशोर भार्गव,
एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, बनारस।

मुद्रक—दुर्गादत्त त्रिपाठी,
सन्मार्ग प्रेस, टाउनहाल, बनारस।

२५६८

Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्रस्तावना

यह पुस्तक हाईस्कूल परीक्षा के लिये हिन्दी की तैयारी करनेवाले छात्रों के उद्देश्य से लिखी गयी है। इसमें ऐसे विषयों का समावेश है जो उन्हें पाठ्य-ग्रन्थों को समझने तथा अन्य विषयों में उचित मार्ग ग्रहण करने में सहायक होंगे। इसकी सहायता से वे व्याकरण, निबन्ध-रचना, पत्र-लेख, अनुवाद, अपठित आदि सभी परीक्षोपयोगी विषयों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इसके पाठक मिडिल कक्षाओं में व्याकरण का पूर्ण और विस्तृत अध्ययन कर चुके हैं। इससे शब्द-भेद प्रकरण में हमने उन विषयों का विस्तार-पूर्वक विवेचन नहीं किया; व्यर्थ ही पुस्तक का आकार न बढ़ने देने के विचार से शब्दों के रूपान्तर एकदम ही छोड़ दिये हैं। कारण, इनका ज्ञान छात्र पिछली कक्षाओं में पूर्णतया प्राप्त ही कर चुके हैं। इसमें उन विषयों को अधिक महत्त्व दिया है जिनका जानना अब उनके लिए आवश्यक है। इसी से शब्दों के अर्थ सम्बन्धी प्रसंगों को अधिक समझाने की चेष्टा की है। साथ ही वाक्य-विवेचन और शब्दों का पारस्परिक सम्बन्ध भी भलीभाँति स्पष्ट किया है। इसलिए पदव्याख्या, वाक्य-विश्लेषण, वाक्य-संशुद्धि, मुहाविरा, लोकोक्ति, शब्द-रूप, विराम-चिह्न आदि का विवेचन यथेष्ठ रीति से किया है।

प्रबन्ध और पत्र-लेखन के प्रकरण में तत्सम्बन्धी सभी आवश्यक बातें पर्याप्त उदाहरणों के द्वारा समझायी गयी हैं। छात्रों को आदर्श रचना शैली के ग्रहण करने में सहायता पहुँचाने के विचार से हमारी भाषा के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वानों के कुछ निबन्ध भी यथास्थान सङ्कलित किये गये हैं और अन्त में अभ्यास के लिये विविध प्रकार के विषय भी सूचित कर दिये हैं।

हर प्रसङ्ग में अभ्यासार्थ प्रचुर प्रश्न इसलिए दिये गये हैं कि उनके द्वारा पठित विषय के ज्ञान की उचित परीक्षा हो सकेगी।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अन्त में, परिशिष्ट में, हाईस्कूल और एडमिशन परीक्षाओं के अब तक के प्रश्नपत्रों से वे प्रश्न सङ्कलित कर दिये गये हैं जिनके विषय इस पुस्तक में समझाये गये हैं। आशा है, ये प्रश्न अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे।

इस प्रकार अपने दीर्घकालीन शिक्षण एवं परीक्षण कार्य के अनुभव के आधार पर हमने छात्रों के हितार्थ, उनके लिए आवश्यक और उपयोगी सामग्री एकत्र कर दी है। विश्वास है कि यह उनको तथा हमारे सहयोगी शिक्षक को इच्छित सहायता पहुँचायेगी।

दुर्गाकुण्ड, काशी
२५ नवम्बर १९८२ } चन्द्रमौलि सुकुल

———

Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
अध्याय १	
१—व्याकरण, वाक्य शब्द	१
२—संज्ञा के भेद	३
३—संज्ञा के लिंग व वचन	५
४—कारक	६
५—सर्वनाम	७
६—क्रिया	८
७—विशेषण	१२
८—अव्यय	१४
९—पदान्वय	१७
१०—पदों और वाक्यों का विग्रह	२३
१—साधारण, मिश्र और संयुक्त (संसृष्ट) वाक्य	२३
२—संयुक्त वाक्यों में समानाधिकरण वाक्यों का पृथक् करना	२६
३—मिश्र वाक्यों में मुख्य वाक्यांश और आश्रित वाक्यांशों का अलग करना	२७
४-५—आश्रित वाक्यांशों के भेद और प्रधान वाक्यांश के विशेष शब्दों से सम्बन्ध	३०
६—गद्य तथा पद्य रूप में वाक्यों का विग्रह	३१
अध्याय २	
१—हिन्दी की शब्द-राशि	३६
२—हिन्दी में शब्द-निर्माण	३७

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

विषय				पृष्ठ
१—उपसर्ग	...	...	...	३८
२—प्रत्यय	...	...	...	४१
३—संज्ञा से बनने वाले शब्द (तद्धित)	...	...	...	४३
४—समास	...	...	...	४७
५—सन्धि	...	...	...	५४
६—शब्द के भेद	...	...	...	५६
७—शब्दों के अर्थ	...	...	...	५६
८—पर्यायवाचक, विपरीतार्थक, अनेकार्थक शब्द	...		...	६३
९—उच्चारण और स्वराघात	...	...	...	६८
१०—अवधारण	...	...	...	७१
अध्याय ३				
१—वाक्य-विन्यास	...	...	...	७५
२—वाक्य के भेद	...	...	...	८५
३—वाक्यपरिवर्तन	...	...	...	९०
४—सरल और व्यस्त वर्णन	...	...	...	९४
५—वाच्य-परिवर्तन	...	...	...	९६
६—अनुक्त पद पूरण	...	...	...	९८
७—वाक्यों का शुद्ध करना	...	...	...	९९
अध्याय ४				
१—अनुच्छेद का निर्माण	...	...	...	१०२
२—विराम-चिह्न	...	...	...	१०५
३—विविध प्रकार के अर्थ	...	...	...	११९
४—मुहाविरे और उनका प्रयोग	...	...	...	१२२
५—लोकोक्तियाँ और उनका प्रयोग	...	...	...	१२५
अध्याय ५	...			१२७
अनुवाद				

ity, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

विषय	पृष्ठ
अध्याय ६	
१—निबन्ध लेख	१४६
२—वर्णनात्मक निबन्ध	१५३
३—ऐतिहासिक निबन्ध	१६१
४—विज्ञान सम्बन्धी निबन्ध	१६६
५—तार्किक निबन्ध	१७४
६—उद्धरण निबन्ध	१८२
७—आलोचनात्मक निबन्ध	१८६
८—आत्मकथा	१८६
९—कथोपकथन	१९४
१०—कहानी	१९८
अध्याय ७	
१—पत्र लेखन	२०५
२—पुरानी प्रथा के पत्र	२०६
३—नयी प्रथा के पत्र	२०८
अध्याय ८	
१—अपठित	२१८
२—परिशिष्ट	२४६
हाई स्कूल प्रश्न-पत्र	२४६
एडमिशन प्रश्न-पत्र	२५८

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

t University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अध्याय १

१ — व्याकरण, वाक्य, शब्द

आजकल जो हिन्दी प्रचलित है वह सैकड़ों वर्ष से बन रही थी, अनेकों परिवर्तन हुए, पुराने प्रयोग छूटते गये, नये प्रयोग बनते गये। पाँच छः सौ वर्ष की पुरानी हिन्दी तुम लोग भली भाँति समझ भी न पाओगे। बहुत सम्भव है कि आजकल की हिन्दी का रूप दो चार सौ वर्ष में कुछ और ही हो जाय। ऐसे परिवर्तन हर एक जीवित भाषा में सदा होते ही रहते हैं, और होते ही रहेंगे; तुम व्याकरण बनाकर भाषा का परिवर्तन नहीं रोक सकते। व्याकरण का काम केवल यह है किसी समय जैसी भाषा प्रचलित हो उसके नियम जहाँ तक बन सकें बना दे। परन्तु सभी बातें नियम-बद्ध नहीं हो सकतीं। एक नियम बनता है तो अनेकों उसके अपवाद होते हैं अर्थात् ऐसे प्रयोग होते हैं जिनमें वह नियम काम नहीं देता।

तुम नीचे दर्जों में हिन्दी का कुछ व्याकरण पढ़ चुके हो। उससे तुम्हें मालूम हो गया होगा कि व्याकरण में किस बात का वर्णन होता है और उससे क्या सीखा जा सकता है। तुमने वाक्य, शब्द, अक्षर आदि के बारे में पढ़ा है, और हर एक के भेद उपभेद भी देखे हैं। अब इस पुस्तक में तुम फिर वही विषय पढ़ोगे, किन्तु इस बार उसके विवरण पर कम, उसके प्रयोग पर अधिक ध्यान दिया जाएगा।

ईश्वर ने हमें कान इसलिए दिए हैं कि हम उनके द्वारा सुनें। जो कुछ सुनाई देता है उसे शब्द या ध्वनि या आवाज़ कहते हैं। गाय, भैंस, बकरी आदि की बोली; ढोल, सितार झाँझ आदि बाजों का शब्द; पत्ती खड़कने, पानी बरसने आदि के शब्द सुनाई अवश्य देते हैं; परन्तु सिवाय यह कहने के कि अमुक जानवर बोल रहा है, या अमुक बाजा बज रहा है, इन शब्दों का

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

विशेष अर्थ हम लोग नहीं लगाते; और न इन पर हमारा कोई विशेष वश है। इसलिए व्याकरण में ऐसे शब्दों का विचार हम लोग नहीं करते। ये शब्द व्याकरण के लिए कोई अर्थ नहीं रखते, और **निरर्थक** शब्द कहे जाते हैं।

हमारा व्याकरण मनुष्य की बोली पर ही विचार करता है; परन्तु मनुष्य की बोली में भी केवल वे ही शब्द लिये जाते हैं जिनका साफ़ साफ़ कुछ अर्थ हो। यदि विचार करके देखो तो हिन्दी की वर्णमाला के अक्षरों में लाखों, करोड़ों अथवा असंख्य शब्द बन सकते हैं; परन्तु उनमें कुछ ही शब्द ऐसे हैं जो हमारे लिए अर्थ रखते हैं और बोलचाल तथा लेख में आते हैं। ऐसे शब्दों को **सार्थक** (अर्थ वाले) शब्द कहते हैं। उदाहरण के लिए 'उदाहरण' शब्द ही ले लो, इस शब्द का अर्थ हम समझते हैं, इसका अर्थ है 'मिसाल'। यह शब्द सार्थक है। परन्तु इसी शब्द के पाँचों अक्षरों से बने हुए 'हदाउरण, दारहउण, णरउहदा' आदि अनेक शब्द हमारे लिये कुछ अर्थ नहीं रखते, और निरर्थक कहलाते हैं।

मनुष्य की बोली में कभी कभी निरर्थक शब्दों का प्रयोग आ जाता है जैसे, 'यहाँ **लोटा** सोटा कुछ नहीं'; 'नहाने के लिए तो कहते हो, कुछ पानी **वानी** भी लाओगे?'; तुम्हारे घोड़े के लिए यहाँ दाना **दनका** कुछ नहीं है', इत्यादि वाक्यों में सोटा, वानी, दनका शब्द निरर्थक हैं। ऐसे शब्दों का प्रयोग या तो वाक्य में कुछ सुन्दरता लाने के लिए होता है, या बोलने वाले को कुछ आड़ देने के लिए; परन्तु हैं ये शब्द निरर्थक ही।

किसी किसी भाव के प्रकट करने में निरर्थक शब्दों की नक़ल बड़ा काम देती है; जैसे 'वह **धम** से गिर पड़ा', 'उसने **चट** पानी पी लिया'। यद्यपि ये शब्द निरर्थक हैं, तथापि सार्थक मान लिये गये हैं, इसी लिए व्याकरण में क्रियाविशेषण मान लिये गये। 'भनभनाना, सनसनाना, तड़फड़ाना' आदि क्रियाएँभी निरर्थक शब्दों की नक़ल से बनी हैं और सार्थक मानी जाती हैं।

ऊपर की सब बातों का निचोड़ यह है कि व्याकरण केवल मनुष्य की बोली के सार्थक शब्दों का विचार करता है; और जिन निरर्थक शब्दों का विचार करता है; वे भी किसी प्रकार सार्थक माने जाते हैं।

...it University, Balmeeki Campus, Kathmar

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

किसी भाषा का व्याकरण हमको उस भाषा में शुद्ध बोलना, लिखना, और समझना सिखाता है।

जब कई शब्द मिलकर कहनेवाले का पूरा अर्थ प्रकट करें तो उस शब्द-समूह का नाम वाक्य (Sentence) है।

हर एक वाक्य के दो मोटे खण्ड होते हैं—(१) उद्देश्य, (२) विधेय। वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं, और जो कुछ कहा जाता है उसे विधेय कहते हैं।

वाक्य शब्दों से मिलकर बना होता है। किसी भी वाक्य में तीन प्रकार के शब्द होते हैं—(१) संज्ञा, (२) क्रिया (Verb), (३) अव्यय (Indeclinable)।

यदि शब्द किसी मनुष्य या स्थान या गुण या वस्तु या और किसी का नाम हो तो उसे संज्ञा कहते हैं।

यदि शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाय उससे कोई घटना प्रकट हो तो उसे क्रिया कहते हैं।

यदि शब्द का रूप सदा एक ही तरह का रहता हो, अर्थात लिंग, वचन, पुरुष, कारक में बदलता न हो तो उसे अव्यय कहते हैं।

संज्ञा-शब्द के तीन भेद होते हैं—(१) नाम (Noun), (२) सर्वनाम (Pronoun), (३) विशेषण (Adjective)।

जो संज्ञा किसी दूसरी संज्ञा के बदले में कही जाती है, उसे सर्वनाम कहते हैं।

जो शब्द किसी नाम या सर्वनाम की विशेषता दिखाते हैं, उसकी तारीफ़ करते हैं, उसका गुण प्रकट करते हैं वे गुणवाचक संज्ञा, शब्द या विशेषण कहलाते हैं।

२—संज्ञा के भेद

नाम के तीन भेद हो जाने से संज्ञा के कुल पाँच भेद हो गये—(१) जातिवाचक संज्ञा (Common noun), (२) व्यक्तिवाचक संज्ञा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(Proper noun), (३) भाववाचक संज्ञा (Abstract noun), (४) सर्वनाम संज्ञा, (५) विशेषण संज्ञा ।

जातिवाचक संज्ञा वह है जिससे किसी जाति का बोध हो अर्थात् जो एक ही प्रकार की बहुत-सी वस्तुओं में से हर एक का नाम हो सके जैसे—मनुष्य, सिंह।

व्यक्तिवाचक संज्ञा वह है जिससे किसी जाति के एक ही पदार्थ का बोध हो, अर्थात् जिसके कहने से उसी प्रकार की अन्य किसी वस्तु का मतलब न हो सके जैसे—राम, गंगा ।

भाववाचक संज्ञा वह है जो किसी पदार्थ में पाये जानेवाले गुण, धर्म, दशा, व्यापार, भाव आदि का नाम हो। जैसे—बचपन, चाँदनी, मिठास ।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे वाक्यों में उद्देश्य और विधेय अलग करो :—

(क) एक समय सब सहित समाजा । राजसभा रघुराज विराजा ॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू । राम सुयश सुनि अतिहि उछाहू ॥
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे । लोकप रहहिं प्रीति रुख राखे ॥

(ख) भरत के समागम के भय से रामचन्द्र चित्रकूट छोड़ घोर से घोर बनों में प्रवेश करते और विराध आदि राक्षसों को मारते दंडक नामक वन में पहुँचे ।

(२) निम्नलिखित में नाम, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय अलग अलग करो :—

(क) बड़े बड़ेन के भार को, सहहिं न मन्द गँवार ।
साल तरुन में गज बंधे नहिं आँकन की डार ॥

(ख) बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ, सो छबि बरणि न जाइ ॥

(३) नीचे लिखे नामों में से जातिवाचक, भाववाचक और व्यक्तिवाचक अलग अलग करो :—

हिमालय, मित्रता, काशी, ध्रुव, समुद्र, कारण, राका, लड़कपन, प्रणाली लालसागर, रक्तिमा, मीन, उर्वशी, सुगन्ध, तह, देश, प्राण, झकोरा, आनन, पर्वत ।

University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(४) नीचे लिखे शब्दों से भाववाचक संज्ञा के रूप बनाओः—

चतुर, मारना, चलना, निष्ठुर, बड़ा, स्वामी ।

३—संज्ञा के लिंग व वचन

हिंदी में दो लिंग होते हैं—पुंलिंग (masculine gender), और स्त्रीलिंग(feminine gender) ।

पुरुष जाति के बोधक शब्द को पुंलिंग और स्त्री जाति के बोधक शब्द को स्त्रीलिंग कहते हैं । जिन जीवधारियों का जोड़ा होता है, और नर व मादा बतलानेवाले शब्दों का प्रयोग भाषा में होता है, उनका लिंगभेद यथार्थ है और सुगम है; परन्तु अन्य वस्तुओं का लिंगभेद कल्पित है और केवल प्रयोग से जाना जा सकता है । कभी कभी क्रिया या विशेषण के साथ शब्द का प्रयोग करने से लिंग का निश्चय हो जाता है । जोड़े वाले और बिना जोड़े वाले शब्दों के लिंग-निर्णय के लिए जो नियम पहले से पढ़ चुके हो उन पर ध्यान दो ।

हिंदी में दो वचन होते हैं—(१) एक वचन (singular number) (२) बहुवचन (plural number) ।

जिस शब्द से एक वस्तु का मतलब होता है उसे एक वचन कहते हैं और जिस शब्द से एक से अधिक वस्तुओं का मतलब होता है उसे बहुवचन कहते हैं । किसी किसी शब्द के दोनों वचनों का एक ही रूप होता है तब प्रकरण से वचन का निर्णय होता है ।

अभ्यास

(१) निम्नलिखित शब्द किस लिंग के हैं ? उनसे दूसरे लिंग बनाओ-देव, मुर्गा, सन्तान, बेटी, तेलिन, देवर, मोर, साली, माता, वर, श्रीमान्, जय, तपस्विनी, भैंस, मामा, पत्नी, पक्षी, कोल, परिवार ।

(२) अपनी कापी पर तीन स्तम्भ बनाओ जिनके शीर्षक लिखो-- (१) जाति, (२) पुलिंग, (३ स्त्री लिंग । फिर विविध जातियों के शब्द सोच सोच कर लिंग के अनुसार लिखते जाओ । जैसे जाति के स्तम्भ में लिखो 'बरतन', पुंलिंग

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

के स्तम्भ में लिखो लोटा, गिलास, थारा, चिमटा, कटोरा, तवा, चमचा, आदि, और स्त्रीलिंग के स्तम्भ में लिखो थाली, परात, कटोरी, कढ़ाही, बटलोही, आदि।

कुछ जातियों का संकेत नीचे दिया जाता है—भोजन के पदार्थ, कपड़े, जेवर, घर के हिस्से, स्कूल की चीजें, अनाज, फल, शरीर के अंग, रोग, महीने, दिन, तिथियाँ, नदी, पहाड़, धातु, पेड़, आदि।

(३) (क) नीचे लिखे शब्दों के स्त्रीलिङ्ग बनाओ :—

दुबे, लाल, बालक, बाबू, राजा, पाठक, सिंह।

(ख) निम्नलिखित के पुलिंग बनाओ :—

कन्या, मादा, सास, खाला, बहिन।

४—कारक

नाम या सर्वनाम का जो रूप अपना सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द से, विशेषतः क्रिया से, जाहिर करता है, उसे कारक कहते हैं। हिन्दी में कारक आठ होते है—(१) कर्त्ता, (२) कर्म, (३) करण, (४) सम्प्रदान, (५) अपादान, (६) सम्बन्ध, (७) अधिकरण और (८) सम्बोधन।

कर्त्ता—वाक्य में क्रिया के करने वाले को कर्त्ता (Nominative case) कहते हैं। चिन्ह 'ने'।

कर्म—जिस वस्तु पर क्रिया का फल गिरता है उसे कर्म (Accusative case) कहते हैं। चिन्ह 'को'।

करण—जिस साधन से क्रिया होती है उसे करण (Instrumental case) कहते हैं चिन्ह 'से', 'करके'।

सम्प्रदान—जिसके लिए कोई क्रिया की जाती है उसे सम्प्रदान (Dative case) कहते हैं चिन्ह 'को', 'के लिए'।

अपादान—जिस वस्तु से जुदा प्रकट होती है उसे अपादान (Ablative case) कहते हैं। चिन्ह 'से'।

सम्बन्ध—जिस वस्तु का लगाव किसी दूसरी वस्तु से प्रकट होता है उसे सम्बन्ध (Genitive case) कहते हैं। चिन्ह 'का' आदि।

University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

अधिकरण—जिस वस्तु से क्रिया का आधार, अर्थात् समय, या स्थान आदि कुछ प्रकट होता है उसे अधिकरण (Locative case) कहते हैं। चिन्ह 'में', 'पर'।

सम्बोधन—जिस किसी को पुकारते हैं उसे सम्बोधन (Vocative case) कहते हैं। चिन्ह 'हे', 'अरे', 'ओ', 'अय', (आदि में)।

नोट—**ऊपर लिखी परिभाषाएँ छात्रों की सुगमता के लिए हैं;यदि बहुत ठीक ठीक परिभाषाएँ लिखने की चेष्टा की जाय तो वे प्राय: समझ में न आयेंगी।**

शब्दों के रूपसाधन में इन बातों पर ध्यान रखना चाहिये—

(१) जब कर्त्ता और कर्म के चिन्ह 'ने' और 'को, वाक्य में प्रकट होते हैं तब उनके बहुवचन रूप एक प्रकार के होते हैं, और जब वे चिन्ह प्रकट नहीं होते हैं तब उनके रूप दूसरे प्रकार के होते है। जैसे, स्त्रियों ने कुत्तों को मारा। स्त्रियाँ कपड़े ला रही हैं।

(२) आकारांत पुंलिंग और आकारांत स्त्रीलिंग शब्द रूपसाधन की दृष्टि से दो प्रकार के होते हैं, जैसे—घोड़ा, राजा, गंगा, चिड़िया।

अभ्यास

(१) इन वाक्यों को शुद्ध करो—ठाकुराइन गङ्गाजल लाने गई है। वह एक विदुषी स्त्री है। सेठाइन के पास धन तो काफ़ी है किन्तु वह बाघिनी की भाँति उसकी रक्षा करती है। चिड़ियाएँ दाना चुग रही हैं। खंभाओं में रंग लगाओ। बाज़ार में भाजिएँ बिकती हैं। पिता जी पत्र लिख दिये हैं।

(२) नीचे के वाक्यों में जितने नाम शब्द हैं सबकी पदव्याख्या करो—प्रयाग या इलाहाबाद नगर संयुक्तप्रदेश के मध्य में गंगा नदी के दक्षिण तट और जमुना नदी के वाम तट पर बसा है।

(३) हिन्दी में कितने और कौन कौन कारक होते हैं? अपने बनाए वाक्यों में चिन्ह 'को' का प्रयोग कर्म, सम्प्रदान और अधिकरण कारकों में करो।

५ सर्वनाम(Pronoun)

जो विकारी शब्द प्रसंग के अनुसार किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जायें उन्हें सर्वनाम कहते हैं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सर्वनाम के पाँच भेद हैं—

(१) पुरुषवाचक—(Personal) मैं, हम (उत्तम पुरुष); तू, तुम (मध्यम पुरुष); वह वे, यह ये (अन्य पुरुष)।

(२) निश्चयवाचक—(Definite Demonstrative) यह ये (निकट); वह वे (दूर)।

(३) अनिश्चयवाचक—(Indefinite Demonstrative) कोई (मनुष्यों के लिए); कुछ (जानवरों व निर्जीव वस्तुओं के लिए)।

(४) सम्बन्धवाचक)—(Relative) जो--सो; जौन--तौन; जो-वह ।

(५) प्रश्नवाचक—(Interrogative) कौन (मनुष्यों तथा बड़े प्राणियों के लिए); क्या (नर्जीव वस्तुओं तथा छोटे प्राणियों के लिए)।

(६) निजवाचक—'अपना' शब्द को भी एक भेद मान सकते हैं। सर्वनाम शब्दों के दोनों लिंग समान होते हैं, प्रकरण से उनका लिंग-निर्णय हो सकता है।

अभ्यास

(१) इन वाक्यों के प्रत्येक सर्वनाम शब्द की पूरी पदव्याख्या करो — आइए, आज मुझपर आपकी बड़ी दया हुई। कहिए, क्या क्या लाये हैं। अगर आपके और इनके पास कुछ न हो तो मैं ही प्रबन्ध कर दूँ सुझप किसी ने कहा कि राम को कुछ नहीं आता। मैंने कहा "नहीं भई ! आप उसे ठीक नहीं जानते, वह बड़ा होशियार है" तुम्हारे लिए मैं कुछ लाया हूँ उसे यहीं रक्खे देता हूँ।

(२) पुरुषवाचक सर्वनामों के तीनों पुरुषों में एकवचन का प्रयोग किन स्थलों में ठीक होता है ? उदाहरण दो।

(३) यह लड़का बहुत बुद्धिमान् है, कोई कोई लोग तो इसे रत्न समझते हैं; परन्तु जो लोग विचारशील हैं वे लोग समझते हैं कि किस मनुष्य में क्या गुण है।—इस वाक्य में मोटे छपे शब्दों की व्याख्या करो, और वाक्य में ऐसा परिवर्तन करो कि ये ही सर्वनाम के रूप में आ जायें।

(४) छः शब्द ऐसे बताओ जो सर्वनाम और विशेषण दोनों हो सकते हों। वाक्यों में दोनों तरह के प्रयोग दिखाओ।

...t University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

६--क्रिया (Verb)

क्रिया से किसी घटना का बोध होता है। क्रिया के मुख्य दो भेद अकर्मक (Intransitive) और सकर्मक (Transitive) होते हैं। अकर्मक क्रिया वह है जिसमें कर्म की आवश्यकता न हो, कर्त्ता और क्रिया ही से अर्थ पूरा निकल सके। सकर्मक क्रिया वह है जिसमें कर्म की आवश्यकता होती है। सकर्मक क्रिया से भी यदि केवल व्यापार का बोध हो और कर्म के जानने की जरूरत न हो तो उस दशा में वह अकर्मक क्रिया का-सा भाव रखती हैं। कुछ क्रियाएँ अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की होती हैं, जैसे—भरना, घिसना। किसी किसी क्रिया के साथ 'जाना' और 'देना' जोड़ने से अकमता और सकर्मता आ जाती है, जैसे—उसकी पुस्तक खो गई, उसने पुस्तक खो दी। कोई कोई क्रिया अकर्मक होते हुए भी अपने व्यापार का नाम कर्म की रीति पर ग्रहण कर लेती है, जैसे—मैं खेल खेलता हूँ। कोई कोई अकर्मक और सकर्मक क्रियाएँ 'पूरक' की आवश्यकता रखती हैं। जब किसी क्रिया में दो कर्म होते हैं तो उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं: जो कर्म वाच्य-परिवर्तन में भी कर्म ही बना रहता है वह गौण कर्म कहलाता है, और जो अपना रूप कर्त्ता कारक में बदल लेता है वह प्रधान कर्म कहलाता है।

क्रिया में तीन पुरुष (Person) होते हैं, अर्थात् उत्तम (First), मध्यम (Second), अन्य (Third) । क्रिया में दो वचन होते हैं, अर्थात् एकवचन और बहुवचन। क्रिया में दो लिंग होते हैं, अर्थात् पुंलिंग और स्त्रीलिंग। क्रिया में तीन काल होते हैं, अर्थात् भूतकाल (Past tense), वर्तमान काल (Present tense) और भविष्यत् काल (Future tense)।

भूतकाल छः प्रकार का होता है—(१) सामन्य भूत (Indefinite Past), (२) आसन्न भूत (Present Perfect), (३) पूर्ण भूत (Past Perfect), (४) संदिग्ध भूत (Doubtful Past), (५) अपूर्ण भूत (Continuous Past) और (६) हेतुहेतुमत् भूत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(Conditional Past)। हर एक लक्षणों और उदाहरणों का मनन करो।

वर्तमानकाल के दो भेद होते हैं—(१) सामान्य वर्तमान और (२) संदिग्ध वर्तमान। लक्षणों और उदाहरणों का चिन्तन करो।

तीनों कालों के लिए क्रियाओं के जो रूप बनते हैं, उनके अतिरिक्त अन्य कई रूप बनते हैं—(१) विधि (Imperative), (२) सम्भावना (Optative,), (३) पूर्वकालिक जैसे—तू मत जा। यहाँ पधारिये। (विधि)। वह यहाँ आये तो मैं जाऊँ। (सम्भावना)। चिट्ठी लिख कर घर जाओ। (पूर्वकालिक)।

संयुक्त क्रियाओं में सहायक क्रियाएँ मुख्य क्रिया (जो सबसे पहले रहती है) के अर्थ में थोड़ी सी विशेषता पैदा कर देती हैं। सकना, चुकना, डालना, जाना, लेना, देना, पड़ना, उठना, बैठना, करना, चाहना, रहना, लगना, होना, पाना आदि सहायक क्रियाएँ हैं; क्रिया के किन रूपों में लगती हैं और क्या अर्थ प्रकट करती हैं; इस पर ध्यानपूर्वक विचार करो।

प्रेरणार्थक क्रिया (Causal Verb) वह होती है जिसमें कोई कर्त्ता किसी दूसरे से काम कराता है। इस दशा में अकर्मक क्रिया सकर्मक हो जाती है, और सकर्मक क्रिया में या तो एक कर्म और बढ़ जाता है या कोई शब्द करण कारक में बढ़ जाता है। करण कारक वाले शब्द को प्रयोज्य कर्त्ता कह सकते हैं। प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाने के नियम और उदाहरण दुहरा लो।

संज्ञा-शब्दों और अनुकरणवाची निरर्थक शब्दों में कुछ हेर-फेर करके 'ना' जोड़कर जब क्रिया का साधारण रूप बना लिया जाता है तो उसे 'नाम-धातु' कहते हैं। जैसे—डोर से डुरियाना।

वाच्य से यह प्रकट होता है कि किसी क्रिया का असली कर्त्ता किस कारक में रक्खा गया है। यदि क्रिया का कर्त्ता कर्त्ताकारक में रक्खा गया है तो उस वाक्य की क्रिया कर्तृवाच्य क्रिया है; यदि क्रिया का असली कर्त्ता करण कारक में रक्खा गया है और उनका कर्म कर्त्ताकारक में रक्खा गया है तो उस वाक्य की क्रिया कर्मवाच्य क्रिया है। यदि अकर्मक क्रिया का असली कर्त्ता

University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

करण कारक में रक्खा गया है, और कर्त्ताकारक में कोई शब्द नहीं है, तो ऐसे वाक्य की क्रिया भाववाच्य क्रिया है कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाना तथा कर्मवाच्य या भाववाच्य से कर्तृवाच्य बनाना वाच्यपरिवर्तन कहलाता है जिसका वर्णन अन्यत्र दिया है।

क्रिया की पदव्याख्या में ये बातें बतानी चाहिएँ—क्रिया का भेद (अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक, प्रेरणार्थक,), काल और उसका भेद, पुरुष, लिंग, वचन, वाच्य, उसका कर्त्ता तथा कर्म (यदि हो या हों)।

अभ्यास

(१) नीचे लिखी क्रियाओं के काल (भेद सहित), पुरुष, लिंग, वचन और वाच्य बताओ—करता होगा, लिख डाल सकोगे, आती होगी, लिखती रहूँगी, बतलाया जा सकेगा, उठने पाई थीं, बना रहने दिया जायगा, सो रहा होगा, चरण दबा रही थी, सायंकाल का समय हो चला था, उड़ने वाला है, गाती थी !

(२) दौड़ पाना और दौड़ने पाना, लिखा रहना और लिखते रहना, कर देना और करने देना —इसके अर्थों में क्या अन्तर है ? हर एक से एक एक वाक्य बनाओ।

(३) खिलाना, देना, पीना, भेजना, खेलना, निगलना, चाटना, क्रियाओं से बनी प्रेरणार्थक क्रियाओं का प्रयोग अपूर्ण भूत, मध्यम पुरुष, बहुवचन, स्त्रीलिंग, कर्तृवाच्य में करो !

(४) इन वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन करो—

इहाँ रहिय रघुवीर सुजाना। बन्दौ गुरुपद कंज। हरषि चले हनुमान। मुझे किताब नहीं मिलती। खेत नपता है। मैंने प्रेम का भोजन करते हुए देखा। उसने हमारी साइकिल तोड़ डाली। मुझसे यहाँ बैठा नहीं जाता। स्याही को दावात में डाल दो। राम ने आज भोजन नहीं किया।

(५) इन वाक्यों को पूरी पदव्याख्या करो—

(क) जब वृक्ष बहुत फलता है तो उसकी शाखाएँ झुककर भूमि से बातें करने लगती हैं। (ख) अभी तक हम वायु का वर्णन करते रहे हैं, अब जल का वर्णन करना चाहते हैं। (ग) पहले चकमक का प्रयोग होता था; अब दियासलाई से काम चलता है, आगे चलकर क्या होगा सो भगवान् जानें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(६) किस प्रकार की क्रियाओं के किन कालों में कर्ता के साथ चिह्न 'ने' का प्रयोग होता है ? उदाहरण दो ।

(७) दूध पकते पकते रबड़ी हो गया ; दूध पकते पकते रबड़ी हो गयी —इन दोनों वाक्यों में कौन सा किस अर्थ में शुद्ध है ? क्या ऐसे ही अर्थ आगे के वाक्यों में भी लगा सकते हो—धोती पड़े पड़े चमड़ा हो गयी; धोती पड़े पड़े चमड़ा हो गया—इनमें से कौन सा वाक्य शुद्ध है और क्यों ?

(८) नीचे लिखी क्रियाओं से सकर्मक और प्रेरणार्थक बनाओ—
बोलना, पालना, डालना, करना, जागना, तोड़ना ।

(९) सकर्मक क्रिया किस समय अकर्मक हो जाती है ? पाँच उदाहरण देकर समझाओ ।

९—विशेषण (Adjective)

विशेषण किसी नाम या सर्वनाम के अर्थ में कोई विशेषता कर देता है । जिस नाम या सर्वनाम के अर्थ में ऐसी विशेषता हो जाती है उसे विशेष्य कहते हैं । विशेषण विशेष्य से पहले भी आता है (पूर्ववर्ती) और पीछे भी आता है (परवर्ती) ।

विशेषण के ये भेद होते हैं—(१) गुणवाचक, (२) संख्यावाचक, (३) परिमाणवाचक, (४) संकेतवाचक, इनके लक्षणों का स्मरण करो ।

(१) गुणवाचक विशेषण (Adjective of quality) रंग, आकार, अवस्था, गुण, स्थान, समय आदि बतलाते हैं । वे या तो बने बनाये शब्द होते हैं या व्यक्तिवाचक, भाववाचक संज्ञाओं से, सर्वनामों से और क्रियायों से बनते हैं । उदाहरण सोचो ।

(संख्यावाचक विशेषण (Adjective of number) (क) निश्चित संख्या, (ख) अनिश्चित संख्या का बोध कराते हैं । निश्चित संख्या से गणना, क्रम, आवृत्ति, समुच्चय, और विभाग प्रकट होते हैं । उदाहरण स्वयं दो । निश्चित संख्याओं में भी 'कोई' 'करीब', 'लगभग' आदि शब्द जोड़ने से अनिश्चितत्व आ जाता है ।

...t University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

(३) परिमाण (Adjective of quantity) भी निश्चित और अनिश्चित दो प्रकार का होता है।

कम, बहुत, थोड़ा आदि शब्द अनिश्चित संख्या भी प्रकट करते हैं और अनिश्चित परिमाण भी। उनकी पहचान का उपाय सोच लो।

(४) संकेतवाचक सर्वनाम शब्द ही संकेतवाचक विशेषण (Demonstrative adjective) शब्द होते हैं। दोनों की पहचान का निश्चय कर लो।

विशेषणों के लिंग, वचन और कारक वे ही होते हैं जो उनके विशेष्यों के होते हैं। आकारान्त पुलिंग विशेषणों का रूप स्त्रीलिंग के दोनों वचनों से ईकारान्त हो जाता है और पुलिंग बहुवचन में एकारान्त हो जाता है; परन्तु संस्कृत फ़ारसी आदि के वे आकारान्त शब्द जो उन भाषाओं में वैसे ही रहते हैं हिन्दी में भी अपना रूप नहीं बदलते, जैसे—महात्मा, रोज़ाना।

विशेषण में विभक्ति तभी लगती है जब उसका प्रयोग नाम की तरह होता है, जैसे—"मूर्खों से बात न करो"। विशेषण की दशा में रहने पर विभक्ति नहीं लगती।

पुंलिंग एकवचन विशेष्यों के अकारान्त विशेषण सब कारकों में एकारान्त हो जाते हैं, परन्तु जब कर्त्ता का चिन्ह 'ने' और कर्म का चिन्ह 'को' नहीं प्रकट होता तब वे आकारान्त ही बने रहते हैं। जैसे—अच्छे लड़के से, लम्बे बाँस पर, ऊँचे हाथी ने, मीठे रस को आदि; परन्तु "मीठा फल रक्खा है", "वह पतला दूध पीता है"।

अभ्यास

(१) (क) विशेषण और विशेष्य की परिभाषा क्या है? दो दो उदाहरण देकर लिखो।

(ख) विशेषणों की तुलना किस प्रकार होती है? उदाहरण दो।

(२) (क) विशेषणों के साथ 'सा' और 'ही' क्या सूचित करते हैं? उदाहरण दो।

(ख) निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाओ—

शब्द, देह, पक्ष, स्वर्ग, सप्ताह, इह, पुराण, ईश्वर, अग्नि, वायु।

(३) (क) विशेषण की द्विरुक्ति से क्या क्या भाव प्रकट होते हैं? उदाहरण दो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(ख) विशेषणों का रूपान्तर किन नियमों से होता है ? कुछ उदाहरण देकर समझाओ ।

(४) समानार्थक या विपरीतार्थक दो विशेषण एक ही साथ लाने से क्या प्रयोजन निकलता है ? उदाहरण दो ।

(५) वाक्यों में सर्वनामों के पूर्ववर्ती और परवर्ती विशेषणों का प्रयोग करो ।

(६) यह, वह, कौन, जो, सो, शब्दों से गुणवाचक परिमाणवाचक और संख्यावाचक विशेषण बनाओ ।

(७) नीचे के वाक्यों में प्रत्येक विशेषण शब्द की पदव्याख्या करो—

यह सच है कि तुम बुद्धिमान हो, परन्तु परिश्रमी होना भी आवश्यक है । जितना अधिक परीश्रम करोगे उतना ही अधिक अच्छा फल पाओगे । मैं यह नहीं कहता कि तुम सभी काम एक ही दिन में कर डालो; इतना काम करो जितना हो सके थोड़ा काम भी प्रतिदिन होगा तो छठे महीने उसका शुभ फल तुम्हें मिलेगा ।

(८) भिन्न भिन्न शब्दभेदों से विशेषण बनाने के क्या क्या नियम हैं । प्रत्येक के दो दो उदाहरण देकर लिखो ।

८—अव्यय (Indeclinable)

अव्यय वह शब्द है जिसका रूप सदा एक ही तरह रहता हो, अर्थात् लिंग, वचन, कारक में बदलता न हो । बहुत से शब्द ऐसे हैं जो नाम भी हैं और अव्यय भी हैं; परन्तु जब वे अव्यय की रीति पर प्रयुक्त होते हैं तब उनके रूप सदा उसी तरह के रहते हैं ।

अव्यय के चार भेद होते हैं—(१) क्रियाविशेषण, (२) सम्बन्धवाचक, (३) समुच्चयबोधक, (४) इंगितसूचक या विस्मयादि-बोधक ।

(१) क्रियाविशेषण (Adverb) वे शब्द हैं जो क्रिया के अर्थ को बढ़ाकर उसमें कोई विशेषता बताते हैं । विशेषताएँ कई तरह से हो सकती हैं, अतः क्रियाविशेषणों के कई भेद होते हैं—

(क) कालवाचक, (ख) स्थानवाचक, (ग) रीति-वाचक, (घ) परिमाणवाचक ।

...t University, Balmeeki Campus, Kathmand...

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रीतिवाचक क्रियाविशेषणों के और भी भेद हो सकते हैं, जैसे—निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, निषेधवाचक, हेतुवाचक।

सब प्रकार के उदाहरण सोचो।

क्रियाविशेषणों के रूप—(क) अकेले अकेले शब्द, (ख) द्विरुक्ति से, (ग) कई शब्दों के मेल से, (घ) करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण कारकों के रूप (यद्यपि इन्हें अव्यय नहीं कहते तथापि वाक्य में ये क्रियाविशेषण का काम करते हैं), (ङ) अन्य शब्दभेद जो प्रसंगवश क्रियाविशेषण का काम करते हैं।

अन्तर्विशेषण वह है जो विशेषण या क्रियाविशेषण का प्रभाव बढ़ाये, या उसमें विशेषता प्रकट करे।

(२) सम्बन्धवाचक अव्यय (Preposition) वे हैं जो किसी नाम या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ मिलाते हैं। इस प्रकार नामों या सर्वनामों का सम्बन्ध प्रायः क्रिया के साथ जुड़ता है।

(३) समुच्चयबोधक अव्यय (Conjunction) वे हैं जो शब्दों को शब्दों से, वाक्यांशों को वाक्यांशों से, और वाक्यों को वाक्यों से मिलाते हैं। ऐसे अव्ययों के दो प्रधान भेद हैं—संयोजक और विभाजक।

(४ इङ्गितसूचक या विस्मयादि-बोधक अव्यय (Interjection) वे हैं जो मन के विविध भाव अर्थात् विस्मय, हर्ष शोक, पीड़ा, अभिमान, स्वीकार, घृणा, अनुमोदन आदि प्रकट करते हैं, और जिनका सम्बन्ध वाक्य से नहीं होता। संज्ञा और क्रिया शब्द तथा क्रियाविशेषण आदि भी जब इसी प्रकार मन के भाव प्रकट करते हैं तब इङ्गितसूचक हो जाते है।

अभ्यास

(१) साथ, कारण, हाथ, तरफ़, ओर शब्दों का प्रयोग दो दो वाक्यों में इस प्रकार करो कि एक में एक शब्द संज्ञा हो और दूसरे में अव्यय शब्द हों।

(२) ऐसे वाक्य बनाओ जिनमें क्रियाविशेषणों से स्थान, अनिश्चय, हेतु परिणाम प्रकट होते हों।

(३) वह सोलहों आने मूर्ख है। देखो यह आदमी कैसा अच्छा नाचता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मजबूरन मुझे रुपया देना पड़ा। उसने घोड़े को तावड़तोड़ चार कोड़े लगाये। मातहिं पितहिं उऋण भये नीके—इन वाक्यों के क्रियाविशेषण बताओ और दिखाओ कि वे क्या प्रकट करते है।

(४) पूजा की जगह धो डालो, दूध की जगह पानी न देना, कपड़ों की अपेक्षा भोजन अधिक आवश्यक है मैं तो तुम्हारी उपेक्षा ही करता हूँ, मारे जाड़े के ठिठरते हो—इधर उधर क्यों मारे मारे फिरते हो। इन वाक्यों में जगह, उपेक्षा और मारे शब्दों की पदव्याख्या करो।

(५) उसने कहा कि न मैं जाऊँगा, न जाने दूँगा, क्योंकि हम दोनों का रहना और काम करना ज़रूरी है, लेकिन काम हो जाने पर तुम रह सकते हो या जा सकते हो—इस वाक्य के समुच्चयबोधक अव्यय और उनके काम दिखाओ।

(६) वाक्यों से पहले ऐसे इङ्गितसूचक अव्यय लगाओ जिनसे क्रोध, सन्तोष, क्षमा के भाव प्रकट हों।

(७) निम्नलिखित छन्दों के प्रत्येक अव्यय शब्द की पूरी पदव्याख्या करो।

(क) अहा ग्राम्य जीवन भी क्या है। क्यों न इसे सबका मन चाहै।
थोड़े में निर्वाह यहां है। ऐसी सुविधा और कहाँ है।

(ख) आगे राम लषण पुनि पाछे। तापस वेष विराजत काछे।
उभय मध्य सिय सोहति कैसी। ब्रह्म जीव बीच माया जैसी।

(८) बहुत से क्रियाविशेषण और सम्बन्धवाचक अव्यय शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग अन्य वाक्यों में संज्ञा शब्दों की तरह मिलता है; तब उन्हें तुम अव्यय कैसे कह सकते हो? उदाहरण देकर समझाओ।

(९) इन वाक्यों में अव्ययों की पद-व्याख्या करो :—

(१) तुमको इससे पहले आना था, क्योंकि काम का समय निकल गया। अब जाओ, बस! (२) या तो तुम आते ही नहीं, या आते हो तो दरवाज़े के पास बैठ जाते हो, ताकि कोई देखे न। देखो! ऐसी बातों से मैं कभी प्रसन्न नहीं हो सकता। (३) ख़ैर! आगे के लिए याद रक्खो कि मैंने सब प्रबन्ध तुम्हारे ऊपर छोड़ दिया है। अब अपने कर्त्तव्य में कभी न चूक करना; क्योंकि यदि ईश्वर को सन्तुष्ट रखना चाहते हो और स्वयम् भी सुखी रहना चाहते हो तो बराबर कर्त्तव्य का पालन करो।

(१०) निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषण बताओ, हर एक से क्या प्रकट होता है?

...rit University, Balmeeki Campus, Kathmand...

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मैं अभी लिखता हूँ। तुम फिर कभी आना, चाहे कल आओ, चाहे परसों। रुपया क्यों माँगते हो? अच्छा, रुपया दूगा ज़रूर, लेकिन इतनी जल्दी न करो। क्या यह रुपया जल्दी वापस दोगे? न देना हो तो वैसा कहो, ठीक ठीक समझ बूझ लूँ। मालूम नहीं कि तुम्हें क्यों सदा ही ज़रूरत लगी रहती है कभी इससे माँगा, कभी उससे माँगा।

(११) खाली स्थान में उचित क्रियाविशेषण लिखो—

वह······सोया कि······आँख नहीं खुली। क्या तुम यह किताब··· लेना चाहते हो? बिना दाम दिये······मिलेगी। वह कभी···जाता ······पीछे जाता था। मोर उसके···बोल भी···सकता था।

(१२) इन वाक्यों के अन्तर्विशेषण किन विशेषणों या क्रियाविशेषणों की विशेषता प्रकट करते हैं?

वह बहुत अच्छा नट है। वह बड़ा अच्छा गाता है। उँगली के ठीक सामने चले जाओ। इसे बिल्कुल ऊपर जाने दो। क्या वह काम बिल्कुल नहीं करता? पानी कुछ नमकीन सा मालूम होता है।

———

९—पदान्वय (Parsing)

वाक्य के अन्तर्गत शब्दों के भेद और यथासम्भव उनके पुरुष, वचन, लिंग, काल आदि कुल विवरण बतलाने और वाक्य के अन्य शब्दों से उनके सम्बन्ध दिखलाने का नाम पदान्वय या पदव्याख्या या पदपरिचय या शब्दनिरुक्ति है। मार्ग-प्रदर्शन के लिए हम हर प्रकार के कई शब्दों का पदान्वय नीचे दिखलाते हैं।

(१) संज्ञा का पदान्वय करने में उसका भेद, लिंग, वचन, और कारक तथा क्रिया से उसका सम्बन्ध बताना चाहिये।

(क) वाक्य—मोहन, दर्जे में कितने लड़के आये थे?

मोहन—व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिंग, सम्बोधनकारक।

दर्जे में—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिंग, अधिकरणकारक, 'आए थे' क्रिया का अधिकरण।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लड़के—जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुंलिंग, कर्त्ताकारक 'आए थे' क्रिया का।

(ख) भारतवर्ष की भलाई ही के लिए भगवान् ने सब पहाड़ों से ऊँचे हिमालय को उत्तर दिशा में बनाया है।

भारतवर्ष की—व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिंग, सम्बन्धकारक, 'भलाई' शब्द से सम्बन्ध है।

भलाई के लिए—भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, सम्प्रदानकारक, 'बनाया है' क्रिया के लिए।

भगवान् ने—व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिंग, 'बनाया है' क्रिया का कर्त्ता।

पहाड़ों से—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिंग, अपादानकारक, 'हिमालय' की विशेषता (जुदाई) दिखाने के लिए।

हिमालय को—व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिंग, कर्मकारक 'बनाया है' क्रिया के लिए।

दिशा में—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, अधिकरणकारक, 'बनाया है' क्रिया के लिए।

(२) **सर्वनाम का पदान्वय** करने में वे ही बातें दी जाती हैं जो संज्ञा-शब्दों के पदान्वय में। परन्तु चूँकि कुछ सर्वनामों में पुरुष भी होता है, अतः उसे भी बताना चाहिए।

वाक्य—अभी तक मैंने कुछ नहीं खाया; अगर आप किसी से थोड़ी मिठाई मँगा दें तो खा लूँ। परन्तु किसको भेजेंगे? न हो सके, तो अपने ही घर जाकर भोजन करूँगा। यहाँ क्या खाऊँ?

मैंने—पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुंलिंग ('करूँगा' से पता मिला) एकवचन, कर्त्ताकारक 'खाया' क्रिया का।

कुछ—अनिश्चयवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुंलिंग (पुंलिंग ही में सदा प्रयोग होता है), एकवचन, कर्मकारक 'खाया' क्रिया का।

...rit University, Balmeeki Campus, Kathmand...

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आप—आदरार्थक पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, पुंलिंग ('भेजेंगे' से पता मिला), नित्य बहुवचन, कर्त्ताकारक 'मँगा दें' क्रिया का।

किसी से—अनिश्चयवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुंलिंग, (यदि स्त्रीवाचक करना होता है तो प्रायः विशेषण हो जाता है), एकवचन, करण-कारक, 'मँगा दें' क्रिया के लिए।

किसको—प्रश्नवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुंलिंग, एकवचन, कर्म-कारक 'भेजेंगे' क्रिया का।

अपने—पुरुषवाचक निजवोधक सर्वनाम, उत्तम पुरुष के लिए, पुंलिंग, एकवचन, सम्बन्धकारक, 'घर' शब्द से सम्बन्ध रखता है।

क्या—प्रश्नवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, नित्य पुंलिंग, एकवचन, कर्म-कारक 'खाऊँ' क्रिया का।

अव्यय का पदान्वय

उदाहरण—(१) वाह ! तुम आगे चलते हो, और गुरु जी को अपने पीछे रखते हो ! (२) शाबाश ! इतना तेज़ दौड़ा कि सड़क के पार निकल गया।

वाह—विस्मयादिबोधक अव्यय, लज्जा सूचित करता है।

आगे—क्रियाविशेषण, स्थानसूचक, 'चलते हो' क्रिया के लिए।

और—समुच्चयबोधक अव्यय, संयोजक, 'तुम···हो,' तथा 'गुरुजी···रखते हो' को जोड़ता है।

पीछे—सम्बन्धवाचक अव्यय, 'अपने' शब्द का सम्बन्ध वाक्य में दिखलाता है।

शाबाश—विस्मयादिबोधक अव्यय, हर्ष या विस्मय प्रकट करता है।

इतना—अन्तर्विशेषण, क्रियाविशेषण 'तेज़' का प्रभाव बढ़ाता है।

तेज़—क्रियाविशेषण, रीतिसूचक, 'दौड़ा' क्रिया के लिए।

कि—समुच्चयबोधक अव्यय, संयोजक, 'इतना······दौड़ा' और 'सड़क······गया' को जोड़ता है।

पार—सम्बन्धवाचक अव्यय, 'सड़क' शब्द का सम्बन्ध 'निकल गया' के साथ दिखाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(३) **क्रिया के पदान्वय** में इतनी बातें बतानी चाहिएँ—क्रिया का भेद, काल और उसका भेद, पुरुष, लिंग, उसका कर्त्ता तथा कर्म (यदि हो या हों) क्रिया या वाच्य भी बताना चाहिए।

उदाहरण—(क) देवदत्त ने कहा कि मैं पुस्तकें पढ़ूँगा, (ख) तुम्हारा काम देखकर तब वेतन बढ़ाया जायगा।

कहा—सकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, अन्य पुरुष, पुंलिंग, एकवचन, कर्त्तृवाच्य, इसका कर्त्ता 'देवदत्त' है और कर्म 'मैं पुस्तकें पढ़ूँगा' है।

पढ़ूँगा—सकर्मक क्रिया, भविष्यत्काल, उत्तम पुरुष, एकवचन, कर्त्तृवाच्य, कर्त्ता 'मैं' के अनुसार, इसका कर्म 'काम' है।

बढ़ाया जायगा—सकर्मक क्रिया, भविष्यत्काल, अन्य पुरुष, एकवचन, कर्मवाच्य, इसका कर्त्ता 'वेतन' है।

(४) **विशेषण के पदान्वय** में उसका भेद, लिंग, वचन और उसका विशेष्य बताना चाहिये, अन्य विवरण भी बतलाया जा सकता है।

उदाहरण—अच्छे नियम बनाओ जो खलें नहीं। तुम्हारे पास कितनी स्याही थी? दस दिन की ग़ैरहाज़िरी क्यों की? कुछ लोग आए हैं।

अच्छे—गुणवाचक विशेषण, पुंलिंग, बहुवचन, इसका विशेष्य 'नियम' है।

कितनी—परिमाणवाचक (प्रश्नसूचक विशेषण), स्त्रीलिंग, एकवचन, इसका विशेष्य 'दिन' है।

कुछ—अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुंलिंग, बहुवचन, इसका विशेष्य 'लोग' है।

तुम्हारी सुगमता के लिए हम कुछ **चुने हुए ऐसे शब्दों का पदान्वय** देते हैं जिनमें कोई बारीकी है।

(१) यदि ठीक कसरत की जाए तो देश में सैकड़ों **भीमसेन** पैदा हों।

भीमसेन—व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द, यहाँ जातिवाचक की तरह प्रयुक्त, पुंलिंग, बहुवचन, कर्त्ताकारक, इसकी क्रिया 'पैदा हों' है।

krit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(२) **हाकिम** को अभी कचहरी जाना है।

हाकिम को—जातिवाचक संज्ञा शब्द, पुंलिंग, एकवचन, यद्यपि रूप में कर्म की तरह तथापि प्रयोग में कर्त्ताकारक, इसकी क्रिया 'जाना है' है।

(३) हमें मोहन को पचास रुपया **देना चाहिए।**

देना चाहिए—क्रिया सकर्मक, अन्य पुरुष, पुंलिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, इसका कर्त्ता 'हमें' और कर्म 'रुपया' जिसके अनुकूल इसका रूप है। 'विधि' कर्त्तव्य प्रकट करती है।

(४) **'तुम्हें'** शब्द सर्वनाम है।

तुम्हें—व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द, पुंलिंग, एकवचन, कर्त्ताकारक, इसकी क्रिया 'है' है। [ऐसे पदान्वय का कारण समझ लो]।

(५) तुलसी की पत्तियाँ **छोटी छोटी** होती हैं।

छोटी छोटी—गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, बहुवचन अपने विशेष्य 'पत्तियाँ' से परवर्त्ती, द्विरुक्ति।

(६) **एकदम** ऊपर चले जाइये।

एकदम—या तो 'एकदम ऊपर' को 'चले जाइये' क्रिया का स्थानवाचक क्रियाविशेषण मानें, या **एकदम** को क्रियाविशेषण 'ऊपर' का अन्तर्विशेषण मानें।

(७) **आपको** क्या कहना है? वाह! आपको क्या कहना!

आपको (प्रथम)—पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, सदा बहुवचन, लिंग प्रकरण के अनुसार, रूप में कर्म, किन्तु प्रयोग में कर्त्ताकारक, इसकी क्रिया 'कहना है' है।

आपको (द्वितीय)—सर्वनाम भेद, पुरुष, वचन, लिंग, रूप ऊपर के अनुसार, प्रयोग में अधिकरण कारक।

हम पुनः इस बात पर ध्यान दिलाना चाहते हैं कि किसी शब्द के पदान्वय की मुख्य बात है उस शब्द का वाक्य के किसी अन्य शब्द से सम्बन्ध। यदि ऐसा सम्बन्ध नहीं दिखलाया गया तो उस शब्द का पदान्वय हुआ ही नहीं।

सम्बोधनकारक और इंगितसूचक अव्ययों का सम्बन्ध वाक्य के शब्दों से नहीं होता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अभ्यास

(१) पदान्वय किसे कहते हैं ? इसके और नाम क्या हैं ?

(२) निम्नलिखित वाक्यों के नाम शब्दों का पदान्वय करो—

सौदागर समुद्र से नाव में सीपी लाया। विश्वनाथजी के दर्शन के लिए उस दिन हजारों यात्री आये थे। घोड़े ने अपनी शिक्षा दिखाई और लोगों को अपनी फुर्ती से चकित कर दिया। लड़को, अपना पाठ याद करो। मोहन को मेरे पास बुलाओ।

(३) निम्नलिखित वाक्यों के प्रत्येक सर्वनाम शब्द का पदान्वय करो—

मुझसे किसी ने कहा कि रामदत्त को कुछ आता नहीं। मैंने कहा—"वाह ! वह बड़ा होशियार है, तुम ठीक नहीं जानते।"

गोविन्द ! देखो, यह ले लो। क्या ले लूँ ? तुम्हारे लिए मैं कुछ लाया हूँ, उसे यहीं रक्खे देता हूँ।

मोहन ! तुम नहीं जानते कि आज वसन्तोत्सव है, हमें जलसे में चलना चाहिये।

(४) इन वाक्यों की क्रियाओं की पदव्याख्या करो—

आपने मुझसे क्यों न कहा ? मैं आपको रुपये दे देता। अच्छा, जो हुआ सो हुआ, अब से चेत रखिए, जब जरूरत पड़े मुझसे माँगिए। आपके लिए हर समय रुपया तैयार रहेगा अच्छा अब जाता हूँ। देखिये, भूलिएगा नहीं।

(५) नीचे लिखे वाक्यों के विशेषण शब्दों की व्याख्या करो—

इस मोटे कपड़े से तीन कुर्ते बनाओ, दो तुम लो और तीसरा अपने भाई को दो। ऐसी कंजूसी अच्छी नहीं। इतना धन तुम्हारे पास है कि बीसों आदमियों का पालन हो सकता है। कोई एक बात निश्चित कर लो।

नैया मोरी तनक सी बोझी पाथर भार।
चहुं दिश अति भौंरे उठत केवट है मतवार॥

(६) इन वाक्यों में अव्ययों का पदान्वय करो—

(क) तुमको उससे पहले आना था, क्योंकि काम का समय निकल गया, अब जाओ, बस !

(ख) आधुनिक काल में सेवा का खूब दौरदौरा है। कहीं लोग देश-सेवा में लगे हैं, तो कहीं पति सेवा की चर्चा है, दूसरी जगह

...krit University, Balmeeki Campus, Kathman...

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अतिथि-सेवा तथा साधु-सेवा का बोलबाला है। चाहे किसी भी प्रकार की सेवा क्यों न हो वह तबतक सफल नहीं हो सकती जब तक उसमें तन, मन, धन के सहयोग से कार्य न किया जाय। "करोगे सेवा तो पावोगे मेवा" की कहावत के अनुसार सेवा का फल मीठा ही होता है। परन्तु सेवा आदर्श होनी चाहिए न कि दिखावटी।

(७) नीचे लिखे वाक्यों के प्रत्येक शब्द का पदान्वय करो—

संसार परिवर्तनशील है। इसमें सदा किसी का रंग एक सा नहीं रहता। रथ के चक्र की भाँति कभी कोई चढ़ता है और कभी नीचे गिरता है। इस द्वंद्व-मय जगत में सुख के उपरान्त दुःख और दुःख के अनन्तर सुख का क्रम लगा ही रहता है। सच्चा वीर वही है जो अनेक विपत्तियों में भी घबड़ाता नहीं, पर्वत के समान अचल रहता है। ईश्वर का स्मरण और अपने कर्तव्य का ध्यान ही दुःख की अवस्था में धैर्य और शान्ति प्रदान कर सकता है।

पाठ्य पुस्तक से ऐसे ही अनेक प्रश्न अभ्यास के लिए ले सकते हैं।

१०—पदों और वाक्यों का विग्रह

(Analysis of Sentences)

(१) साधारण, मिश्र और संयुक्त (संसृष्ट) वाक्य

(क) मोहन छ बजे सवेरे से खेत में काम कर रहा है।

(ख) देवदत्त ने कहा कि मैं चिट्ठी लिखूँगा।

(ग) मैं काम करूँगा पर रुपया ले लूँगा। समान पदी

(क) में 'कर रहा है' एक ही क्रिया है।

(ख) में दो क्रियाएँ हैं—'कहा' और 'लिखूँगा'।

(ग) में दो क्रियाएँ हैं—'करूँगा' और 'ले लूँगा'।

(क) साधारण वाक्य है। जिस वाक्य में एक ही क्रिया हो उसे **साधारण** वाक्य (simple sentence) कहते हैं।

(ख) वाक्य में पूछा जा सकता है कि 'देवदत्त ने क्या कहा' अर्थात् 'कहा' का 'कर्म' क्या है ? उत्तर हुआ कि 'मैं चिट्ठी लिखूँगा'। यह 'कर्म'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

है। यहाँ पर 'मैं चिट्ठी लिखूँगा' यह बात प्रथम बात का 'आश्रय' या भरोसा रखती है, अर्थात् उस बात का एक अंग है और प्रधान नहीं हो सकती। इस उदाहरण से केवल 'देवदत्त' का कुछ कहना पाया जाता है, इसलिए 'देवदत्त ने कहा' यही एक बात प्रधान (principal) और दूसरी उसके 'आश्रित' या आधीन (subordinate) है।

(ग) वाक्य में काम करना और रुपया लेना दो बातें पाई जाती हैं और दोनों प्रधान हैं, इसलिए दोनों बातें 'निराश्रय' (independent) हैं अर्थात् एक दूसरे पर भरोसा नहीं करतीं, या एक दूसरे का अंग नहीं।

ध्यान देकर देख लेना चाहिए कि पहले उदाहरण में 'अगर मैं चिट्ठी लिखूँगा' यह दूसरी बात निकाल डाली जावे तो पहली बात से पूरा अर्थ नहीं निकल सकेगा, अर्थात् सुननेवाला पूछेगा कि देवदत्त ने क्या कहा। इसलिए दूसरी बात पहली बात के 'आश्रित' है। परन्तु दूसरे उदाहरण में अगर 'मैं रुपया ले लूँगा' यह दूसरी बात निकाल डाली जाय तब भी 'मैं काम करूँगा' यह पहली बात पूरा अर्थ देती है। इसीलिए दोनों बातें 'निराश्रय' हैं। ऐसे वाक्य प्रायः 'और, या, परन्तु' आदि समुच्चयबोधक, (संयोजक या विभाजक) अव्यय के द्वारा मिलाए जाते हैं, परन्तु कभी कभी, विशेषतः पद्य में, ये लगाव के शब्द प्रकट नहीं होते। ऐसी दशाओं में उन्हें प्रकट कर लेना चाहिए। सम्पूर्ण मिश्रित वाक्य के जो छोटे छोटे वाक्य बन जाते हैं उन्हें कोई कोई लोग 'उपवाक्य' कहते हैं, कोई 'वाक्यांश' (clause) कहते हैं।

(ख) मिश्र वाक्य है। जिस वाक्य की एक क्रिया रखनेवाला उपवाक्य प्रधान हो, तथा दूसरी क्रिया रखनेवाला उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के आश्रित या आधीन हो (या दूसरी क्रियाएँ रखनेवाले उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के आश्रित हों) उसे मिश्र वाक्य (complex) कहते हैं।

(ग) संयुक्त वाक्य है। जिस वाक्य की दोनों या सब बातें प्रधान हों, एक दूसरे का अंग न हों, या एक दूसरी पर आश्रित न हों, उसे संयुक्त वाक्य (compound) कहते हैं।

skrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

साधारण वाक्य की पहचान में कोई कठिनता नहीं है, क्योंकि उसमें एक ही क्रिया होती है। परन्तु अच्छी तरह देख लेना चाहिए कि कहीं कोई क्रिया छिपी तो नहीं है। "मोहन नहीं, सोहन आए" इस वाक्य में एक ही क्रिया 'आए' दिखाई देती है, केवल इसी कारण इसे साधारण वाक्य न कह देना चाहिए। इसमें एक दूसरी क्रिया 'आए' छिपी है। पूरा वाक्य है "मोहन नहीं आए, सोहन आए" इसलिए इसमें दो उपवाक्य हैं, जो दोनों प्रधान हैं। यह संयुक्त वाक्य है।

दूसरा उदाहरण लो। "तुम जब आते हो तब रात को"—इसमें भी एक ही क्रिया 'आते हो' प्रकट है; परन्तु पूरा वाक्य है "तुम जब आते हो तब रात को आते हो"। इसीलिए इसमें दो क्रियाएँ हैं। इसके दोनों उपवाक्यों को अलग अलग करके देखो; 'तुम रात को आते हो'—इससे पूरा अर्थ प्रकट होता है; 'तुम जब आते हो'—इससे कोई पूरा मतलब नहीं निकलता। इसीलिए 'तुम रात को आते हो'—यह प्रधान उपवाक्य है और 'तुम जब आते हो'—यह उसके आश्रित वाक्य है। कुल मिश्र वाक्य हुआ।

ऊपर के उदाहरणों से तुमको संयुक्त और मिश्र वाक्यों के पहचानने की रीति मिल गई होगी। वाक्य को उपवाक्यों में तोड़ कर विचार करना चाहिए, यदि उपवाक्य स्वतन्त्र रूप से रह सकते हों तो वे संयुक्त वाक्य बनाते हैं, यदि कोई उपवाक्य दूसरे उपवाक्य के आश्रित हो तो सब मिलकर मिश्र वाक्य बनाते हैं।

कई उपवाक्यों वाला एक उदाहरण देखो। "जब मैं आता हूँ तब तुम आते हो, और जब मैं जाता हूँ तब तुम जाते हो"—इस वाक्य में चार क्रियाएँ हैं; इसके चार उपवाक्य बनते हैं। 'जब मैं आता हूँ' आश्रित उपवाक्य है, इसका प्रधान उपवाक्य है 'तब तुम आते हो'। इसी तरह 'जब मैं जाता हूँ' आश्रित उपवाक्य है, इसका प्रधान उपवाक्य है 'तब तुम जाते हो'। परन्तु अभी यह देखना है कि पहले+दूसरे उपवाक्यों का क्या सम्बन्ध तीसरे+चौथे उपवाक्यों से है। पहला+दूसरा कह देने से पूरा अर्थ निकलता है; तीसरा+

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चौथा कह देने से भी पूरा अर्थ निकलता है। इसलिए ये एक दूसरे के आश्रित नहीं और संयुक्त (संसृष्ट) वाक्य (mixed) बनाते हैं।

अभ्यास

(१) पहचान करो कि नीचे लिखे वाक्य साधारण हैं या मिश्र या संयुक्त—

(१) मैं पत्र लिखकर तुम्हारे साथ घर जाऊँगा। (२) मैं पत्र लिख लूँ, तब तुम्हारे साथ घर चलूँ। (३) जब मैं पत्र लिख रहा हूँ तब तुम अपने साथ घर चलने को कहते हो। (४ घंटी का बजना था कि रेल छूट गई। (५) आकाश में मेघ घिरे थे; ठंडी हवा चल रही थी; उसी समय राजा साहब आए। (६) तुम कहो तो किताब दे दूँ, परन्तु मुझे भी अभी पढ़ना है। (७) जब अँधेरा छा गया और लोग सो गए तब चोर धीरे धीरे आया। (८) जो किताब कल खो गई थी वह आज उसी लड़के के पास मिली जो कल खेलने आया था। (९) आइए, बैठिए, कहिए, कुशल तो है।

(२) पाठ्यपुस्तक के जिन वाक्यों में अध्यापक जी कहें प्रश्न १ की तरह पहचान करो।

(२) संयुक्त वाक्यों में समानाधिकरण वाक्यों का पृथक् करना

अब संयुक्त वाक्यों के उपवाक्य अलग करने में तुमको कोई कठिनता न पड़नी चाहिए। चूँकि संयुक्त वाक्य में दो या जितने भी उपवाक्य हों सभी प्रधान होते हैं, और सबका स्थान (अधिकरण) बराबर (समान) होता है, इसलिए वे एक दूसरे के **समानाधिकरण** (co-ordinate) कहलाते हैं।

एक बात और है। जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है, कभी कभी कोई क्रिया छिपी रहती है, कभी कर्त्ता, कभी कर्म, कभी विशेषण, कभी और कोई शब्द। वाक्यों के पृथक् करने में उन सब छिपे हुए शब्दों को रख लेना चाहिए और वाक्यों को जोड़नेवाला समुच्चयबोधक अव्यय यदि कोई हो तो उसे भी अलग दिखा देना चाहिए।

उदाहरण—(१) महीने में ३० दिन होते हैं या ३१। (२) दूध गाय भी देती है और भैंस भी। (३) तुम चतुर हो, परन्तु तुम्हारा भाई नहीं।

...krit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

(४) वह चुपके से आया, बैठा, और चला गया; किसी को उसकी सूचना न मिली। (५) सज्जन और दुर्जन कर्म से भले और बुरे होते हैं।

इन वाक्यों के समानाधिकरण वाक्य इस प्रकार अलग करो—

(१) "महीने में ३० दिन होते हैं" या "महीने में ३१ दिन होते हैं"।

(२) "दूध गाय भी देती है" और "दूध भैंस भी देती है"।

(३) "तुम चतुर हो" परन्तु "तुम्हारा भाई चतुर नहीं है"।

(४) "वह चुपके से आया"+"वह चुपके से बैठा" और "वह चुपके से चला गया", किसी को उसकी सूचना न मिली।

(५) "कर्म से सज्जन भले होते हैं" और "कर्म से दुर्जन बुरे होते हैं"।

अभ्यास

(१) इससे पहलेवाले अभ्यास में जितने संयुक्त वाक्य हैं सबको समानाधिकरण वाक्यों में तोड़ो।

(२) पाठ्यपुस्तक के जिस पाठ में अध्यापकजी कहें संयुक्त वाक्य चुनो, और उन्हें समानाधिकरण में पृथक् करो।

(३) मिश्र वाक्यों में मुख्य वाक्यांश और आश्रित वाक्यांशों का अलग करना

अब यह काम और भी सरल लगेगा। सबसे पहले देखो कि दिए हुए वाक्यांशों में प्रधान कौन है। हम पहले ही बता चुके हैं कि जिस अकेले वाक्यांश से कोई पूरा अर्थ निकलता है वही प्रधान होता है और उसी के अंग होकर अन्य वाक्यांश आते हैं। उदाहरणों से यह बात और भी स्पष्ट होगी।

उदाहरण—(१) जब गाड़ी छूट गई तब आप आए। (२) जो लड़का प्रथम आया है उसी को छात्रवृत्ति मिलेगी। (३) तुमने मुझको क्यों कहला भेजा कि मोहन आज नहीं आयेगा ? (४) जब कि तुम न पढ़ते हो न काम करते हो तो तुम्हें पैसा लेने का अधिकार नहीं है। (५) दोपहर के समय जब कि इतनी कड़ी धूप है और पशु पक्षियों को भी बाहर निकलने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

का साहस नहीं होता, तुम्हारा यहाँ आना मुझे आश्चर्य में डालता है; और मैं यही उचित समझता हूँ कि शाम तक यहीं ठहरो।

(१) "जब गाड़ी छूट गई"—(तब क्या हुआ?) भाव प्रकट नहीं। "तब आप आए"—अर्थ समझ में आता है। इसलिए दूसरा वाक्यांश प्रधान है; (पहला केवल दूसरे का समय सूचित करता है, और क्रियाविशेषण का काम देता है; इसीलिए उसके आश्रित है।)

(२) कहनेवाले का मतलब है—"उसी को छात्रवृत्ति मिलेगी"। इसलिए यही प्रधान वाक्यांश है। "जो लड़का प्रथम आया है" यह वाक्यांश प्रधान वाक्यांश के 'उसी' शब्द का विवरण प्रकट करता है (और विशेषण का काम देता है, इसी लिए आश्रित है।)

(३) इस वाक्य का सारांश यह नहीं है कि—"मोहन आज नहीं आएगा" किन्तु किसी बात के कहला भेजने का कारण पूछना इसका सारांश है, इसलिए "तुमने मुझको क्यों कहला भेजा" प्रधान वाक्यांश है। पूछा जा सकता है कि क्या कहला भेजा (कहला भेजने का कर्म) उसका उत्तर है "मोहन आज नहीं आएगा" इसलिए यह वाक्यांश प्रधान वाक्यांश की क्रिया का कर्म है (और संज्ञा का काम करते हुए प्रधान वाक्यांश के आश्रित है।)

(४) "तुम्हें पैसा लेने का अधिकार नहीं है" यह प्रधान वाक्यांश है; 'तो' शब्द किसी अवस्था की तरफ इशारा करता है और वह अवस्था दो वाक्यांशों में कही गई है—'जब कि तुम न पढ़ते हो' और 'जब कि तुम न काम करते हो'। इसलिए इस वाक्य में एक प्रधान वाक्यांश के आश्रित दो वाक्यांश हैं।

(५) कहनेवाला पहली खास बात जो कहना चाहता है वह है—"दोपहर में तुम्हारा यहाँ आना मुझे आश्चर्य में डालता है"। यह प्रधान वाक्यांश है। इसमें 'दोपहर में' समय प्रकट करता है और क्रिया का विस्तार है; इसे ही और स्पष्ट करने के लिए दो वाक्यांश आए हैं "जब कि इतनी कड़ी धूप है" और "जब कि पशु पक्षियों को भी बाहर निकलने का साहस

...krit University, Balmeeki Campus, Kathman...

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नहीं होता" । इसलिए ये दोनों वाक्यांश आश्रित हैं। यदि वाक्य यहीं तक होता, तो हम कह देते कि यह मिश्र वाक्य है। परन्तु वाक्य अभी समाप्त नहीं हुआ। आगे है "मैं यही उचित समझता हूँ" जो किसी प्रकार पहले तीन वाक्यांशों के आश्रित नहीं, किन्तु स्वयम् प्रधान वाक्यांश है और पहले बतलाए हुए वाक्यांश का समानाधिकरण है। 'शाम तक यहीं ठहरो' 'यही' का विवरण देते हुए 'समझता हूँ' क्रिया का कर्म है और आश्रित है। अब पूरे वाक्य पर विचार करो। उसमें पाँच वाक्यांश हैं जिनमें से दो प्रधान हैं, और शेष तीन इन्हीं दो प्रधान वाक्यांशों के आश्रित हैं। रूप यह है—

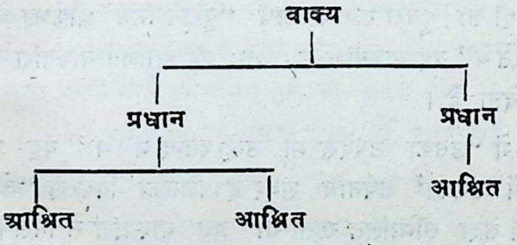

इसीलिए यह वाक्य मिश्र वाक्य नहीं है, इसे संयुक्त (संसृष्ट) वाक्य कहना चाहिए।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे वाक्यों के प्रधान और आश्रित वाक्यांश अलग करो—

सुदामा अपनी दरिद्रता से इतने दबे हुए थे कि पुराने मित्र श्रीकृष्ण के यहाँ जाने में संकोच कर रहे थे। जो स्त्री उनके सुख दुःख में सदा सम्मिलित रहती थी उसका उपदेश भी उन्हें पसन्द न था। अन्त में उन्होंने सोचा कि यदि न जाएँगे तो काम न बनेगा। फटे पुराने कपड़े पहनकर वे उन श्रीकृष्ण के पास चले जिनका ध्यान सभी लोग करते हैं। ड्योढ़ी पर द्वारपाल ने पूछा कि देव, आप कौन हैं और कहाँ जाएँगे? सुदामा ने उत्तर दिया कि मैं सुदामा ब्राह्मण हूँ, श्रीकृष्ण का सहपाठी हूँ और उन्हीं के दर्शन के लिए आया हूँ। खबर पाते ही कृष्णजी उन्हें उस राजभवन में ले गए जहाँ स्वयम् रहते थे, और ऐसी आवभगत की कि सुदामा को आश्चर्य हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(४, ५) आश्रित वाक्यांशों के भेद और प्रधान वाक्यांश के विशेष शब्दों से सम्बन्ध

वाक्यांशों के अलग करने के विवरण में हमने जो तीन उदाहरण दिए, उनमें दिखलाया था कि आश्रित वाक्यांश क्रिया-विशेषण या विशेषण या संज्ञा का काम करते हैं। अन्य उदाहरणों में वही बात देखो।

ऊपर के अभ्यास के प्रथम वाक्य में "सुदामा अपनी दरिद्रता से इतने दबे हुए थे" प्रधान वाक्यांश है। इसमें 'इतने' शब्द क्रियाविशेषण है, और उस क्रियाविशेषण ही का दूसरा रूप या अर्थ "पुराने मित्र श्रीकृष्ण के यहाँ जाने में संकोच करते थे" यह वाक्यांश है। अतः यह आश्रित वाक्यांश क्रिया-विशेषण का काम देता है।

दूसरे वाक्य में "उसका उपदेश भी उन्हें पसन्द न था" यह प्रधान वाक्यांश है। उसमें 'उनका' सर्वनाम शब्द है जिसका विवरण "जो स्त्री उनके सुख दुःख में सदा सम्मिलित रहती थी" इस वाक्यांश से मिलता है। अतः यह वाक्यांश विशेषण का काम देता है।

तीसरे वाक्य में "अन्त में उन्होंने सोचा"—यह प्रधान वाक्यांश है, और इसकी 'सोचा' क्रिया का कर्म है "यदि न जाएँगे तो काम न बनेगा"। इस कर्म के भी दो भाग हैं—'यदि न जाएँगे' ['बनेगा' क्रिया का क्रियाविशेषण] और 'काम न बनेगा' (प्रधान वाक्यांश)। पूरा कर्म संज्ञा का काम करता है।

इसी तरह अन्य वाक्यों के आश्रित वाक्यों पर विचार करके तुम यह फल निकाल सकते हो कि—

आश्रित वाक्यांश का प्रयोग तीन तरह से होता है, अर्थात् (१) संज्ञा की तरह से, (२) विशेषण की तरह से, और (३) क्रिया विशेषण की तरह से।

(१) जब कोई आश्रित वाक्यांश संज्ञा का काम देता है। अर्थात् जब उसका प्रयोग कर्ता, कर्म, करण आदि किसी कारक में नाम की तरह होता है तो उसे 'संज्ञा वाक्यांश' (Noun clause) कहते हैं।

...krit University, Balmeeki Campus, Kathman...

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(२) जब कोई वाक्यांश संज्ञा या सर्वनाम के विशेषण का काम देता है तो उसे 'विशेषण वाक्यांश' (adjectival clause) कहते हैं ।

(३) जब कोई वाक्यांश किसी क्रिया के विशेषण का काम देता है तो उसे 'क्रियाविशेषण वाक्यांश' (adverbial clause) कहते हैं ।

अभ्यास

(१) इससे पहले वाले अभ्यास के वाक्य ४ लेकर अन्त तक के वाक्यों के प्रधान और आश्रित वाक्य अलग करो । आश्रित वाक्यों के भेद बतलाओ और दिखलाओ कि प्रधान वाक्यों के किन शब्दों से उनका कैसा सम्बन्ध है ।

(२) पाठ्यपुस्तक के जिस पाठ में अध्यापकजी कहें ऐसा ही अभ्यास करो।

(३) क्रियाविशेषण से क्या प्रकट होता है ? क्रियाविशेषण वाक्यांशों से क्या क्या प्रकट करने की आशा तुम कर सकते हो ?

(६) गद्य तथा पद्य रूप में वाक्यों का विग्रह

साधारण वाक्यों का विग्रह तुम पहले ही सीख चुके हो। मिश्र और संयुक्त वाक्यों के तोड़ने से जो वाक्यांश मिलते हैं, वे भी साधारण वाक्यों की तरह हो जाते हैं; और उनका विग्रह भी उसी तरह चक्र में दिखाया जा सकता है। परन्तु इसके पहले किसी वाक्य के सब वाक्यांशों का परस्पर सम्बन्ध दिखलाया जाना चाहिए और वाक्यांशों के भेद बतलाए जाने चाहिएँ। एक बड़े उदाहरण के द्वारा हम उसकी रीति दिखलाते हैं :—

वाक्य—जब पानी बड़े वेग से बरसता था और ठंढी हवा चलती थी, एक अन्धा आदमी जो रास्ता भूल गया था मुझसे कहने लगा कि भाई, कृपा करके मुझे थोड़ी देर ठहरने दो, नहीं तो मैं इस पानी में मर जाऊँगा ।

(क) एक अन्धा आदमी मुझसे कहने लगा (प्रधान वाक्यांश)

(ख) जो रास्ता भूल गया था [(क) के आश्रित विशेषण वाक्यांश]

(ग) भाई कृपा करके मुझे थोड़ी देर ठहरने दो [(क) के आश्रित संज्ञा वाक्यांश]

(घ) नहीं तो मैं इस पानी में मर जाऊँगा [(क) के आश्रित संज्ञा वाक्यांश]

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(ङ) जब पानी बड़े वेग से बरसता था [(क) के आश्रित क्रिया-विशेषण वाक्यांश]

(च) और (जब) ठंढी हवा चलती थी [(क) के आश्रित क्रिया-विशेषण वाक्यांश]

नोट १—सब वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध दिखलाने के लिए छोटे वाक्यों के नाम (क), (ख) आदि रख लिए गए हैं।

नोट २—किसी वाक्य को छोटे छोटे वाक्यों में विभक्त करने और उनका परस्पर सम्बन्ध दिखलाने को संक्षिप्त विग्रह (Clause analysis) कहते हैं, जैसा कि ऊपर के उदाहरण में किया गया है। संक्षिप्त विग्रह करने के उपरांत हर एक वाक्य के छोटे छोटे भाग अलग करने और उनका परस्पर सम्बन्ध दिखलाने को विस्तृत विग्रह (Tabular analysis) कहते हैं।

नोट ३—इस पुस्तक में इस काम के लिए 'विग्रह' शब्द लिखा गया है। उसी का नाम वाक्य-विश्लेषण, वाक्य-पृथक्करण, वाक्यच्छेद भी है।

उदाहरण के लिए नीचे लिखे वाक्यों का विस्तृत विग्रह चक्र में दिखलाया जावेगा।

(१) पहलवान कसरत करता है।

(२) देवदत्त ने कहा कि मैं चिट्ठी लिखूँगा।

(३) मैं काम करूँगा पर रुपया ले लूँगा।

(४) मेरी पुस्तक जो कल खो गई थी आज हरिहर के घर में मिली।

(५) जब तुम लखनऊ जाना तो मुझसे बतलाना, मैं वहाँ से अच्छे फल मँगाऊँगा।

(६) अस कहि चले तहाँ प्रभु, जहाँ कपट मृग नीच।
देव हर्ष विस्मय विवश, चातक वर्षा बीच॥

(७) अंगद कहा जाऊँ मैं पारा। जिय संशय कछु फिरती बारा॥

नोट—चक्र में शब्द कोष्ट [ब्राक्यट] में ( ) इस प्रकार बंद है उनसे मतलब यह है कि वे शब्द उस वाक्य में प्रकट नहीं हैं, किन्तु छिपे हैं, पर उनका अर्थ यहाँ पर है जैसे 'किमि पठवौं सबहीं कर नायक' इस वाक्य में कर्त्ता 'मैं' शब्द छिपा है।

———

skrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वाक्यं	वाक्य के भेद	लगाव शब्द	कर्ता	कर्ता का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तार	पूरक	पूरक का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार
१ पहलवान कसरत करता है	साधारण		पहल-वान		कसरत				करता है	
२ देवदत्त ने कहा (क)	प्रधान		देवदत्त ने		(ख)				कहा	
कि मैं चिट्ठी लिखूँगा (ख)	(क) के आश्रित संज्ञा वाक्यांश	कि	मैं		चिट्ठी				लिखूँगा	
३ मैं काम करूँगा (क)	प्रधान		मैं		काम				करूँगा	
पर (मैं) रुपया से लूँगा (ख)	प्रधान	पर	(मैं)		रुपया				लेलूँगा	
४ मेरी पुस्तक आज हरिहर के घर में मिली (क)	(क) से संयुक्त प्रधान		पुस्तक	(१) मेरी, २ (ख)					मिली	(१) आज (२) हरिहर के घरमें
जो कल खो गई थी (ख)	(क) के आश्रित विशेषण वाक्यांश		जो						खो गई थी	कल
५ जब तुम लखनऊ जाना (क)	(ख) के आश्रित क्रियाविशेष वाक्यांश		तुम						जाना	(१) जब (२) लखनऊ
तो मुझसे बतलाना (ख)	प्रधान	तो	(तुम)		मुझसे				बतलाना	(क)

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वाक्य	वाक्य का भेद	लगाव के शब्द	कर्त्ता	कर्त्ता का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तार	पूरक	पूरक का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार
मैं वहाँ से अच्छे फल मँगाऊँगा (ग)	प्रधान (ख) से समान		मैं		फल	अच्छे			मँगाऊँगा	वहाँ
६ अस कहि चले तहाँ प्रभु (क)	प्रधान		प्रभु						चले	(१) अस कहि (२) तहाँ,
जहाँ कपट मृग नीच (था) (ख)	(क) के आश्रित क्रिया विशेषण वाक्यांश		मृग	कपट नीच					(था)	(३) ख जहाँ
देव हर्ष विस्मय विवश (उसी प्रकार थे) (ग)	प्रधान (क) से संयुक्त	और	देव				हर्षविस्मय विवश		(थे)	(उसीप्रकार), (घ)
(जैसे) चातक वर्षाबीच (हर्ष विस्मय विवश होते हैं (घ)	(ग) के आश्रित क्रिया विशेषण वाक्यांश		चातक				(हर्षविस्मय विवश)		(होतेहैं)	(१) (जैसे) (२) वर्षा बीच
७ अंगद कहा (क)	प्रधान		अंगद		(ख, ग)				कहा	
(क) जाऊँ मैं पारा (ख)	(क) के आश्रित संज्ञा वाक्यांश	'कि'	मैं						जाऊ	पारा
(परन्तु) जिय'' बारा (है) (ग)	(क) के आश्रित संज्ञा वाक्यांश और (ख) के समान	'परन्तु'	संशय	कछु					(है)	(१) जिय (में) (२) फिरती बार

skrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अभ्यास

(१) इन वाक्यों का संक्षिप्त विग्रह करो :—

(अ) भारतवर्ष इतना भारी देश है कि यहाँ के एक प्रान्त का आदमी दूसरे प्रान्त की बोली नहीं समझता, तथापि हर प्रान्त के लोग हिन्दी भाषा को इतना समझ लेते हैं कि मन का भाव प्रकट हो जाय।

(इ) यद्यपि अकबर ने दीन इलाही में सभी धर्मों की प्रधान प्रधान बातें रक्खीं, तथापि हिन्दुओं ने उसे प्राय: ग्रहण नहीं किया, क्योंकि वे पुरानी परम्परा से जिसे उनके बाप दादे मानते आये थे, तिल भर हटना नहीं चाहते थे।

(उ) जिस लड़के ने यह लिखा कि वर्ग क्षेत्र वह समानान्तर चतुर्भुज है जिसकी चारों भुजाएँ बराबर हों, उसने पूरा उत्तर नहीं लिखा, क्योंकि वर्ग क्षेत्र के कोण भी समकोण होते हैं।

(२) इन वाक्यों का विस्तृत विग्रह करो:—

(क) मेरा छोटा भाई जो आप को कल मिला था पास हो गया। (ख) हर पुरुष को सदा ईश्वर पर भरोसा करना चाहिये जिसने इस संसार को पैदा किया है। (ग) जो लोग सत्य बोलते हैं वे पूजे जाएँगे, और जो लोग झूठ बोलते हैं मारे जाएँगे। (घ) आप जब आते हैं तब मिठाई लाते हैं। (ङ) पठवा बालि होय मन मैला। भागौं तुरत तजौं यह शैला॥ (च) सवेरे का उठना भी बहुत अच्छा होता है, परन्तु बाज़े आलसी लोग दिन चढ़े तक सोया करते हैं। (छ) हमारी तो सदा यही प्रार्थना है कि हमारे महाराज चिरंजीवी हों। (ज) जब आकाश में मेघ गरजते थे, और बिजली चमकती थी तथा द्वारपाल लोग पड़े सो रहे थे, तब भगवान कृष्ण का जन्म हुआ। (झ) वाक्यच्छेद करने में इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि कोई वाक्य छूट न जाय, क्योंकि कोई वाक्य इतने छोटे होते हैं कि उन पर निगाह ही नहीं पड़ती। (ञ) यहाँ बैठूँ कि वहाँ जाऊँ, कुछ समझ में नहीं आता।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अध्याय २

शब्द (Word)

१—हिन्दी की शब्द राशि

आधुनिक हिन्दी भाषा में कई प्रकार के शब्द मिलते हैं। (१) संस्कृत के शुद्ध शब्द या उनके बिगड़े हुए रूप; (२) ठेठ देशी शब्द, जो सम्भवतः संस्कृत या पुरानी प्राकृत भाषा या फ़ारसी आदि के अत्यन्त बिगड़े रूप हैं, यहाँ तक कि उनकी उत्पत्ति का ठीक ठीक पता नहीं चलता; और (३) फ़ारसी, अरबी, अंगरेजी आदि विदेशी भाषाओं के शुद्ध शब्द या उनके बिगड़े हुए रूप। संस्कृत के जो शुद्ध शब्द आते हैं उन्हें 'तत्सम' शब्द कहते हैं, और जो बिगड़े हुए रूप आते हैं, अर्थात् अपभ्रंश होते हैं, उन्हें 'तद्भव' शब्द कहते हैं। फ़ारसी, अरबी, अँगरेज़ी आदि विदेशी भाषाओं के शब्दों में भी तत्सम और तद्भव का भेद होता है। नीचे इनके कुछ उदाहरण दिये जाते हैं:—

(१) संस्कृत के तत्सम शब्द—मनुष्य, देह, मस्तक, फल, गृह, देवता, वस्त्र, पात्र, पुस्तक, लेखनी, अनुभव, सुख, श्री, इति, यथा, सुवर्ण, पृथक्, वृथा, व्यय, ईश्वर ।

(२) संस्कृत के तद्भव शब्द—मनई, मूड़, घर, कपड़ा, पोथी, पन्ना, पीठ, पाँच, कान, नाक, बिगाड़, सोना, ऊपर, बाहर, मुगदर, थाली ।

(३) देशी शब्द—लोटा, कटोरा, जूता, फुनगी ।

(४) फ़ारसी के तत्सम शब्द—गवाह, गुलाब, दाना आमदनी, सिक्का, लगाम ।

(५) फ़ारसी के तद्भव शब्द—मँजूर, खत्ता, बकसीस ।

(६) अरबी के तत्सम शब्द—जरूरत, ग़रीब, कागज, मुद्दई, बुखार, मिसाल, तजवीज़, हुक्म, मकान, मदर्सा ।

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

(७) अरबी के तद्भव शब्द—बिदा, कागद, नगद ।

(८) अंगरेजी आदि योरपीय भाषाओं के तत्सम शब्द—स्टेशन, पार्सल, स्कूल, पेंसिल, स्लेट ।

(९) अंगरेजी आदि के तद्भव शब्द—गिलास, बकस, चिक, सम्मन, डिप्टी, जज, लाट, बोतल, लालटेन ।

उपर जितने प्रकार के शब्दों का उल्लेख हुआ है उन सब के स्वरूप में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं। कुछ परिवर्तन ऐसे हैं जिनका कारण भाषा का स्वाभाविक विकास है। यह उसके बोलने वालों की प्राकृतिक विशेषताओं पर निर्भर होता है। दूसरे प्रकार के परिवर्तन भाषा के व्याकरण के नियमों के अनुसार होते हैं। इन परिवर्तनों को हम अपनी आवश्यकताओं के अनुसार करते रहते हैं, परन्तु प्रथम प्रकार के परिवर्तन क्रमशः होते रहते हैं। उन्हें बोलने वाले अपनी आवश्यकता के अनुसार नहीं कर सकते। इस प्रकार के परिवर्तन होते होते कुछ शब्द तो अपने आरम्भिक रूप में रह जाते हैं और कुछ बदलकर प्रत्यय, विभक्ति आदि का काम देने लगते हैं। फिर ये प्रत्यय आदि घिसते घिसते मूल शब्द के साथ ऐसे मिल जाते हैं कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व ही नहीं रह जाता। इस प्रकार जो शब्द पहले स्वतन्त्र रहकर वाचक थे, वे अब संक्षिप्त तथा विकृत रूप धारण करके द्योतक मात्र रह जाते हैं। सभी भाषाओं में इस प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं, और हिन्दी में भी ऐसे परिवर्तन होते आये हैं। परन्तु इन परिवर्तनों का विवरण आरम्भिक कक्षाओं में दुरूह होगा। इसलिये यहाँ केवल व्याकरण के अनुसार शब्दों के निर्माण का कुछ उल्लेख किया जायगा।

२—हिन्दी में शब्द-निर्माण

(Formation of Words)

व्याकरण के अनुसार कभी शब्दों के पूर्व और कभी उनके बाद कुछ अव्यय जोड़कर तथा कभी कुछ शब्दों के मेल से नवीन शब्द बनाये जाते हैं। इस प्रकार के शब्दों की बनावट पर नीचे कुछ विचार किया जायगा:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(१) उपसर्ग (Prefixes)

उपसर्ग ऐसे अव्यय शब्द हैं जिनका प्रयोग अकेले कभी नहीं होता। वे अन्य शब्दों के पहले लगा दिये जाते हैं और उनके इस प्रकार मिलने से नये अर्थवाले शब्द बन जाते हैं।

हिन्दी में संस्कृत, फ़ारसी और अरबी के उपसर्गों के मेल से शब्दों का निर्माण होता है। ऐसे कुछ उदाहरण ये हैं:—

संस्कृत के उपसर्ग

अति—अतिक्रमण, अतिशय, अतितप्त।

अधि– अधिकार, अधीश्वर, अधिपति।

अनु—अनुगामी, अनुज, अनुकरण, अनुष्ठान।

अप—अपमान, अपराध, अपकारी।

अभि—अभिमुख, अभिवन्दन, अभिजात, अभिलिप्सा।

अव—अवगुण, अवज्ञा, अवलम्ब, अवसर।

आ—आजीवन, आजानुबाहु, आकांक्षा, आलिंगन, आरम्भ, आचरण, आहार, आदान।

उत्—उद्गम, उत्क्षेपण, उच्चारण, उत्साह, उत्सुक।

उप—उपनाम, उपधातु, उपदेश, उपचार।

दुः—(दुस्, दुर्,)—दुर्बुद्धि, दुःसाध्य, दुर्गति।

निः—(निस्, निर्,)—निर्बल, निःसंग, निर्दोष, निर्देश, निश्चित, निर्गत, निःश्रेयस।

नि—निकृष्ट, निपतन, निबन्ध, निवेश, निदर्शन, निवृत्त।

परा—पराजय, पराभव, परागत, परावृत्त।

परि—परिभ्रमण, परीक्षा, परिपूर्ण, परिष्कार, परिधान।

प्र—प्रबल, प्रयोग, प्रसन्न, प्रार्थना, प्रशान्त।

प्रति—प्रत्येक, प्रतिवन, प्रत्यक्ष, प्रतिज्ञा, प्रतिकूल, प्रतिफल।

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वि—विस्मरण, विमुख, वियोग, विचित्र, विवाद।

सम्—संगति, संसिद्धि, संग्रह, सम्मेलन।

सु—सुमति, सुकृति, सुवचन।

पुरः—पुरश्चरण, पुरोगमन, पुरोहित।

कभी-कभी दो दो तीन तीन उपसर्ग भी एक साथ लगाकर नये शब्द बनाते हैं। जैसे,

दो उपसर्गोंवाले शब्द—व्यवहार (वि+अव), व्यायाम (वि + आ), अनुसन्धान (अनु+सम्), प्रारम्भ (प्र+आ), परिसमाप्ति (परि+सम्), समाकीर्ण (सम+आ), निरपराध (नि + अप)।

तीन उपसर्गोंवाले शब्द—दुर्व्यवहार, समुपादान, दुर्निराकरण।

एक ही धातु में अलग अलग उपसर्ग लगाने से जो शब्द बनते हैं उनके अर्थ किस प्रकार एक दूसरे से भिन्न हो जाते हैं—यह नीचे लिखे कुछ उदाहरणों से प्रकट हो जायगाः—

गम—अतिगमन (बहुत चलना), अधिगमन (प्राप्त होना), अनुगामी (पीछे चलने वाला), अपगति (बुरी दशा), अभिगमन (सामने जाना), अवगमन (समझ लेना), आगमन (आना), उद्गमन (ऊपर उठना), उपगमन (पास जाना), दुर्गति (कुदशा), निर्गमन (निकलना), निगम (वेद), परागत (लौटा हुआ), परिगमन (चारों ओर जाना), प्रगति (तेज चाल), प्रतिगमन (पहुँचना), विगत (अच्छी तरह बीता हुआ), संगम (मिलना), सुगम (आसान), समागम आदि।

हार—(गले का भूषण)—अनुहार (समानता), अपहरण (ले लेना), आहार (भोजन), उपहार (नज़र), परिहार (दूर करने का उपाय), प्रहार (मारना), प्रतिहार (द्वारपाल), विहार, संहार।

भू—अनुभव (तजुरबा), अभिभव (हराना), उद्भव (उत्पत्ति), पराभव (हार, नाश), प्रभव (ऐश्वर्य), विभव (ऐश्वर्य), सम्भव।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

फ़ारसी अरबी शब्दों में उपसर्ग

ब—बहुक्रम, बदौलत, बनाम, बज़रिये।

बा—बामुरव्वत, बाक़ायदा।

बे—बेतमीज़, बेतहाशा, बेईमान, बेक़दरी, बेगुनाह।

ना—नालायक, नाउम्मीद, नाखुश, नाक़ाबिल।

ला—लापरवाई, लाइल्मी।

हम—हमराह, हमदम, हमशीरा, हमपेशा।

अभ्यास

(१) हिन्दी में कितने प्रकार के शब्द प्रयुक्त होते हैं ?

(२) 'तत्सम' और 'तद्भव' का क्या तात्पर्य है ?

(३) उपसर्ग किसे कहते हैं ? उपसर्ग से क्या काम होता है ?

(४) निम्न-लिखित शब्दों में कौन कौन उपसर्ग हैं, और क्या अर्थ प्रकट करते हैं:—

निर्णय, आरम्भ, प्रधान, निर्वाह, दुर्बलता, प्रयोजन, समाप्त, आनन्द, प्रबन्ध, परिभाषा, सम्भावना, सम्बन्ध, विशेष, उदाहरण, प्रसंग, उत्साह, परिणाम, सम्मति, प्रभाव, विज्ञान, उपाय, अनुकूल, उद्धार, सन्देह, व्यापार, उद्योग, प्रकरण, परिवर्तन, विस्मय, आभाषण, विभूषिता, निर्धन, नियम, उपदेश, आग्रह, अपकार, अवहेलना, दुःसाध्य, अधिराज, अतिनीच, सुव्यवस्था, पराभव, सम्मान। नाराज़, बेऔक़ात, बाक़ायदा, बदस्तूर, हमदर्दी। बेसुरा, निडर, बेढब, अनभल, औघट, दुसह।

(५) 'करण' शब्द, के पहले प्र, अनु, निः+आ, अधि, प्रति, उप, अन्तर, आविर्, वि+आ, उपसर्ग, लगाने से कौन कौन अर्थ पैदा होते हैं ?

(६) 'स्थान' शब्द के पहले कौन कौन उपसर्ग लगाने से ये अर्थ होंगे-यात्रा, पूजा, विशेष जगह, उठना।

[७] नीचे लिखे शब्दों के जोड़ों में उपसर्गों के अर्थों का विवरण करो—
निर्गत, । विज्ञान, विदेश । आहार, आदान, । उपदेश, उपपति ।

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(२) प्रत्यय (Suffixes)

कृदन्त, तद्धित

उपसर्गों की तरह प्रत्यय भी ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग अकेले कभी नहीं होता, परन्तु जब वे अन्य शब्दों के पीछे लगा दिये जाते हैं तो तत्सम्बन्धी नये शब्द पैदा कर देते हैं।

क्रिया से बनने वाले शब्द (कृदन्त)

जब क्रियात्मक शब्द (धातु) के पीछे **प्रत्यय** लगता है, तो वह **कृत** प्रत्यय कहलाता है, और जो शब्द बनता है वह **कृत्प्रत्ययान्त** या **कृदन्त** शब्द बनता है।

क्रिया से बनने वाले कुछ विशेषण शब्द

हिन्दी में जितने संस्कृत के शब्द, तत्सम या तद्भव, आते हैं उतने अन्य किसी भाषा के नहीं आते। संस्कृत के प्रायः सभी शब्द धातु से बनते हैं। जैसे, पठ् धातु से पाठ, पठित, पाठक, आदि, कृ धातु से कर, करण, कारण, कर्त्ता, कर्म, क्रिया, कृत, करणीय, कार्य्य, कर्त्तव्य, कारक, कारयिता, कृति, उपकार, संस्कार, हानिकर, अर्थंकरी आदि।

हम यहाँ कुछ मुख्य मुख्य कृत् प्रत्ययों का विवरण देते हैं।

[१] क्त प्रत्यय जिसमें से त रह जाता है और कभी कभी वह भी न में बदल जाता है, या कोई दूसरा रूप ग्रहण करता है। जैसे कृ से कृत, गम् से गत, पठ् से पठित, स्वप् से सुप्त, वस् से उषित, वच् से उक्त, भिद् से भिन्न, सिध् से सिद्ध, तृ से तीर्ण आदि। इन शब्दों का अर्थ है—किया हुआ, गया हुआ, पढ़ा हुआ, सोया हुआ आदि। हिन्दी में इनका प्रयोग विशेषण की रीति पर होता है। जैसे—गत वर्ष, पठित पुस्तक, उक्त, कारण भिन्न पात्र, सिद्ध भोजन आदि। यदि इन शब्दों का शुद्ध संस्कृत स्त्रीलिंग बनाना हो तो आ जोड़ना चाहिये; जैसे 'जेहि पद सुरसरिता परम पुनीता प्रकट भई शिव शीश

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

धरी' परन्तु हिन्दी में वही रूप दोनों लिंगों में आता है, जैसे गत दिन, गत रात्रि।

(२) तव्य, अनीय, य प्रत्यय। जैसे, कृ से कर्त्तव्य, करणीय, कार्य; वच् से वक्तव्य, वचनीय, वाच्य आदि। इन शब्दों का प्रयोग विशेषण की रीति से होता है। जब कभी नाम की रीति पर ये आते हैं तब पुंल्लिंग होते हैं, जैसे तुम्हारा कर्त्तव्य यही है, उसका वक्तव्य सुन लो।

क्रिया से बनने वाले कुछ संज्ञा शब्द

(१) क्तिन् प्रत्यय जिसमें से ति रह जाता है और कभी कभी वह भी किसी दूसरे अक्षर में बदल जाता है। जैसे कृ से कृति, गम् से गति, वच् से उक्ति, सिध् से सिद्धि आदि। ये सब शब्द स्त्रीलिंग हैं, और भाववाचक संज्ञा शब्द हैं। जैसे, मोहन की गति मोहन जाने, तुम्हारा सिद्धि को देखकर आश्चर्य होता है।

(२) ल्युट् प्रत्यय, जिसमें स्थान में न हो जाता है; जैसे कृ से कारण, गम् से गमन, पठ् से पठन, स्वप् से स्वपन, भिद् से भेदन, तृ से तरण आदि। न से ण-हो जाने का नियम तुम पढ़ चुके होगे। ये शब्द पुंल्लिंग हैं और भाववाचक संज्ञा शब्द हैं, जैसे, तुम्हारा गमन हमको दुःख दे रहा है; लेखन में वह तुमसे अच्छा है।

(३) तृच् प्रत्यय जिसमें से तृ रह जाता है, जैसे कृ से कर्तृ, हृ से हर्तृ, भुज् से भोक्तृ आदि। संस्कृत में इन शब्दों के कर्तृकारक का एकवचन रूप कर्त्ता, हर्त्ता, भोक्ता, आदि होता है और हिन्दी में प्रायः इन्हीं रूपों का प्रयोग होता है। इनका अर्थ है—करनेवाला, हरनेवाला, भोग करनेवाला। स्त्रीलिंग में इन्हीं शब्दों के रूप हैं कर्त्री, हर्त्री, भोक्त्री आदि।

(४) क प्रत्यय जिससे कर्तृवाचक शब्द बनते हैं, जैसे कृ से कारक, हृ से हारक, पठ् से पाठक, लिख् से लेखक, वच् से वाचक आदि। स्त्रीलिंग में कारिका, हारिका, पाठिका, लेखिका आदि।

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

अभी तक हमने केवल ऐसे शब्दों का विचार किया है जो धातु और प्रत्यय से बन जाते हैं। ऐसे शब्द भी होते हैं जिनमें धातु से पूर्व कोई दूसरा सिद्ध शब्द आता है जैसे भूपाल, शास्त्रज्ञ, मनोहर, धरणीधर, आदि।

अभ्यास

(१) किसी धातु का क्त प्रत्ययान्त रूप देखकर तुम प्राय: उसका क्ति प्रत्ययान्त रूप बना सकते हो, जैसे —मत—मति; —प्रीत—प्रीति; भक्त—भक्ति आदि। परन्तु कुछ में भिन्नता होती है, जैसे आपन्न—आपत्ति।

(२) ल्युट् प्रत्ययवाले कुछ शब्द और देखो—भवन, चेतन, मन्थन, शोधन, पठन, लेखन, गायन, शयन, जागरण, मरण, मारण, पालन, पोषण, पान, ज्ञान, ज्ञापन आदि।

(३) इन शब्दों के अर्थों में भेद बताओ:—

(क) विलास, अभिलाष, (ख) प्रकाश, अवकाश; (ग) अभिमान सम्मान; (घ) प्रधान, व्यवधान, परिधान, सन्धान; (ङ) संज्ञा, प्रतिज्ञा, प्रज्ञा, अवज्ञा, अनुज्ञा, आज्ञा; (च) आदान, प्रदान; (छ) प्रग्रह, संग्रह, अनुग्रह, निग्रह, विग्रह, आग्रह; (ज) प्रभाव, अनुभव, विभाव, आविर्भाव, तिरोभाव; (झ) पराभव, संभव, अनुभव, विभव, अभिभव।

(३) संज्ञा से बनने वाले शब्द (तद्धित)

जब संज्ञा शब्द में कोई प्रत्यय ज़ोड़कर दूसरा संज्ञा शब्द बनाते हैं तब ऐसे प्रत्ययों को **तद्धित प्रत्यय** कहते हैं और इनके द्वारा बने हुए शब्दों को तद्धितान्त शब्द कहते हैं। यहाँ कुछ तद्धितान्त शब्दों का विवरण दिया जाता है:—

(१) **अपत्यवाचक**—दशरथ का पुत्र दाशरथि, वसुदेव का पुत्र वासुदेव, पृथा का पुत्र पार्थ, धृतराष्ट्र का पुत्र धार्तराष्ट्र, कौशल्या का पुत्र कौशलेय, सुमित्रा का पुत्र सौमित्रि या सौमित्र, कुशिक का पुत्र कौशिक, सूर्य का पुत्र सौरि, पर्वत की कन्या पार्वती, केकय की कन्या कैकेयी, मगध की कन्या मागधी।

(२) **सम्बन्धवाचक**—मत् और वत् प्रत्यय; यदि शब्द के अन्त में या अन्तिम अक्षर से एक अक्षर पूर्व अ हो या म् हो तब तो 'वत्'

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्रत्यय जुड़ेगा, अन्यथा 'मत्' जुड़ेगा। इनके रूप पुंल्लिंग में 'मान्' और 'वान्' तथा स्त्रीलिंग में 'मती' और 'वती' हो जाते हैं। जैसे—धनवान् ('धन' शब्द के अन्त में अ स्वर है), पयस्वान् (पयस् शब्द के अन्तिम अक्षर स् के पूर्व अ स्वर है), लक्ष्मीवान् ('लक्ष्मी' शब्द के अन्तिम अक्षर ई के पूर्व म् है), इसी प्रकार धनवान्, पुत्रवान्, ऐश्वर्यवान्, भगवान्, विद्यावान्, प्रज्ञावान्, कृमिवान्, चमूवान् आदि।

स्त्रीलिंग में इन्हीं शब्दों के रूप धनवती, पयस्वती, पुत्रवती, कीर्त्तिमती, श्रीमती आदि होते हैं।

इन—प्रत्यय के लगने से शब्द के अन्त में पुंल्लिंग में ई और स्त्रीलिंग में इनी हो जाता है, जैसे धन + इन = धनिन, पुंल्लिग में धनी, स्त्रीलिंग में धनिनी। इसी प्रकार कर से करी, करिणी; हस्त से हस्ती, हस्तिनी; दण्ड से दण्डी, दण्डिनी; गृह से गृही, गृहिणी; पाप से पापी, पापिनी।

इत—प्रत्यय से किसी चीज़ के पैदा होने का भाव समझा जाता है; स्त्रीलिंग में 'इता' हो जाता है। उदाहरण—जिसे लज्जा पैदा हो वह पुंल्लिग में लज्जित स्त्रीलिंग में लज्जिता; जिसे पण्डा (अच्छे बुरे में विवेक करने वाली बुद्धि) पैदा हो वह पुंल्लिग में पण्डित, स्त्रीलिंग में पण्डिता। इसी प्रकार तृषा से तृषित, क्षुधा से क्षुधित, कण्टक से कण्टकित, पीड़ा से पीड़ित, उत्कंठा से उत्कंठित, मोह से मोहित।

इक—प्रत्यय लगने से शब्द के प्रथम स्वर की वृद्धि हो जाती है, स्त्रीलिंग में 'इकी' रूप हो जाता है। उदाहरण—दिन में होनेवाला दैनिक, स्त्री० दैनिकी; मास में होनेवाला मासिक, स्त्री० मासिकी; इसी प्रकार वर्ष से वार्षिक, वार्षिकी; देह से दैहिक, दैहिकी; भूत से भौतिक, भौतिकी; देव से दैविक, दैविकी; मुख से मौखिक, उदर से औदरिक, यज्ञ से याज्ञिक, पितृ से पैतृक, नगर से नागरिक।

बहुतेरे शब्दों में प्रथम स्वर की वृद्धि हो जाती है। उदाहरण—शिव का भक्त शैव, विष्णु का भक्त वैष्णव, शक्ति का भक्त शाक्त, लोहे से बनी वस्तु

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लौह, सुवर्ण से बनी वस्तु सौवर्ण, पृथ्वी से बनी वस्तु पार्थिव, कुंकुम से रँगा कपड़ा कौंकुम, बुद्ध को माननेवाला बौद्ध, जिन को माननेवाला जैन।

(३) भाववाचक (१) त्व प्रत्यय से पुंल्लिंग शब्द बनता है; (२) ता प्रत्यय से स्त्रीलिंग शब्द बनता है; (३) इमा प्रत्यय से संस्कृत के अनुसार पुंल्लिग शब्द बनता है, परन्तु हिन्दी में उसका प्रयोग स्त्रीलिंग में होता है, (४) प्रथम स्वर की वृद्धि हो जाती है, तथा कुछ अन्य परिवर्तन हो जाता है, ऐसे शब्द पुंल्लिग होते हैं।

उदाहरण— प्रथम

शब्द	त्व	ता	इमा	स्वर-वृद्धि
	(पुं०)	(स्त्री०)	(हिन्दी में स्त्री०)	(पुंल्लिग)
गुरु	गुरुत्व	गुरुता	गरिमा	गौरव
लघु	लघुत्व	लघुता	लघिमा	लाघव
महत्	महत्व	महत्ता	महिमा	—
पंडित	पंडितत्व	पंडितता	—	पांडित्य
प्रचुर	प्रचुरत्व	प्रचुरता	—	प्राचुर्य्य
सुन्दर	सुन्दरत्व	सुन्दरता	—	सौन्दर्य्य
स्वस्थ	स्वस्थत्व	स्वस्थता	—	स्वास्थ्य
मृदु	मृदुत्व	मृदुता	म्रदिमा	मार्दव

नोट—विशेष स्मरण रखने की बात यह है कि किसी शब्द में दो भाववाचक प्रत्ययों का प्रयोग न होना चाहिए—जैसे सौन्दर्य्यता, लावण्यता ऐसे शब्द अशुद्ध हैं।

(४) **फुटकर**—ऊपर लिखे हुए प्रत्ययों के अतिरिक्त अन्य कितने ही प्रत्यय विविध अर्थों में आते हैं; उन सबका विचार यहाँ नहीं हो सकता, दिग्दर्शन के लिए कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

तुलना दिखाने के लिए—पापी, पापीयान् (अधिक पापी), पापिष्ठ (बहुत अधिक पापी); गुरु, गरीयान्, गरिष्ठ; इसी प्रकार वरीयान्, वरिष्ठ; श्रेयान्,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

श्रेष्ठ; ज्यायान्, ज्येष्ठ; इन्हीं शब्दों के स्त्रीलिंग रूप पापिनी, पापीयसी, पापिष्ठा; गुर्वी (या गुरु), गरीयसी, गरिष्ठा; वरीयसी, वरिष्ठा; आदि होते हैं जिनका प्रयोग हिन्दी में बहुत कम होता है।

तुलना ही के अर्थ में तर और तम प्रत्ययों का प्रयोग होता है, जैसे स्वच्छ, स्वच्छतर, स्वच्छतम; गाढ़, गाढ़तर, गाढ़तम।

अल्पता—दिखाने के लिए क प्रत्यय जैसे पुत्र से पुत्रक, बाल से बालक, पत्र से पत्रक, पुष्प से पुष्पक आदि। स्त्रीलिंग में इनके रूप पुत्रिका, बालिका, पत्रिका आदि होते हैं।

प्रचुरता, विकार, प्रधानता दिखाने के लिए मय प्रत्यय जैसे ज्ञानमय, अन्नमय,, शब्दमय, सुवर्णमय आदि। स्त्रीलिंग में ज्ञानमयी, अन्नमयी आदि।

संख्या का क्रम दिखाने के लिए—प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, द्वादश आदि। स्त्रीलिंग में प्रथमा, द्वितीया, तृतीया चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी आदि।

स्त्रीप्रत्यय—मुख्यतः आ और ई हैं जैसे—

बाल—बाला	दास—दासी
बालक—बालिका	ब्राह्मण—ब्राह्मणी
श्याम—श्यामा	सुन्दर—सुन्दरी
देव—देवी	नर—नारी

कुछ शब्दों में आनी प्रत्यय आता है, जैसे भव—भवानी, रुद्र—रुद्राणि, शर्व—शर्वाणी, इन्द्र—इन्द्राणी, मातुल—मातुलानी।

अभ्यास

(१) इन शब्दों के अर्थ बताओ—भात्रेय, द्रौणि, प्रज्ञावान, अंशुमान, मेधावी, करी, पिपासित, आह्निक, काञ्चन, स्थिरता, स्वत्व, काठिन्य, रजतमय, धैर्य।

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(२) रोहिणी से अपत्यवाचक; बल, कीर्ति, यशस् से सम्बन्धवाचक; सप्ताह से सम्बन्धवाचक (इक); पटु, निपुण, मूर्ख से भाववाचक; सम्पत्ति-मान्; रूपवान्, शिल्पी, धार्मिक, गदभ, सिंह से स्त्रीलिंग बनाओ।

(३) निम्नलिखित शब्द शुद्ध करो—

बुद्धिवान्, बलवान्, प्रथमी।

---

(४) समास

अभी तक हम उन शब्दों का वर्णन करते रहे हैं जो एक धातु में कृत् प्रत्यय लगाकर या एक सिद्ध शब्द में तद्धित प्रत्यय लगाकर बनते हैं। इनके अतिरिक्त दो या अधिक सिद्ध शब्द मिलकर भी नये नये शब्द बनाये जाते हैं। जिस प्रक्रिया से ऐसे नये शब्द पैदा होते हैं उनका नाम **समास** है।

कई शब्द जोड़कर जो शब्द बनता है उसे **समासान्त** शब्द कहते हैं। समासान्त शब्द के टुकड़ों या पदों को अलग अलग करने का नाम **विग्रह** (Expound) है। जैसे 'देवकीनन्दन' यह एक शब्द है। यह 'देवकी' और 'नंदन' इन दो शब्दों से बना है। इन दोनों के बीच में कोई विभक्ति नहीं है। देवकी का 'नंदन' यह पूरा रूप (विग्रह) है, परन्तु 'का' के छोड़ देने से 'देवकीनंदन' यह छोटा रूप रह गया। इसी का नाम 'समास' है। ऐसे ही 'जगन्नाथमाहात्म्य' का पूरा रूप है—'जगत् के नाथ का माहात्म्य'।

जिन शब्दों में समास होता है उनका बल एकसाँ नहीं होता, किन्तु उनमें किसी का अर्थ मुख्य हो जाता है और दूसरे शब्द उस अर्थ को पुष्ट करते हैं। अर्थात् कभी तो पहला शब्द मुख्य होता है, कभी दूसरा, कभी दोनों और कभी उन शब्दों के अलावा एक तीसरी वस्तु का अर्थ निकलता है। इसी दृष्टि से समास के छः भेद हो जाते हैं--(१) अव्ययीभाव, (२) तत्पुरुष, (३) द्विगु, (४) द्वन्द्व, (५) कर्मधारय, (६) बहुव्रीहि।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(१) अव्ययीभाव

पहला शब्द अव्यय होता है और उसका अर्थ मुख्य होता है, पूरे समासान्त शब्द का प्रयोग क्रियाविशेषण की तरह होता है। जैसे 'मैं तुमको यथाशक्ति सहायता दूँगा' इस वाक्य में 'यथाशक्ति' शब्द क्रियाविशेषण है, अर्थात् जितनी शक्ति मुझमें है उससे सहायता दूँगा। यहाँ पर 'यथा' (जितनी) अव्यय शब्द का अर्थ मुख्य है अर्थात् उस शक्ति से कम या अधिक नहीं। इसलिए 'यथाशक्ति' शब्द में 'अव्ययीभाव समास' है।

हिन्दी, फ़ारसी आदि के शब्द भी अव्ययीभाव समासवाले मिलते हैं जैसे, भरपूर, बेहतर, बेख़ौफ, हरसाल, बेतहाशा, बेशक, बिल्कुल, अनजाने, बमुश्किल, बेखटके, नीडर, फ़ी सदी।

जब कोई शब्द दुहराकर क्रियाविशेषण बनता है उसे भी अव्ययीभाव ही समझना चाहिए। जैसे, घड़ी-घड़ी, गली-गली, धीरे-धीरे, बात-ही-बात, चट-पट, दूर-दूर, मन-ही-मन।

नोट—व्यर्थ, बेख़ौफ, निडर आदि शब्दों में अव्ययीभाव समास इसलिए माना जाता है कि उनका प्रयोग क्रियाविशेषण की रीति पर हो सकता है। जैसे 'तुम व्यर्थ बकते हो', 'बेख़ौफ़ चले जाओ', 'वह निडर आ रहा है' पर यदि इन शब्दों का प्रयोग विशेषण की रीति से हो, जैसे 'तुम्हारी पढ़ाई व्यर्थ है', 'वह बेख़ौफ हो गया', 'मैं निडर हूँ', तो इन शब्दों में हम बहुव्रीहि समास मानेंगे, जिसका वर्णन आगे होगा।

(२) तत्पुरुष

दूसरे पद का अर्थ मुख्य होता है और पहले पद में कर्त्ता कारक को छोड़कर और सब कारक आते हैं। जैसे, 'राजपुरुष (राजा का आदमी) आया है, यहाँ पर कहने वाले का मतलब 'पुरुष' या आदमी से है, 'राजा' से नहीं, क्योंकि 'राजा' नहीं आया, 'पुरुष' आया है। इसलिए दूसरा पद, 'पुरुष' मुख्य है, और पहले पद, 'राजा' में सम्बन्ध कारक है। सम्बन्ध कारक का चिह्न लुप्त होने के कारण इसमें सम्बन्ध-तत्पुरुष है। इसी प्रकार 'सुख को प्राप्त'

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

से कर्मतत्पुरुष 'सुखप्राप्त' बना; 'जल से सिक्त' से करण-तत्पुरुष 'जलसिक्त' बना, 'साधु के लिये दक्षिणा' से सम्प्रदान-तत्पुरुष 'साधुदक्षिणा' बना; 'आकाश से पतित' से अपादान-तत्पुरुष 'आकाशपतित' बना; और 'कार्य में निपुण' से अधिकरण-तत्पुरुष 'कार्यनिपुण' बना।

शरणागत, शरभिन्न, देवोपहार, भयकम्पित, गृहस्वामी, जलमग्न, स्वर्गगत, दईमारा, जातिनिकाला, तुलसीदल, घरबैठी, बैलगाड़ी, दहेंड़ी (दही+हाँड़ी), दौलत खाना, रेहननामा आदि शब्दों में भी तत्पुरुष समास है।

इस सम्बन्ध में दो बातें स्मरण रखने योग्य हैं। एक तो यह है कि कभी-कभी समास करने में शब्दों का क्रम बदल जाता है; जैसे 'वैद्यों का राजा' से 'वैद्यराज' या 'राजवैद्य' बनता है। 'पूर्व में भूत (हुआ)' से 'भूतपूर्व' बनता है। इसी प्रकार मंझधार, अर्धरात्र आदि हैं। दूसरे यह कि संस्कृत शब्दों में, नियम की अनुकूलता पाने पर, न के स्थान में ण हो जाता है; जैसे आम्रों का वन = आम्रवण।

निषेधार्थक अव्यय अ और अन् जब शब्द के पहले आते हैं तब भी तत्पुरुष समास माना जाता है। जिस शब्द का प्रथम अक्षर व्यञ्जन होता है उसमें अ लगता है, और जिसका प्रथम अक्षर स्वर होता है उसमें अन् लगता है। जैसे, कर्म--अकर्म उपस्थिति--अनुपस्थिति।

एक बात बड़े महत्त्व की है। सभी स्थानों में अ और अन् को देखकर तत्पुरुष समास न बतला देना चाहिए। समास अर्थ पर अवलम्बित है। जैसे 'अपुत्र' शब्द का अर्थ है 'नहीं हैं पुत्र जिसके' इसलिए इस शब्द में बहुव्रीहि समास है, तत्पुरुष नहीं। इसका विशेष वर्णन आगे मिलेगा।

हिन्दी और फारसी-अरबी के कुछ निषेधार्थक तत्पुरुष शब्दों पर भी ध्यान दो—अजान, अनजान, नालायक, नाखुश, नाक़ाबिल। इन शब्दों में भी बहुव्रीहि समास होता है, जैसे निडर = नहीं है डर जिसको; बेतमीज़ = नहीं है तमीज़ जिसको।

तत्पुरुष समास का भेद उपपद समास कहलाता है, जिसमें संज्ञा शब्द

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

के साथ धातु का प्रयोग होता है और अन्त में कृत् प्रत्यय लगता है जैसे 'भूमि-पाल' का अर्थ है—'भूमि को पालने वाला'; 'जलद' का अर्थ 'जल देने वाला' (बादल); 'गँठकटा' का अर्थ है—'गाँठ को काटने वाला' इसी प्रकार नीचे के शब्दों में भी उपपद समास है।

संस्कृत के शब्द—लाभकर, हानिकारक, लोहकार, हानिकारी; भूधर, तिलकधारी, कर्णधार, वस्त्रधारक, जलद, सुखप्रद, सुखदायी, लाभदायक; शास्त्रज्ञ, विशेषज्ञ, नृप, भूमिप, लोकप; शीघ्रगामी, तुरग, तुरंगम; अनुज, आपत्तिजनक; रोगहर, सन्तापहार, मदहारक, जलज, सरोज, पृथ्वीपाल, राज-धानी, मधुप, उदरपोषी।

हिन्दी के शब्द—घसकटा, कठफोरा, दुधपिया, मक्खीचूस, गलाघोटू, छातीफार, चिड़िमार, समुद्रसोख, मुँहलगा, बतकहा, डरपोक।

फ़ारसी के शब्द—कारीगर, ज़रगर, क़लईगर, (हिन्दी) कुन्दीगर; ऐनक-साज़, कारसाज़, (हिन्दी) घड़ीसाज, मालदार, रिश्तेदार, वज़ादार, क़र्जदार, ज़िलेदार, (हिन्दी) फूलदार, बूटेदार, समझदार, आतशबाज़, नशेबाज़, मुक़दमेंबाज, (हिन्दी) बैठकबाज़, चरसबाज़, इतरदान, क़लमदान, (हिन्दी) सिगारदान, पानदान, पीकदान, सुर्मादानी, फ़ीलवान, शुतुतरबान, (हिन्दी 'वान' कहते हैं) गाड़ीवान, कोचवान, इक्केवान, ग़रीबपरवर, पायजेब, बन्दानिवाज़, सरपोश, करमबन्द, कुतुबफरोश।

—·—

(३) द्विगु

दूसरा शब्द मुख्य होता है और पहला शब्द संख्यावाचक अर्थात् किसी गिन्ती का नाम होता है। इस समास से बहुधा जाना जाता है कि इतनी वस्तुओं का समाहार या समूह है। जैसे 'नवरत्न' में 'नव' संख्यावाचक है और 'रत्न' शब्द प्रधान है, क्योंकि जो कोई तुमसे 'नवरत्न' माँगेगा वह 'रत्न' पाने की आशा रखेगा, न कि 'नव' की। इसी प्रकार त्रिलोकी, चातुर्वर्ण, पंचहड़,

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सप्ताह, सतनजा, त्रिफला, सतसई आदि में द्विगु समास है। इन सबसे समूह का अर्थ निकलता है।

नोट—संख्यावाचक पहला शब्द देखकर ही समास का निर्णय न कह लेना चाहिये, भाव पर ध्यान देना चाहिए। दशमुख शब्द में पहला खंड संख्यावाचक है, परन्तु यह द्विगु समास नहीं; किन्तु बहुव्रीहि समास है, क्योंकि न तो दूसरे शब्द 'मुख' का भाव प्रधान है और न इसमें 'समूह' का भाव पाया जाता है।

---

(४) द्वन्द्व

दोनों (या जितने शब्द हों सब) प्रधान होते हैं, और उन सब के बीच में 'और' का अर्थ छिपा रहता है। जैसे, 'माता-पिता की सेवा करो'। इसमें 'माता और पिता की सेवा करो' यह अर्थ है और 'माता' शब्द तथा 'पिता' शब्द दोनों मुख्य हैं; क्योंकि दोनों की सेवा से मतलब है। इसी प्रकार रामकृष्ण, हाथ-पैर, घर-दुआर, अन्नजल, रातदिन, सर्दीगर्मी, आबहवा, अच्छा-बुरा, पाप-पुण्य आदि में 'द्वन्द्व' समास है।

---

(५) कर्मधारय

दोनों पद प्रधान होते हैं और एकार्थनिष्ठ होते हैं, अर्थात् एक ही वस्तु के लिए आते हैं। पहला पद प्रायः विशेषण होता है या विशेषण का काम करता है और दूसरा पद भी या तो विशेषण होता है या पहिले विशेषण का विशेष्य होता है। जैसे उसके नख श्वेतरक्त हैं। यहाँ पर 'श्वेतरक्त' शब्द में दोनों पद विशेषण हैं—और दोनों प्रधान हैं; क्योंकि नखों को श्वेतरक्त होने के लिए 'श्वेत' और 'रक्त' दोनों होना चाहिये। 'सज्जन' शब्द में 'सत्' (अच्छा) विशेषण है और 'जन' (आदमी) विशेष्य है। इसलिए इन शब्दों में 'कर्मधारय' समास है। इसी प्रकार महापुरुष, छोटीहड़, भलामानुस, नेकराह, स्याहसफेद, खटमिट्ठा आदि शब्दों में कर्मधारय समास है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जब कर्मधारय में उपमा दिखलाई जाती है तब या तो उपमान और उपमेय को एक ही वस्तु मान लेते हैं या उपमान के चिन्ह को उड़ा देते हैं। जैसे "जय महेश-मुखचन्द्र-चकोरी" में 'मुखचन्द्र' शब्द आया है, उसका तात्पर्य तो यह है कि 'मुख चन्द्र के समान' है; परन्तु भाव की गहराई दिखलाने के लिए कहते हैं कि मुख चन्द्र ही है, और आगे उसका निर्वाह भी करते हैं कि उस मुख चन्द्र के लिए चकोरी भी मौजूद है। स्मरण रहे कि चकोरी चन्द्र से प्रेम करती है, मुख से नहीं। इसी प्रकार पितृदेव, चरणकमल आदि शब्द हैं।

उपमान का चिन्ह उड़ा देने के उदाहरण—कमललोचन (कमल समान लोचन), चन्द्रमुख (चन्द्रवत् मुख), कर्पूरगौर (कर्पूर सरीखा गौर)।

कभी कभी विशेषण पीछे रख देते हैं, जैसे, 'पुरुषान्तर' जिसका अर्थ है अन्य पुरुष; परन्तु यह अपवाद है, और जब तक दूसरे रूप में समास हो सके इस रूप में न करना चाहिए। जैसे 'पुरुषाधम' का ठीक विग्रह है 'पुरुषों में अधम' (अधिकरण तत्पुरुष), नरोत्तम = नरों में उत्तम; ऋषिवर = ऋषियों में वर (श्रेष्ठ)। संस्कृत में ऐसा ही होता है।

कु, दुः, सु आदि जो विशेषण का अर्थ रखते हैं कर्मधारय समास के पूर्व शब्द बनते हैं, जैसे कुत्सित संग = कुसंग; दुष्ट व्यवहार = दुर्व्यवहार; सुन्दर समाज = सुसमाज। कु शब्द के कई प्रकार के रूप होते हैं, जैसे कु + अन्न = कदन्न; कु + पुरुष = कापुरुष; कु (थोड़ा) + उष्ण = कदुष्ण, कोष्ण, कवोष्ण।

नोट—पूर्वपद विशेषण देखकर सदा यह न कह देना चाहिए कि कर्मधारय समास है। जैसे "तुम्हारे सच्चरित्र पर मैं प्रसन्न हूँ"—इस वाक्य में 'सच्चरित्र' शब्द कर्मधारय है; परन्तु "तुम्हें सच्चरित्र बनना चाहिए" —इस वाक्य में सच्चरित्र शब्द बहुव्रीहि है, जिसका वर्णन आगे होगा।

———

(६) बहुव्रीहि

दिये हुए शब्दों में से किसी का अर्थ मुख्य नहीं होता; किन्तु उन्हीं शब्दों

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

को जोड़ने से एक नया अर्थ पैदा हो जाता है; वह प्रधान होता है। जैसे 'चन्द्रशेखर' शब्द में 'चन्द्र' चन्द्रमा का नाम है और 'शेखर' शिरोभूषण का नाम है; परन्तु पूरा शब्द 'चन्द्रशेखर' न चन्द्रमा है और न शिरोभूषण; किन्तु 'महादेव' का नाम है, अर्थात् ऐसा कोई जिसका 'शेखर' या शिरोभूषण 'चन्द्र' हो। इसी प्रकार प्राप्त है धन जिसको वह 'प्राप्तधन' है; कृत (किया गया) है कृत्य (कर्त्तव्य) जिससे वह 'कृतकृत्य' है; निर्गत है जल जिससे वह 'निर्गतजला' (नदी) है; वज्र है आयुध जिसका वह 'वज्रायुध' (इन्द्र) है; पंच हैं द्वार जिसमें वह 'पंचद्वार' (घर) है। अ, अन्, निः, दुः, वि, परा, सु, कु, स, सह आदि शब्द बहुव्रीहि के पूर्वपद होते हैं। जैसे अभय = नहीं है भय जिसको; अनादि = नहीं है आदि जिसका; निर्लज्ज = नहीं है लज्जा जिसको; दुर्भाग्य = दुष्ट है भाग्य जिसका; सपुत्र = साथ है पुत्र जिसका; सहोदर = समान है उदर (माता का पेट) जिसका। इसी प्रकार विमुख, पराङ्मुख, सुमुखी, कुमति आदि शब्द हैं।

नेक, बद, खुश, खूब, कम, ला आदि फारसी शब्द भी वह काम करते हैं; जैसे नेक है नीयत जिसकी वह 'नेकनियत' है। इसी प्रकार बदमाश, खुशदिल, खूबसूरत, कमबख्त, लाजवाब आदि शब्दों में भी बहुव्रीहि समास है।

अब एक नया उदाहरण लो। 'अश्वमुख' शब्द से वह व्यक्ति समझा जायगा जिसका मुख अश्व के मुख के समान हो, न कि अश्व के समान हो; इस अर्थ में 'अश्वमुखमुख' शब्द बनना चाहिए, परन्तु बीच का पद (मुख) छोड़ दिया गया है। ऐसे समास को **मध्यमपदलोपी** बहुव्रीहि कहते हैं। इसी प्रकार शेरदिल, घुड़मुँहा, हंसगमना, तोतेचश्म आदि शब्द हैं।

अभ्यास

(१) समास किसे कहते हैं ? उसके कितने भेद हैं ? किस भेद में किस पद के अर्थ की प्रधानता होती है ? उदाहरण दो।

(२) नीचे लिखे शब्दों के विग्रह करके हर दशा में समास का भेद बताओः—

यावज्जीवन, प्रतिदिन, बीचोबीच, देवालय, रामदुहाई, अनुदार, स्वास्थ्य-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वर्द्धक, पनडुब्बी, धूपदानी, पंचवटी, हरिहर, नीलाथोथा, रामचन्द्र, चतुर्भुज, अनन्त, दुधमुहाँ, अल्पबुद्धि, सुगन्ध, सुगन्धित, प्रत्यक्ष, दशाह, महादेव, कविराज, मध्याह्न, अन्योन्य।

(३) नीचे लिखे शब्दों में से कौन कौन समासान्त नहीं, और क्यों ? जो समासान्त हैं उनका विग्रह करो, और समास का भेद बताओः—

हँसमुख, देहवान्, लगाव, बेचारा, निर्विघ्न, उपदेश, मनमाना, गैरहाज़िर, भड़कीला, सुग्रीव, चौपाई।

(४) मध्यमपदलोपी समास किसे कहते हैं ? दो उदाहरण दो।

(५) इन अर्थों में समासान्त शब्द बनाओः—

जगत् का स्वामी, तीन कोने हों जिसमें, घोड़े का सवार, पंच तीर्थों का समूह, जितना धन हो उसके अनुसार, जिसके पास धन हो, जो खट्टा हो और मीठा हो, पुण्डरीक (कमल) के समान अँखियाँ हों जिसकी, नागों का राजा, जो पूर्व में दृष्ट हो।

(६) इन शब्दों का विग्रह तत्पुरुष और बहुव्रीहि के अनुसार करो; और उन्हीं अर्थों के अनुसार वाक्यों में इनका प्रयोग करोः—विश्वमित्र, कर्म-बन्धन, जगत्कारण।

(७) नीचे लिखे शब्दों का विग्रह जैसा कहा जाय करो; वाक्य में इन्हीं शब्दों का प्रयोग करोः—दुश्चरित्र (कर्म० और बहु०) सप्तद्वीप (द्विगु और बहु०) प्राप्तधन (तत्पु० और बहु०) बेकाम (अव्य० और बहु०)।

(८) क्या अव्यय शब्द, संख्यावाचक शब्द, और विशेषण शब्द पूर्वपद होने से सदा अव्ययीभाव, द्विगु और कर्मधारय समास ही होते हैं ? यदि नहीं तो पहचान के लिए और क्या लक्षण देखोगे ? दो दो उदाहरणों के द्वारा यह बात समझाओ।

(५) सन्धि (Joint)

समास में बहुधा शब्दों को जोड़ने की आवश्यकता होती है। 'जोड़ने' या 'मिल जाने' का अर्थ है 'सन्धि' होना। जब दो अक्षर मिलते हैं तो उनमें से एक में या दोनों में कुछ परिवर्त्तन हो जाता है और एक नया रूप पैदा हो

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जाता है, उसी को सन्धि कहते हैं। 'राम' और 'ईश्वर' शब्दों के मिलने से 'रामेश्वर' शब्द बन गया; जगत् + नाथ से 'जगन्नाथ' शब्द बन गया; मनः + हर से 'मनोहर' शब्द बन गया।

सन्धियाँ तीन प्रकार की होती हैं—(क) **स्वर सन्धि**, जब एक स्वर दूसरे से मिलता है; (ख) **व्यञ्जन सन्धि**, जब एक व्यञ्जन दूसरे व्यञ्जन या स्वर से मिलता है; और (ग) **विसर्ग सन्धि**, जब विसर्ग किसी स्वर या व्यञ्जन से मिलता है।

स्वर सन्धि

अ, इ, उ, ऋ (ह्रस्व या दीर्घ) के साथ ह्रस्व या दीर्घ समान स्वर मिलने से दीर्घ स्वर बन जाता है। जैसे, धनार्थी, विद्यार्थी, हरीच्छा, महीन्द्र, श्रीश, भानूदय, विष्णूरु।

अ या आ + इ या ई = ए; रामेश्वर, धरेन्द्र।

अ या आ + उ या ऊ = ओ; सर्वोच्च, गंगोदक।

अ या आ + ऋ = अर्; देवर्ण।

अ या आ + ए या ऐ = ऐ; स्वर्गैश्वर्य।

अ या आ + ओ या औ = औ; काष्ठौषधि।

इ या ई + (इ ई के अतिरिक्त) कोई भी स्वर = य् + वही स्वर; बुद्धि + अनुसार = बुद्ध्यनुसार; अति + उज्ज्वल = अत्युज्ज्वल; प्रति + एक = प्रत्येक।

उ या ऊ + (उ, ऊ के अतिरिक्त) कोई भी स्वर = व् + वही स्वर; लघु + अंचल = लघ्वंचल; मेरु + आगत = मेर्वागत।

ऋ + (ऋ के अतिरिक्त) कोई भी स्वर = र् + वही स्वर; पितृ + अर्थ = पित्रर्थ।

ए + कोई स्वर = अय् + वही स्वर; ने + अन = नयन।

ऐ + कोई स्वर = आय् + वही स्वर; नै + अक = नायक।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ओ + कोई स्वर = अव् + वही स्वर; भो + अति = भवति ।
औ + कोई स्वर = आव् + वही स्वर; पौ + अक = पावक ।

व्यञ्जन सन्धि

तुम जानते हो कि किन-किन व्यञ्जनों के समूह कवर्ग, पवर्ग, अन्तस्थ आदि कहलाते हैं। पाचों वर्गों में से हर एक में पाँच पाँच अक्षर हैं।

(१) यदि क् च् ट् प् के आगे किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ अक्षर या कोई अन्तस्थ अक्षर या ह या कोई स्वर आयें तो क् च् ट् प् अपने ही वर्ग के तृतीय अक्षर में बदल जायेंगे। जैसे दिक् + ईश = दिगीश; षट् + आनन = षडानन।

(२) यदि क् च् ट् प् के आगे किसी वर्ग का पंचम अक्षर आये तो क् च् ट् प् अपने ही वर्ग के पंचम अक्षर में बदल जायँगे। जैसे वाक् + मात्र = वाङ्मात्र; विट् + मूत्र = विण्मूत्र। त् के लिए विशेष नियम हैं।

त् + कोई स्वर या ग्, घ्, द्, ध्, ब्, भ्, य्, र्, व हो तो त् के स्थान में द् होगा।

त् + च् या छ	हो तो	त् के	स्थान में	च्	होगा।
त् + ज् या झ	,,	,,	,,	ज्	,,
त् + ट् या ठ्	,,	,,	,,	ट्	,,
त् + ड् या ढ्	,,	,,	,,	ड्	,,
त् + न् या म्	,,	,,	,,	न्	,,
त् + ल्	,,	,,	,,	ल्	,,
त् + श्	,,	दोनों मिलकर		च्छ	,,
त् + ह्	,,	,,	,,	द्ध	,,

जैसे बृहत् + गृह = बृहद्गृह; उत् + चारण = उच्चारण; उत् + ज्वल = उज्ज्वल; उत् + डयन = उड्डयन, बृहत् + नद = बृहन्नद, आपत् + मित्र = आपन्मित्र, तत् + लीन = तल्लीन, महत् + शब्द = महच्छब्द, तत् + हित = तद्धित।

यदि अनुस्वार से परे स्वर आये तो अनुस्वार का म् हो जाता है; जैसे सं + आचार = समाचार; सं + ऋद्धि = समृद्धि।

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

विसर्ग सन्धि

विसर्ग के पूर्व कोई न कोई स्वर अवश्य रहता है, और उसके परे या तो कोई स्वर रहता है या कोई व्यञ्जन रहता है; इसलिये सन्धि का विचार करने में विसर्ग के आगे और पीछे वाले अक्षरों पर ध्यान देना होता है। नीचे लिखे नियमों में हम विसर्ग के साथ ही उससे पहले आने वाला स्वर दिखायेंगे।

अः + अ = दोनों मिलकर ओ। जैसे मनः + अनुकूल = मनोऽनुकूल (चिन्ह ऽ 'लुप्ताकार' कहलाता है और सूचित करता है कि पहले उसके स्थान पर 'अ' था जो सन्धि के कारण लुप्त हो गया।)

अः + (अ के अतिरिक्त) अन्य कोई स्वर = विसर्ग का लोप, फिर स्वर सन्धि नहीं हो सकती। जैसे मनः + उत्साह = मनउत्साह।

अः + पाँचों वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम, व्यञ्जन या अन्तस्थ व्यंजन या ह = अः के स्थान में ओ। जैसे मनः + वृत्ति = मनोवृत्ति, यशः + गान = यशोगान।

अः + क्, ख्, प्, फ् = कोई परिवर्त्तन नहीं। जैसे पयः + पान = पयःपान, पयः + फेन = पयःफेन।

अः + च् या छ = विसर्ग के स्थान पर श्। जैसे पुरः + चरण = पुरश्चरण।

अः + ट् या ठ् = विसर्ग के स्थान पर ष्। जैसे पुनः + टंकोर = पुनष्टंकोर।

अः + त् या थ् = विसर्ग के स्थान पर स्। जैसे अन्तः + तल = अन्तस्तल।

अः + श् = विसर्ग के स्थान पर श या कोई परिवर्त्तन नहीं। जैसे पुनः + शब्द = पुनश्शब्द या पुनः शब्द।

अः + स् = विसर्ग के स्थान पर स् या कोई परिवर्त्तन नहीं। जैसे पुरः + सर = पुरस्सर या पुरःसर।

नोट—प्रातः, पुन, अन्तः आदि कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके विसर्ग का न लोप होता है और न 'ओ' में परिवर्त्तन होता है किन्तु र् हो जाता है जैसे पुनः + अपि = पुनरपि; अन्तः + आत्मा = अन्तरात्मा; प्रातः + भोजन = प्रातर्भोजन; अहः + निश = अहर्निश; परन्तु अहः + रात्र = अहोरात्र।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आः + स्वर या व्यंजन; ऐसे शब्द प्रायः हिन्दी में नहीं आते।

यदि विसर्ग के पूर्व अ आ के अतिरिक्त और कोई स्वर हो और विसर्ग के परे कोई स्वर या पाँचों वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम व्यंजन या य, ल, व, ह हों तो विसर्ग के स्थान में र् हो जाता है। जैसे निः+अर्थ=निरर्थ; दुः+उपाय=दुरुपाय; प्रादुः+भाव=प्रादुर्भाव।

यदि विसर्ग के पूर्व अ आ के अतिरिक्त और कोई स्वर हो और विसर्ग के परे र् हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उससे पूर्व का स्वर दीर्घ कर दिया जाता है। जैसे निः+रस=नीरस; निः+रोग=नीरोग। पुनः प्रातः आदि कुछ शब्दों में अ भी दीर्घ हो जाता है, जैसे पुनः+रम्य=पुनारम्य।

इः या उः+क्, ख, प्, फ, ट्, ठ्=विसर्ग के स्थान पर प्रायः ष्। जैसे निः+कारण=निष्कारण; निः+फल=निष्फल; धनुः+टंकार=धनुष्टंकार।

इः या उः+च् या छ्=विसर्ग के स्थान पर श् जैसे निः+चल=निश्चल; निः+छल=निश्छल।

इः या उः+त् या थ्=विसर्ग के स्थान पर स्। जैसे निः+तार=निस्तार।

इः या उः+श्=विसर्ग के स्थान पर श् या कोई परिवर्त्तन नहीं। जैसे निःशेष= निश्शेष या निःशेष।

इः या उः+स्=विसर्ग के स्थान पर स् या कोई परिवर्त्तन नहीं। जैसे निःसन्देह=निस्सन्देह या निःसन्देह।

अभ्यास

(१) निम्नलिखित शब्दों की सन्धियाँ तोड़ो—

परमार्थ, अधीश्वर, नदीश, देवेन्द्र, महेश, हितोपदेश, महोत्सव, वसन्तर्तु, महर्षि, तथैव, यद्यपि, इत्यादि, प्रत्युपकार, स्वागत, अन्वेषण, पित्रनुमति, गवीश, दिग्गज, वागीश, प्राङ्मुख, उन्मत्त, षड्दर्शन, चिदानन्द, उच्छिन्न, स्वच्छाय, उद्धार, उद्घाटन, निष्कपट, निश्चिन्त, निस्तार, मनोवेग, मनोरथ, बहिर्देश, निर्भय, नीरन्ध्र, प्रतिषेध, आम्रवण, पुनरेव।

l Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(२) सन्धि करो—

देव + आलय, मही + इन्द्र, विधु + उदय, पर + ईश, जल + ऊर्मी, हिम + ऋतु, एक + एक, महा + औदार्य, देवी + आगम, पो + अन, दिक् + अम्बर, चित् + मय, गृह + छिद्र, सत् + जाति, भविष्यत् + वाणी, सत् + आचार, निः + कण्टक, निः + छत्र, बहि + तल, मनः + नीत, निः + धन, पयः + फेन, पितृ + वन, निः + सिद्ध, सं + उदय, अनु + स्थान, पुनः + आगमन ।

—

(६) शब्द के भेद (Kinds of words)

उत्पत्ति के विचार से संज्ञा शब्द तीन प्रकार के कहे जाते हैं—(१) **रूढि संज्ञा** उसे कहते हैं जिसके किसी खण्ड का कोई अर्थ न हो। 'जैसे, 'घर' शब्द में 'घ' और 'र' का अलग अलग कुछ अर्थ नहीं है, कुर्सी शब्द में 'कुर' और 'सी' अलग अलग कुछ अर्थ नहीं रखते।

(२) **यौगिक संज्ञा** उसे कहते हैं जो दो या अधिक शब्दों के योग से बनी हो और उन शब्दों से जो एक अर्थ निकलता है, उसे प्रकट करती हो। जैसे 'कठ-घरा' अर्थात् काठ का घर, बोलने वाला, कलमदान।

(३) **योगरूढि संज्ञा** उसे कहते हैं जो स्वरूप में तो यौगिक संज्ञा के समान हो, परन्तु जिससे कई वस्तुओं का बोध होता हो, जिनमें से केवल एक के लिए उसका प्रयोग होता; जैसे 'जलज' शब्द का अर्थ है —'पानी में पैदा होने वाला।' यद्यपि सिवार, काई, कुमुद, कमल, जोंक, मछली आदि अनेक की उत्पत्ति जल में होती है, तथापि 'जलज' शब्द का अर्थ 'कमल' ही माना जाता है। इसी प्रकार 'त्रिफला' शब्द से आँवला, हड़, बहेड़ा—इन्हीं तीन फलों का ग्रहण होता है, यद्यपि उसका शब्दार्थ है—तीन फल।

———

(७) शब्दों के अर्थ (Meanings of words)

शब्दों की बनावट पर हम पहले विचार कर चुके हैं। अब हमें देखना है कि शब्दों से अर्थ कैसे निकलते हैं। हाकिम चोर से कहता है, "तुमने चोरी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

की है, अतः तुम्हें दण्ड मिलेगा", सेवक संन्यासी से कहता है, "भगवन्, आपका दण्ड मिल गया।" दोनों वाक्यों में 'दण्ड' शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों में हुआ है, तथापि सुननेवाले को भ्रम नहीं होता, और इनका ठीक ही अर्थ समझा जाता है, क्योंकि एक प्रकरण में दूसरा अर्थ लेना मूर्खता है। इससे ज्ञात हुआ कि अर्थ समझने के लिए प्रकरण जानने की आवश्यकता है। कभी कभी पढ़ने में कोई अपरिचित शब्द आ जाता है, उसका अर्थ प्रकरण से समझ लिया जाता है।

मान लीजिए कि 'साँप' शब्द का अर्थ बतलाना है। इसे हम या दूसरा शब्द, नाग, अहि आदि देकर बतला सकते हैं, या कह सकते हैं कि 'साँप' शब्द संस्कृत के 'सर्प' शब्द का अपभ्रंश है, और सर्प शब्द 'सृप' धातु से बना है, जिसका अर्थ है रेंगना, या यह कह सकते हैं कि साँप एक जीव है, जो इतने से इतने तक लम्बा होता है, पैर नहीं होते, रेंगता है, इत्यादि; या एक साँप लेकर दिखा सकते हैं और कह सकते हैं कि यही साँप है; या चित्र बनाकर दिखा सकते हैं; या हाथ से संकेत द्वारा सूचित कर सकते हैं। अन्तिम तीन उपायों से प्रत्येक दशा में काम नहीं चल सकता, परन्तु प्रथम तीन उपाय हर हालत में लागू हो सकते हैं। उन्हें हम क्रम से कह सकते हैं **पर्य्यायवाची** शब्द बताना, शब्द की **व्युत्पत्ति** बतलाना, और **लक्षण** बतलाना। इस प्रकार शब्द का अर्थ तीन प्रकार से किया जा सकता है।

व्युत्पत्ति से पूरा अर्थ नहीं निकलता। व्युत्पत्ति के अनुसार साँप का अर्थ है रेंगनेवाला; तो क्या साँप के अतिरिक्त अन्य जीव नहीं रेंगते? सब प्रकार के रेंगनेवाले जीवों में साँप भी एक है, परन्तु इस विशेष जीव के लिए साँप शब्द **रूढ़ि** है, अर्थात् प्रयोग से नियत हो गया है कि इस शब्द से इसी जीव का ग्रहण होगा। इसलिए व्यवहार में हमें रूढ़ि वाला ही अर्थ लेना चाहिए।

पर्य्यायवाची शब्द से तब काम चलता है जब उसका ठीक ठीक अर्थ हमको पहले से ज्ञात हो। जैसे हम 'मार्त्तण्ड' शब्द का अर्थ न जानते हों, परन्तु 'सूर्य' शब्द का अर्थ जानते हों तो मार्त्तण्ड के स्थान में सूर्य कह देने से अर्थ समझ में आ जायगा।

nal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

परन्तु अर्थ का यथार्थ ज्ञान हमको **लक्षण** से होता है। सम्भव है कि किसी वस्तु का पूरा लक्षण हम शब्दों के द्वारा बतला न सकें, तथापि देखते देखते, व्यवहार से, अनुभव से हम सभी ज्ञातव्य बातों के आवश्यक लक्षण जानते हैं, और शब्द के उच्चारण मात्र से उन लक्षणों से लक्षित पदार्थ का बोध हमको हो जाता हैं ।

सारांश यह है कि जिस अर्थ में जिस शब्द का प्रयोग सब लोग करते हैं उसी अर्थ का बोध हमारे मन में होता है, तभी कहा जा सकता है कि हम उस शब्द का अर्थ समझते हैं। ऐसे अर्थ को **वाच्यार्थ** कहते हैं । साधारण बातचीत में वाच्यार्थ ही समझा जाता है ।

अब हमें मालूम हुआ कि शब्द में **वाच्यार्थ** बतलाने की शक्ति होती है। इस शक्ति को अभिधा (Denotation) कहते हैं। परन्तु शब्द में इससे भी अधिक शक्तियाँ होती हैं। जिनका वर्णन नीचे दिया जाता है।

"यह लड़का स्कूल की नाक है"; "हमने पैसे के बलपर लड़ाई छेड़ी है"; "पुत्र बुढ़ापे की लाठी है"; "औरंगजेब ने तख्त के लिये अपने बाप को कैद कर लिया"—इन वाक्यों में नाक का अर्थ है 'इज्जत', पैसा का 'धन', लाठी का 'सहायक' और तख्त का 'राज्य' ये अर्थ इन शब्दों के वाच्यार्थ नहीं हैं—किन्तु वाच्यार्थों से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखते हैं। ऐसे अर्थों को **लक्ष्यार्थ** कहते हैं, और शब्दों की जिस शक्ति से लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जा सकता है उसे **लक्षणा** (Connotation) कहते हैं।

अंगद रावण से कहते हैं "सत्यशीलता तव जग जागी। पावा दरश हमहु बड़ भागी"—इसका वाच्यार्थ तो हुआ कि 'तुम बड़े सत्यशील हो', परन्तु कहने का यथार्थ भाव है कि 'तुम अत्यन्त झूठे हो', इसी प्रकार किसी आदमी ने दूसरे से हास्य से कहा, "तुम्हारे चेहरे पर मुझे बेइमानी दिखाई देती है।" उसने उत्तर दिया "क्या मेरा मुँह दर्पण है?" इस उत्तर का वाच्यार्थ यह कभी नहीं हो सकता कि तुम स्वयं बेईमान हो; परन्तु कहने वाले का तात्पर्य यही है और इस प्रकार आता है कि दर्पण में आदमी अपना ही प्रतिविम्ब

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

देखता है, परन्तु तुम्हारे चेहरे पर बेईमानी के जो चिन्ह हैं उनका प्रतिबिम्ब तुम मेरे चेहरे में देखते हो, अतः मेरा चेहरा तुम्हारे लिए दर्पण का काम करता है, सो बात नहीं है। ऐसे अर्थ को व्यंग्यार्थ कहते हैं, और शब्द की जिस शक्ति से व्यंग्यार्थ लिया जाता है उसे व्यञ्जना (Suggestion) कहते हैं। इसीका दूसरा नाम ध्वनि है।

तुमने देख लिया कि वाच्यार्थ में कोई बारीकी नहीं होती, लक्ष्यार्थ में कुछ होती है, और व्यंग्यार्थ में विशेष होती है। अच्छे लेखकों और कवियों की भाषा इसलिए रोचक होती है कि उसमें व्यंग्यार्थ खूब होता है

अभ्यास

(१) शब्द में अर्थ देने की कितनी और कौन कौन शक्तियाँ होती हैं?

(२) शब्द का वाच्यार्थ कै प्रकार से दिया जा सकता है? उदाहरण दो।

(३) क्या प्रत्येक शब्द का पूरा वाच्यार्थ उसकी व्युत्पत्तिसे निकलता है?

(४) पर्य्यायवाची शब्द के द्वारा किसी शब्द का अर्थ किस दशा में समझा जा सकता है?

(५) किसी शब्द का ठीक अर्थ समझने में प्रकरण से क्या सहायता मिलती है?

(६) नीचे लिखे वाक्यों का लक्ष्यार्थ बताओ:—

हम तुम्हें एक सुई भी न देंगे। गुण की माँग सर्वत्र होती है। अब गद्दी का स्वामी कौन होगा? भाई, लाठी उठाने का समय नहीं है। मैं तुम्हारी छत्रछाया में आ गया हूँ। मिठाई देखकर मक्खियाँ दौड़ती हैं। लाल पगड़ी देखकर डर लगता है।

(७) नीचे लिखे सन्दर्भों में व्यंग्यार्थ बताओ:—

(१) लक्ष्मणजी परशुरामजी से कहते हैं कि "(तुम) मातहिं पितहिं उऋण भये नीके।" (२) "कहेउ लषण मुनि शील तुम्हारा। को नहीं जान विदित संसारा।"

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(८) पर्य्यायवाचक, विपरीतार्थक, अनेकार्थक शब्द

(क) पर्य्यायवाचक शब्द

भाषा में बहुतेरे ऐसे शब्द होते हैं जिनके पर्य्यायवाचक शब्द नहीं मिलते। जिनके एक या दो या अनेक पर्य्यायवाची शब्द मिलते हैं, उनके लिए भी यह आवश्यक नहीं कि उन सबका अर्थ ठीक ठीक वही हो। उसमें थोड़ा थोड़ा अन्तर भी हो सकता है। जैसे लज्जा और ग्लानि पर्य्यायवाचक शब्द हैं; परन्तु इनके भाव ठीक ठीक एक समान नहीं। अपने से कोई बुरा काम हो जाने पर दूसरों के सामने प्रकट होने में लज्जा होती है, परन्तु अकेले रहने पर भी उस बात का पश्चात्ताप मन में रहता है वह ग्लानि है। कुछ पर्य्यायवाचक शब्द नीचे दिये जाते हैं।

अग्नि—वह्नि, ज्वलन, पावक, अनल, दहन, कृशानु।

आकाश—अभ्र, अम्बर, अन्तरिक्ष, गगन, ख, नभ, व्योम।

आनन्द—मोद, प्रमोद, प्रमद, हर्ष, आमोद, सुख, शर्म।

इच्छा—कांक्षा, स्पृहा, ईहा, वाञ्छा, लिप्सा, मनोरथ, अभिलाषा।

कमल—उत्पल, कुवलय, इन्दीवर, पद्म, नलिन, अरविन्द, शतपत्र, तामरस, सरसीरुह, राजीव, पुष्कर, अम्भोज।

किरण—कर, मरीच, मयूख, अंशु।

गंगा—विष्णुपदी, जाह्नवी, भागीरथी, देवनदी।

गणेश—विनायक, विघ्नराज, एकदन्त, गजानन, गणाधिप।

गृह—गेह, वेश्म, निकेतन, सदन, भवन, आगार, मन्दिर, अयन, आयतन।

चन्द्र—चन्द्रमा, हिमांशु, इन्दु, विधु, निशापति, सोम, मृगांक, कलानिधि।

जल—वारि, सलिल, पय, अमृत, जीवन, वन, उदक, तोय।

दुर्गा—उमा, गौरी, शिवा, भवानी, पार्वती, गिरिजा।

देव—देवता, अमर, त्रिदश, विबुध, सुर, आदित्य, गीर्वाण।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

देह—कलेवर, वपु, शरीर, विग्रह, काय, तनु, मूर्ति।

पक्षी—शकुन्त, शकुनि, द्विज, पतङ्ग, अंडज।

पंडित—विद्वान, सुधी, कोविद, बुध, धीर, मनीषी, प्राज्ञ, विचक्षण।

पृथ्वी—भू, भूमि, अचला, धरा, धरित्री, धरणी, वसुधा, वसुन्धरा, उर्वी, अवनि, मेदिनी, मही, धात्री, जगती, क्षोणी, क्षिति, वसुमति।

ब्रह्मा—पितामह, स्वयंभू, चतुरानन, विरञ्चि, विधाता, विधि।

ब्राह्मण—द्विज, भूदेव, विप्र, अग्रजन्मा।

भ्रमर—मधुकर, भृङ्ग, षट्पद, अलि, द्विरेफ।

सूर्य—सूर, आदित्य, दिवाकर, भास्कर, प्रभाकर, अर्क, मार्तण्ड, रवि, तरणि, भानु, सहस्रांशु।

एकार्थक शब्दों में प्रभेद

भ्रम और प्रमाद—सावधान न रहने से जो चूक हो जाय वह भ्रम है; मूर्खता से या जान-बूझकर परवाह न करने से जो चूक हो जाय वह प्रमाद है।

दया और कृपा—किसी को दुःखी देखकर हृदय पिघल उठता है, वह दया है; छोटों के लिये सहायता करने की इच्छा करना कृपा है।

अलौकिक और अस्वाभाविक—जो कुछ लोक या समाज में प्रायः न देखा जाता हो, जैसे रामचन्द्र की पितृभक्ति अलौकिक थी। जो कुछ स्वभाव या प्रकृति या सृष्टि-नियम के विरुद्ध हो, जैसे अपने लिए दुःख पैदा करने की चेष्टा मनुष्य के लिए अस्वाभाविक होगी।

ईर्ष्या और द्वेष—दूसरों की उन्नति देखकर अकारण ही बुरा मानना ईर्ष्या है; यदि दूसरों से घृणा या शत्रुता किसी कारण की जाय तो वह द्वेष है।

मूर्ख, मूढ़, अनभिज्ञ—जिसमें समझने की शक्ति ही न हो वह मूर्ख या मूढ़ है; जिसे समझने या अनुभव करने का अवसर ही न मिला हो वह अनभिज्ञ है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रेम, स्नेह, प्रणय, वात्सल्य—प्रेम या प्रीति साधारण वस्तु है; छोटों के प्रति जो प्रेम है वह स्नेह है, स्त्री के प्रति जो प्रेम है वह प्रणय है; अपने पुत्र, शिष्य, आदि के लिये जो प्रेम है वह वात्सल्य है।

श्रद्धा, भक्ति—बड़ों के गुण विशेष के कारण जो अनुराग उत्पन्न हो वह श्रद्धा है; देवता या गुरुजनों में जो प्रेम हो वह भक्ति है।

दुःख, खेद, क्षोभ, शोक, विषाद—दुःख साधारण वस्तु है; पर खेद पछतावे में या निराशा में होता है; क्षोभ कोई अनिष्ट हो जाने पर होता है; शोक उस व्याकुलता का नाम है जो किसी के मर जाने या उसी के समान दुःख से होता है; विषाद उस बड़े दुःख का नाम है जिसमें कर्त्तव्य-ज्ञान नहीं रहता

(ख) विपरीतार्थक शब्द

शब्दों का विपरीत अर्थ जानने से भी उनका ठीक ठीक भाव समझा जा सकता है जैसे 'स्थावर' का भाव 'जंगम' के उलटे भाव से समझ में आ जाता है। शब्दों का विपरीतार्थ कई तरह से दिया जा सकता है:—

(अ) अन्य शब्दों द्वारा। जैसे सुख दुःख।

(इ) व्यञ्जन से प्रारम्भ होने वाले शब्द के आदि में अ जोड़ने से, और स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्द के आदि में अन् जोड़ने से, जैसे सत्, असत्; ईश, अनीश।

(उ) उपसर्ग जोड़ने से। जैसे सम, विषम।

(ऋ) भिन्न भिन्न उपसर्गों से। जैसे संयोग, वियोग।

विपरीतार्थक शब्दों के कुछ जोड़े नीचे दिये जाते हैं:—

(अ) भिन्न शब्द

आदि—अन्त। आकाश—पाताल। शत्रु—मित्र। आरम्भ—अन्त। विष—अमृत। कोमल—कठोर। श्रद्धा—घृणा। ज्येष्ठ—कनिष्ठ। जड़—चेतन। जीवन—मरण। पण्डित—मूर्ख। स्थूल—सूक्ष्म। सृष्टि—प्रलय।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

शीत—उष्ण। ह्रस्व—दीर्घ। दिन—रात्रि। धनी—दरिद्र। स्वर्ग—नरक। उदार—कृपण। पाप—पुण्य। विधि—निषेध। सुख—दुःख। सत्य—मिथ्या। उच्च—नीच। निन्दा—स्तुति। लाभ—हानि।

(इ) अ, अन् जोड़ने से

धर्म—अधर्म। शुभ—अशुभ। न्याय—अन्याय। चर—अचर। आतप—अनातप। स्वस्थ—अस्वस्थ। आतुर—अनातुर। कल्याण—अकल्याण। ईश—अनीश। उचित—अनुचित। ऋत—अनृत। एक—अनेक। ऐश्वर्य—अनैश्वर्य।

(उ) उपसर्ग जोड़ने से

क्रय—विक्रय। मान—अपमान। जय—पराजय। श्वास—उच्छ्वास।

(ऋ) भिन्न-भिन्न उपसर्गों से

संयोग—वियोग। सुगम—दुर्गम। उत्कृष्ट—अपकृष्ट। स्वतन्त्र—परतन्त्र। आदान—प्रदान। अतिवृष्टि—अनावृष्टि। सरस—नीरस। अनुकूल—प्रतिकूल। उन्मज्जन—निमज्जन। उपकार—अपकार। निग्रह—अनुग्रह। दुर्गन्ध—सुगन्ध। सधवा—विधवा। अनुराग—विराग। सज्जन—दुर्जन। सुलभ—दुर्लभ। उन्नति—अवनति।

(ग) अनेकार्थक शब्द

ऐसे शब्दों के बहुत से अर्थ होते हैं। जैसे 'द्विज' शब्द के अर्थ ब्राह्मण, पक्षी, दाँत, चन्द्रमा। वाक्य में ऐसे शब्दों का अर्थ प्रकरण से प्रतीत होता है। यद्यपि 'मेदिनी' आदि संस्कृत के कोशों में ऐसे शब्दों का संग्रह है, तथापि विद्यार्थी के लिए स्वयम् ही इनका संग्रह करना लाभदायक है। दिग्दर्शनार्थ कुछ शब्द नीचे दिए जाते हैं।

अङ्क—(१) चिह्न, (२) गोद, (३) १, २, ३, आदि।

अज—ब्रह्मा, दशरथ के पिता, बकरा।

अपवाद—कलंक, किसी नियम का न लगना।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अम्बर—वस्त्र, आकाश।

अर्क—सूर्य, मदार का पौधा।

कर—हाथ, किरण, सूँड़, टैक्स।

ग्रहण—सूर्य चंद्र का उपराग, लेना, पकड़ना।

घन—घना, बादल, गणित में किसी संख्या को उसी से दो बार गुणन करना।

चित्र—तसवीर, विचित्र।

जीवन—जीव, जल।

तनु—देह, छोटा।

दल—समूह, पत्ता, पक्ष।

धात्री—माता, आँवला, पृथ्वी, उपमाता।

नाग—सर्प, हाथी।

निमित्त—हेतु, हीला, शकुन।

पक्ष—महीने का आधा, तरफ, पंख।

पतंग—पक्षी, सूर्य, पतिंगा, चंग।

पत्र—पत्ता, पंख, चिट्ठी।

पात्र—बरतन, स्थान।

पृष्ठ—पीठ, काग़ज की पीठ।

पोत—नाव, लड़का।

फल—परिणाम, वृक्ष का फल, तलवार आदि का फल।

भूत—प्राणी, प्रेत, पृथ्वी आदि पञ्चभूत, बीता हुआ।

मन्त्र—देवता का मन्त्र, सलाह।

मान—सम्मान, अभिमान, तौल, नाप।

मुद्रा—रुपया पैसा, मोहर, शरीर के भिन्न भिन्न अङ्गों को विशेष रीति से रखना।

योग—योगशास्त्र, मिलना।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

राग—प्रेम, रंग, गाने का राग।
वर—श्रेष्ठ, वरदान, दुलहा।
विग्रह—लड़ाई, शरीर।
शक्ति—बल, साँग (अस्त्र), दुर्गा, आदि शक्तियाँ।
सत्व—एक गुण, जीव।
हरि—विष्णु, सूर्य, इन्द्र, सिंह, वानर।

(घ) रूप में किंचित् भिन्न शब्द

भिन्न भिन्न अर्थों वाले कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो रूप में प्रायः समान हैं। जैसे छत्र=छतरी; क्षत्र=क्षत्रिय। ग्रह=सूर्य, चन्द्र आदि; गृह=घर। ऐसे शब्दों के प्रयोग में सावधान रहना चाहिए। कुछ शब्द नीचे दिए जाते हैं।

अपेक्षा = इच्छा; उपेक्षा = निरादर। असक्त = निर्बल, असक्त=अलग। अंस=भाग; अंस=कंधा। आकर =खानि; आकार=सूरत। छात्र = विद्यार्थी; क्षात्र=क्षत्रिय। तरणी = नाव; तरुणी = जवान स्त्री। द्विप=हाथी; द्वीप= जज़ीरा। पृथा =कुन्ती; प्रथा=रीति। प्रसाद=प्रसन्नता; प्रासाद=महल। मूल=जड़; मूल्य=दाम, कीमत। लक्ष=लाख; लक्ष्य=निशाना, इष्ट। वसन=कपड़ा; व्यसन=बुरी आदत। शंकर=महादेव; संकर=मिला हुआ। शर=बाण; सर=तालाब। शूर=वीर; सूर=सूर्य, अन्धा। सकल=पूरा; शकल=खण्ड। सर्ग=सृष्टि; स्वर्ग=देवताओं का लोक। स्वपच=स्वयम्पाकी; श्वपच=चाण्डाल।

(९) उच्चारण और स्वराघात

(Accent)

किसी शब्द का उच्चारण करते समय कभी उसके सभी अक्षरों पर ज़ोर पड़ता है, कभी किसी एक या किन्हीं दो पर। इस प्रकार के ज़ोर को स्वराघात

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कहते हैं। स्वराघात के द्वारा एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं। जैसे, 'आज तू मेरे साथ चल'—इस वाक्य में '**चल**' का दूसरा वर्ण 'ल' हल् के समान उच्चरित होता है; परन्तु "चल यहाँ से कोई दूसरा द्वार देख"—इस वाक्य में 'चल' के दूसरे वर्ण पर जोर पड़ता है। दोनों वाक्यों में 'चल' क्रिया का विधि रूप है, परन्तु दूसरे में दूसरे वर्ण पर जोर से पड़ने से अनादर या तिरस्कार का भाव स्पष्ट प्रकट हो जाता है। इससे यह विदित होता है कि उच्चारण से किसी शब्द का तात्पर्य समझने में सुविधा होती है।

नीचे उच्चारण और स्वराघात के कुछ नियम दिये जाते हैं:—

(१) हिन्दी में शब्द के अन्तिम व्यंजन 'अ' का उच्चारण अपूर्ण हल की तरह होता है। जैसे, दिन, वन, आज। परन्तु यदि अकारान्त शब्द का अन्त्य अक्षर संयुक्त हो तो अन्त्य 'अ' का पूरा उच्चारण होता है। जैसे, कष्ट, धर्म, चन्द्र, अन्न। इसी प्रकार इ, ई या ऊ के आगे अन्तिम स्वर 'य' हो तो उसके 'अ' का भी उच्चारण पूरा होता है। जैसे, पिय, मीत, राजदूत।

(२) समस्त-पदों के पूर्व पद के अन्त्य 'अ' का उच्चारण अपूर्ण होता है। जैसे, सुरपति, जलदाता, विश्रामदायक।

(३) ऐ और औ का उच्चारण तत्सम शब्दों में तो संस्कृत के समान होता है, परन्तु तद्भव शब्दों में और अरबी फारसी ठेठ हिन्दी के शब्दों में क्रमशः अय् और अव् की तरह होता है, जैसे ऐश्वर्य, सौन्दर्य, अनैक्य, प्रपौत्र में ऐ, औ के उच्चारण संस्कृत की तरह (अइ, अउ) होंगे, परन्तु तैराक, हैवान, डैना, पौसला, करौंदा, सौगन्द, बैल आदि में (अय् अव्) की तरह होंगे।

इन नियमों के अपवाद भी हैं:—

(१) हिन्दी में अधिक प्रचलित तत्सम शब्दों के ऐ, औ को अय्, अव् की तरह उच्चारण करते हैं। जैसे वैर, कैलाश आदि में।

(२) जब ऐ के पीछे अवर्ण या य औ औ के पीछे अवर्ण या व

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आता है तो ऐ, औ का उच्चारण, अइ, अउ की तरह होता है, जैसे भैया, सवैया, कौआ, पौवा आदि में।

स्वराघात-सम्बन्धी कुछ नियम

(१) यदि शब्द के अन्त में 'अ' अपूर्ण उच्चरित हो तो उसके पूर्व के वर्ण पर जोर पड़ता या स्वराघात होता है। जैसे, घर, चलन और रण में क्रमशः घ, ल और र पर स्वराघात होता है।

(२) यदि शब्द के बीच में अपूर्ण उच्चरित 'अ' आवे तो भी उसके पूर्व के अक्षर पर जोर पड़ता है। जैसे, 'ठनगन' में 'ठ' और 'ग' पर स्वराघात होता है।

(३) संयुक्त व्यंजनों के पहले के अक्षर पर जोर पड़ता है। जैसे, मित्र, हल्ला में 'मि' और 'ह' पर स्वराघात होता है।

(४) अनुस्वार और विसर्ग से युक्त अक्षर के उच्चारण पर भी जोर पड़ता है। जैसे, संसार, अहंकार, अतः, दुख—इन शब्दों के क्रमशः स, ह, त और दु वर्णों पर जोर पड़ता है।

(५) इ, उ और ऋ के पहले के स्वर का उच्चारण जरा कुछ लम्बा होता है। जैसे, यदि, असाधु, अनुदार, भ्रातृ—इन शब्दों में क्रमशः य सा, अ और आ का उच्चारण जरा खींचकर किया जाता है।

(६) यदि शब्द के एक ही रूप से भिन्न अर्थ निकलते हों तो उनका अन्तर स्वराघात से प्रकट किया जा सकता है। जैसे 'उसने आज चोरी की' 'राम की किताब'–इन दो वाक्यों में से पहले में 'की' क्रिया है और दूसरे में सम्बन्ध कारक की विभक्ति। इनमें से क्रियापद पर विभक्ति की अपेक्षा अधिक जोर दिया जाता है। इसी तरह—'वह घोड़े पर चढ़ा' और 'तू अपनी किताब पर काग़ज चढ़ा'—इन दोनों वाक्यों में से पहले में 'चढ़ा' क्रिया सामान्य भूतकालिक रूप है और दूसरा विधि। इनमें से विधि काल के सूचक शब्द के दूसरे अक्षर पर पहले की अपेक्षा अधिक स्वराघात होता है।

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(१०) अवधारण (Emphasis)

बातचीत या लेख में सभी शब्दों के भाव बराबर महत्त्व नहीं रखते; कभी एक भाव को महत्त्व देना पड़ता है, कभी दूसरे भाव को। जिस शब्द के भाव की प्रधानता दिखानी होती है उसकी जगह बदल दी जाती है, प्रायः उसे पहले रख दिया है। नीचे के उदाहरणों में देखो।

एक आदमी रेल छूटने के दो मिनट पहले टिकट लेने गया; उसने कई बार टिकट के लिए प्रार्थना की, परन्तु टिकट-बाबू ने ध्यान न दिया, बल्कि उसे फटकार दिया। आदमी ने निराश होकर अन्तिम प्रश्न किये, "तो लौट जाऊँ मैं ? अब न मिलेगी रेल ?" इस अवसर पर क्रिया की प्रधानता दिखानी थी, इसलिए दोनों वाक्यों में क्रिया पहले आई।

एक आदमी ने एक कुर्त्ता बनवाया; दर्जी ने उसे छोटा कर दिया। जब उस आदमी को यह दोष ज्ञात हुआ तो उसने दर्जी से उसका मूल्य माँगा। दर्जी ने बड़ी प्रार्थना की कि छोटा ही कुर्त्ता ले लीजिए। उसने उत्तर दिया, 'कुर्त्ता मैं नहीं ले सकता।' यहाँ कुर्त्ते (कर्म) पर जोर देने के लिए उसका प्रयोग कर्त्ता से पहले हुआ। भाव यह है कि कुर्त्ता नहीं लूँगा, उसका मूल्य लूँगा, या तुम्हें दण्ड दूँगा।

इसी तरह द्विकर्मक क्रिया के किसी भी कर्म को कर्त्ता से पहले रख देते हैं। जैसे—किसी रोगी से कोई हितैषी कहता है कि "पूड़ी मैं तुमको नहीं खिला सकता", अर्थात् भात, खिचड़ी आदि पथ्य तुमको दे सकता हूँ, परन्तु पूड़ी नहीं; या "तुमको मैं पूड़ी नहीं खिला सकता", अर्थात् अन्य लोगों को पूड़ी खिलाऊँगा, परन्तु तुम बीमार हो, इसलिए तुम्हें नहीं। दोनों दशाओं में कर्म के भाव का गौरव दिखाया गया है।

"पहलवान ने जंजीर हाथ से तोड़ डाली", "उसने पत्र मुंशीजी से लिखाया।" यहाँ 'हाथ से' और 'मुंशीजी से' करण कारक हैं, इनके अवधारण (जोर देने) के लिए इनका प्रयोग कर्म के पीछे हुआ। भाव यह है कि ज़ंजीर तोड़ने के लिए छेनी हथौड़े आदि की आवश्यकता नहीं हुई; और पत्र पण्डित-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जीया बाबू साहब आदि से नहीं, किन्तु एक प्रधान व्यक्ति (मुंशीजी) से लिखाया गया।

"प्रसाद के लिए तुम मिठाई ला दो", "तुम मिठाई प्रसाद के लिए ला दो"—यहाँ भी सम्प्रदाय का भाव बली करने के लिए उसका साधारण स्थान बदल दिया गया है। भाव यह है कि किसी को देने के लिए या खिलाने के लिए तुमसे मिठाई न मँगाई जाती; परन्तु देवकार्य के लिए यह काम करने में तुम्हारी छुटाई न होगी।

(१) "घर से वह आ रहा है", (२) "वह आ रहा है घर से"; (३) "वह फूल पेड़ से तोड़ता है", (४) "वह फूल तोड़ता है पेड़ से"; (५) "स्कूल में राम है", (६) "राम है स्कूल में"; (७) "घर पर श्याम चिट्ठी लिखता है", (८) "श्याम चिट्ठी घर पर लिखता है", (६) "श्याम चिट्ठी लिखता है घर पर।" इन वाक्यों में हर एक का विशेष भाव है। (१) अन्य अन्य स्थानों से लोग आये हैं, 'घर' से भी किसी का आना आवश्यक था, सो वह आ रहा है। (२) किसी ने कहा वह स्कूल से आ रहा है, किसी ने कहा वह बाज़ार से आ रहा है, निश्चय दिखाते हुए किसी ने कहा कि वह स्कूल, बाज़ार या अन्य कहीं से नहीं, किन्तु घर से आ रहा है, (३) व (४) नीचे गिरे फूलों का लेना विहित है, पेड़ से तोड़ने का निषेध है, या पेड़ से तोड़ने में कोई जोखिम है, इस भाव को लेकर और तोड़नेवाले की निन्दा या उसके साहस की प्रशंसा करते हुए कोई ये वाक्य कहता है। यहाँ 'पेड़ से' (अपादान) पर जोर देने के लिए उसे असाधारण स्थान पर रक्खा गया। (५) किसी ने कहा कि स्कूल खाली पड़ा है, वहाँ कोई है नहीं, तब यह उत्तर दिया गया। (६) राम की खोज घर, बाजार, बाग, सबमें हुई, वह न मिला, तब किसी ने इस प्रकार खबर दी। (७) का भाव (५) की तरह है। (८) व (६) का भाव है कि श्याम पर तुम दफ्तर के समय अपना निजी काम करने का कलंक नहीं लगा सकते; या श्याम की चिट्ठियों का रहस्य तुम नहीं जान सकते, क्योंकि वह किसी सार्वजनिक स्थान पर चिट्ठी नहीं लिखता।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"यह पुस्तक अर्जुन की है", "दूध गाय का अच्छा होता है"; "हथियार अपने अपने रक्खो"। इन उदाहरणों में अर्जुन, गाय, अपने शब्दों का भाव बलिष्ठ करने के लिए सम्बन्ध का क्रम बदल दिया गया।

"क्या तुम्हें, बेटा, दूसरी नौकरी न मिलेगी ?" "अच्छा यह तो बताओ, भाई, कि लौटोगे कब ?" "यह नाम पढ़ दो, भाई साहब"। इन वाक्यों में सम्बोधन बीच में या अन्त में आया है, क्योंकि उस पर बड़ा जोर देना इष्ट नहीं था। भाव को हल्का करने के लिए स्थान बदल गया।

किसी ने कहा "कल सवेरे उठकर चले आना"; उत्तर मिला "मैं आऊँगा नहाकर"। यहाँ पूर्वकालिक क्रिया पर जोर देना इष्ट था।

"पीला आम अच्छा होता है; "आम पीला अच्छा होता है"। पहले में साधारण वर्णन होता है; दूसरे में विशेषण 'पीला' पीछे आकर चुनाव का भाव प्रकट करता है।

"तुरन्त तुम पत्र लिख दो"; "सात बजे सबको यहाँ हाजिर हो जाना चाहिए"— इन वाक्यों में क्रियाविशेषण पहले आकर अपने भाव की दृढ़ता प्रकट करता है।

"अब इतनी देर करके आये, खैर !" क्षमासूचक शब्द अन्त में रक्खा गया, क्योंकि पहले दोष (देर में आना) दिखाकर तब उसकी क्षमा होनी चाहिए।

अब तुम्हें निश्चय हो गया होगा कि किसी भाव पर जोर देने के लिए, उसे बलिष्ठ बनाने के लिए, उसे गौरव देने के लिए, उसके अवधारण के लिए, प्रायः सब प्रकार के शब्दों का स्थान वाक्य में बदल जाता है। जो भाव बलिष्ठ बनाया जाता है उसके शब्द या शब्दों को कुछ अधिक जोर के साथ बोला जाता है।

ही, भी, तो, मात्र, भर, तक आदि शब्द जिस शब्द के अन्त में आते हैं उसका गौरव प्रकट करते हैं—जैसे, साँप ही तो है ; साँप तो है ही, राम भी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आया था; लड़के मात्र आवें; दिन भर बरसता रहा; लुटिया तक उठा ले गया।

अब एक ही वाक्य के भिन्न भिन्न भावों पर जोर देने से उसमें जो परिवर्त्तन होते हैं उनका एक उदाहरण लीजिए:—

(१) मैं तुम्हारी जमानत करता हूँ। (साधारण भाव)

(२) तुम्हारी जमानत मैं करता हूँ। ('मैं' पर जोर है, दूसरा कोई नहीं ज़मानत करता तो निराश न होओ)

(३) तुम्हारी ज़मानत करता हूँ मैं। ('मैं' पर विशेष ज़ोर है; (२) से भी अधिक बलवान भाव है)

(४) ज़मानत तुम्हारी मैं करता हूँ। ('जमानत' पर जोर है; रुपया नहीं दूँगा; झूठी शहादत नहीं दूँगा; परन्तु जमानत कर दूँगा)

(५) करता हूँ मैं जमानत तुम्हारी। ('करता हूँ' पर जोर है; साहस या निश्चय प्रकट होता है)

(६) मैं करता हूँ जमानत तुम्हारी। ('तुम्हारी' पर जोर है; अन्य लोग औरों की जमानत करते हैं तो मैं तुम्हारी जमानत करता हूँ; या मैं औरों की जमानत नहीं कर सकता, तुम्हारी करता हूँ)

इस प्रकार वाक्य में विविध शब्दों को उनके साधारण स्थान से आगे या पीछे रखने से अनेक भावों की पुष्टि होती है। अच्छे लेखकों में यही विशेषता होती है कि प्रकरण के अनुकूल जिस भाव को प्रबल दखाना होता है उसे वे पूर्णतया दिखा सकते हैं। इस विषय पर तुम जितना ही ध्यान दोगे उतनी ही बारीकियाँ तुम्हें मिलेंगी।

————

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अध्याय ३

(वाक्य SENTENCE)

१—वाक्य-विन्यास (Syntax)

क्रम (Order) और अन्वय (Agreement)

किसी के हृदय का भाव वाक्य के द्वारा सूचित होता है, और वाक्य कई शब्दों से बनता है; इसलिए यह प्रश्न अवश्य ही उठता है कि वाक्य में हर शब्द का स्थान कहाँ है, अर्थात् शब्दों का क्या क्रम होना चाहिए। दूसरा प्रश्न यह उठता है कि क्या वाक्य का एक शब्द उसी वाक्य के दूसरे शब्द की अपेक्षा करता है; अर्थात् लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल आदि में उसकी समानता करता है या उस पर अवलम्बित रहता है। इसका आशय यह हुआ कि वाक्य के शब्दों में हमें (क) क्रम, (ख) अन्वय का विचार करना पड़ता है।

[क] वाक्य में शब्दों का क्रम

(Order of words in a Sentence)

वाक्य से पूरे अर्थ का निकलना आवश्यक है। परन्तु वह 'अर्थ' क्या है जिसका निकलना आवश्यक है? वह अर्थ है कहने वालों या लिखने वाले का भाव। यदि भाव ठीक ठीक निकलता है तो वाक्य भी ठीक है, यदि भाव में कमी है, या संदेह है या भोलापन है तो वाक्य भी बुरा है।

नीचे लिखे वाक्यों का पूरा भाव समझने की चेष्टा करोः—

(१) मनोहर ने भूने चने खाते हुए पाँच बन्दर देखे।
(२) मैं तुम्हारे सामने श्यामू के चिल्लाने का हाल कहता हूँ।
(३) साधु को रोको मत आने दो।
(४) रामू के लिए भरी पंचायत में कसम खाना अच्छा नहीं।

(१) क्या तुम कह सकते हो कि जब मनोहर भूने चने खा रहा था तब

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उसने पाँच बन्दर देखे; या जब पाँचों बन्दर भूने चने खा रहे थे तब मनोहर ने उन्हें देखा ? दोनों अर्थ हो सकते हैं।

(२) श्यामू तुम्हारे सामने चिल्लाया उसका हाल कहता हूँ; या श्यामू कहीं पर भी चिल्लाया हो उसका हाल तुम्हारे सामने कहता हूँ। संदेह है कि किस भाव से मतलब है।

(३) साधु को रोक लो और उसे न आने दो—एक अर्थ है, साधु को रोको मत, बल्कि आने दो—दूसरा अर्थ है। कौन सा माना जाय ?

(४) रामू ने भरी पंचायत में कसम खाई, यह बात अच्छी न हुई। रामू की भलाई के लिए किसी ने भरी पंचायत में कसम खाई, यह बात अच्छी न हुई। स्पष्ट भाव प्रकट नहीं होता।

तुम कह सकते हो कि चूँकि कहने वाले का ठीक ठीक भाव समझ में नहीं आता, इसलिए ऊपर के वाक्य अच्छे नहीं है। ठीक ठीक भाव प्रकट करने के लिए वाक्य में शब्दों का क्रम ऐसा होना चाहिए कि दूसरा अर्थ हो ही न सके। इसी विषय को कुछ विस्तार के साथ हम नीचे दिखाते हैं।

कोई भी वाक्य हो, उसके दो खंड, अर्थात् उद्देश्य और विधेय, होते हैं। उद्देश्य का प्रधान शब्द 'कर्त्ता' होता है और विधेय का प्रधान शब्द 'क्रिया'। केवल कर्त्ता और क्रिया से ही वाक्य बन सकता है। जैसे—"चिड़िया उड़ी"। 'कर्त्ता' पहले आता है, 'क्रिया' पीछे आती है।

वाक्य में यदि 'कर्म' भी हो तो उसे कर्त्ता और क्रिया के बीच में लाना चाहिए। जैसे—"खलील रोटी खाता है" मौलवी साहब किताब पढ़ेंगे"।

द्विकर्मक क्रिया के लिए दो कर्मों का प्रयोग करना हो तो पहले गौण कर्म 'को' चिन्ह के साथ लाओ, तब प्रधान कर्म लाओ। जैसे—"अध्यापक लड़कों को भूगोल पढ़ाता है", "मैने उसे (उसको) एक रुपया दिया"।

करण कारक दो अर्थों में आता है; एक तो हथियार, औज़ार, या साधन प्रकट करने के लिए, और दूसरा 'प्रयोज्य कर्त्ता' प्रकट करने के लिए। दोनों

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दशाओं में उसे कर्म से पहले ही लिखा जाता है। जैसे—"**अपने चाकू से** पेंसिल बनाई", उसने "**मुंशीजी से** पत्र लिखाये"।

सम्प्रदान को कर्म या कर्मों से पहले, परन्तु कर्त्ता के पीछे लाना अच्छा होता है। जैसे—**मैं कसरत के लिये** जाता हूँ" "तुम **प्रसाद के लिए** मिठाई ला दो", वह **सूद के लिए** ऋणी को रुपया देता है"।

अपादान और अधिकरण भी प्रायः कर्त्ता के पीछे, परन्तु कर्म से पहले आते हैं। जैसे—"वह **घर से** आ रहा है"; वह **पेड़ से** फूल तोड़ता है"; "राम **स्कूल म** है"; श्याम **घर पर** चिट्ठी लिखता है"।

सम्बन्ध कारक अपने सम्बन्धी से पहले आता है। जैसे—"**अर्जुन की** पुस्तक"; "**उसके** घोड़े"; "**हमारा** चाकू"; "**अपने** हथियार"।

सम्बोधन प्रायः वाक्य के प्रारम्भ ही में होता है। जैसे—"हे **बालकों**, मैं आज तुम्हें एक कथा सुनाऊँगा"।

पूर्वकालिक क्रिया प्रधान क्रिया और प्रधान क्रिया के कर्म से पहले आती है। जैसे—"पण्डितजी **नहाकर** पूजा करते हैं"।

विशेषण अपने विशेष्य से पहले और पीछे दोनों तरह आता है।

यहाँ तक संज्ञा और क्रिया शब्दों का वर्णन हुआ। अब अव्ययों पर विचार करो।

क्रियाविशेषण क्रिया के पास रहता है, और प्रायः उससे पहले रहता है। जैसे—"वह **तेज़** दौड़ा जा रहा था"। परन्तु उसे सकर्मक क्रिया के कर्म से पहले रखना अधिक सुन्दर लगता है; जैसे—मैं **शीघ्र** भोजन करके आता हूँ"; "तुम **तुरन्त** चिट्ठी लिख दो"।

सम्बन्ध-वाचक अव्यय प्रायः सम्बन्ध कारक के पीछे आता है। जैसे—"आपके **पीछे**" "कपड़े की **बाबत**"।

समुच्चयबोधक अव्यय उन दो शब्दों वा वाक्यांशों या वाक्यों के बीच में

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

रहता है जिन्हें वह मिलता है जैसे—"राम और लक्ष्मण"; "काम करना या प्राण देना"; "मैं अभी चला जाता, परन्तु पैसा पास नहीं है"।

विस्मयादिबोधक अव्यय प्रायः वाक्य के पहले ही आते हैं। जैसे—हरे हरे! क्या ही सुन्दर पक्षी हैं। हाय! मैं तो मिट गया।

यदि एक ही वाक्य में बहुत से कारक और अव्यय हों तो उन्हें समझ बूझकर अर्थ के अनुसार स्थापित करना चाहिए। या वाक्य को तोड़कर कई छोटे वाक्यों में लिखना चाहिए।

उदाहरण—बज़ाज़ ने कुछ सोच विचार कर रामदास के कोट के लिए चार बजे दिन को अपनी दूकान में हाथ से बड़े थान से ३ गज़ कपड़ा चर्र से चीर दिया।

छोटे वाक्य—चार बजे दिन का समय था; बज़ाज़ अपनी दूकान पर बैठा था। उसने कुछ सोच विचार कर और एक बड़ा थान निकाल कर उसमें से ३ गज़ कपड़ा रामदास के कोट के लिए दिया। चूँकि वहाँ कैंची नहीं थी, इसलिए उसने कपड़ा हाथ ही से चर्र से चीर दिया।

यह भी स्मरण रखना चाहिये कि अवधारण या गौरव के लिए वाक्य में शब्दों का क्रम बदल जाता है। इसका वर्णन पहले हो चुका है।

(ख) अन्वय (Agreement)

(१) कर्त्ता के साथ चिन्ह 'ने' का प्रयोग—

केवल सकर्मक क्रियाओं तथा सामान्य, आसन्न, पूर्ण, और सन्दिग्ध भूत की क्रियाओं के कर्त्ता के साथ चिह्न 'ने' प्रकट होता है, अन्य सब स्थानों में लुप्त रहता है।

आ० सा० पू० सं० भूत में, क्रिया सकर्मक माहिं।
कर्तृवाच्य में केवल, 'ने' अन्यत नाहिं॥

सकर्मक भूलना, लाना, बोलना के साथ कर्त्ता में 'ने' का प्रयोग नहीं होता। मैं तुम्हें भूल गया; तुम मिठाई लाये हो; वह तीन बातें बोला था।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सकर्मक समझना, खेलना, बकना, जनना के साथ कर्त्ता में कोई लोग 'ने' लाते हैं, कोई नहीं लाते। मैंने क्रिकेट खेला, या मैं यह खेल खेला; क्या आपने यह बात समझ ली, या क्या आप समझे कि रेल आ गई, उसने गालियाँ बकीं, या वह दो घंटे तक बका; बकरी ने दो बच्चे जने, या बकरी दो बच्चे जनी।

जब प्रधान सकर्मक क्रियाओं के साथ सकर्मक क्रियाएँ सकना, चुकना जाना, पड़ना, उठना, बैठना, रहना, लगना, पाना (आशा सूचक) लगाकर संयुक्त क्रियाएँ बनाई जाती हैं तब कर्त्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता। जैसे मैं पत्र लिख सका; वह पत्र लिख चुका था; तुम पत्र लिख गये थे; स्त्री पत्र लिख पड़ी; लकड़ियाँ पत्र लिख उठीं; मन्त्री पत्र लिख बैठा; हामिद पत्र लिखता रहा; रामू पत्र लिखने लगा; देवदत्त पत्र न लिखने पाया।

परन्तु जब प्रधान सकर्मक क्रियाओं के साथ सकर्मक क्रियाएँ डालना, लेना, देना, करना, चाहना, पाना (शक्ति-सूचक) लगाकर संयुक्त क्रियाएँ बनाई जाती हैं तब 'ने' का प्रयोग होता है। उसने टोपी सी डाली; देवकी ने टोपी सी ली है; दर्ज़ी ने टोपी सी दी थी; उन्होंने टोपी सीना चाहा; लड़की ने टोपी न सी पाई; उसने टोपी सिया लिया।

कर्त्ता के साथ 'ने' का प्रयोग समापिका क्रिया अर्थात् मुख्य क्रिया के हिसाब से होता है, पूर्वकालिक क्रिया के हिसाब से कभी नहीं होता—जैसे "लड़के ने सोकर आम खाये"—इस वाक्य में 'खाये' क्रिया के योग से 'लड़के' के साथ 'ने' लगा है। "लड़का आम खाकर सोया"—इसमें 'सोया' (अकर्मक) के कारण 'ने' का प्रयोग नहीं हुआ। जब कर्त्ता के कई समानाधिकरण होते हैं तो अन्तिम शब्द (मुख्य शब्द) में 'ने' लगता है; जैसे दशरथ के पुत्र, लक्ष्मण के भाई, रावण के मारनेवाले, राम ने मुनि का सम्मान किया।

(२) कर्म के साथ चिन्ह 'को' का प्रयोग—

रुचि या मुहाविरे के अनुसार सर्वत्र प्रकट या लुप्त कर सकते हैं। खाना, पीना, पहनना आदि क्रियाओं के साथ 'को' भद्दा लगता है; परन्तु यदि कर्म

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्राणीसुचक हो तो 'को' का प्रयोग अच्छा लगता है। 'मैंने रोटी को खाया'—भद्दा है; परन्तु 'सिंह ने हिरन को खा डाला'—ठीक है।

(३) क्रिया का रूप किसके अनुकूल होता है ?

(अ) जब कर्त्ता का चिह्न 'ने' प्रकट होता है और कर्म का चिह्न 'को' प्रकट होता है तो क्रिया का रूप सदा पुँलिङ्ग एकवचन का सा रहता है।

(इ) जब कर्त्ता का चिह्न 'ने' प्रकट होता है; परन्तु कर्म का चिह्न 'को' नहीं प्रकट होता तो क्रिया का रूप कर्म के अनुसार होता है। नीचे के उदाहरण में किसी कर्त्ता के साथ कोई भी कर्म तथा कर्म के सामने को क्रिया जोड़ने से शुद्ध वाक्य बनेगा।

कर्त्ता		कर्म	क्रिया
किसी पुरुष किसी लिंग किसी वचन का कर्त्ता	ने	घोड़ा (एकवचन, पुंलिङ्ग)	देखा
		घोड़े (बहुवचन, पुलिङ्ग)	देखे
		घोड़ी (एकवचन, स्त्रीलिंग)	देखी
		घोड़ियाँ (बहुवचन, स्त्रीलिंग)	देखीं

(उ) विधि और सम्भावना के रूप दोनों लिङ्गों में समान होते हैं।

(ऋ) शेष सब दशाओं में कर्त्ता के अनुसार ही क्रिया होती है, जैसा कि क्रियाओं के रूप साधन में तुम देखोगे।

(४) एक ही क्रिया के लिए अनेक कर्त्ता

(यदि सब कर्त्ताओं का लिंग एक ही हो तो क्रिया उसी लिंग की होगी, और बहुवचन होगी—जैसे (१) मेज़ और कुर्सी रक्खी हैं, (२) मेज़ और कुर्सियाँ रक्खी हैं, (३) मेज़ें और कुर्सी रक्खी हैं, (४) मेज़ें और कुर्सियाँ रक्खी हैं, (५) कपड़ा और बर्त्तन रक्खे हैं, (६) कपड़े और बर्त्तन रक्खे हैं।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(ख) यदि कर्त्ताओं के लिंग असमान हों तो क्रिया अन्तिम कर्त्ता के अनुसार होगी और बहुवचन होगी—जैसे बकरे और बकरियाँ बैठी हैं, बकरियाँ और बकरे बैठे हैं।

(ग) यदि सब कर्त्ताओं का लिंग एक ही हो और उनके पीछे कोई समुदायवाचक शब्द लगा हो तो क्रिया उसी लिंग की होगी, और बहुवचन होगी—जैसे बाप, बेटा, नौकर सभी सोते हैं; सास ननँद, भावज सभी सोती हैं।

(घ) यदि कर्त्ताओं के लिंग असमान हों और उनके पीछे कोई समुदायवाचक शब्द लगा हो तो क्रिया पुँलिंग होगी और बहुवचन होगी—जैसे—माँ, बेटी, बेटा सभी तो काम करते हैं, बच्चे, बाप, माँ सभी खाते हैं।

(ङ) यदि सब कर्त्ताओं से एक ही भाव निकलता हो या उनके समूह का बोध हो तो क्रिया एकवचन होगी—जैसे रुपया पैसा ठहरता नहीं है; विद्या से मर्यादा और प्रतिष्ठा मिलती है।

(च) कई 'पुरुषों' के पुरुषवाची सर्वनाम कर्त्ता एक साथ आते हों तो सबसे अन्त में उत्तम पुरुष, उससे पहले मध्यम पुरुष, और उससे पहले अन्य पुरुष रखने और क्रिया को अन्तिम कर्त्ता के अनुकूल बनाने में बड़ा सुभीता होता है—जैसे वे, आप, और मैं खाऊँगा; तुम और हम पढ़ते हैं; वह और हम देख लेंगे; वह और तुम सोते हो। परन्तु व्यवहार में इनका मिश्रण अन्य प्रकार से भी कर देते हैं, जैसे हम और तुम चलेंगे; तुम और वे जाओगे, आदि।

नाम और सर्वनाम एक साथ आने से पिछले के अनुसार क्रिया होती है—जैसे श्यामू और तुम जाओगे, तुम और श्यामू जायेंगे (आदरार्थ)।

नोट—अनमेल मिश्रण के कारण जहाँ क्रिया का रूप भद्दा प्रतीत होता हो वहाँ सब कर्त्ताओं के अन्त में कोई समुदायवाचक शब्द लगाने से वाक्य में सुन्दरता आ जाती है—जैसे, हम, तुम, रामू सभी सोयेंगे; वह, आप और मैं तीनों बैठे हैं; राम और आप दोनों पढ़ते हैं।

६

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(छ) दो या अधिक कर्त्ताओं के बीच 'या' 'अथवा' आदि शब्दों का प्रयोग होने से उनमें से एक ही का बोध होता है, अतः क्रिया का रूप लिंग, वचन, पुरुष में अन्तिम कर्त्ता के अनुसार होता है—जैसे रामू या मोहन जायेगा; नौकर या नौकरानी आयेगी; तुम या मैं करूँगा।

(ज) कर्त्ता एकवचन होने पर भी उसके लिए आदरार्थ बहुवचन क्रिया का प्रयोग होता है—जैसे पिताजी बैठे हैं; भाई साहब गये।

(५) एक ही कारक के अनेक शब्द—

यदि किसी वाक्य में एक ही कारक वाले कई शब्द हों तो साधारणतः अन्तिम शब्द के साथ विभक्ति लगाई जाती है, परन्तु अवधारण के लिए हर एक में विभक्ति लग सकती है—जैसे मोहन, सोहन और रोहन ने फूल तोड़े हैं; तुम्हारे पाप ने और तुम्हारे बाप के पाप ने तुम्हें यह दुःख पहुँचाया है। क़लम पेंसिल, या बत्ती से लिखो; कलम से, पेंसिल से, बत्ती से, किसी चीज़ से भी लिखोगे तो।

सर्वनाम शब्दों में से हर एक में विभक्ति लगनी चाहिए, जैसे—श्यामू मुझसे और तुमसे बहुत डरता है; आप में और उसमें क्या भेद है?

(६) विशेषण और विशेष्य का सम्बन्ध—

यदि आकारान्त विशेषण के कई विशेष्य हों तो उसका रूप समीपवर्त्ती विशेष्य के अनुसार होता है-जैसे उसके हाथ और उगलियाँ लम्बी हैं, उँगलियाँ और हाथ लम्बे हैं; मीठे अंगूर और नारंगियाँ लाओ; मीठी नारंगियाँ और अंगूर लाओ।

(७) पूरक, कर्म, और क्रिया का सम्बन्ध—

अकर्मक क्रिया का पूरक यदि विशेषण है तो वह लिंग तथा वचन में कर्त्ता के अनुसार होगा; जैसे—"मोहन अच्छा हो गया, लड़के अच्छे हो गये; स्त्रियाँ अच्छी हो गईं।" सकर्मक क्रिया का पूरक यदि विशेषण है तो कर्म के साथ

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चिह्न 'को' के न आने पर वह लिंग तथा वचन में कर्म के अनुसार होगा, परन्तु चिह्न 'को' के प्रकट होने पर प्रायः उनका रूप पुंलिंग एकवचन सा बना रहेगा; जैसे—"तुमने यह घर अच्छा बनाया; तुमने लकीरें मोटी कर दीं; तुमने कपड़े गन्दे कर दिये; तुमने लकीरों को मोटा कर दिया; तुमने कपड़ों को गन्दा कर दिया।"

अकर्मक क्रिया का पूरक यदि नाम है तो वह भाव के अनुसार किसी भी लिंग तथा वचन में आ सकता है; जैसे—"वे लोग बूढ़े होकर भी बच्चे बने जाते हैं", "तुम लोग घोड़े बनोगे या हाथी ?" "हम लोग तुम्हारी दासी हैं या दासियाँ।" सकर्मक क्रिया का पूरक यदि नाम है तो कर्म के साथ चिह्न 'को' का प्रकट करना और पूरक को एकवचन में रखना ही अधिक मुहाविरेदार है; जैसे—"जादूगर ने उन आदमियों को घोड़ा बना दिया", "लुटेरे ने उन स्त्रियों को दासी बना लिया।"

(८) एक ही वस्तु के कई सम्बन्धी —

तुम्हें ज्ञात है कि सम्बन्ध का चिह्न सम्बन्धी के अनुसार होता है; और क्रम बदल जाने पर भी वही बात रहती है; जैसे गोपाल का बेटा; श्यामू की बेटी; यह बेटा गोपाल का है, यह बेटी श्यामू की है। परन्तु यदि एक ही वस्तु के कई सम्बन्धी हों तो चिह्न निकटतम सम्बन्धी के अनुसार होगा--जैसे देवदत्त की धोती और कपड़े रक्खे हैं; देवदत्त के कपड़े और धोती सभी रक्खे हैं।

(९) नाम और सर्वनाम का सम्बन्ध —

किसी नाम के प्रति जो भाव उसकी क्रिया व विशेषण के रूपों से प्रकट होता है वही भाव उसके बदले में आने वाले सर्वनाम से प्रकट होना चाहिए। जैसे—"राम ने सीता से कहा कि तुम अयोध्या में रहो, और माताओं सी सेवा करो, वे तुम्हें कुछ कष्ट न होने देंगी, मैं लक्ष्मण के साथ वन को जाऊँगा, वहाँ वे मेरा सुपास करेंगे।"

यदि यह कहा जाता कि 'सीता अयोध्या में रहें' तो एकवचन 'सीता' के लिए बहुवचन क्रिया 'रहें' का प्रयोग होता, इसलिए एकवचन 'सीता' के लिए

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

बहुवचन सर्वनाम 'तुम' का प्रयोग हुआ और उसी के अनुकूल 'रहो' क्रिया का प्रयोग हुआ। 'वे' माताओं के लिए आया है, अतः स्त्रीलिंग बहुवचन है, और 'होने देंगी' क्रिया भी स्त्रीलिंग बहुवचन है। 'मैं' राम के लिए आया है, जो पुंलिंग एकवचन है, अतः क्रिया 'जाऊँगा' पुंलिंग एकवचन है। दूसरा 'वे' लक्ष्मण के लिए आया है, अतः क्रिया भी पुंलिंग, आदरार्थ बहुवचन है।

अभ्यास

(१) इन भावों को एक वाक्य में रक्खो:—

(क) बढ़ई ने डाल काटी। आधी रात को काटी। चुरा कर काटी। हल बनाने के लिए काटी। बबूल के पेड़ से काटी। कुल्हाड़ी से काटी।

(ख) गुरुजी पढ़ाते हैं। स्कूल के समय पढ़ाते हैं। कुर्सी पर बैठ कर पढ़ाते हैं। बालकों को पढ़ाते हैं। योग्य बनाने के लिए पढ़ाते हैं। विद्या पढ़ाते हैं।

(ग) मोहन के बाप ने छुड़ा दिया। निर्धनता के कारण छुड़ा दिया। स्कूल से छुड़ा दिया। मोहन को छुड़ा दिया। दस ही वष की उमर में छुड़ा दिया।

(२) इन वाक्यों को शुद्ध करके लिखो:—

(अ) मारा लंका में सीता जी के लिए रावण को बाण से श्रीराम जी ने।

(इ) खीचड़ी बुढ़िया ने कहीं से माँग लाकर पकाई हाँड़ी में अपने लिए दोपहर को।

(३) इन शब्दों में उचित कारक लगा कर वाक्य बनाओ:—

(I) काला नाग, बाग, सायंकाल, देवदत्त, लाठी, मारा (क्रिया)।

(II) देश की शान्ति, मित्र, अकबर, बड़ी बुद्धिमत्ता, हिन्दू, बनाया (क्रिया)

(४) मोहन के घर चोरी हो गई। पुलिस ने कई आदमियों को पकड़ा; एक आदमी के पास लोटा निकाला। उसने कहा (१) यह लोटा मोहन का नहीं है; (२) यह लोटा मोहन के लड़के ने मुझे दिया था; (३) यह लोटा मुझे सड़क पर मिला था; (४) यह लोटा मैंने नहीं चुराया। इन चारों वाक्यों के उत्तर मोहन को किस प्रकार देने चाहिए कि ठीक ठीक भाव प्रकट हों?

(५) "(१) मैं (२) तुम्हारे लिए (३) कठिन परिश्रम (४) कर सकता है"—इस साधारण वाक्य का रूप किस प्रकार बनेगा?

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kath

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(६) (क) द्विकर्मक क्रिया में गौण और प्रधान कर्म का स्थान निर्धारित करो।

(ख) करण कारक किन किन अर्थों में आता है उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

(७) कर्त्ता के साथ चिह्न 'ने' का प्रयोग किन दशाओं में होता है।

(२) वाक्य के भेद (Kinds of sentences)

(क)

(१) मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। राम लखनऊ गया था। लड़के मैदान में खेलेंगे।

(२) तुम स्कूल नहीं जाते। केशव ने पत्र नहीं लिखा। बच्चे सो न सकेंगे।

(१) वाले वाक्य अपने अपने विषय का वर्णन करते हैं। (२) वाले वाक्य भी अपने अपने विषय का वर्णन करते हैं। इसलिए इन सब वाक्यों को वर्णनात्मक वाक्य (statement) कहते हैं। (१) और (२) के वाक्यों में भेद यह है कि (१) वाले वाक्य विधान बतलाते हैं अर्थात् कोई घटना या काम होना बतलाते हैं, और (२) वाले वाक्य निषेध या अभाव बतलाते हैं। इसलिए (१) वाले वाक्यों को **विधिसूचक (Positive)** वर्णनात्मक वाक्य कह सकते हैं, (२) वाले वाक्यों को **निषेधसूचक (Negative)** वर्णनात्मक वाक्य कह सकते हैं।

(ख)

(३) आप चले जाइए। तुम यहाँ बैठो। चुप हो जा। श्रीमान् यहाँ पधारें। मोहन पत्र लिखे। वे लोग तब तक खेलें।

(४) आप ऐसा न कहें। तुम स्थान मत छोड़ो। तू बक-बक न कर। श्रीमान् ऐसा क्रोध न करें। श्याम दिल्ली न जाय। बच्चे घर न छोड़ें।

(३) वाले वाक्यों में कोई आज्ञा या प्रार्थना पाई जाती है। (४) वाले वाक्यों में कोई आज्ञा या प्रार्थना पाई जाती है। इसलिए इन सब

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वाक्यों को **आज्ञात्मक** वाक्य (Command) कहते हैं। (३) और (४) के वाक्यों में भेद यह है कि (३) वाले वाक्य विधान बतलाते हैं और **विधि-सूचक** आज्ञात्मक वाक्य कहे जा सकते हैं; तथा (४) वाले वाक्य निषेध बतलाते हैं और **निषेधसूचक** आज्ञात्मक वाक्य कहे जा सकते हैं।

(ग)

(५) तुम कहो तो मोहन को पाँच रुपये दे दूँ। पानी बरसता तो खेत सींच जाते। फ़ीस दे दोगे तो भरती हो जाओगे।

(६) गाड़ी आती तो माल पड़ा न रह जाता। रेल न होती तो इतनी बड़ी यात्राएँ न हो सकतीं। तुम न होते तो मैं स्वयम् लिख डालता।

(५) वाले वाक्यों में कोई न कोई शर्त लगी है। (६) वाले वाक्यों में भी कोई न कोई शर्त लगी है। इसलिए ऐसे सब वाक्यों को **संकेतात्मक** (शर्तिया) वाक्य (Conditional) कहते हैं। (५) और (६) वाले वाक्यों में भेद यह है कि (५) वाले वाक्य विधान बतलाते हैं और **विधिसूचक** संकेतात्मक वाक्य कहे जा सकते हैं, तथा (६) वाले वाक्य निषेध बतलाते हैं और निषेधसूचक संकेतात्मक वाक्य कहे जा सकते हैं।

नोट—संकेतात्मक वाक्य अमिश्रित या अकेला या एक ही क्रिया वाला कभी नहीं हो सकता; उसमें दो क्रियाओं का होना आवश्यक है, एक से शर्त जाहिर की जाती है और दूसरी से प्रधान विषय बतलाया जाता है। निषेधसूचक शब्द चाहे शर्त के साथ हो, चाहे प्रधान विषय के साथ हो, चाहे दोनों के साथ हो।

(घ)

(७) मोहन शायद आता हो। सोहन स्यात् परीक्षा में पास हो जाय। रोहन कदाचित् घर बैठा हो।

(८) गाड़ी कहीं छुट न जाय। बरसात में तुम्हारे कपड़े न भींग जायँ। बिना छड़ी के जाने में कहीं कुत्ते न काटने दौड़ें।

(७) वाले वाक्यों में संदेह पाया जाता है (८) वाले वाक्यों में भी संदेह पाया जाता है। इसलिए इन सब वाक्यों को **संदेहात्मक** वाक्य

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kath

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(Doubt) कहते हैं। (७) और (८) वाले वाक्य में भेद यह है कि (७) वाले वाक्य विधान बतलाते हैं और विधिसूचक संदेहात्मक वाक्य कहे जा सकते हैं; तथा (८) वाले वाक्य निषेध बतलाते हैं और निषेधसूचक संदेहात्मक वाक्य कहे जा सकते हैं।

(ङ)

(९) तुम क्यों पढ़ते हो ? क्या मोहन चिट्ठी लिखता है ? सोहन कब लखनऊ गया था ? लड़के कहाँ गेंद खेलेंगे ?

(१०) क्या तुम स्कूल नहीं जाते ? केशव ने पुस्तक क्यों नहीं पढ़ी ? मूर्ख लोग कहाँ नहीं होते।

(११) क्या तुम दौड़ते तो गाड़ी पा जाते ? वह आयेगा भी तो यहाँ कब तक ठहरेगा ? अगर छप्पर बनाने का इरादा भी करोगे तो बाँस कहाँ है ?

(१२) यदि तुम दौड़ते भी, तो क्या गाड़ी छुट न जाती ? जहाँ मुर्गे न होंगे वहाँ क्या सुबह न होगी ?

(९), (१०), (११), (१२) वाले वाक्यों में प्रश्न पाये जाते हैं, इसलिए उन सब को प्रश्नात्मक वाक्य (Question or Interrogation) कहते हैं।

नोट—विधिसूचक वर्णनात्मक वाक्यों को प्रश्न रूप में रखने से (९) वाले उदाहरण बनते हैं। निषेधसूचक वर्णनात्मक वाक्यों को प्रश्न रूप में रखने से (१०) वाले उदाहरण बनते हैं। विधिसूचक संकेतात्मक वाक्यों को प्रश्न रूप में रखने से (११) वाले उदाहरण बनते हैं। निषेधसूचक संकेतात्मक वाक्यों को प्रश्न रूप में रखने से (१२) वाले उदाहरण बनते हैं। आज्ञात्मक (विधिसूचक और निषेधसूचक) तथा संदेहात्मक (विधिसूचक और निषेधसूचक) वाक्यों को या तो प्रश्न रूप में ठीक ठीक रक्खा नहीं जा सकता, या ऐसा करने से जो रूप बनेंगे वे (९), (१०), (११), (१२) के अन्तर्गत हो जायेंगे।

ऊपर लिखी बातों का फल छोटी सूची में नीचे दिया जाता है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

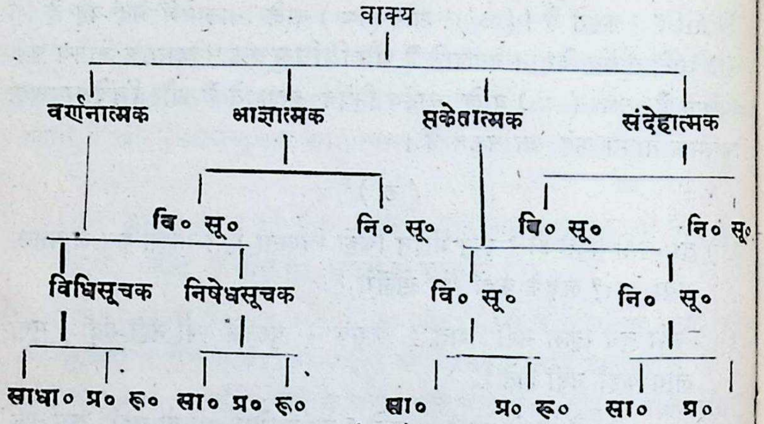

(च)

वाक्यों के अन्य छोटे छोटे भेद भी हो सकते हैं जिन्हें विस्तार बचाने के लिए हम उपर्युक्त भेदों के अन्तर्गत मान सकते हैं। जैसे—"ओ हो! कितना भारी सर्प है!"—यह वाक्य विस्मयसूचक है, इसे हम वर्णनात्मक मान सकते हैं। "हे भगवन् मैं भी राजा हो जाऊँ"—यह वाक्य इच्छासूचक है, इसे हम आज्ञात्मक के अन्तर्गत मान सकते हैं। परन्तु यदि कोई छात्र ऐसे वाक्यों को विस्मयादिसूचक या इच्छासूचक कहता है तो कोई हर्ज की बात नहीं।

यह हो सकता है कि किसी एक ही भाव को भिन्न भिन्न प्रकार के वाक्यों द्वारा प्रकट किया जाय। नीचे का उदाहरण देखो।

(१) धन से सुख होता है (वर्णनात्मक विधिसूचक);

(२) ऐसी बात नहीं कि धन से सुख न होता हो (वर्णनात्मक निषेधसूचक);

(३) क्या धन से सुख नहीं होता? (प्रश्नात्मक);

(४) सुख के लिए धन कमाओ (आज्ञात्मक विधिसूचक);

(५) धन कमाओ और सुख भोगो (आज्ञात्मक विधिसूचक);

(६) न धन कमाओ, न सुख भोगो (आज्ञात्मक निषेधसूचक);

(७) यदि धन होगा तो सुख मिलेगा (संकेतात्मक निषेधसूचक)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(८) धन न होगा तो सुख न मिलेगा (संकेतात्मक निषेधसूचक) ;
(६) यदि धन होगा तो क्या सुख न मिलेगा ? (प्रश्नात्मक) ;
(१०) यदि धन न होगा तो क्या सुख मिलेगा ? (प्रश्नात्मक) ;
(११) धन होने से शायद वह सुखी हो जाए ? (संदेहात्मक विधि-सूचक) ;
(१२) कदाचित् धन न होने से वह सुखी न होता हो (संदेहात्मक निषेधसूचक) ;
(१३) आ हा ! धन से कितना सुख मिलता है !
(१४) परमात्मा करे धन होने से उसे सुख मिले ;
(१५) सुख के लिए तुम्हें धन कमाना चाहिए !

अभ्यास

(१) नीचे लिखे वाक्यों के उपभेद बताओः—

(१) मैं एक सेर दूध पी सकता ।
(२) क्या तुम दस मील पैदल चल सकते हो ?
(३) उसके पास धन होता तो वह सुखी हो जाता ।
(४) राह राह क्यों नहीं चलते हो ?
(५) पानी में भीगते भीगते क्या अभी तक तुमको सर्दी नहीं हुई ?
(६) न जाने कहाँ का पागल है तू !
(७) अरे भाई, कहीं स्कूल पहुँचने में देर न हो जाय ।
(८) बिना खेत सींचे हुए शायद अनाज पैदा हो जाय ।
(९) परीक्षा में पास भी हो गये तो बिना रुपये के रोजगार कैसे करोगे ?
(१०) बिना परिश्रम के कोई काम नहीं हो सकता ।
(११) गरीबी से घबड़ा कर पढ़ना लिखना न बन्द करो ।
(१२) गाड़ी के सामान लेने के लिए अपने आदमी को क्यों न भेज दिया ।
(१३) ठाकुर साहब मिजाज तो अच्छा है ।
(१४) प्रातहि उठि के नित्य नित, करिए प्रभु का ध्यान ।
(१५) काहू तें कडुए बचन , कहौ न कबहू जान ।
तुरत मनुज के हृदय में, छेदत है जिमि बान ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(१) मधुर बचन ते जात मिटि, उत्तम जन अभिमान।
तनक शीत जलसों मिटे, जैसे दूध उफान॥

(२) "विक्रमादित्य सम्पूर्ण उत्तरीय भारतका राजा हो गया।" इस वाक्य के भाव को प्रश्नात्मक निषेधसूचक रूप में प्रकट करो।

(३) अपने स्कूल के विषय में ४ वाक्य ऐसे बनाओ जो क्रम से वर्णनात्मक विधिसूचक, वर्णनात्मक निषेधसूचक, आज्ञात्मक विधिसूचक और सन्देहात्मक निषेधसूचक हो।

(४) "माता पिता की सेवा करना मनुष्य का धर्म है"—इस वाक्य के भाव को दस प्रकार के भिन्न भिन्न वाक्यों में प्रकट करो।

(३) वाक्यपरिवर्तन (Conversion of Sentences).

रचना के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं, (१) साधारण, (२) मिश्र और (३) संयुक्त। इनका परस्पर एक से दूसरी श्रेणी में बदलना ही वाक्यपरिवर्तन कहलाता है। इस प्रकरण में हम वाक्य की इसी स्थिति पर विचार करेंगे।

[१] कई सरल वाक्यों से एक वाक्य बनाना

(Conversion of many Simple Sentences into one Sentence)

वाक्यसमूह—(१) हीरा एक चंचल बालक है। (२) उसने एक चिड़िया मारी।

सरल—चंचल बालक हीरा ने एक चिड़िया मारी।

मिश्र—हीरा ने जो कि एक चंचल बालक है, एक चिड़िया मारी।

संयुक्त—हीरा ने एक चिड़िया मारी, क्योंकि वह एक चंचल बालक है।

इसी प्रकार एक सरल वाक्य का परिवर्तन मिश्र और संयुक्त में, तथा एक मिश्र का सरल और संयुक्त में हो सकता है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(२) सरल वाक्य को मिश्र और संयुक्त बनाना

(Conversion of Simple into Compound and Complex)

(क) सरल वाक्य के किसी पद को आश्रित वाक्य में बदलने से मिश्र वाक्य बन जाता है।

सरल—आस्तिक मनुष्यों का जीवन सुखी होता है।

मिश्र—जो मनुष्य ईश्वर को मानते हैं, उनका जीवन सुखी होता है।

सरल—यह गाना हृदयविदारक है।

मिश्र—यह गाना ऐसा है जिससे हृदय विदीर्ण हो जाये।

(ख) सरल वाक्य में किसी अंश को मुख्य उपवाक्य (Principal Clause) बनाकर संयोजक वा वियोजक अव्यय (Conjunction) लगाने से संयुक्त वाक्य बन जाता है। वाक्यांश में समापिका क्रिया होनी चाहिए।

सं० वा०—राम ने रावण को मारकर विभीषण को राज्य दिया।

सं० वा०—राम ने रावण को मारा और विभीषण को राज्य दिया।

सं० वा०—परिश्रम करने पर भी वह पास न हुआ।

सं० वा०—उसने परिश्रम भी किया किन्तु पास न हो सका।

(३) मिश्र वाक्य को सरल और संयुक्त बनाना

(Conversion of Complex into Simple and Compound)

मिश्र वाक्य में उपवाक्य को पद वा पदसमूह में बदलने से सरल वाक्य बन जाता है।

मिश्र—**जो बालक परिश्रम करते हैं वे** पास हो जाते हैं।

सरल—परिश्रमी बालक पास हो जाते हैं।

मिश्र—उसने मुझसे कहा कि तुम बेईमान हो।

सरल—उसने मुझे बेईमान कहा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मिश्र वाक्य में उपवाक्य को प्रधान वाक्य बनाकर संयोजक अव्यय लगाने से संयुक्त वाक्य बन जाता है।

मि० वा०—यदि मुझे एक पान दो तो मैं जाऊँगा।
सं० वा०—मुझे एक पान दो, मैं जाऊँगा।
मि० वा०—वह यद्यपि देखने में सुन्दर है पर हृदय का खोटा है।
सं० वा०—वह देखने में सुन्दर है परन्तु हृदय का खोटा है।

(४) संयुक्त वाक्य को सरल और मिश्र बनाना

(Conversion of Compound into Simple and Complex)

संयुक्त वाक्य के मुख्य वाक्यों में से एक को छोड़कर शेष को पद वा पदसमूहों में परिवर्तित करने से सरल वाक्य बनाया जाता है। अव्यय के त्याग से और समापिका क्रिया के स्थान पर पूर्वकालिक लगाने से यह परिवर्तन हो जाता है।

सं० वा०—अपना कार्य करो और घर चले जाओ।
सं० वा०—अपना कार्य करके घर चले जाओ।
सं० वा०—उसने मुझे उत्तेजित किया किन्तु मैं शान्त रहा।
सं० वा०—उसके उत्तेजित करने पर भी मैं शान्त रहा।

संयुक्त वाक्य के मुख्यों में से एक को छोड़ शेष के उपवाक्य बनाने से मिश्र वाक्य बनाया जाता है। कभी कभी अपेक्षासूचक अव्यय का व्यवहार भी होता है।

सं० वा०—वह धनी है पर ईश्वरभक्त है।
मि० वा०—यद्यपि वह धनी है तो भी ईश्वरभक्त है।
सं० वा०—रुपया लेकर आओ और मिठाई लेकर जाओ।
मि० वा०—यदि तुम रुपया लेकर आओ तो मिठाई लेकर जा सकते हो।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों का परिवर्तन सूचनानुसार करो:—

(१)—मैंने समाचार सुना । मैं अस्पताल गया । मैं उसके घाव देखना चाहता था । अस्पताल मेरे घर के पास ही था । (मिश्र)

(२)—मैं तलवार से बहुत खेला हूँ । तलवार का दृश्य मुझ जैसे पुरुष को बहुत सुहाता है इससे इन्कार नहीं किया जा सकता । (मिश्र)

(३)—जल्दी करो । देरी हो जायगी । आधी रात तक कोई गाड़ी नहीं जाती । वह गाड़ी बहुत सुस्त है । (संयुक्त)

(४)—तूफान थम गया । सूर्य चमकने लगा । मल्लाहों ने पृथ्वी का कहीं चिह्न न देखा । वे समुद्र के मध्य में थे । (संयुक्त)

(५)—ज्यों ही राम ने भोजन किया वह स्कूल चला गया । (संयुक्त)

(६)—यदि मैं चाहूँ तो इसका उत्तर दे सकता हूँ । (संयुक्त)

(७)—यदि तुम यहाँ आये तो तुम पछताओगे । (सरल)

(८)—उसकी गाली उसके मारने से बुरी है । (संयुक्त)

(९)—उसके दाँत गिर चुके हैं, अत: खा पी नहीं सकता । (मिश्र)

(१०)—वह उत्तीर्ण होना चाहता है, इसलिये तो परिश्रम कर रहा है । (मिश्र)

(११)—यद्यपि वह हतोत्साह हो चुका था किन्तु दुश्मनों से लड़ता ही रहा । (सरल)

(१२)—जैसे उसने गाय की रक्षा की थी उसने सारा वृत्तान्त बड़ी विचित्रता से सुनाया । (सरल)

(१३)—जब तक हम न दौड़ेंगे हमें गाड़ी नहीं मिलेगी । (सरल)

(१४)—यद्यपि तरंगें बहुत ऊँची उठ रही हैं तथापि मैं तुम्हें पार कर दूँगा । (संयुक्त)

(१५)—उसने अपने हृदय को कड़ा किया वह लोगों को निर्दयता से मारना चाहता था । उसका हृदय बड़ा नरम था । वह लोगों को सबक सिखाना चाहता था वे लोग भागे हुए थे (सरल)

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

४—सरल और व्यस्त वर्णन
(Direct and Indirect Narration)

जब कोई वक्ता किसी दूसरे की उक्ति को ठीक उसी के शब्दों में वर्णन करता है तो ऐसे वर्णन को **सरल** या **अपरोक्ष** वर्णन कहते हैं। जैसे सुग्रीव ने कहा, "मुझे मेरे भाई ने निकाल दिया है।" यहाँ उद्धहरण चिन्हों (" ") के बीच सुग्रीव के ही शब्द बिना किसी परिवर्तन के प्रयुक्त हुए हैं। यह सरल वर्णन है।

इसी को दूसरे रूप में देखो। सुग्रीव ने कहा कि उसे उसके भाई ने निकाल दिया था—इसमें 'मुझे' के स्थान में 'उसे', 'मेरे' के स्थान में 'उसके', 'दिया है' के स्थान में 'दिया था' का प्रयोग हुआ है। अर्थात् वक्ता सुग्रीव के शब्दों को अपने शब्दों में परिवर्तित कर लेता है। ऐसे वर्णन को **व्यस्त** या **परोक्ष** वर्णन कहते हैं।

व्यस्त वर्णन में उद्धरण चिह्न नहीं लगते, किन्तु उसके पहले 'कि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है और वक्ता उन उद्धृत शब्दों को अपने दृष्टिकोण से अपने शब्दों में बदल देता है।

एक तीसरा रूप देखो। सुग्रीव ने कहा कि मुझे मेरे भाई ने निकाल दिया है। इसे सरल वर्णन ही कह सकते हैं, यह हिन्दी मुहाविरे के अनुसार बिल्कुल ठीक है।

यद्यपि अंग्रेजी भाषा में सरल और व्यस्त वर्णनों के ठीक ठीक रूप जानना और तत्सम्बन्धी नियमों का पालन नितान्त आवश्यक है, हिन्दी में इस विषय का इतना महत्त्व नही। यथार्थ पूछिये तो हिन्दी में व्यस्त वर्णन कम होता है और यदि किसी प्रकार सम्भव भी हो तो वाच्य के द्वारा नहीं, किन्तु वाक्य के भाव को किसी अनुकूल शब्दसमूह के द्वारा प्रकट करने से। जैसे—

सरल—उसने मुझसे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

व्यस्त—उसने मुझसे मेरा नाम पूछा।

विद्यार्थियों को उचित है कि अँगरेजी भाषा एतद्विषयक नियम हिन्दी में सर्वथा लगाने की चेष्टा न करें, उन्हें वहाँ लगावें जहाँ उनका प्रयोग करने से

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भी भाषा में दोष न आना हो और भाव में अस्पष्टता न आती हो। नीचे के उदाहरण में देखोः—

डाकू ने मुसाफिर से कहा, "यदि तुम मेरा कहना नहीं मानोगे और अपने साथी को नहीं बुला दोगे तो मैं तुमको और उसको मार डालूँगा।"

इस सरल वर्णन को अँगरेज़ी के अनुसार व्यस्त वर्णन में लिखो तो यह रूप होगाः—

डाकू ने मुसाफिर से कहा कि यदि वह उसका कहना नहीं मानेगा और अपने साथी को नहीं बुला देगा तो वह उसको और उसको मार डालेगा। इसमें 'वह', 'उसको' शब्द कितना भ्रम पैदा करते हैं।

इसी वर्णन को यदि चलतू रूप में रक्खें तो यह रूप होगाः—

डाकू ने मुसाफिर से कहा कि यदि तुम मेरा कहना नहीं मानोगे और अपने साथी को नहीं बुला दोगे तो मैं तुमको और उसको मार डालूँगा।

अब वाक्य में कोई भ्रम नहीं।

अभ्यास

निम्नलिखित सरल वर्णनों को व्यस्त और व्यस्त वर्णनों को सरल वर्णनों में बदलो।

(१) गोपाल ने कहा, "मेरी माँ बीमार है।"

(२) उसने कहा—"शायद आप अदृष्ट की सत्ता को मानते हैं। प्रत्येक विवेकशील पुरुष उसे मानता है, पर मैं नहीं मानता था।"

(३) मोहन बोलाः—"हाँ मेरा भी ऐसा ही अनुमान है। हरि मोहन बाबू को छोड़कर इस नगर में मेरा कोई भी सुहृद नहीं है।"

(४) उसने कहा कि यह बात मैं उस समय की कह रहा हूँ जब मैं चित्रकूट दर्शन करने गया था।

(५) सावित्री धीरे से बोली कि मोहन बाबू घर में नहीं हैं। कल ही के प्रयाग गए हैं, अभी तक लौटे नहीं।

(६) शतीश ने एक सुन्दर फाउंटेन पेन देखकर प्रसन्नता से दुकानदार से पूछा कि यह कितने का है। दुकानदार ने कहा कि दस रुपए का। तब तो शतीश की तबीयत उदास हो गई।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

८—वाच्य परिवर्तन (Change of Voice)

'वाच्य' से यह प्रकट होता है कि किसी क्रिया का असली कर्त्ता किस कारक में रक्खा गया है, कर्त्ताकारक में या करणकारक में । यदि क्रिया का असली कर्त्ता कर्त्ताकारक में हो तो उस क्रिया को **कर्तृवाच्य** क्रिया (Active Voice) कहते हैं । जैसे—'देवदत्त पोथी पढ़ता है'—इसमें पढ़ने का काम करने वाला 'देवदत्त' है जो कर्त्ताकारक में रक्खा गया है; इसलिए 'पढ़ता है' कर्तृवाच्य क्रिया है ।

यदि क्रिया का असली कर्त्ता करणकारक में हो और उसका कर्म कर्त्ताकारक में हो तो क्रिया को कर्मवाच्य क्रिया (Passive Voice) कहते हैं; जैसे 'देवदत्त से पोथी पढ़ी जाती है, इसमें पढ़ने वाला 'देवदत्त' तो करणकारक में है और 'पोथी' शब्द जो पढ़ने का कर्म है कर्त्ताकारक में रक्खा गया है, इसलिए 'पढ़ी जाती है' कर्मवाच्य क्रिया है ।

अकर्मक क्रिया का असली कर्त्ता भी करणकारक में आता है और उसमें कर्म न होने के कारण कर्त्ताकारक में कोई शब्द नहीं होता; ऐसी क्रिया को **भाववाच्य** क्रिया (Impersonal Voice) कहते हैं जैसे 'मुझसे नहीं सोया जाता'—इसमें सोने का काम करनेवाला यथार्थ कर्त्ता करणकारक में आया है, और कर्त्ताकारक में कोई शब्द नहीं; इसलिए 'सोया जाता' भाववाच्य क्रिया है । इसी प्रकार 'मुझसे रहा जाता है' में 'रहा जाता' भाववाच्य क्रिया है ।

कर्मवाच्य रूप बनाने के लिए मुख्य क्रिया के सामान्य भूतकाल के रूप में 'जाना' क्रिया का इष्ट रूप जोड़ दो; जैसे मुख्य क्रिया 'पढ़ना' से पत्र पढ़ा जाता है, पढ़ा जायगा, पढ़ा गया था, पढ़ा जाय; चिट्ठी पढ़ी जाती है, पढ़ी जाएगी, पढ़ी गई थी, पढ़ी जाय; अक्षर पढ़े जाते हैं, पढ़े जायँगे, पढ़े गए थे आदि । परन्तु स्त्रीलिंग बहुवचन में 'पढ़ीं' न होगा, किन्तु 'पढ़ी' रहेगा; जैसे 'चिट्ठियाँ पढ़ी जाएँगी' । आवश्यकतानुसार क्रिया का पुरुष बदल जाता है, जैसे मैं तुम्हें मारूँगा (उ० पु०)—तुम मुझसे मारे जाओगे (म० पु०)

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भाववाच्य रूप बनाने का भी यही नियम है, परन्तु वह सदा पुंलिंग एकवचन ही रहता है, जैसे 'हमसे नहीं सोया जाता, मनुष्यों से उठा नहीं गया, स्त्रियों से रहा नहीं जाता' आदि। जब 'जाना' मुख्य क्रिया होती है तो उसका रूप भाववाच्य में 'जाया' होता है, जैसे 'क्या तुमसे जाया नहीं जाता?'

वाच्यपरिवर्तन (Change of Voice)—कर्तृवाच्य क्रिया को कर्मवाच्य या भाववाच्य क्रिया में बदलना तथा कर्मवाच्य या भाववाच्य क्रिया को कर्तृवाच्य क्रिया में बदलना 'वाच्यपरिवर्तन' कहलाता है।

द्विकर्मक क्रियाओं के वाच्यपरिवर्तन में प्रधान कर्म को कर्ता कारक के रूप में प्रकट करते हैं; और गौण कर्म का रूप नहीं बदलते। जैसे 'बाप ने बेटे को एक गीत सुनाया'—इसमें 'गीत' प्रधान कर्म है; इसलिए, वाच्यपरिवर्तन में, 'बाप से बेटे को एक गीत सुनाया गया'—यह रूप हुआ। 'बाप से बेटा एक गीत सुनाया गया'—भद्दा रूप है।

कुछ क्रियाओं का रूप तो कर्मवाच्य का नहीं होता, परन्तु अर्थ होता है; जैसे दूध बिकता है (बेचा जाता है); घर पुतता है (पोता जाता है); सड़क नपती है (नापी जाती है) आदि। ऐसे वाक्यों के वाच्यपरिवर्तन में यथार्थ कर्त्ता को कर्त्ताकारक में रखना पड़ेगा; जैसे अहीर दूध बेचता है; नौकर घर पोतता है; मज़दूर सड़क नापता है; आदि। स्मरण रखना चाहिए कि "दूध बिकता है" और "दूध बेचा जाता है" का भाव एक नहीं है।

अभ्यास

(१) निम्नलिखित वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन करो:—

मैं लिखता हूँ। मैं लिख रहा हूँ। मैं पत्र लिख चुका हूँ। तुम कल फल खाओगे। वह इतनी बात समझती ही थी। रामू ने श्यामू के कोट में बटन लगाने का वादा किया। क्या तुमने राधामोहन का अख़बार वापस दिया था? देवदत्त ने न खाना खाया न पानी पिया। मोहन से पाँच पुस्तकें ली गईं। रहीम से खाया नहीं जाता।

(२) अध्यापकजी पाठ्यपुस्तक के या अन्य जिन वाक्यों को कहें वाच्य-परिवर्तन करो।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

६—अनुक्त पद पूरण (Filling up of gaps)

वाक्य के बीच बीच एक या अधिक शब्द छुटे हों तो उनके भरने का अभ्यास विद्यार्थी को करना चाहिए। इसके लिए कोई विशेष नियम नहीं है; अर्थ पर दृष्टि रखकर, युक्ति के साथ, रिक्त स्थानों की पूर्ति करनी चाहिए; फिर भी निम्नलिखित बातें कुछ सहायता दे सकती हैं:—

(क) समान कारक वाले दो पदों के बीच यदि अनुक्त शब्द रहे तो प्रायः वह संयोजक अव्यय होता है, क्रिया के वचन से भी सहायता मिलती है। जैसे, 'मोहन सोहन गए'—में 'और' शब्द छिपा है। 'मोहन सोहन जावे'—में 'या' शब्द छिपा है।

(ख) अगर वाक्य के प्रारम्भ में 'यदि', 'जब', 'जहाँ', 'जैसे', 'जितना', आदि शब्द हों, तो पीछे क्रमशः 'तो', 'तब', 'वहाँ', 'वैसे', 'उतने', आदि सापेक्ष शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। जैसे "यदि तुम परिश्रम करो…धन मिल सकता है" —में 'तो' शब्द छिपा है

(ग) विशेष्य या विशेषण के पास वाला शब्द छिपा हो तो वह प्रायः यथाक्रम विशेषण या विशेष्य होता है। जैसे, "…आम देखकर किसका मन नहीं ललचाता !" इसमें 'मीठे' या 'पके' आदि विशेषणों में से कोई लग सकता है।

(घ) कर्त्ता, कर्म, करण आदि कारक; क्रिया-विशेषण, क्रिया, अन्य प्रकार के अव्यय प्रकरण से जाने जा सकते हैं।

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:—

(१) मोहन—में सो रहा है।

(२) मेरी—के—फाड़ डाले।

(३) लल्लू चारपाई—पड़ा सो रहा है।

(४) मैं टिकट नहीं—सकता।

(५) आज मेरे—स्वामी जी—थे।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(६) दीवार — चित्र लटकाए—हैं।
(७) देखें — कौन जाता है।
(८) भाई भगवान— ही दुःख में — और—देनेवाला है।
(९) इस—में स्वावलम्बन ही सच्चा— है।
(१०) जब सावित्री—सुना—पति—से—आ रहे हैं तो उसके—की—न रही।
(११) देखिए—में सँभल—चलिएगा।
(१२) पति—आज्ञा—करना—का परम कर्तव्य है।
(१३) वसन्त की—बड़ी—लगती है।
(१४) विद्यादान का बड़ा—है।
(१५) मैं इतना—अपने—पर लेने —नहीं प्रस्तुत हूँ।
(१६) महाराणा प्रताप की बड़ी—हुई कि इस दु:ख से कैसे—पाऊँ।
(१७) उसकी—की प्रशंसा शिलालेखों—अब—विद्यमान है।
(१८) वह गानविद्या में—था।
(१९) उसने अपने राजा के— में अच्छे अच्छे काव्यों—रचना की है।
(२०) इस बात—सत्यता—खोज के लिए एक और विद्वान—काम शुरू किया है।

७—वाक्यों को शुद्ध करना
(Correction of Sentences)

वाक्य में अनेक प्रकार की अशुद्धियाँ हो सकती हैं; अशुद्ध अक्षर का प्रयोग (दृश्य के स्थान में द्दष्य); अशुद्ध संधि (उपर्युक्त के स्थान में उपरोक्त); अक्षराधिक्य (ऐक्य के स्थान में ऐक्यता); दूसरी भाषा का प्रत्यय (ग़रीबी के स्थान में ग़रीबता); ने, को, से आदि विभक्तियों का दु:प्रयोग (मैं दौड़ा के स्थान में मैंने दौड़ा); संज्ञा, क्रिया, अव्यय में से किसी का अशुद्धि प्रयोग; लिंग-सम्बन्धी अशुद्धि, वचन-सम्बन्धी अशुद्धि, पुरुष-सम्बन्धी अशुद्धि इत्यादि।

वाक्यों के शुद्ध करने में तुमको व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान तो चाहिए ही, बुद्धि के प्रयोग की और भी अधिक आवश्यकता है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तुम व्याकरण की दृष्टि से शब्दों के शुद्ध प्रयोग विषयक नियम को पढ़ चुके हो। नीचे कुछ अशुद्ध वाक्य दिये जाते हैं। उन्हें शुद्ध रूप में लिखो। साथ ही यह भी बतलाओ कि उनमें कहाँ और क्यों अशुद्धि है।

जब आप बोले तो हम नहीं सुने।

जब उन्होंने रोये तो बड़ा शोर मचा।

उन्होंने हँसते हँसते लोट गये।

उनको ऋण देना है।

ग्रामों में सुन्दर उड़ते हुए चिड़ियों और बहते हुए नदियों का दर्शन होता है।

राजों के किये कुछ नहीं हो सकता।

उन्हों से अब कुछ किये धरे न होगा।

कभी भारतवर्ष में दुग्धों की धारा बहती थीं।

वह रात की गाड़ी से कलकत्ता गए।

आजकल ब्राह्मण श्राप नहीं देते।

प्रेमचन्द्रजी उपन्यास सम्राट हैं।

वर्षा ऋतु में पर्वतों की सौन्दर्यता देखते ही बनती है।

राम अपने मित्र से कहा-मेरी आँख आई है अतः मैं आजकल बहुत दुःखी हूँ। मित्र ने कहा भाई धैर्य रखो; आई है तो चली भी जायगी, बैठ थोड़ी ही जायगी।

मैं यह समय सानन्द पूर्वक हूँ।

आप तो बेफ़जूल की बातें करते हैं।

आजकल शहरों में निखालिस दूध नहीं मिलता।

उसने शत्रु से लड़ने के बीड़े उठाए।

उनकी सौजन्यता पर कौन मुग्धायमान न होगा।

वह बालिका अब युवक हो गई है।

वह सबकी बातों में टाँग फँसाते फिरते हैं।

राम ने यहाँ आने का शब्द दिया है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

फ़िलहाल में हम वहाँ नहीं जा सकते।
उस भयानक दृश्य को देखकर लोगों के रोंगटे सीधे हो गए।
उस विचारे का प्राण निकल गया है।
यद्यपि वह नहीं पढ़ा, परन्तु उसके उत्तीर्ण होने की पूरी आशा है।
उसे अपनी परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने की आशा है।
जब तक तुम परिश्रम नहीं करोगे तुमको पास होने की कोई सम्भावना नहीं है।
अब अफ्रीका ऐसे देश में भी सभ्यता का विकाश हो रहा है।
श्रोत का पानी मधुर होता है।
संसारिक सुखों में कोई सार नहीं।
आज हमने अति सुन्दर दृश्य देखा।
यह कथा निरस है।
अब मेरी तो किसी काम करने की इच्छा नहीं है।
ये पुस्तकें प्रथक प्रथक रखो।
वे किसी की कोई वस्तु ग्रहण नहीं करते।
स्मशान को देखकर वैराग्य उत्पन्न होता है।
क्रियों का फल अवश्य मिलता है।
यह व्यवहार आदमियता के विपरीत है।
घंटा बजते ही बालक कक्षा में एकत्रित हुए।
यह अध्यापक बालकों के मुँह में दम किये रहता है।
प्रिय का वियोगपन कितना अखरता है।
मैं विश्वनाथजी का दर्शन कर आया।
ऐसे मनुष्य जो कुछ पढ़े लिखे हों वह बहुत मिल जायँगे।
चार का घंटा बज नहीं पाया था कि डंडा चलने लगा।
संसार में सन्मान पाना बहुत कठिन है।

—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तुम व्याकरण की दृष्टि से शब्दों के शुद्ध प्रयोग विषयक नियम को पढ़ चुके हो। नीचे कुछ अशुद्ध वाक्य दिये जाते हैं। उन्हें शुद्ध रूप में लिखो। साथ ही यह भी बतलाओ कि उनमें कहाँ और क्यों अशुद्धि है।

जब आप बोले तो हम नहीं सुने।

जब उन्होंने रोये तो बड़ा शोर मचा।

उन्होंने हँसते हँसते लोट गये।

उनको ऋण देना है।

ग्रामों में सुन्दर उड़ते हुए चिड़ियों और बहते हुए नदियों का दर्शन होता है।

राजों के किये कुछ नहीं हो सकता।

उन्हों से अब कुछ किये धरे न होगा।

कभी भारतवर्ष में दुग्धों की धारा बहती थीं।

वह रात की गाड़ी से कलकत्ता गए।

आजकल ब्राह्मण श्राप नहीं देते।

प्रेमचन्द्रजी उपन्यास सम्राट हैं।

वर्षा ऋतु में पर्वतों की सौन्दर्यता देखते ही बनती है।

राम अपने मित्र से कहा मेरी आँख आई है अतः मैं आजकल बहुत दुःखी हूँ। मित्र ने कहा भाई धैर्य रखो; आई है तो चली भी जायगी, बैठ थोड़ी ही जायगी।

मैं यह समय सानन्द पूर्वक हूँ।

आप तो बेफ़ज़ूल की बातें करते हैं।

आजकल शहरों में निखालिस दूध नहीं मिलता।

उसने शत्रु से लड़ने के बीड़े उठाए।

उनकी सौजन्यता पर कौन मुग्धायमान न होगा।

वह बालिका अब युवक हो गई है।

वह सबकी बातों में टाँग फँसाते फिरते हैं।

राम ने यहाँ आने का शब्द दिया है।

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

फ़िलहाल में हम वहाँ नहीं जा सकते ।
उस भयानक दृश्य को देखकर लोगों के रोंगटे सीधे हो गए ।
उस विचारे का प्राण निकल गया है ।
यद्यपि वह नहीं पढ़ा, परन्तु उसके उत्तीर्ण होने की पूरी आशा है ।
उसे अपनी परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने की आशा है ।
जब तक तुम परिश्रम नहीं करोगे तुमको पास होने की कोई सम्भावना नहीं है ।
अब अफ्रीका ऐसे देश में भी सभ्यता का विकाश हो रहा है ।
श्रोत का पानी मधुर होता है ।
संसारिक सुखों में कोई सार नहीं ।
आज हमने अति सुन्दर दृश्य देखा ।
यह कथा निरस है ।
अब मेरी तो किसी काम करने की इच्छा नहीं है ।
ये पुस्तकें प्रथक प्रथक रखो ।
वे किसी की कोई वस्तु ग्रहण नहीं करते ।
स्मशान को देखकर वैराग्य उत्पन्न होता है ।
क्रियों का फल अवश्य मिलता है ।
यह व्यवहार आदमियता के विपरीत है ।
घंटा बजते ही बालक कक्षा में एकत्रित हुए ।
यह अध्यापक बालकों के मुँह में दम किये रहता है ।
प्रिय का वियोगपन कितना अखरता है ।
मैं विश्वनाथजी का दर्शन कर आया ।
ऐसे मनुष्य जो कुछ पढ़े लिखे हों वह बहुत मिल जायँगे ।
चार का घंटा बज नहीं पाया था कि डंडा चलने लगा ।
संसार में सन्मान पाना बहुत कठिन है ।

—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अध्याय ४

अनुच्छेद या प्रघट्टक

(PARAGRAPH)

१—अनुच्छेद का निर्माण

किसी भी गद्य पुस्तक के पढ़ने में तुम देखते हो कि प्रत्येक अध्याय कई भागों में बँटा रहता है और हर एक भाग की पहली पंक्ति अन्य पंक्तियों से कुछ दाहिने हटा कर प्रारम्भ की जाती है। ऐसे प्रत्येक भाग को **अनुच्छेद** या **प्रघट्टक** कहते हैं।

इस प्रकार के भाग अलग हो जाने से पढ़ने वाले को बड़ी सुविधा होती है, उसकी विचार-श्रेणी ठीक ठीक कार्य करती है। परन्तु यह न समझ लेना चाहिए कि किसी भी विषय के भाग जिस प्रकार चाहें कर लें। भाग ऐसे होने चाहिए कि जिनमें से प्रत्येक का भाव एक ही हो, प्रथम वाक्य में कही हुई बात का समर्थन, परिपोषण या परिवर्धन उस भाग के अन्य वाक्य करते हों, और सम्भवतः अन्तिम वाक्य के पढ़ने से यह प्रतीत होता हो कि इस भाव की विचारशैली अब समाप्त हो गई।

पूरे लेख या विषय या अध्याय में बहुत से भाव होते हैं; परन्तु उसके एक अनुच्छेद में एक ही भाव के परिपोषक या परिवर्द्धक वाक्य होते हैं। जैसे, गाय का वर्णन हो तो पूरे विषय में उसकी जाति, निवास, भोजन, स्वभाव, बच्चे, लाभ आदि सम्बन्धी अनेक भाव होंगे। प्रत्येक भाव को एक अनुच्छेद में परस्पर सम्बद्ध वाक्यों द्वारा दिखलाना होगा। गोस्वामी तुलसीदास का वर्णन करना हो तो उस वर्णन में जन्म, गृहस्थाश्रम, साधुवृत्ति, अन्त, भक्ति, पांडित्य, कविता, प्रभाव, आदि अनेक भावों का समावेश होगा, और प्रत्येक भाव एक या अधिक अनुच्छेदों में दिखाया जायगा। अतः किसी भी अनुच्छेद में एक भाव से अधिक न होना चाहिए; परन्तु किसी भी भाव के भिन्न भिन्न अंगों को आवश्यकतानुसार अधिक अनुच्छेदों में दिखला सकते हैं।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अनुच्छेद की लम्बाई नियत नहीं। उसकी संख्या एक पंक्ति से अनेक पक्तियों तक हो सकती है और एक वाक्य से अनेक वाक्यों तक हो सकती है।

कभी कभी विद्यार्थियों से पूछा जाता है कि अमुक विषय पर एक अनुच्छेद लिखो। तब एक ही अनुच्छेद में सम्पूर्ण भाव इस प्रकार लिख देना होता है कि यथासम्भव प्रथम वाक्य में प्रधान भाव की कुंजी रहे, सब वाक्यों में सम्बन्ध और क्रम रहे, और अन्तिम वाक्य में भाव की समाप्ति रहे।

स्मरण रखना चाहिए कि—

अनुच्छेद ऐसे वाक्यसमूह को कहते हैं जो परस्पर सम्बद्ध हो और जिससे किसी एक भाव की परिपुष्टि होती हो।

सिंह के निम्न-लिखित वर्णन में ध्यान से देखो कि अनुच्छेद (१) में सिंह के निवास-स्थल का वर्णन है; (२) में उसके राजा होने का वर्णन है; (३), (४), (५), (६) में उसकी तुलना बिल्ली से की गई है; परन्तु चूँकि इस तुलना के कई अंग हैं (नख, दन्त, पुच्छ, धर्मासहिष्णुता) इसलिए चार अनुच्छेदों का प्रयोग किया गया है; (७) में सिंह के स्वभाव का वर्णन है, और (८) में उसकी संतति का वर्णन है। प्रत्येक अनुच्छेद का प्रथम वाक्य उस अनुच्छेद की कुजी है, अर्थात् उसके पढ़ते ही पता चल जाता है कि इस अनुच्छेद का अमुक भाव होगा। अन्य वाक्य उसी भाव को पुष्ट करते या बढ़ाते हैं। फिर प्रत्येक अनुच्छेद का अन्तिम वाक्य पढ़ते ही उस भाव की लेखकानुमत समाप्ति हो जाती है और तद्विषयक अन्य कोई बात कहने को नहीं रह जाती।

प्रत्येक अनुच्छेद के सब वाक्यों में भी क्रम है, किसी वाक्य के समाप्त होते ही पाठक की इच्छा जो जानने की होती है वही बात दूसरे वाक्य में मिलती है। यही नहीं, किन्तु अनुच्छेदों में भी क्रम होता है।

ये बातें तुम्हें अच्छे लेखकों के लेखों में सदा मिलेंगी।

सिंह (The Lion)

(१) प्राचीन काल में भारतवर्ष के अनेक स्थानों में सिंह पाये जाते थे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हिमालय पर्वत की तराई में सिंह रहता था। इसका प्रमाण जगह जगह संस्कृत ग्रन्थों में पाया जाता है। भारत के अमर कवि कालिदास ने स्वकीय सुप्रसिद्ध रघुवंश नामक महाकाव्य में भारतीय सिंह के विषय में उल्लेख किया है। कालक्रम से भारतीय सिंह-वंश प्रायः विलुप्त हो गया है। वर्तमान समय में केवल गुजरात देश में, काठियावाड़ राज्य के घने जंगलों में, कहीं कहीं सिंह का पता मिलता है।

(२) सिंह का दूसरा नाम है पशुराज। सिंह प्रकृति से पशुकुल का राजा है। सिंह भयङ्कर हिंस्र जन्तु है। किन्तु जब क्रोध का उद्वेग नहीं रहता या शिकार करने में संलग्न नहीं रहता तब सिंह की स्थिरता, धीरता और गम्भीरता दर्शन योग्य रहती है। व्याघ्र की भाँति सिंह में स्वाभाविक चंचलता नहीं होती। मस्तक की केशर सिंह के गम्भीर भाव को और भी शोभायमान करती है। सिंह जब अपने केशर-दाम-शोभित मस्तक को उन्नत कर अपने शान्त नयनों को इधर उधर घुमाया करता है तब सचमुच उसको पशुकुल का चक्रवर्ती राजाधिराज कहने की इच्छा हृदय में उत्पन्न होती है। उसकी गम्भीरता देख दूसरे पशुओं का मस्तक स्वयं नत हो जाता है। अमितबल, नखरूप तीक्ष्ण आयुध, मांसल पदराजि, प्रशान्त नयन, सुतीक्ष्ण दशन-पंक्ति और किरीट रूपी केश-राशि द्वारा पराक्रमी सिंह का पशुराजत्व सर्वदा विघोषित होता रहता है।

(३) सिंह के शरीर का ढांचा मार्जार के अनुरूप होता है। बिल्ली की भाँति सिंह के सम्मुख के चरणद्वय में पाँच पाँच एवं पश्चाद्वर्ती चरणों में चार चार उँगलियाँ रहती हैं। इन अठारह उँगलियों के भीतर एक एक सुतीक्ष्ण और कठिन नख रहता है। ये नख बड़े यत्न से रक्षित रहते हैं। शिकार करते समय बिल्ली या सिंह दोनों ही अपने नख को नहीं दिखाते। प्रत्युत वे नखों को मांसल उँगलियों के भीतर छिपाये रहते है। आहार्य संग्रह के प्रधान उपकरण एवं शरीर रक्षा के श्रेष्ठ आयुध नखों को सर्वदा व्यवहार में लाकर भग्न वा व्याहत करना सिंह का अभिप्राय नहीं रहता।

(४) बिल्ली की तरह सिंह के मुख में भी दाँतों की संख्या तीस रहती है। इनमें ऊपर और नीचे वाली पंक्तियों में दो बड़े और तेज दाँत होते हैं।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शिकार के विद्ध करने के लिए ये प्रधान अस्त्र हैं। विद्ध आखेट को टुकड़े टुकड़े करने के लिए छः दाँत दोनों पंक्तियों के पीछे परिदृष्ट होते हैं। इनके अतिरिक्त ऊपर की पंक्ति में आठ और नीचे की पंक्ति छः चवर्ण होते हैं।

(५) क्षुद्रकाय मार्जार के साथ बृहदायतन सिंह का सब प्रकार सादृश्य है; किन्तु पूँछ में पार्थक्य है। सिंह की पूँछ का अग्रभाग गोपुच्छाकार होता है; किन्तु गोपुच्छ की तरह रोमराजि दीर्घ नहीं, बल्कि स्थूल गुच्छ सम्पन्न है। मार्जारजार जातीय अन्य किसी प्राणी की पूँछ रोमगुच्छ समन्वित नहीं होती।

(६) सिंह भी बिल्ली की तरह कड़ी धूप सहने में असमर्थ होता है। जिस तरह बिल्ली सूर्यालोक में नेत्र मूँदे रहती है और अन्धकार में उसकी आँखें चमकती-सी मालूम पड़ती हैं उसी प्रकार सिंह भी इस विषय में अनुभव करता है, बल्कि बिल्ली की अपेक्षा सिंह को धूप अधिक कष्टप्रद होती है। वह दिन के समय घने बन में, छायामय स्थान में, वा पर्वत की अन्धकारमय गुफा में छिप-कर काल व्यतीत करता है और सूर्य्य के अस्त होने पर धीरे-धीरे बाहर निकल कर शिकार का अन्वेषण करता है। निःशब्द पदक्षेप करके शिकार का आक्रमण करने में सिंह विशेष रूप से अभ्यस्त है।

(७) सिंह हिंस्र श्वपद है अवश्य, किन्तु इसमें निर्दयता नहीं है। इसकी दयालुता के सम्बन्ध में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। सिंह के पाँव से काँटा निकालने के कारण एक विपद्ग्रस्त मनुष्य ने पशुराज के कराल कवल से कैसे उद्धार पाया उसकी कथा बहुतों को विदित है।

(८) सिंह में एक और नियम दृष्टिगोचर होता है। सिंहनी तीन वर्ष में एक बार सन्तान प्रसव करती है और एक बार में अनेक बच्चे पैदा होते हैं। दो से कम संतान इसे कभी नहीं होती, प्रत्युत पाँच-छः बच्चे होते देखे गये हैं। जिस तरह तीन वर्षों पर प्रसव होता है उसी तरह प्रसूत शावक तीन वर्ष पर्यन्त माता के संग संग घूमते हैं। ज्यों ही माता को दूसरी बार संतान होती है; त्यों ही पहिली सन्तान स्थानान्तर में चली जाती है।

२--विराम-चिन्ह (Marks of Punctuation)

बातचीत के सिलसिले में वक्ता बीच-बीच में अधिक और कहीं कम

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

देर के लिए रुक जाया करता है। ऐसा करने से उसका आशय अच्छी तरह समझने में आसानी होती है। ऐसे ही लेख में वाक्यों की तात्पर्य ठीक तौर से समझने के लिए उनके बीच रुकने के सूचक चिह्नों की आवश्यकता पड़ती है। रुकने को **विराम** भी कहते हैं। इसलिए इस प्रकार के चिह्नों को **विराम-चिह्न** कहा जाता है।

उचित विराम चिह्नों के प्रयुक्त न होने या उनके नितान्त अभाव से लेख का ठीक अर्थ समझने में भ्रम हो जाने का डर होता है। कभी कभी शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों का एक-दूसरे से सम्बन्ध भी भली भाँति समझ में नहीं आता। अतः यह आवश्यक है कि आवश्यकतानुसार कम अथवा अधिक देर तक रुकने तथा वाक्य के भाव को लिखावट से सूचित करने आदि के लिए उचित चिह्नों का प्रयोग किया जाय।

मुख्य विराम-चिह्न * और उनके नाम ये हैं:—

(१) पूर्ण विराम [।] (Full Stop).
(२) अल्प-विराम [,] (Comma).
(३) अर्ध-विराम [;] (Semi colon).
(४) कोलन [:] (Colon).
(५) प्रश्न-सूचक चिह्न [?] (Note of interrogation, query).
(६) विस्मय-सूचक अथवा भाव-सूचक चिह्न [!] (Note of exclamation).
(७) निर्देश-चिह्न [—] (Dash).
(८) योजक या सम्बन्ध-चिह्न [-] (Hyphen).
(९) अवतरण या उद्धरण-चिह्न [" " या ' '] (Inverted Commas).
(१०) संक्षेप-सूचक या लाघव- चिह्न [. या ०] (Initial)
(११) लोप चिह्न [......]

* कोष्ठक के भीतर दिया हुआ चिह्न ही विराम-चिह्न है।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(१२) कोष्ठक [,] या ( ) (Brackets).

इन विराम चिह्नों का तात्पर्य और प्रयोग नीचे लिखा जाता है:—

(१) **पूर्ण-विराम** वर्णनात्मक या आज्ञात्मक वाक्य के पूरा होने पर उसके अन्त में लगाया जाता है। जैसे,

(वर्णनात्मक) उसी मुहल्ले में एक सेठ गिरधारीलाल रहते थे। उनका लाखों का लेनदेन था। वे हीरों और रत्नों का व्यापार करते थे। पुराने ढंग के आदमी थे। वे बाबू रामरत्ता के साढू होते थे।

(आज्ञात्मक) इस समय आप मेरे ऊपर कृपा कीजिये। यहाँ से चले जाइये।

वे तनकर बोले, अच्छा कल हमारा हिसाब साफ़ हो जाय।

सूचना—वाक्य के पूर्ण होने के लिए उसके उद्देश्य और विधेय इन दोनों अंगों का पूरा होना आवश्यक है। परन्तु कभी कभी इनमें से किसी के अपूर्ण होने पर भी वाक्य पूरा समझा जाता है। ऐसे अवसरों पर भी पूर्ण विराम का चिह्न प्रयुक्त होता है। जैसे,

गोपाल—आओ खेलने चलें।

मोहन—नहीं।

गोपाल—अच्छा आओ यहीं खेलें।

मोहन—सो भी नहीं।

गोपाल—तो मैं जाता हूँ।

मोहन—बड़ी खुशी से।

(२) **अल्प-विराम** का प्रयोग बहुत थोड़ी देर तक रुकने के लिए होता है। वाक्य में निम्नलिखित स्थलों पर अल्प-विराम का चिह्न लगाया जाता है:—

(क) जहाँ एक साथ बहुत से शब्दों का एक ही संघटन में प्रयोग होता हो वहाँ अल्प-विराम लगाया जाता है। जैसे,

सुख के साथ जीवन बिताने के लिए धन, धान्य, वस्त्र, आभूषण, मकान सभी की आवश्यकता होती है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आजकल इङ्गलैंड, जर्मनी, रूस और जापान सर्वत्र युद्ध-सामग्री के बढ़ाने में राज्यकोष का अधिकांश व्यय हो रहा है।

(ख) आश्रित वाक्य को पृथक् करने के लिए अल्प-विराम लगाया जाता है। जैसे, यदि मैं जानती कि इनका यह हाल होगा, तो गुरुमन्त्र न लेने देती।

यही वह मंडप है, जो जीवन को समस्त विघ्न-बाधाओं से सुरक्षित रखता है।

इसी प्रकार का एक दूसरा लड़का, जो कभी कुछ चुराकर नहीं खाता, सदा प्रसन्न रहता है।

(ग) समान-पदी शब्द, वाक्यांश या वाक्य को अलग करने के लिए अल्प-विराम प्रयुक्त होता है। जैसे,

भारत के एकछत्र सम्राट, समुद्रगुप्त की कीर्ति आसमुद्र व्याप्त हुई।

पुण्यभूमि महोदय (कान्यकुब्ज) का सिंहासन, सरल और अनुरक्त प्रजा, सुजला-शस्य-श्यामला भूमि, स्वास्थ्य का वातावरण और सबसे सुन्दर उत्तरा-पथ का कुसुम, यह पवित्र मुख, मेरा है।

किस खेत में क्या बोना है, किसको क्या देना है, किससे क्या लेना है, किस भाव क्या चीज़ बिकी, ऐसी महत्त्वपूर्ण बातों में भी भगत जी की सलाह न ली जाती।

(घ) वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त सम्बोधन शब्द के पश्चात् एवं वाक्य के मध्य में आये हुए सम्बोधन शब्द के पहले और बाद में अल्पविराम का चिह्न लगाया जाता है। जैसे,

भोला, यह तो तुम्हारा अन्याय है।

नहीं साहब, शिकार के वे मज़े यहाँ नहीं हैं।

हाँ लहनासिंह, वे सींग दो फुट चार इञ्च के थे।

आप के हाथ में तलवार है और, जनाब हम कमजोर हैं, इससे आप जो चाहे कहें।

सूचना—बहुत से लोग सम्बोधन शब्द के बाद विस्मय का चिह्न लगाते हैं। जैसे, नहीं प्रिये ! क्षत्रियों का विनोद तो मृगया है। ऐसा करना

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नितान्त अशुद्ध है। सम्बोधन शब्द के साथ अल्प-विराम का ही चिह्न लगाना चाहिए।

(ङ) यदि भावों की प्रबलता प्रकट करने या अधिक ज़ोर देने के लिए किसी शब्द या वाक्य को दोहराना पड़े तो उसको अल्प-विराम के चिह्न से पृथक् करना उचित है। जैसे,

वहाँ तो दिनरात बस पैसा, पैसा, की ही पुकार रहती है।

मैंने कह दिया, भोजन न करूँगा, भोजन न करूँगा। अब तो मेरा पीछा छोड़ो।

(च) वाक्य का अर्थ समझने में बाधा या रुकावट पड़ने की आशंका होने पर भी अल्प-विराम-चिह्न काम में आता है। जैसे,

रामेश्वर को नौकरी मिले, या न मिले, इससे हमारा कुछ प्रयोजन नहीं।

(छ) किसी वाक्य के बीच में आये हुए संयोजक शब्दों या वाक्यांशों के पहले और बाद में अल्प-विराम-चिह्न लगाया जाता है। जैसे,

उसको, इस पर भी, शास्त्रार्थ में परास्त होना ही पड़ा।

वकील के बहुतेरा जिरह करने पर भी डाकू को, अन्ततः, फाँसी का दण्ड मिल ही गया।

यह वृत्तान्त, बहुतेरा छिपाने पर भी, नगर के कोने-कोने फैल गया।

(ज) अवतरण या उद्धरण वाक्यांश या वाक्य के पूर्व अल्प-विराम-चिह्न लगाया जाता है। जैसे,

हँसते हुए भट्टाचार्य ने कहा, "आज आपने मेरे ऊपर बड़ा अनुग्रह किया।"

जागेश्वर ने सोचा, जब चाचा साहब की मुट्ठी से ज़मीन निकल आवेगी तब मैं दस-पाँच रुपये साल पर इसे ले लूँगा।

सूचना—बहुतेरे लोग अवतरण के पहले निर्देश-चिह्न (डैश) लगाते हैं। जैसे, लहनासिंह ने कटोरा उसके मुँह से लगाकर पूछा—"कहो कैसे हो?" ऐसा ढंग ठीक नहीं। अवतरण या उद्धरण के पूर्व सदा अल्प-विराम ही लगाना चाहिए।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(३) **अर्ध-विराम** चिह्न पूर्ण विराम से कुछ कम और अल्प विराम से कुछ अधिक समय तक रुकने की सूचना देने के लिए लगाया जाता है।

(क) यह चिह्न समानाधिकरण वाक्यों के बीच लगाया जाता है। जैसे,

योरप में हानिकारिणी धार्मिक रूढ़ियों का उत्पादन साहित्य ही ने किया है; जातीय स्वातंत्र्य के बीज उसी ने बोये हैं; व्यक्तिगत स्वातंत्र्य के भावों को भी उसी ने पाला, पोसा और बढ़ाया है; पतित देशों का पुनरुत्थान भी उसी ने किया है।

(ख) एक ही संयुक्त या मिश्र वाक्य के अन्तर्गत वाक्यों में से उस वाक्य के पहले अर्धविराम का चिह्न लगाया जाता है जिसमें अन्य वाक्य या वाक्यों से विपरीत भाव प्रकट किया जाता है और ऐसे वाक्य बहुधा 'परन्तु', 'किन्तु' आदि संयोजकों से प्रारम्भ होते हैं। जैसे,

यही न होता, लोग मुझे धक्के देकर निकाल देते, शायद मारते भी; पर मेरा मनोरथ तो पूरा हो जाता।

सल्तनत जाय, ग़म नहीं; पर इस हीरे को मैं उस वक्त तक न दूँगा जब तक कोई मेरी गरदन पर सवार होकर इसे छीन न ले।

बादशाह को उस पर विश्वास था; किन्तु उसे अपनी क्षुद्रता पर इतनी लज्जा आई कि वह इस रहस्य को उस पर भी न प्रकट कर सका।

(ग) आपस में सम्बद्ध वाक्यांशों को एक दूसरे से अलग करने के लिए भी अल्प-विराम का उपयोग होता है। जैसे,

उसके जीवन में सरलता थी; उसके विचारों में निष्कपटता।

आज हम जिससे प्रेम करते हैं उसी से घृणा; आज हम जिसे खोजते फिरते हैं कल उसी से आँख छिपाते; आज हम जिसकी अभिलाषा करते हैं कल उसी से विरक्ति।

संसार विचित्र है। एक ओर प्रकाश, दूसरी ओर अंधकार; एक ओर धूप, दूसरी ओर मेघ; एक ओर आनन्द, दूसरी ओर विषाद—यही संसार की गति है।

(४) **कोलन** का प्रयोग अर्ध-विराम की अपेक्षा कुछ अधिक विराम

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सूचित करने के लिए होता है इसमें पूर्ण-विराम से बहुत ही सूक्ष्म अन्तर है। पूर्ण-विराम का चिह्न एक भाव के पूरा हो जाने पर लगाया जाता है; परन्तु कोलन उस समय लगाया जाता है जिस समय एक भाव के पूरा हो जाने पर भी उसके स्पष्ट करने के लिए कुछ अन्य शब्दों या वाक्य आदि की अपेक्षा बनी रहती है। चूँकि कोलन से विसर्ग का भ्रम हो जाता है; इसलिए उसका प्रयोग हिन्दी लेखक बहुत कम करते हैं।

(क) कोलन (अथवा कभी कभी 'कोलन-डैश') का प्रयोग पूरे वाक्य के बाद ऐसे स्थान पर होता है जहाँ से आगे उस कथन की पुष्टि के लिए उदाहरण की भाँति कुछ शब्द या वाक्य लिखे जाते हैं। जैसे,

इस समय इङ्गलैंड में तीन राजनैतिक दल मुख्य हैं : उदार, अनुदार और श्रमजीवी।

प्रेमचंदजी की सभी कृतियों में ग्राम्यजीवन का स्वाभाविक चित्रण और मुहावरेदार भाषा के दर्शन होते हैं : प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गोदान आदि कोई भी ले लीजिए।

(ख) उस समय भी पूर्ण वाक्य के पश्चात् कोलन (अथवा कोलन-डैश) लगाया जाता है जिस समय उसमें कही हुई बात के समर्थन अथवा स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण या अवतरण दिये जाते हैं। जैसे,

राम शाहंशाह ने हँसते हुए कहा :—

बादशा दुनिया के हैं मोहरे मेरे शतरंज के,
दिल्लगी की चाल है सब शर्त सुलहो जंग के।

समाचार-पत्रों के प्रकाशन में सुविधा और सुव्यवस्था के विचार से उनके कार्यालयों में प्रायः तीन विभाग होते हैं : (१) व्यवसाय या प्रबन्ध-विभाग, (२) मुद्रण या मशीन-विभाग और (३) सम्पादन-विभाग।

(ग) कहीं कहीं वाक्य में आकस्मिक रुकने को आवश्यकता पड़ने और उस स्थल पर नाटकीय प्रभाव सा उत्पन्न करने के लिए भी कोलन लगाया जाता है। जैसे,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दिन भर बारिश होती रही थी, जो साँझ में और भी उग्र हो गई, वर्षा की बूँदें बाणों के समान चेहरे को बेध रही थीं : बड़ी कठिन यात्रा थी।

(५) प्रश्न-सूचक चिह्न का प्रयोग उस वाक्य के अन्त में होता है जिसमें प्रश्न या जिज्ञासा का भाव प्रकट हो। जैसे,

क्यों साहब, हम लोग हिन्दुस्तान कब जायँगे ?

लड़ाई ख़त्म होने पर। क्यों क्या यह देश पसन्द नहीं ?

उसने आतुर स्वर में पूछा, "कौन-कौन बचा ?"

डाकू पकड़ लिया गया कि नहीं ?

इसी विभूति और प्रतिपत्ति के लिए मेरी हत्या की जा रही थी न ?

सूचना—स्वतन्त्र होने पर ही प्रश्नात्मक वाक्य के अन्त में यह चिह्न लगता है; परन्तु मिश्रित वाक्य मे किसी वाक्य के आश्रित होने पर उसके आगे यह चिह्न नहीं लगाया जा सकता। जैसे, मैंने कई बार पूछा कि तुम कहाँ रहते हो। यहाँ 'तुम कहाँ रहते हो'—यह प्रश्नात्मक वाक्य 'मैंने कई बार पूछा'—इस वाक्य का आश्रित है। इससे इसके अन्त में प्रश्न-सूचक चिह्न न लगकर पूर्ण विराम का चिह्न लगा है।

यदि एक से अधिक प्रश्नात्मक वाक्य एक साथ और प्रत्येक पर अलग-अलग ज़ोर देना अभीष्ट हो तो हरेक के बाद प्रश्नसूचक चिह्न लगाना चाहिए। यदि ऐसा करना इष्ट न हो तो उनको अल्प विराम से अलग करके अन्तिम वाक्य के बाद ही प्रश्न-सूचक चिह्न लगाना उचित होगा। जैसे, (सभी पर ज़ोर देने का उदाहरण)

आखिर इसे पढ़ने और इसमें सिर खपाने से लाभ ? इस पढ़ाई का व्यावहारिक मूल्य ? इससे हमारे देश का कौन सा कल्याण होगा ? करनी तो नौकरी ही है न ?

(अलग-अलग, वाक्यों पर ज़ोर न देने वाले प्रश्नात्मक वाक्य)

हमारी पुरानी स्थिति क्या थी, आजकल क्या है और आगे कैसी रहेगी—इस पर क्या तुमने कभी विचार किया है ?

(ग) वाक्यांतर्गत किसी शब्द की शुद्धि या उपयुक्तता पर सन्देह सूचित

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

करने या उसपर व्यंग्य करने का भाव निर्देश करने के लिए कभी कभी कोष्ठ के भीतर प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग हुआ करता है। जैसे,

उन्होंने लिखा है कि "अपनी (?) आवश्यकतानुसार हमें कवि की उक्तियों का आशय समझने या समझाने का पूर्ण अधिकार है।"

जहाँ देश में नाकारे (?) लोग ऐश्वर्य भोग रहे हैं। वहाँ मेहनत से रोटी कमाने वालों को काम नहीं मिलता।

उस चाटुकार ने एक जगह लिखा है कि इस राज्य में प्रजा को सुख (?) है।

(६) **विस्मय अथवा भावसूचक** चिह्न का प्रयोग विस्मय, आश्चर्य, भय, घृणा, आज्ञा, प्रार्थना आदि मनोवेगों को सूचित करने वाले शब्दों के बाद या वाक्य के अन्त में होता है। जैसे,

ऐं! तुमने सुना नहीं कि अब हमारे सम्राट् जीवित नहीं हैं।

वाह वाह! व्यापार में भी क्या आनन्द है!

सैनिक—इस उपद्रव का नेता वही दुष्ट वणिक-वेश-धारी मालवेश है!

मन्त्री (चौंककर)—क्या मालवेश!

विकटघोष—पर तुमने मुझे पहचाना नहीं!

मधुकर—ठीक! क्या नाम?

विकटघोष—ओह! तब आप शंख-घोष करते, यह मेरी रोयेंदार खंजड़ी क्यों बजा रहे हो! आप इतनी रात को अतिथि!

हे प्रभो! तुम हमारा कब इस विपत्ति से उद्धार करोगे!

सूचना—(१) जहाँ किसी शब्द का प्रयोग केवल संबोधन के लिए हुआ हो, वहाँ विस्मय-चिह्न कदापि प्रयुक्त न होना चाहिए। इसको तो वहीं लगाना चाहिए जहाँ किसी भी भाव की तीव्रता सूचित करनी हो।

(२) यदि किसी प्रश्नात्मक वाक्य का प्रयोग किसी मनोवेग को प्रकट करने के उद्देश्य से हुआ हो वहाँ भी (प्रश्न-सूचक चिह्न न लगाकर) यही विस्मय-चिह्न लगाना उचित है; क्योंकि वहाँ वाक्य का आशय उत्तर पाना नहीं, वरन्—भावोद्वेग दिखाना होता है। जैसे,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

देवगुप्त—(ताली बजाता है। चार सैनिक आते हैं) देखो आज से ये लोग बन्दी हैं। समझे!

आखिर उसने इतनी मूर्खता क्यों की! दुनिया से क्या न्याय उठ गया! सचाई कोई बात ही नहीं रही!

(ख) व्यंग्य और उपहास को सूचित करने के लिए भी विस्मय-सूचक चिह्न वाक्य के अन्त में लगाया जाता है। जैसे,

दोनों ईसाई राष्ट्र थे, दोनों ही आपस में लड़ रहे थे, और दोनों धर्म की रक्षा के लिए! ईश्वर के नाम पर!

अबीसीनिया की असभ्यता और बर्बरता मिटाने तथा उसे विद्या और विज्ञान का स्वर्गीय आनन्द प्रदान करने के लिए ही तो मुसोलिनी ने इतना धन और जन क्षय किया है! बलिहारी है इस परोपकार-वृत्ति की!

इन दिनों शान्ति-रक्षा के नाम पर यूरप के सभी देशों में शस्त्रों के संचय और उनकी वृद्धि की कैसी होड़ लगी है। और राष्ट्र संघ कोरे प्रस्तावों के द्वारा इस भावी विश्वसंघर्ष को जैसे रोक लेगा।

(७) **निर्देश-चिह्न** का प्रयोग वाक्य के प्रवाह से उपस्थित बाधा को सूचित करने के लिए हुआ करता है। कभी कभी कोई विचार लिखते लिखते एकाएक यह ध्यान आता है कि उसे आगे न चलाया जाय, अथवा उसके पूरा होने के पहले ही दूसरा विचार आ जाता है। ऐसे अवसरों पर निर्देश-चिह्न लगाया जाता है। जैसे,

जब हमें स्मरण आता है कि कैसे हम सबने मिलकर परिश्रम किया और कैसे हमें एक साथ अपने दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा; जब हमें स्मरण आता है—पर उन सब बातों को स्मरण करने से क्या लाभ?

मिस्टर मुस्कराते हुए कमरे में आते हैं और—घबरा उठते हैं।

(ख) किसी वाक्य में जब क्रिया का कर्त्ता अनेक शब्दों का समूह होता है और उस समूह को सूचित करने वाला कोई सर्वनाम भी इसलिए प्रयुक्त होता है जिससे कर्त्ता का बोध अच्छी तरह हो जाय तब उस सर्वनाम के पहले निर्देश-चिह्न लगाया जाता है। जैसे,

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आभीर, शक, सीथियन, हूण—सभी ने भारत को विजय करने का अभिमान भले ही किया हो; परन्तु उनको आर्य-जातियों ने पूर्णतया आत्मसात् करके उनका अस्तित्व ही मिटा दिया है।

(ग) वाक्य के बीच में आये हुए किसी शब्द को स्पष्ट करने, उस पर जोर देने के लिए समानपदी वाक्य या वाक्यांश की भाँति कभी कभी कुछ शब्द या वाक्यांश उसके बाद ही प्रयुक्त हुआ करते हैं। इसके आगे और पीछे भी निर्देश-चिह्न लगाया जाता है। जैसे,

जयचन्द—क्षत्रिय-कुलांगार जयचन्द्र—ने अपने मौसेरे भाई और अपनी ही पुत्री संयोगिता के पति पृथ्वीराज का नाश करने में विदेशियों को सहायता पहुँचाकर देश की स्वतंत्रता को मिटा दिया।

मैं तो समझती हूँ कि मेरी प्रार्थना—मेरी आर्त्तवाणी—उन कानों में पहुँचती ही नहीं।

महामना मालवीयजी—ईश्वर उन्हें दीर्घायु करे—हिन्दुओं के एकमात्र विश्वविद्यालक के संस्थापक हैं।

वह न जाने क्यों आज मुझसे झूठ—झूठ जिससे हार्दिक उसे घृणा थी—बोली।

(घ) नाटक अथवा कथोपकथन में पात्रों की उक्ति उद्धृत करने के अवसर पर उसके नाम के बाद भी निर्देश चिह्न लगाया जाता है। जैसे,

विकटघोष—तो मेरा पुरस्कार ?

नरेन्द्रगुप्त—काम देखकर मिलेगा।

(ङ) किसी ग्रन्थकार कवि आदि की कोई उक्ति उद्धृत करके उसके नीचे उसका नाम देने पर नाम के पहले निर्देश-चिह्न लगाने की भी चाल है। जैसे,

ज्ञान-राशि के संचित कोष ही का नाम साहित्य है।

—महावीर प्रसाद द्विवेदी।

(८) योजक या सम्बन्ध-चिन्ह दो वा अधिक शब्दों का सम्बन्ध प्रकट करने के लिए इनके बीच लगाया जाता है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(क) सामासिक शब्दों के मध्य कभी कभी योजक चिह्न लगता है। जैसे, राम-राज्य, दुःख-सुख, राम-चरित-चिन्तामणि।

(ख) पुनरुक्त या दोबारा प्रयुक्त होनेवाले शब्दों के बीच भी योजक चिह्न लगता है। जैसे, मारा-मारा, बैठे-बैठे, घर-घर, गाँव-गाँव धीरे-धीरे, नीचे-नीचे, साथ-साथ, राम-राम, टाल-मटोल, काम-काज, लेना-देना।

(ग) पंक्ति के अन्त में यदि कोई शब्द पूरा न लिखा जा सकता हो तो उसका कुछ अंश लिखकर उसके बाद योजक चिह्न लगाया जाता है। परन्तु ऐसा करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि पंक्ति के अन्त में शब्द का उतना ही भाग रहे जिस पर यति पड़ती हो। कभी भी मनमानी ढंग से शब्द को तोड़कर योजक चिह्न न लगाना चाहिए। जैसे, यदि 'रघुवर' शब्द लिखना हो तो उसको 'रघु' और 'वर'—इन दो भागों में बाँट कर पहला भाग पंक्ति के अन्त में लिखकर उसके बाद योजक चिह्न (रघु-) लगाया जा सकता है; परन्तु उसके ये विभाग ठीक न होंगे—र-घुवर, या रघुव-र।

(९) **अवतरण या उद्धरण-चिह्न** उस वाक्य या वाक्यांश के आदि और अन्त में लगाये जाते हैं जो किसी अन्य का लिखा होता है और लेख या रचना में ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है। जैसे,

अचानक एक सुरीली आवाज़ ने शिवशम्भु को चौंका दिया। उनके कानों में यह मधुर गीत बार-बार अमृत ढालने लगा—"चलो, चलो आज खेलें होली कन्हैया घर।"

एक विद्वान से पूछा गया, "जीवन में किस शिक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता है?"

सूचना—स्मरण रहे कि उल्टे अल्पविराम उद्धृत वाक्य के आरम्भ में लगाने के बाद उसके अन्त में बन्द भी किये जाने चाहिए। यदि उद्धृत अंश के बीच में कुछ और कहना हो तो उसके प्रत्येक खण्ड को अलग अलग उद्धरण चिह्नों के भीतर रखना चाहिए। जैसे,

"देखो, मैंने कह दिया," अध्यापक ने डाटकर कहा, "अगर अब से फिर कभी तुमने झूठ बात कही तो मैं तुम्हें कक्षा में बैठने न दूँगा।"

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(ख) वाक्य के बीच आये हुए विदेशी शब्द या ऐसे शब्द जिन पर ज़ोर देने का उद्देश्य हो अथवा पुस्तकों आदि के तथा अन्य नाम भी इकहरे अवतरण चिन्हों में बन्द कर दिये जाते हैं। जैसे,

आज 'कोरम' पूरा न होने से समिति का अधिवेशन न हो सकेगा।

वह ऐसा मूर्ख है कि 'परम' को 'पर्म' लिखता है। मेरी माता का नाम 'इति' और पिता का 'आदि' है। मेरी माता अविकृत 'अव्यय' घराने की है।

'विशालभारत' कलकत्ते के 'प्रवासी प्रेस' में छपता है।

(१०) **संक्षेप-सूचक या लाघव-चिह्न** (० या .) का प्रयोग शब्दांश के बाद उस समय होता है जिस समय उसे पूरा न लिखकर ही काम चलाना अभीष्ट होता है। जैसे, सं० (संवत्), पं० (पंडित), रा. ब. (राय बहादुर)। पदवी वाचक अँगरेज़ी शब्द, जैसे बी. ए., उस भाषा के संक्षिप्त शब्द हैं, इसीलिए उनके अन्त में संक्षेप-सूचक चिह्न लगता है।

(क) अनुच्छेद गणना के लिए प्रयुक्त संख्याओं के पश्चात् बिन्दु का प्रयोग होता है। जैसे, १., २., ३., आदि।

सूचना—कभी कभी ऐसे अवसर पर निर्देश चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(११) **लोप चिह्न** के द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि जो अवतरण उद्धृत किया गया है उसके कुछ अंश का लोप है। जैसे,

उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी—

"अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते......"

(ख) बीच में ही रुक गई हुई उक्ति की सूचना भी लोप चिह्नों से दी जाती है। जैसे,

मन्त्री—हूँ! वह प्रजा न थी जो इस तरह षड्यन्त्र करके दुर्ग में चली आई? वे शत्रु......(विचारने लगता है)।

(१२) कोष्ठक में वाक्यान्तर्गत वे शब्द या वाक्य बन्द किये जाते हैं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जिनका सम्बन्ध मुख्य वाक्य या वाक्य-समूह से नहीं होता, परन्तु जिनका होना वाक्य का तात्पर्य बोध कराने के लिए आवश्यक होता है। जैसे,

अपनी गोष्ठी में, अपनी मंडली में, वे चाहे 'सार्वभौमता' का स्वप्न देख फूले न समाते हों; परन्तु उस 'कूप' के बाहर वे अपने को क्या पाते हैं (यह सोचने का विषय है)। इसकी कल्पना चाहे वे न कर पाते हों (हमें उनसे सहानुभूति है); परन्तु इसे सोचते उनके भोलेपन पर दुःख होता है।

(ख) नाटक में पात्रों को अभिनय के लिए दिए हुए संकेत या आदेश सूचक वाक्य या वाक्यांश कोष्ठक में रखे जाते हैं। जैसे,

राज्य० (भिक्षुओं को वस्त्र और धन देती है। शान्तिदेव सामने आता है) आपका शुभनाम, भिक्षु ?

शान्ति०—जय हो ! मेरा नाम शान्तिभिक्षु......

(रुक कर राज्यश्री की ओर देखने लगता है)

अभ्यास

(१) सम्बोधन शब्द के बाद कौन सा चिह्न लगाना चाहिए ?

(२) अवतरण चिह्न का क्या तात्पर्य है उदाहरण देकर समझाओ।

(३) संयोजक और निर्देश चिह्नों का अन्तर समझाओ।

(४) नाटक में कोष्ठक के भीतर जो अंश लिखे जाते हैं उनका क्या तात्पर्य है ?

(५) नीचे लिखे वाक्यों में यथास्थान उपर्युक्त विराम चिह्न लगाओ:—

(क) धन इकट्ठा करने के लिए परिश्रम करना पड़ता है परन्तु बहुत से लोग परिश्रम से बचने के लिए तरह तरह की चालें चलते हैं।

(ख) हिन्दू धर्म में बहुत से आचार्य हुए हैं ब्रह्मा व्यास शंकराचार्य रामानुज नानक दयानन्द सरस्वती आदि।

(ग) उन्होंने एक पादरी की कमर में हाथ डालकर कहा हाँ आइए पादरियों ने कहा कि यह बात बुद्धिमत्ता के विरुद्ध है अकबर को भी शेख की यह बात बुरी लगी

(घ) यदि समस्त सत्य सिद्धान्त किसी एक ही धर्म की कोठरी में बन्द होते तो ईश्वर उसी धर्म को पसन्द करता और उसी को संसार में रहने देता बाकी सब को नष्ट भ्रष्ट कर देता

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(ङ) विद्यादान में रत विद्वानों को परोपकार में रत कर्मवीरों को मानवज्ञान की दृष्टि में तत्पर सत्यान्वेषकों को जो अभाव हो उसे हमें समाज का भूल समझना चाहिए

(च) संसार के प्रसिद्ध विद्वानों का मत है परसेवा करना अपनी सेवा करना है क्योंकि समाज के हित में ही व्यक्ति का हित निहित है

(छ) अब आप कहाँ जाना चाहते हैं

(ज) किसी बुरे प्रसंग में यदि निमित्त रूप से भी हमारा नाम आ जाता है तो हमें लज्जा रहती है चाहे ऐसा हमारी जानकारी में हुआ हो चाहे अनजान में

२ — विविध प्रकार के अर्थ

किसी दी हुई कविता के अनेक प्रकार से अर्थ किए जा सकते हैं। कभी कविता का मुख्य विषय संक्षेप में बता दिया जाता है; कभी कविता की प्रत्येक विशेषता का उद्घाटन विस्तार पूर्वक करना पड़ता है। इनके लिए भावार्थ, संक्षेपार्थ, तात्पर्यार्थ, व्याख्या आदि अनेक नाम प्रचलित हैं। मतलब, आशय, अभिप्राय आदि अनेक शब्दों का भी इसी से मिलते जुलते अर्थ में प्रयोग किया जाता है।

तात्पर्यार्थ—शब्दों की संगति बैठाने पर जो सीधा-सादा अर्थ निकलता है उसे तात्पर्यार्थ कहते हैं।

भावार्थ—तात्पर्यार्थ समझ लेने पर कविता के भीतरी अर्थ की ओर बढ़ा जाता है। इससे भावार्थ की प्राप्ति होती है।

सारार्थ—इसमें भाव को कुछ थोड़े से शब्दों में कहना पड़ता है; इसमें अधिक विस्तार नहीं किया जाता है। इसी को संक्षेपार्थ भी कह सकते हैं।

सरलार्थ, मतलब, आशय, अभिप्राय—आदि शब्दों का भी प्रयोग इन्हीं अर्थों के लिए किया जाता है। पर लोग प्रायः इन शब्दों का प्रयोग करते समय किसी विशेष ही प्रकार के अर्थ को अपना लक्ष्य नहीं बनाते। उनका लक्ष्य केवल अर्थ की ओर रहता है चाहे वह अर्थ संक्षेप में बताया जाय चाहे कुछ विस्तार से।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

व्याख्या—यह भी एक प्रकार का अर्थ है। इसमें अर्थ करने वाले को कविता की प्रत्येक विशेषता को पूरे विस्तार से समझाना पड़ता है। अलंकारों को स्पष्ट करना; लाक्षणिक प्रयोगों का भाव समझाना; भीतरी भावों का उद्घाटन करना; कवि के पाण्डित्य को स्पष्टता से प्रकट करना आदि सब बातें इसके अन्तर्गत आ जाती हैं।

अब हम इन बातों का स्पष्टीकरण एक दोहे के द्वारा करते हैं :—

दोहा

गुरु-जन-लाज समाज बड़, देखि सीय सकुचानि।
लगी बिलोकन सखिन्ह तन, रघुबीरहि उर आनि॥

तात्पर्यार्थ—सीता के लिए एक ओर गुरुजनों के कारण लज्जा होती थी। दूसरे उस बड़े समाज को देखकर वे संकुचित हुईं। रघुवीर का ध्यान करके वे सखियों की ओर देखने लगीं।

भावार्थ—गुरुजनों के बीच स्त्रियों को प्रायः लज्जा लगती है। वहाँ जनक, दशरथ तथा अनेक ऋषिगण उपस्थित थे;. अतः सीता लज्जित हो रही थीं। पुरुषों की ओर देखने से संकोच होता था; अतः सीता अपनी परिचित सखियों की ओर देखने लगीं। स्त्रियों को देखकर स्त्रियों को लज्जा नहीं होती। दूसरे परिचित सखियों से संकुचित होने की कोई आवश्यकता दृढ़ता लाने के लिए है। स्त्रियों को दृढ़ करने लिए पति की सहायता की ही आवश्यकता पड़ती है। यदि वह न हो, अथवा कुछ दूर पर हो, अथवा गुरुजनो में उसे न देखा जा सके तो उसके ध्यान ही से लज्जा दूर की जा सकती है तथा दृढ़ता प्राप्त की जा सकती है।

सारार्थ—उस बड़े समाज में तथा गुरुजनों के बीच में सीता को संकोच हुआ वे राम का ध्यान करके अपनी सखियों की ओर देखने लगीं।

नोट—ऊपर के अर्थों से देखा जा सकता है कि तात्पर्यार्थ तथा सारार्थ में ऐसा बड़ा भेद नहीं होता है।

व्याख्या—सीता रंगभूमि में आई हैं। जिन राम को उस दिन वाटिका में देखा था उन्हें यहाँ फिर देखने की इच्छा होती है, यह देखना चाहे कनखियों

bal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ही से हो। एक ओर गुरुजनों की लज्जा है; दूसरी ओर समाज इतना बड़ा है कि छिपाकर देख लेना संभव नहीं। पर यह कार्य रुक भी नहीं सकता। तुलसी ने इस दोहे के पहले ही लिखा है "सीय चकित चित रामहि चाहा।" चित्त के चकित होने के साथ ही नेत्र भी चंचल हुए और उन्होंने अपना काम कर लिया। बुद्धि ने कहा संभव है यह कार्य लोगों के द्वारा देख लिया गया हो। यह विचार आते ही सीता संकुचित हुईं। संकोच को मिटाने को वह सखियों की ओर देखने लगीं। यद्यपि नेत्र सखियों की ओर थे, पर हृदय दूसरी ओर था। जिन राम के अभी कनखियों से दर्शन किए गये थे उन्हीं की छवि हृदय में थी। रघुवीर शब्द का प्रयोग भी साभिप्राय है। जब वीर अपना सहायक है तो संकोच कहाँ रह सकता है। रामचन्द्रजी वीर हैं; वे धनुष तोड़ कर अभी सीता को व्याह लेंगे। फिर तो उनकी ओर देखना इतनी लज्जा का कारण न होगा।

अभ्यास

(१) वाच्यार्थ लिखो, फिर भावार्थ लिखो:—

(१) बरबस लिए उठाइ उर, लाये कृपानिधान।
भरत राम की मिलनि लखि, बिसरेउ सबहिं अपान॥

(२) ऊधो कारे सबै बुरे।
कारे की परतीति न करिए, विष के बुते छुरे।
कारो अंजन देत दृगन में, तीखी सान धरे॥

(३) हे मातृभूमि! तव अन्न-भुक्त।
है तेरे ऋण से सभी युक्त॥
हम तेरी सेवा करें नित्य।
तब समझें निज को कृत स्वकृत्य॥

(२) व्याख्या लिखो:—

(१) कुँअरि मनोहरि विजय बडि, कीरति अति कमनीय।
पावनहार विरंचि जनु, रचेउ न धनु दमनीय॥

(२) कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वह खाए बौरात है, यह पाए बौराय॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

(३) कब से तुम्हारी राह, दिन रात देखता हूँ;
दयाघन, दयाकर, दया दिखलाओ तुम ॥
यह तो बताओ तुम, छुपे किस लोक में हो ?
आओ शीघ्र, मुझे मत और तरसाओ तुम ॥
राधा के सहित करो, मेरे उर में निवास;
और सब मेरी भवबाधा को मिटाओ तुम ।
जाऊ मैं कहाँ गोपाल, शरण तुम्हारी छोड़;
नाम के ही नाते अब मुझे अपनाओ तुम ॥

(४) मानुष हौं तो वही रसखान बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरि को जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन ।
जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन ॥

(५) तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए ।
झुके कूल सों जल परसन हित मनहुँ सुहाए ॥
किधौं मुकुर में लखत उझकि सब निज निज शोभा ।
कै प्रनवत जल जानि परम पावन फल लोभा ॥

४—मुहाविरे और उनका प्रयोग

मुहाविरा वह वाक्यांश है जिसका शब्दार्थ न लेकर कोई विलक्षण अर्थ लिया जाता है। परन्तु यदि विचार-पूर्वक देखो तो मालूम होगा कि मुहाविरे और उसके लाक्षणिक अर्थ में कोई न कोई सम्बन्ध होता है। उदाहरण—पहले जब कोई पाप कर्म करता था तो उसका मुँह कोयले आदि से काला करके उसे नगर में घुमाते थे ताकि लोग डरें और वैसा पाप न करें। अब यद्यपि मुँह रँगा नहीं जाता, तथापि 'मुँह काला होना' का अर्थ है 'कलंकित होना'। विचार करने से इसी प्रकार का कोई कारण या रहस्य हर एक मुहाविरे में मिलेगा। इसका अभ्यास करना विद्यार्थियों के लिए रोचक होगा।

मुहाविरे कोई एक अकेला आदमी नहीं बनाता; वे भाषा के प्रवाह में धीरे धीरे बन जाते हैं। उनके शब्दों में प्रायः परिवर्तन भी नहीं कर सकते। जैसे 'हाथ धो बैठना' मुहाविरा है जिसका अर्थ है 'खो देना'। इसे 'हस्त

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

धो बैठना', 'कर धो बैठना', हाथ साफ कर बैठना' नहीं कह सकते। 'हाथ साफ़ करना' दूसरा मुहाविरा है, जिसका अर्थ है 'मारना पीटना।'

मुहाविरों के प्रयोग से भाषा में लालित्य तथा चमत्कार आता है।

(१) कतिपय क्रियावाची शब्दों से मुहाविरे बनाना

'उड़ना' क्रिया से मुहाविरे :—

(क) रंग उड़ना (चैन से या धूम-धाम के साथ रहना) क्यों जी, आजकल बड़े रंग उड़ रहे हैं।

(ख) माल उड़ाना (खाने पीने आदि में बहुत व्यय करना)। इतनी सम्पत्ति पा गए हो खूब माल उड़ाते होगे।

(ग) मुँह पर हवाइयाँ उड़ना (चेहरा रूखा और कान्तिरहित होना)। आजकल आपके मुँह पर हवाइयाँ उड़ रही हैं; क्या दुःख है?

(घ) छक्के पंजे उड़ाना (बहुत सुख से रहना; इच्छानुसार व्यय कर सकना)। मोहन अपनी सुसराल में छक्के पंजे उड़ाता है, वही वहाँ का उत्तराधिकारी होगा।

'चढ़ना' क्रिया से मुहाविरे :—

(क) सिर पर चढ़ना (अधिक लाड़ प्यार करना)। साँवल ने अपने लड़के को सिर पर चढ़ा रक्खा है, वह बहुत ढीठ हो गया है।

(ख) रंग चढ़ना (प्रभाव पड़ना)। उस लड़के पर आजकल उस गवैये का रंग चढ़ा है।

(ग) आसमान पर चढ़ाना (अतिशय प्रशंसा करना)। आप मुझे क्यों आसमान पर चढ़ाते हैं? मैं इस योग्य नहीं हूँ।

(घ) नाक भौं चढ़ाना (क्रोध करना। तो आप नाक भौं क्यों चढ़ाते हैं? मुझसे हरजाना ले लीजिए।

'भरना' क्रिया से मुहाविरे :—

(क) दम भरना (अभिमान करना)। क्या तुम ज्योतिषी होने का दम भरते हो?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(ख) पानी भरना (वश में होना)। दयाराम तो महन्त जी का पानी भरता है।

(ग) मुँह में पानी भरना (लालच आना)। मुसाफ़िर के पास सोना देखकर चोर के मुँह में पानी भर आया।

'बदलना' क्रिया से मुहाविरे :—

(क) रंग बदलना (भिन्न रीति का अवलम्बन करना)। कल तो कहते थे कि मोहन को पचास रुपया दे ही देंगे; अब आज रंग बदलते हो।

(ख) त्योरी बदलना या चढ़ाना (क्रोध करना)। उसने त्योरी बदलकर कहा कि मैं कदापि तुम्हारा साथ न दूँगा।

'लगना' क्रिया से मुहाविरे :—

(क) हवा लगना (असर होना)। आँख लगना (सो जाना)।

(ख) हाथ लगना (मिल जाना)। थाह लगना (पता पाना)।

(ग) गले लगना (प्यार करना)। पीठ लगना (हार जाना)।

(घ) मुँह लगना (ढीठ हो जाना)।

'काटना' क्रिया से मुहाविरे :—

(क) कान काटना (बढ़ जाना या हरा देना)। नाक काटना (इज्ज़त जाना)।

(ख) गला काटना (ठग लेना)। पेट काटना (खाने पीने में कृपणता करना)।

(ग) दिन काटना (समय बिताना)।

अभ्यास

(१) कई क्रियावाची शब्दों से बने कुछ मुहाविरे नीचे दिए जाते हैं; उनके अर्थ और प्रयोग लिखो:—

(क) मिलना—दिल मिलना, हाथ मिलाना, मिट्टी में मिलना।

(ख) खींचना—हाथ खींचना, तलवार खींचना।

(ग) देखना—मुँह देखना, पीठ दिखाना, आँख दिखाना।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(घ) मारना—आँख मारना, पेट मारना।

(ङ) भंडा फोड़ना, तीन पाँच करना, चार आँखें होना, आँखों में चर्बी छाना, आपे से बाहर हो जाना, इधर उधर करना, कमर कसना, खून सूखना, चूं न करना, जान हथेली पर रखना, दुनिया से उठ जाना, बातें बनाना, मुँह की खाना, शान बघारना, सिर पटकना पसीना पसीना हो जाना, तलवों से लगना, हाथ कटाना।

(च) होना—मुँह काला होना, चार आँखें होना, आपे से बाहर हो जाना तीन तेरह होना, कान बड़े होना, हवा हो जाना।

(छ) करना—तीन पाँच करना, चूँ न करना, घर करना, इधर उधर करना, आकाश पाताल एक कर देना, दाँत खट्टे कर देना, कूच करना, हाथापाई करना।

(ज) जाना—तीन तेरह हो जाना, पानी पानी हो जाना, गर्द हो जाना।

(झ) डालना—हाथ डालना, खाक डालना, ढील डालना, कान में तेल डालना, धूल डालना।

(२) रखना, उठाना, खाना, खींचना, भरना, लगना, मिलना, या अन्य क्रियाबाची शब्द जो अध्यापक जी कहें उनसे मुहाविरे बनाओ, और उनके अर्थ लिखो।

९—लोकोक्तियाँ और उनका प्रयोग

लोकोक्ति = लोक + उक्ति = सब लोगों के कहने के योग्य बात = कहावत। ऐसी बात जो अपना कथन पुष्ट या सबल करने के लिए, या किसी को उपदेश देने के लिए, या कोई विषय साफ़ साफ़ शब्दों में न कहकर आड़ से कहने के लिए, कही जाय।

लोकोक्तियों के विषय में नीचे लिखी बातें स्मरण रखनी चाहिए :—

(१) लोकोक्तियों का वाच्यार्थ (शब्दार्थ) नहीं लिया जाता, किन्तु उसके समान कोई अर्थ लिया जाता है। जैसे, "नाच न जाने आँगन टेढ़ा"—इस लोकोक्ति का शब्दार्थ है कि जो आदमी नाचना नहीं जानता, और नाचता है, उसका दोष प्रकट हो जाता है और लोग उससे पूछते हैं कि तुम्हारा नाच इतना खराब क्यों है, तब वह उत्तर देता है कि मैं क्या करूँ, आँगन टेढ़ा है, इसीलिए नाच ठीक नहीं होता। परन्तु जो आदमी यह लोकोक्ति कहता है

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उसका मतलब नाच से नहीं, किन्तु किसी भी काम से हो सकता है, और लोकोक्ति का साधारण अर्थ है "अपनी अयोग्यता स्वीकार न करना, तथा काम बिगड़ने का दोष दूसरों को देना।"

(२) लोकोक्तियों के शब्दों में उनके पर्यायों के द्वारा प्रायः हेरफेर नहीं हो सकता। जैसे 'एक पन्थ दो काज' के बदले 'एक मार्ग दो काज' कहना ठीक नहीं।

(३) किसी कहावत के प्रयोग में ठीक प्रकरण देना चाहिए, अर्थात् ऐसा उदाहरण देना चाहिए जिसमें वह कहावत ठीक बैठ जाती हो। यदि तुमसे "नौ नगद न तेरह उधार" का प्रयोग पूछा जाय और तुम लिख दो "प्रमथनाथ ने कहा 'नौ नगद न तेरह उधार'" तो यह प्रयोग न हुआ, किन्तु टालना हुआ। इसमें यह पता नहीं चलता कि इस लोकोक्ति का ठीक मतलब तुम समझते हो या नहीं। परन्तु यदि तुम लिखो कि "प्रमथनाथ को एक नौकरी ४०) महीने पर मिलती थी जिसमें १००) तक उन्नति होती, और दूसरी ६५) महीने पर मिलती थी जिसमें उन्नति की कोई शर्त्त नहीं थी। उसने दूसरी नौकरी पसन्द करते हुए कहा, 'नौ नगद न तेरह उधार' तो प्रकरण समझ में आ जाता है।

अभ्यास

(१) नीचे लिखी लोकोक्तियों के अर्थ समझाओ और अपने में उनका प्रयोग करो:—

शालिग्राम की बटिया क्या छोटी क्या बड़ी। अपने पूत को कोई काना नहीं कहता। काला अक्षर भैंस बराबर। रस्सी जल गई, ऐंठन न छूटी। खोदने को पहाड़ निकलने को मुसरी।

(२) इन अर्थों को प्रकट करनेवाली लोकोक्तियाँ बताओ :—

(क) बड़े आदमियों के साथ उनके आश्रितों को भी दुःख होता है।
(ख) प्रधान लोग तो बुरे हैं ही, छोटे लोग उनसे भी अधिक बुरे हैं।
(ग) स्वास्थ्य ठीक रहने से सब प्रकार का सुख भोग सकते हैं।
(घ) निर्गुण को चाहे जितना समझाओ वह गुण की कदर नहीं समझता।
(ङ) यह तड़क भड़क स्थायी नहीं है।

—

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अध्याय ५

अनुवाद (Translation)

जब भिन्न भिन्न भाषाओं के बोलने और लिखने वाले लोग सम्पर्क में आते हैं तब आपस में विचार-विनिमय के लिए उन्हें एक दूसरे की भाषा सीखनी पड़ती है। ऐसा होने पर वे एक-दूसरे की पुस्तकों को अपनी अपनी भाषा में रूपान्तरित किया करते हैं। इस प्रकार के एक भाषा का दूसरी भाषा में रूपान्तर करने को **अनुवाद** कहते हैं।

अनुवाद—दो प्रकार से किया जाता है: (१) कभी कभी मूल भाषा में कही हुई बात का अक्षरशः अनुवाद दूसरी भाषा में किया जाता है। इसको **शब्दानुवाद** कहते हैं (२) दूसरे प्रकार के अनुवाद में मूल भाषा में कही हुई बात के आशय अथवा भाव का ही दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। इसको **भावानुवाद** कहते हैं।

शब्दानुवाद करते समय अनुवादक को यह अधिकार नहीं होता कि वह मूल भाव में कही गई बातों में से कुछ का अनुवाद न करे, परन्तु **भावानुवाद** में केवल यह ध्यान में रखना होता है कि मूल भाषा में कही हुई बात का भाव भाषान्तरित हो, उसके पूरे रूप का अनुवाद न हो।

जब तक स्पष्टतया भावानुवाद का उल्लेख न हो तब तक अनुवाद से शब्दानुवाद का ही तात्पर्य होता है। इधर अँगरेज़ी के अनेक लेखों और ग्रन्थों के अनुवाद हिन्दी में हुए और हो रहे हैं। उनके कारण जहाँ हमारी भाषा में बहुत से उपयोगी विषयों पर उत्तमोत्तम लेखों, पुस्तकों आदि का समावेश हुआ है, वहीं अनुवादकों की असावधानी, प्रमाद या अज्ञान के कारण कुछ ऐसे मुहाविरे, प्रयोग आदि भी हिन्दी में आ रहे हैं जिनसे उसकें स्वतन्त्र विकास में धक्का लगने की आशंका हो रही है। उदाहरणार्थ दृष्टि-कोण (Angle of Vision), भाग लेना (To take part), स्वर्ण प्रभात (Golden morning), नङ्गी प्रकृति (Naked Nature), निकट भविष्य (Near future), जैसे प्रयोग इन दिनों हिन्दी में देखे जाने लगे हैं। ये

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्रयोग अँगरेज़ी के केवल शब्दानुवाद हैं। इनसे यह समझना कि हिन्दी का भण्डार भर रहा है ठीक नहीं जान पड़ता, उल्टे बहुधा अपने प्रयोगों के मिट जाने का डर रहता है और हिन्दी की अपनी प्रकृति को व्याघात पहुँचता तो है ही।

इसलिए अनुवाद करते समय निम्नलिखित परामर्श ध्यान में रखने चाहिए :—

(१) शब्दानुवाद करते समय यह ध्यान में अवश्य रहे कि प्रस्तुत अवतरण में कही हुई कोई भी बात अनुवाद में छूटने न पावे; परन्तु प्रत्येक शब्द, वाक्यांश या वाक्य के पर्यायवाचक शब्दों की ही सहायता से यह काम न किया जाय। उचित यह है कि जिस वाक्य का अनुवाद करना हो उसका पूरा भाव या आशय ऐसे शब्दों में व्यक्त किया जाय जिससे वह ज्यों का त्यों दूसरी भाषा में प्रकट हो जाय। ऐसा करते समय यह भी स्मरण रहे कि अनुवाद की भाषा मुहाविरे और अपने प्रयोगों के अनुकूल हो। अनुवाद में मूल भाव की रक्षा के साथ भाषा के प्रचलित रूप का भी निर्वाह होना अनिवार्य है।

(२) यदि किसी शब्द या वाक्यांश का भाव केवल एक ही शब्द या वाक्यांश के द्वारा प्रकट न होता हो तो उसके लिए आवश्यकतानुसार अधिक शब्दों का प्रयोग होने ही में उत्तम अनुवाद हो सकेगा। ऐसा करना ठीक है।

(३) मूल अवतरण में यदि लम्बे मिश्रित या संयुक्त वाक्य हों तो यह आवश्यक नहीं कि उनके अनुवाद में भी वाक्यों के वे ही प्रकार रखे जायँ। एक से अधिक वाक्यों में उनका अनुवाद करने से ही बहुधा अनूदित भाषा के सौन्दर्य की रक्षा की जा सकती है। ऐसा किसी हिचकिचाहट के बिना करना चाहिए।

(४) बहुधा एक ही शब्द के बहुत से पर्याय कोषों में देखे जाते हैं। अनुवाद की भाषा में उसका वही पर्याय प्रयुक्त करना चाहिए जो प्रसंग के अनुकूल पड़ता हो। अर्थात् अनुवाद में किसी शब्द का तात्पर्यबोधक पर्याय ही प्रयुक्त होना चाहिए।

(५) जहाँ तक सम्भव हो अनुवाद प्रसाद गुण से युक्त हो, अर्थात् वह

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सरल और सुबोध हो। मूल यदि जटिल भी हो तो अनुवाद में उसका सरल होना अधिक प्रशंसनीय होता है।

इन सब बातों के होने पर अनुवाद में मूल का अविकल भाव तो मिलेगा ही, साथ ही उसमें एक विशेषता यह भी होगी कि वह अनुवाद-सा न होकर स्वतन्त्र या मौलिक रचना-सा हो जायगा। जिस अनुवाद में मौलिकता की झलक आ जाय उसी को उत्तम और उच्चकोटि का अनुवाद कहा जाता है।

नीचे एक उदाहरण के द्वारा हम अँगरेजी से हिन्दी में अनुवाद करने का प्रयत्न करेंगे :—

(1) I sent last month a full account of my journey hither to Margaret, desiring her to let you see what I had written to her.

पिछले महीने मैंने अपनी यहाँ की यात्रा का पूरा विवरण मार्गरेट को इस इच्छा से भेजा था कि मैंने जो कुछ उसे लिखा था वह तुमको दिखला दे।

इस अनुवाद में मूल के सभी भाव पाये अवश्य जाते हैं; परन्तु यह वाक्य जरा अधिक लम्बा हो गया है। इसका कारण यह है कि यह मूल के अनुसार ही ज्यों का त्यो रखा गया है। इसको यदि हम यों लिखें तो मूल की-सी जटिलता दूर हो जायगी और यह स्वतन्त्र-सा हो जायगा।

पिछले महीने मैंने मार्गरेट को अपनी यहाँ की यात्रा का पूरा विवरण लिख भेजा था। उससे यह इच्छा भी प्रकट की थी कि जो कुछ उसे लिखा है वह तुमको दिखला दे।

ऐसे ही एक पूरे अनुच्छेद का अनुवाद नीचे देखिए—

During the long centuries of the Hindu and Mohammedan rules the security of property was imperfectly maintained. The result was that the accumulation of wealth became an impossibility except among rulers. Unless there is some certainty of enjoying to-morrow what we keep in store tod y

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

Providence for the future is useless, and is soon dispensed with. During the last days of the Mohammedan rule insecurity had become so great, that people remained in a temper of despair, and there was hardly any inducement for thrift and industry.

हिन्दू और मुसलमान शासन की बहुत सी शताब्दियों में सम्पत्ति की रक्षा उचित रूप से नहीं होती थी। इसका परिणाम यह था कि शासकों के अतिरिक्त दूसरे लोगों के लिये धन-संचय असम्भव हो गया था। हम जो कुछ अपने भण्डार में आज रखते हैं, यदि कल उसके आनन्द लेने का निश्चय न हो तो भविष्यत् के लिये प्रबन्ध करना व्यर्थ है और ऐसा प्रबन्ध करना शीघ्र ही त्याग दिया जाता है। मुसलमानी शासन के अन्तिम दिनों में सम्पत्ति की रक्षा इतनी कठिन हो गयी थी कि लोग हताश रहते थे और मितव्ययिता तथा उद्योग के लिए कोई उत्साह न था।

अभ्यास के लिए नीचे कुछ अँगरेजी के अवतरण दिए जाते हैं। उनका अनुवाद हिन्दी में करो।

[1]

Two travellers happened to be passing through a town at a time when a great fire was raging One of them stopped at the door of an inn and entered, saying, "It is not my business to take any part in the matter. This is not the town where my home is. It has no claim on me." The other ran into the flames and saved many goods and some people. When he came back, his companion asked him, "Who bid thee risk thy life in other men's business?" "He," said the brave man, "Who bade me bury seed that

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

it may one day bring forth increase." "But what, if thou hadst been buried in the ruins ?" Then should I myself have been the seed."

[2]

A railway train was rushing along at almost lightning speed. A curve was just ahead, beyond which was a station at which two trains usually meet. The conductor was late, so late that the period during which the up train was to wait had nearly elapsed ; but he hoped yet to pass the curve safely. Suddenly a locomotive dashed into sight right ahead. In an instant there was a collision. A shriek, and all because an engineer had been behind time.

[3]

Thousands of years ago Indian doctors discovered that a very small amount of the poison from the fangs of a cobra administered in the form of a solution had the effect of reviving dying patients. This explains why it has been the custom to take the body of an Indian who has died from cobra bite and to place it on a raft and send it downstream, the idea being that he may later wake up. Sir Jagadis Chandra Bose has discovered that this solution of cobra poison will quicken the heart-beats of a plant.

[4]

A king once went to a jeweller's shop to buy

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

diamonds, which he wished to present to a foreign prince. The jeweller spread before the king and his courtiers all his finest diamonds and other jewels. After making his purchases, the king went back to his carriage, when the jeweller came out and begged that he would do him the honour of returning to his shop, as he had something important to say to him. The king and his attendants went back to the shop and then the jeweller said that a very valuable diamond was missing and must have been taken by one of the courtiers.

[5]

Kindness to animals is no unworthy exercise of benevolence. We hold that the life of brutes perishes with their breath, and that they are never to be clothed again with consciousness. The inevitable shortness then of their existence should plead for them touchingly. The insects on the surface of the water, poor ephemeral things, who would needlessly abridge their dancing pleasures of today? Such feelings we should have towards the whole animate creation. To those animals, over which we are masters, for however short a time, we have positive duties to perform. This seems too obvious to be insisted upon; but there are persons who act as though they thought they could buy the right of ill-treating any of God's creatures.

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

[6]

The stranger who would form a correct opinion of the English character, must not confine his observation to the metropolis. He must go forth into the country. He must sojourn in villages and hamlets. He must visit castles, villas, farm-houses and cottages. He must wander through parks and gardens, along hedges and green lawns. He must loiter about country churches, attend wakes, fairs and other rural festivals; and cope with the people in all their conditions, and all their habits and humours.

[7]

In the present day it is not necessary that generals or great officers should fight with their own hand, because it is their duty to direct the movements and exertions of their followers. The artillery and the soldiers shoot at the enemy, and men seldom mingle together and fight hand to hand. But in the ancient times, kings and great lords were obliged to put themselves into the very front of the battle and fight like ordinary men with the lance and other weapons. It was, therefore, of great consequence that they should be strong men and dexterous in the use of their arms. Robert Bruce was so remarkably active and powerful that he came through a great many

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

personal dangers, in which he must otherwise have been slain.

[8]

The most singular animal known in the Himalayas is the musk-deer, a creature timid and wild to excess. It lives secluded from the sight of man, and indeed of every other animal but its own species, inhabiting the most inaccessible heights and living among precipices that defy the approach of human foot, in a neighbourhood where the cold is intense and the snows are eternal. It is seldom seen at a height lower than twelve thousand feet above the sea, though sometimes forced to quit the heights in search of pasture, which is scanty in proportion as the snowy regions are approached. The musk-deer, when fullgrown, is about the size of a calf six months old. The animal is extremely active, and so shy that it is difficult to be met with, and no less difficult to be secured when killed. The musk-deer is so rare that whenever one is seen, the whole population of the district quit their homes to join in the chase.

[9]

It is the bounden duty of every human being to contribute something individual and distinct to the world's progress to justify his existence, and is there any among you so small in spirit that he will not realise the dictum that Plato sent forth into the

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

world—Man know thyself? Self-knowledge is only the first step in the ultimate destiny of man. You, sons of India, whom I speak to day, and you, daughters whom I am also addressing, know that you are responsible for the call upon you for ennobled lives, not merely for the glory and prosperity of your country, but for the highest patriotism that says the world is my country and all men are my brothers. You must ask for the large vision that looks beyond the fleeting pomps and glories of to-day and knows that the destiny of the soul lies in immortality and eternity.

[10]

Throughout his life Akbar was an intelligent patron of literature and art. Although he had not taken the trouble to learn and to read, yet, by a peculiar power to understand and a talent for selection by no means common, he had made his own all that can be seen and read in books. In order that material for his studies through the medium of the ear might not be lacking, he collected an enormous library of extraordinary value to which probably no parallel then existed or ever has existed in the world. All the books were manuscripts. Akbar cared nothing for printed volumes, and got rid of the choice specimens presented to him by the first Jesuist mission. When the inventory of his treasures preserved in the

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

fort of Agra was taken, after his death in October 1605, the books, 'written by great men', mostly by very ancient and serious authors', adorned with extermely valuable bindings, and in many cases enriched with costly illustrations by the best artists, numbered 24,000, valued at nearly six and a half millions of rupees.

[11]

It is much better to give hope and strength and courage than money. The best help is not to bear ihe troubles of others for them, but to inspire them with courage and energy to bear their burdens for themselves and meet the difficulties of life bravely. To help others is no easy matter, but requires a clear head a wise judgment as well asa warm heart. We must be careful not to undermine independence in aur anxiety to relieve distress. It is important, therefore, so far as possible, not so much as to give a man bread, as to put him in the way of earning it, not to give direct aid, but to help others to help themselves. The world is so complex that we must inevitably all owe much to our neighbours, but as far as possible, every man should stand on his own feet.

[12]

The teaching of religion is usually regarded as one of the most difficult factors in education and controversy in regard to it is general. Societies

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

cherishing democratic institutions have rightly allowed a wide latitude of opinion as to the quality and degree of 'religious instruction' to be given to their children, and elaborate provisions for freedom of conscience have been incorporated in their educational systems. Democracy has thus attempted to meet the views of persons at all the stages of religious development likely to be found in a modern society, and it is interesting to notice that the scope of its toleration is determined by the common ethical criteria of each society and not by the tenets of a particular religious faith. Thus a religion which included human sacrifice in its ritual would not be tolerated, however devout and disinterested its adherents could be shown to be.

[13]

The human tongue is very sensitive to electric currents, and in this respect an Indian is on an average twice as sensitive as a European. It has been found by experiment that different individuals and different races very enormously in their response to such influences as electric currents, as also in their response to changes of temperature, of pressure, and of light. Some people can hear the high-pitched squeak of the bat, others cannot; some are intensely sensitive to draughts, others get a headache before a thunder-storm. The ant perceives the rays beyond

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

the violet which are invisible to man and many birds seem to have a magnetic sense which guides them on long fights out of sight of land.

[14]

In the western world the scarcity of the means of livelihood has become acute. The anxiety and generosity displayed on that account, both by the leading men and government of the countries, there is a thing quite unknown in the case of the patiently suffered hunger of our people here. But few of our countrymen get two meals a day, and the rest, laying the responsibility for their emptiness on an unkind fate, do not for long avoid slipping off the narrow path of their livelihood into death. The resulting lifelessness is not to be measured only by the death rate. Had there been any way of measuring misery, despondency, incapacity for exertion, liability to disease we should have seen how death mocks at life from one end of the country to the other.

[15]

The spirit of passive resistance is not for the whole nation but for individuals whose conscience disapproved of certain measures of government, to resort to the policy of passive resistance, and take the consequences in the real martyr's spirit. If the attitude of the passive resister is wrong, he alone has to suffer and if he is right, his suffering will, in

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

the end, right the wrong. The real passive resister follows the dictates of his conscience, and is prepared to undergo any amouut of persecution. Retaliation is not his aim, only he will not submit to the lay which, he thinks, is derogatory to his self-respect and contradictory to the dictates of his conscience.

[16]

Women's education in the Vedic period was much advanced, and the upper classes gave maidens a very liberal education equally with the boys which could win for them a dignified position in society The women of that age held a high place in their husbands' houses, which they ruled like queens. In the Rigveda we find: "Though she loved fine dress, it alone could hot satisfy her. She was noble, independent-spirited and fearless. She was not only a mother of heroes, but she was also herself heroic." Vispala, the queen of King Khela had lost her leg in a war and it was replaced by an iron one. Indrasena, wife of the sage, helped her husband in fighting their enemies. She became a charioteer, entered into the enemies' camp and defeated them.

[17]

It would be impossible for us to continue living in this world if each of us knew exactly what fate had in store for him. So God in His mercy conceals

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

the future from all His creatures, and reveals only the present. He hides from the animals what men know, and He hides from men what the angels know. For example, if a lamb had reason like a man, it could not gambol happily, knowing it was destined to be killed for human food. But, being quite ignorant of its fate, it is happy to the last minute of its short life, contentedly grazing in the flowery meadow and even in its innocence licks the hand of the butcher who is about to slaughter it. What a blessing it is that we are ignorant of the future! God, to whom the death of sparrow is of equal importance with the death of a hero, has in His mercy thus limited our knowledge, so that we might fulfil our duty in the sphere to which He has appointed us.

[18]

We are all short-sighted, and very often see but one side of a matter; our views are not extended to all that has a connection with it. From this defect I think no man is free. We see but in part, and we know but in part, and therefore it is no wonder we conclude not right from our partial views. This might instruct the proudest esteemer of his own parts how useful it is to talk and consult with others, even such as come short of him in capacity, quickness and penetration; for since no one sees all,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

we generally have different prospects of the same thing, according to our different, as I may say, positions to it, it is not incongruous to think nor beneath any man to try whether another man may not have notions of things which have escaped him, and which his reason would make use of if they came into his mind.

[19]

Chand Bibi was one of the most distinguished women who have appeared in India. She is still the favourite heroine of the Deccan and is the subject of many fabulous stories. She was exalted both in her life-time and in the memory of her people because of her conspicuous gallantry when she defended Ahmednagar against a Moghul assault. Dressed in full armour and with a naked sword in her hand, she moved among her troops in the hottest part of the fray and inspired them with courage. The battle raged for a whole day. Towards sunset when her ammunition was exhausted,--so the legend relates—, Chand Bibi continued to load her guns, using for the purpose copper, silver and gold coins; and it was not till she had begun to fire away her jewels and ornaments that she consented to the terms offered by her admiring besiegers.

[20]

Finding fault with others often proceeds from an

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

inward sense of perfection. And yet he who thinks himself perfect is perfect only in folly. If we would always recollect that we live among men who are imperfect by nature, we should not be in such a fever when we found out our friends' failings. The best of men are men after all. Every body laughs when the saucepan says to the kettle; "How black you are?" Other men's imperfections show us our imperfections, for one sheep is much like another. We ought to use our neighbours as looking glasses to see our faults and mend in ourselves what we see in them.

[21]

It is the idle who complain they cannot find time to do that which they fancy they wish. In truth, people can generally make time for what they choose to do; it is not really the time but the will that is wanting; and the advantage of leisure is mainly that we may have the power of choosing our own work, not certainly that it confers any privilege of idleness. Time is often said to fly; but it is not so much the time that flies as we that waste it, and wasted time is worse than no time at all.

[22]

A well-dressed man, who evidently possessed more money than manners, entered a railway compartment. An old gentleman who was within had

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

placed his hat on the seat beside him to reserve it for a friend. The new comer not only took the seat, but sat on the hat and crushed it. Instead of apologising, he turned fiercely on the old gentleman, and blamed him for his carelessness in putting the hat there. The old gentleman smiled and said nothing. At the next station the rude passenger got out. The old gentleman then rose and called a porter. "Please run after that gentleman," said he, "and tell him that he has left something behind." The man came rushing back, and putting his head in at the door, said, "What have I left ?" "Two very bad impressions," coolly replied the old gentleman.

[23]

The duty of every boy and every girl at the beginning of life is, as far as possible to choose the suitable work. It is not, of course, always possible for a boy or girl, or man or woman, to get exactly the work which suits them best. In that case it is their duty to take what they can. No really worthy man or woman will stand idle because they cannot find the work they think suits them best. It is when they have a chance to do either what is suitable to them, or what is unsuitable, that they should be careful. It is at such times that foolish people begin to consider: "Shall I find this work lighter, or more genteel, or more easy to shirk ?" Instead, wise

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

people ask, "Shall I make the best of myself at this work, or will that work suit me best?" Those who ask this and decide accordingly will be those who will be doing their duty to themselves and their country.

[24]

We constantly hear of the evils of wealth and of the sinfulness of loving money although it is certain that after the love of knowledge there is no one passion which has done so much good to mankind as the love of money. It is to the love of money that we owe all trade and commerce; in other words, the possession of every comfort and luxury which our own country is unable to supply. Trade and commerce have made us familiar with the productions of many lands, have awakened curiosity, and have widened our ideas by bringing us in contact with nations of various manners, speech, and thought. They have supplied an outlet for energies which would otherwise have been wasted, have accustomed men to habits of enterprise, forethought and calculation, have communicated to us many arts of great utility, and have put us in possession of some of the most valuable remedies with which we are acquainted either to save life or to lessen pain. These things we owe to the love of money. If theologians could succeed in their desire to destroy that love all these

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

things would cease, and we should relapse into barbarism.

[25]

Do not study too long at once. So long as the mind acts with ease it may be allowed to continue working; but if we find that it moves slowly and extra trouble is needed to keep the attention fixed, it is far better to break off and take a walk or some other recreation, than to go plodding on, until one feels wholly exhausted. To continue to force the mind to work is likely to lead to injurious results and may end in a nervous breakdown from which recovery is slow and troublesome. Violent exercise which causes bodily weariness is not what is wanted; with a tired body little mental work is possible. Useful exercise as a change for study should recruit energy, not exhaust it.

[26]

An interesting tale is related about Birbal. Once Akbar asked his courtiers, "which is the best weapon in time of emergency ?" One said, "A sword," another, "A spear" and so on. Birbal said, "Your Majesty ? presence of mind has no rival". The next day, while Birbal was coming to the court, an elephant was let loose by the emperor's order. The eminent man was in imminent danger. A puppy was lying by. Birbal caught the animal by the leg

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

and threw it at the advancing black giant. The elephant was confused, turned tail and ran away. The great man thus proved that ready wit is really the best weapon and that one who does not lose one's presence of mind is perhaps the bravest individual.

अध्याय ६

निबन्ध-लेख (ESSAY-WRITING)

प्रत्येक निबन्ध का कुछ न कुछ उद्देश्य होता है। जैसे पाठकों के भावों को किसी विशेष दिशा की ओर उन्मुख करना, उनके विचारों को किसी विशेष विचार-धारा की ओर झुकाना, उन्हें किसी विषय का परिचय कराना आदि। लेखक को अपने इस उद्देश्य को बहुत स्पष्टता से अपने सम्मुख रखना चाहिए। निबन्ध के अन्तर्गत उन्हीं बातों का समावेश होना चाहिए, जो उस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होती हैं। अनावश्यक तथा अप्रासंगिक बातों के रखने की कोई आवश्यकता नहीं। कुछ लोग समझते हैं कि कोई भी अच्छी उक्ति सब स्थानों पर शोभावर्द्धक होगी। पर यह समझना बहुत बड़ा भ्रम है। अच्छी से अच्छी उक्ति अप्रासंगिक होने पर बुरी हो सकती है।

विषय का प्रतिपादन करते समय अपनी योग्यता तथा शक्ति का सदा ध्यान रखना चाहिए। ऐसा ढाँचा बाँधना जिसका निर्वाह न हो सके, जो सँभाले न सँभले, अनर्थकारी होगा। कुछ लोगों पर दूसरे बड़े लेखकों की रचनाओं का इतना प्रभाव पड़ जाता है कि वे उसका अनुकरण करना प्रारम्भ करते हैं। पर अनुकरण संसार में सबसे कठिन काम है। यह कठिन नहीं असम्भव है। इसके द्वारा नवीन लेखक अपने स्वाभाविक स्वरूप को विकृत करते हैं। इसके द्वारा अपनी स्वतन्त्र शैली के विकास का मार्ग रुक जाता है,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अपनी शक्ति कुंठित हो जाती है। अतः नवीन लेखकों के लिए सब से उचित कार्य अपनी शक्ति तथा योग्यता पर निर्भर रहकर अग्रसर होना है। संभव है इस स्वतन्त्र का क्रम धीरे हो। पर जब भी इसकी सिद्धि होगी यह अपना होगी तथा ठोस होगा। कोई भी साधारण लेखक सिद्ध लेखकों की भाषा लिखने में समर्थ नहीं हो सकता। पर दूसरों की प्राञ्जल तथा प्रौढ़ भाषा कभी कभी इतना आकर्षित करती है कि उसे चुरा लेने को मन चाहता है। पर चोरी का माल पचता नहीं। असिद्ध तथा शिथिल भाषा के भीतर कुछ सिद्ध प्रयोग दूर से लक्षित होते हैं। इनके द्वार सम्पूर्ण लेख सुन्दर लगने के स्थान में और भी भोंड़ा लगने लगता है। अतः भाषा के लिए भी लेखक को अपनी ही शक्ति तथा अपने ही भाषा-ज्ञान पर निर्भर रहना चाहिए। मँगनी के चीजों से अपने दूकान सजाने का प्रयत्न कभी न करना चाहिए।

सम्पूर्ण लेख को लिखना प्रारम्भ करने के पहले मोटे रूप से सोच लेना चाहिए। मुख्य-मुख्य बातों को, जिनका समावेश करना है, एक क्रम से पहले ही लिख लेना उचित है। इन लेख-संकेतों को लिखते समय सतर्कता से काम लेना चाहिए। तथा अपने उत्तरदायित्व को समझ लेना चाहिये। कुछ लोग कभी-कभी अपने को ही ठगते हैं। ये संकेतों की उपेक्षा से लिखते हैं और समझते हैं कि लिखते समय इनके अनुसार अग्रसर होने को कोई आवश्यकता नहीं। ऐसा करने से व्यर्थ समय नष्ट होता है। परीक्षा के समय तो इस शैली से काम लेना बहुत हानिकारक सिद्ध होगा। सोच विचार कर बनाया हुआ लेख का सांकेतिक ढाँचा सहायक होगा। यों ही परंपरानिर्वाह के लिए बनाया हुआ ढाँचा व्यर्थ होगा।

निबन्ध का सबसे महत्त्व का अंग उसका प्रारम्भ है। यदि लेखक प्रारम्भ ही से अपने पाठकों को प्रभावित नहीं कर सका है तो आगे चलकर वह अच्छी से अच्छी बात अच्छे से अच्छे ढग से कहकर भी सफल नहीं हो सकता। प्रारम्भ ही में पाठक की सहानुभूति आकृष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए। अँगरेजी में एक कहावत है कि ठिकाने से काम आरम्भ कर लेना उसे आधा समाप्त कर लेना ही है। यह उक्ति तथ्य से भरी हुई है। नवीन लेखक प्रारम्भ करने की ठीक शैली न जान कर अपनी शक्ति का अपव्यय करते हैं। प्रारम्भ

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ऐसा होना चाहिए जहाँ निबन्ध विकास की ओर अग्रसर हो सके। आगे की बातें एक सुसम्बद्ध शृंखला की भाँति बैठाई जानी चाहिए। प्रत्येक पीछे आने-वाली बात का प्रारम्भ की बात से मेल मिलना चाहिए। लेख कहीं पर टूटा-सा नहीं प्रतीत होना चाहिए। यद्यपि लेख प्रारम्भ करने की कोई सदा सिद्ध होने वाली युक्ति नहीं बताई जा सकती है पर प्रसिद्ध लेखकों की शैली के अनुशीलन से कुछ सीखा अवश्य जा सकता है।

कुछ लेखक उद्धरणों के द्वारा निबन्ध प्रारम्भ करते हैं। ये उद्धरण बहुत प्रसिद्ध तथा सर्वप्रिय लेखकों की रचनाओं से लिए जाते हैं। ये ऐसे होते हैं जिनसे निबन्ध में आनेवाली केन्द्रीय भावना या विचारधारा का समर्थन होता है। ध्यान रखने की यही बात है कि उद्धरण असंगत न हो। इससे पाठकों को प्रभावित कर लेखक उन्हें बहुत दूर तक अपने साथ ले जा सकता है।

कुछ लेखक उपन्यास के ढंग से विषय को प्रारम्भ करते हैं। वे कुछ अपरिचित बातें या दृश्य सामने रख देते हैं। पाठक उन्हें समझ पाने में अस-मर्थ होकर लेखक का मुँह देखने लगते हैं। लेखक इस अवसर से लाभ उठाता है। वह पाठकों को यह कहकर कि आओ हम तुम्हें अभी रहस्य बताए देते हैं, अपने साथ ले लेता है! वह पाठकों का कौतूहल भी दूर करता रहता है तथा अपनी बात भी कहता रहता है। यह शैली कुछ प्रौढ़ता आने ही पर अपनाई जा सकती है।

कुछ लेखक अपने पाठकों को प्रारम्भ में कुछ चकित करके आगे उड़ना चाहते हैं। वे कुछ असंबद्ध-सी, अप्रासंगिक-सी बात कह देते हैं। पाठक चकित हो जाता है। लेखक इस स्थिति से लाभ उठाकर अग्रसर होता है। एक प्रसिद्ध लेखक ने १८५७ के विद्रोह पर लिखना प्रारम्भ करते समय प्रथम वाक्य में लिखा है कि यह घटना अंग्रेजी राज्यकाल की सबसे भाग्यवती है। पर सब लोग ऐसा नहीं मानते, अतः उन्हें आश्चर्य होता है। यह शैली भी अच्छी है पर लेखक को अपनी योग्यता परख कर ही इसका उपयोग करना चाहिए।

कुछ लेखक लेख की मुख्य बात को ही सामने रखकर आगे बढ़ते हैं। पर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ऐसा करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रारम्भ ही में इतना न कह देना चाहिए कि आगे कहने को कुछ बच ही न जाय।

कभी कभी विषय को एके दम से भी प्रारम्भ किया जा सकता है। पर ऐसा बहुत परिचित विषय में करना समीचीन प्रतीत होता है।

बहुत से लेखक मोटे रूप से अपने निबन्ध का विषय बताते हुए आगे बढ़ते हैं। यह मार्ग सबसे सरल तथा सीधा-सादा है। प्रारम्भ में नवीन लेखकों के लिए यह अति हितकर है। इसमें किसी विशेष कला या योग्यता की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती।

एक बार लेख प्रारम्भ करने के पश्चात् सरलतापूर्वक आगे बढ़ा जा सकता है। पर कुछ बातों को ध्यान में रखने की अत्यन्त आवश्यकता है। लेख को अनावश्यक रूप से अधिक फैलाव प्राप्त न होना चाहिए। निर्धारित विषय की सीमा पर सदा दृष्टि जमी रहनी चाहिए। मुख्य विषय से इधर उधर भटकने से विषय का प्रतिपादन अपना प्रभाव खो बैठता है। बातों को व्यर्थ ही बढ़ा-बढ़ाकर या दोहरा-दोहराकर कहने से शिथिलता आती है तथा लेख का कलेवर व्यर्थ बढ़ जाता है। बातों को प्रस्तुत करते समय आगे पीछे के क्रम का ध्यान रखना चाहिए। इस क्रम का ध्यान रखने से लाघव तथा चुस्ती आती है। आगे पीछे के क्रम पर ध्यान न रखने से कभी कभी बातों को बहुत विस्तार से कहना पड़ता है।

अनुच्छेदों के समुचित विभाजन पर सदा ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक अनुच्छेद अपने में पूर्ण रहना चाहिए, उसके भीतर एक ही बात पूरी तरह से कही जानी चाहिए। साथ ही पूर्व के अनुच्छेद में कुछ ऐसी बात भी होनी चाहिये जो पीछे आनेवाली अनुच्छेद की भूमिका का काम करे। इस प्रकार विषय का विकास बहुत सुसंगत होता रहेगा।

विराम चिह्नों के प्रयोग पर भी ध्यान रखना चाहिए। इनके प्रयोग से भाषा की शक्ति बढ़ती है। पर इनका प्रयोग करते समय इनके नियमों का ठीक ठीक पालन होना चाहिए। अशुद्ध रूप से प्रयोग किये हुए विराम-चिह्न भ्रम उत्पन्न करते हैं। अतः इनके प्रयोग में बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

इसका सदा ध्यान रखना चाहिए कि सब बातों को एक सा महत्त्व प्राप्त नहीं होता। अतः बातों का प्रतिपादन करते समय उनके स्थानीय महत्त्व का ध्यान रखना चाहिए। इसी महत्त्व के अनुसार उनका विस्तार होना चाहिए। बहुत सी बातों की ओर इशारा कर देना ही पर्याप्त होता है; और बहुत सी बातों को कुछ विस्तार तथा अधिक फैलाव के साथ कहना पड़ता है।

यदि किसी बात को समझने के लिए अथवा किसी विशेष प्रभाव को उत्पन्न करने के लिए कोई बीच में कहानी लिखने की आवश्यकता हो तो उसे अवश्य लिखना चाहिए। पर अनावश्यक तथा लम्बी कहानियों का न लिखना ही उचित है।

भाषा में मुहाविरों और लोकोक्तियों के प्रयोग करते रहने की भी आवश्यकता है। इनके द्वारा भाषा में प्रभाव उत्पन्न होता है तथा बात भी अधिक स्पष्टता से कही जा सकती है। परन्तु इनके अशुद्ध प्रयोग से अनर्थ हो सकते हैं। अतः इनके ठीक तथा शिष्ट प्रयोग पर सदा ध्यान रखना चाहिए। यदि किसी मुहविरे या लोकोक्ति का ठीक प्रयोग ध्यान में नहीं आता तो उसे छोड़ देना ही अच्छा है। कुछ लोग अपनी योग्यता के प्रदर्शन के लिए मुहाविरों को ठूँस ठूँस कर भरना प्रारम्भ कर देते हैं। ऐसा प्रदर्शन अशिष्ट है। अति कहीं भी अच्छी नहीं लगती। प्रत्येक बात समन्वय के अनुसार ही शोभावर्द्धक होती है।

कभी कभी किसी विचार की गौरव-वृद्धि के लिए अर्थात् उसे बलवान् बनाने के लिए प्रश्नरूप में या संकेतबोधक अर्थात् विस्मयादिसूचक वाक्य लिखा जाता है। कभी कभी इसी मतलब से निर्जीव पदार्थों का आभाषण ऐसे करते हैं मानों वे जीवधारी होकर आगे खड़े हैं। जैसे साधारण वाक्य "हर आदमी जानता है कि व्यापार से धन-प्राप्ति होती है।" प्रश्न रूप में "ऐसा कौन है जो व्यापार की धन-प्राप्ति को न जानता हो?" विस्मय रूप से "अहा हा! व्यापार भी कैसी अनुपम वस्तु है, जिससे इतनी धन प्राप्ति होती है।" आभाषण रूप से "धन्य रे व्यापार! मनुष्य को धनप्राप्ति कराने की अद्भुत शक्ति तुझी में है।"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आलंकारिक प्रयोगों से भी सहायता ली जा सकती है। पर गद्य में काव्य के सब अलंकार नहीं लिए जा सकते हैं। हाँ उपमा, दृष्टान्त ऐसे प्रायः प्रयुक्त अलंकारों से अवश्य लाभ उठाया जा सकता है। इनके द्वारा बात प्रस्तुत करने से विषय-प्रतिपादन में सुन्दरता तथा रमणीयता आती है। दृष्टान्त इत्यादि के प्रयोग से विषय को समझाया जा सकता है, उसे बोध गम्य बनाया जा सकता है तथा उसकी अस्पष्टता दूर की जा सकती है।

लेख को समाप्त करते समय भी सतर्क रहने की आवश्यकता है। स्मरण रखना चाहिए कि जीवित प्राणियों के समान ही निबन्धों का एक शरीर होता है। यदि प्राणियों के शरीर रचते समय प्रकृति प्रमाद करती है तो वे अन्धे, काने या बौने हो जाते हैं। इसी प्रकार यदि लेखक निबन्ध के पूरे शरीर के कलापूर्ण गठन पर ध्यान नहीं रखता तो उसका लेख बौना हो सकता है। कोई भी लेख किसी भी स्थान पर समाप्त नहीं किया जा सकता। उसका भी एक स्थान है, जिसका पता सतर्क लेखक को प्रारम्भ ही में निश्चय कर लेना चाहिए। जब विषय का प्रतिपादन आवश्यक रूप से हो चुके तब निबन्ध समाप्त किया जा सकता है। समाप्त करते समय कही हुई बातों को कुछ संक्षेप में सारांश रूप में कह देना उचित होता है। ऐसा करने से पाठक के सामने सारी बातें फिर आ जाती हैं और वह निबन्ध समाप्त करके भी उनको अपने साथ लिए रह सकता है। संक्षेप में कही हुई बातें विस्तृत नहीं होतीं। संक्षेप स्मरणशक्ति का सहायक है।

निबन्धों के भेद

निबन्ध के कुछ भेद करके यह नहीं कहा जा सकता कि अब आगे भेद नहीं किए जा सकते; फिर भी साधारण सुविधा के लिए कुछ भेदों का निर्देश कर दिया जाता है। विचारों और भावों की दृष्टि से दो मुख्य विभाग होंगे—(क) विचारात्मक निबन्ध; और (ख) भावात्मक निबन्ध। विचारात्मक निबन्ध का उद्देश्य ज्ञान बढ़ाना, विचारों को जाग्रत करना आदि होता है। तथा भावात्मक निबन्ध का उद्देश्य मनोवेगों को आन्दोलित करना है। लेकिन इस विभाग से यह न समझना चाहिए कि विचारात्मक निबन्ध में भावों

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

को स्थान ही नहीं है। वास्तव में ये दोनों—विचार तथा भाव—अन्योन्याश्रित हैं।

अब दूसरी दृष्टि से निबन्धों के अन्य विभागों का कुछ परिचय दिया जाता है:—

(१) **वर्णनात्मक निबन्ध**—इनमें लेखक अपनी परिचय-सीमा के भीतर आई हुई बातों का वर्णन करता है।

(२) **ऐतिहासिक निबन्ध**—इनमें प्राप्त सामग्री के आधार पर धार्मिक, साहित्यिक, राजनीतिक आदि परिस्थितियों का आलोचनात्मक वर्णन किया जाता है। जीवनचरित्र इसी विभाग के अन्तर्गत हैं।

(३) **वैज्ञानिक निबन्ध**—इनमें वैज्ञानिक आविष्कारों से सम्बन्ध रखने-वाले विषयों का वर्णन रहता है।

(४) **तार्किक निबन्ध**—ये निबन्ध किसी को अपनी विचार शैली से प्रभावित करने को लिखे जाते हैं। इनमें लेखक तो तार्किक, संयमशील, सूक्ष्म दृष्टि-सम्पन्न होना चाहिए। उसे अपनी बात को ऐसे रूप में उपस्थित करना चाहिए कि दूसरा उनको स्वीकार करता चले।

(५) **उद्धरण निबन्ध**—इनमें कभी कभी कोई कहावत, सूक्ति आदि देकर उनका भाव स्पष्ट करने वाले विषय पर लेख लिखवाया जाता है।

(६) **आलोचनात्मक निबन्ध**—ये बहुत उच्च कोटि के साहित्य के अन्तर्गत हैं। इनको लिखने के लिए विस्तृत अनुभव, गम्भीर पाण्डित्य तथा प्रौढ़ शैली की आवश्यकता होती है। इनमें किसी विषय का विश्लेषणात्मक वर्णन तथा परिचय रहता है।

(७) **आत्मकथा**—इस प्रकार के निबन्ध प्रायः विद्यार्थियों से लिखाये जाते हैं। इनमें कुछ मनोरंजन तथा विनोद की मात्रा अवश्य रहनी चाहिए। ऐसे लेख अधिक गम्भीर होने पर अपने उद्देश्य ही से च्युत हो जाते हैं। पर यह भी आवश्यक नहीं कि इनमें निरर्थक बातें ही भर दी जायँ। मनोरंजन के साथ शिक्षा की भी व्यवस्था की जा सकती है। उनके द्वारा भूगोल,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अनुसन्धान, व्यवसाय आदि विषयों का साधारण ज्ञान भी सुविधापूर्वक कराया जा सकता है।

(८) कथोपकथन—ऐसे निबन्धों में दो या कई व्यक्तियों की बातचीत के द्वारा कोई विषय बतलाया जाता है। इनमें यथाशक्ति बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। इनमें भी मनोरंजन की सामग्री रहनी चाहिए।

(९) कहानी—इनमें ऊपर बतलाए हुए सभी प्रकार के विषयों का समावेश आवश्यकतानुसार किया जा सकता है।

वर्णनात्मक निबन्ध

१—मक्खी

ढाँचा

१—मक्खियों से घृणा। २—वे ज़बरदस्ती आ जाती हैं।
३—उनसे हानि। ४—उनसे बचने का उपाय—सफ़ाई।
५—उसकी उत्पत्ति आदि। ६—उसकी सन्तानवृद्धि।
७—उसके भेद। ८—उसकी दृष्टि।
९—उसके शरीर की स्वच्छता।
१०—दीवार आदि पर चलने की उसकी शक्ति।
११—मक्खी किस रीति से खाती है।
१२—मक्खी तथा अन्य कीड़ों में भेद।

कहावत प्रसिद्ध है कि 'जिसने जीते लोक तीन हैं, वह भी हारा मक्खी से'। यह प्राणी ऐसा विकट है कि मनुष्य-जाति इससे तङ्ग आ गई है। इसके बारे में एक दो भी भले शब्द कहनेवाला मनुष्य विरला ही मिलेगा। समाज में जब जब मक्खियों का नाम आता है, तब उन्हें खुले बाज़ार गालियाँ मिलती हैं। इसका कारण यही है कि इनकी आदतें गन्दी और मनुष्य को हानिकारक होती हैं, तथा इन प्राणियों में ढूँढने पर भी गुण नहीं मिलते। चिऊँटी, मधुमक्खी, बरया

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आदि कीड़ों में बुद्धि अच्छी पाई जाती है; परन्तु इनके विपरीत मक्खियों में बुद्धि कम मिलती है। इनका जीवन वृत्तान्त भी आनन्ददायक नहीं है। तब फिर यह प्रश्न उठता है कि इन दुष्ट प्राणियों के जीवन का अध्ययन हम लोग क्यों करें? इसका उत्तर यह है कि उत्पातों से बचने के लिए यह आवश्यक है कि हम मक्खियों का पूरा पूरा हाल जानें।

घरेलू मक्खियों की मुलाकात हमें घर बैठे ही हो जाती है। हम उनका स्वागत करें अथवा न करें वे तो हाजिर हो ही जाती हैं; विशेष कर ग्रीष्म और वर्षा-ऋतु में। 'मान न मान, मैं तेरा मेहमान' इस कहावत को चरितार्थ करती हुई बिना पूछे-पाछे कोई तो दुग्धपान करने बैठ जातीं, कोई मुरब्बे का स्वाद चखतीं, कोई देवताओं को अर्पण करने के पहले ही हमारे भोजन को जूठा कर देती हैं। किसी दूसरे अतिथि को एक बार धुतकारने से फिर वह दूसरी बार नहीं झाँकता, परन्तु मक्खियाँ तो जन्म ही से बेशरम होती हैं। पचास बार उनको धक्के देकर हटा दो; परन्तु थोड़ी ही देर में वे फिर आ पहुँचती हैं और यह दिखलाने के लिए कि हमें मनुष्य का कुछ भय नहीं, वे उसके शरीर पर बार बार आकर भिनकती हैं। नीली मक्खी अधिक बुरी होती है। जहाँ उसे किसी भी प्रकार का भोजन दिखा कि उसने अपने अण्डे रखकर उसे दूषित कर दिया।

बालकों को बरैंयों, मधुमक्खियों तथा लखेरियों का विशेष भय रहता है। कारण ये सब डङ्क मारती हैं। घरेलू मक्खी न काट सकती और न डङ्क ही मार सकती है। इस कारण वे उससे भय नहीं खाते। परन्तु यथार्थ में निर्दोष दिखनेवाली यह मक्खी सबसे भयङ्कर और रोग उत्पादक होती है। उसे मैली गन्दी वस्तुओं पर बैठने का ही शौक होता है और वहाँ से वह उनके छोटे छोटे कण अपने पैरों, पंखों तथा रोमयुक्त शरीर में भर कर आती है। फिर बिना नहाये-सीधी हमारे भोजन की वस्तुओं पर आ बैठती है और उन्हें दूषित कर देती है। इसी तरह वह बीमारों के पास जा, मनमानी जगह पर बैठती है और बीमार के कीटाणुओं को लाकर चंगे मनुष्यों में रोग फैलाती है। संक्रामक रोग इसी प्रकार एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य को कीटाणुओं द्वारा लग जाते हैं।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

इन मक्खियों से बचने का केवल एक उपाय है। ऊपर कह आये हैं कि इन्हें गन्दगी बहुत प्रिय है और गन्दगी वस्तुएँ न मिलने से, ये न अण्डे रख सकतीं और न रह सकती हैं। इसलिए घर की जितनी अधिक सफाई की जायगी उतनी ही कम मक्खियाँ रहेंगी। भोजन इत्यादि खाद्य पदार्थ ढककर रखने से भी बहुत लाभ है। एक कहानी प्रसिद्ध है कि किसी ने एक बाबाजी से प्रश्न किया कि तुम्हारे चेले बहुत हो गये हैं, उनको खिलाने का क्या प्रबन्ध करोगे ? बाबाजी ने उत्तर दिया कि बच्चे, चेले जब भूखों मरेंगे, तब आप ही रमते चले जायँगे। यही हाल मक्खियों का भी होगा। भोजन ढका रहने तथा सफाई होने से जब उन्हें खाने को न मिलेगा तब वे आप ही रमती हुई चली जायँगी।

मक्खी की आयु कुल पाँच सप्ताह की होती है, उसीमें वह मौज कर लेती है। बीच में यदि किसी मकड़ी ने उसे अपने जाल में धर फँसाया अथवा वह अन्य किसी हिंसक कीड़े के चंगुल में फँस गई, तो फिर उसे और भी जल्दी यमराज के दर्शन करने पड़ते हैं। खाने-पीने, अपनी सफ़ाई करने, इधर-उधर भिनकते फिरने और, यदि वह मादा हुई तो, अण्डे रखने में ही, उसकी दिन-चर्या समाप्त हो जाती है। उसे उजेला और गरमी चाहिए ; सरदी चमकते ही उसका ढेर हो जाता है। यही कारण है कि जड़ाकाल में बहुत कम मक्खियाँ देखने में आती हैं।

प्रत्येक मादा पाँच-छः बार अण्डे देती है ; और हर बार सौ से डेढ़ सौ तक अण्डे रखती है। ये इतने छोटे होते हैं कि खाली आँख से बहुत कम मनुष्य इन्हें देख सकते हैं। इनका अवलोकन बृहत्प्रदर्शकताल से किया जाता है। अन्य कीड़े मकड़ों के समान इसके अण्डों में से भी इल्ली निकलती है। यह इल्ली कुछ काल के उपरान्त शंखी बन कर सोती है। और समय आने पर उसे फोड़ मक्खी के रूप में निकलती है। यह सब काम केवल आठ-नौ दिवस में हो जाता है। उत्पन्न होने के उपरान्त शीघ्र ही नवीन मादा भी अण्डे देने लगती है, और उसके बच्चे भी आठ-नौ दिन के भीतर खड़े हो जाते हैं। मरते तक मादा मक्खी परदादी, नगड़-दादी तक हो जाती है; परन्तु उसे स्वर्ग-निसेनी मिलती हैं अथवा नहीं, इसकी खबर नहीं मिली !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मक्खियाँ कई प्रकार की होती हैं, कोई छोटी और कोई बड़ी। परन्तु यह न समझना चाहिए कि छोटी मक्खी कम उमर की होती है। शंखी में से निकलने के उपरान्त कोई भी कीड़ा-मकोड़ा बढ़ता नहीं; उसकी लम्बाई-चौड़ाई जन्म से मरण तक एक सी रहती है। छोटी मक्खियों की एक जाति अलग है, जो बहुधा तूफ़ान आने के पहले दिखाई देती है, क्योंकि तूफ़ान से बचने के लिए इस जाति की मक्खियों को घरों में शरण लेनी पड़ती है। ये तूफ़ानी मक्खियाँ सुई सरीखी पैनी सूँड से हमारे चमड़े को टोंचती हैं। परन्तु चमड़े में छेद इतना सूक्ष्म होता है कि हमको मालूम ही नहीं होता और हमारे रक्त में उनका विष पहुँच जाता है।

मक्खियाँ पकड़ में शायद ही कभी आती हैं। उनको मारने को हाथ उठाया कि वे साफ उड़ जाती है। इसका कारण क्या है? मक्खियों की दो बड़ी-भारी आखें होती हैं। ऐसा कहना अनुचित न होगा कि उनके मस्तक में आँखों के सिवा और कुछ रहता ही नहीं। इन आँखों में हजारों छोटे छोटे पहल रहते हैं और ये भिन्न भिन्न दिशाओं की ओर रहते हैं। प्रत्येक पहल एक लेन्स या ताल के समान रहता है। और मक्खी को जिस दिशा में देखना हो, उस दिशा के ताल में वह बिना सिर घुमाये देख सकती है यही कारण है कि मक्खी को धोखा देकर हम लोग नहीं पकड़ पाते।

यद्यपि मक्खी बिना सिर घुमाये सब ओर देखभाल कर लेती है तथापि काम पड़ने पर वह अपनी गर्दन विचित्र रीति से झुका सकती है। उसकी गर्दन धागे के समान पतली और छोटी होती है और अपने पाँवों से मुँह स्वच्छ करते समय, मक्खी उसे इस प्रकार मरोड़ती है कि देखनेवाले को भय होने लगता है कि कहीं सिर टूटकर अलग न जा पड़े।

मक्खी को शृंगार का बड़ा शौक़ है। उसके छोटे और पतले पैरों में एक प्रकार का बुरुश रहता है। जिससे वह, दूसरा कार्य न होने पर, अपने पङ्ख, मुख आदि को झाड़ कर स्वच्छ किया करती है।

इस प्राणी में सीधी दीवाल पर चढ़ने तथा छत पर उलटे चलने की अद्भुत शक्ति है और ये कार्य यह बड़ी सुगमता से करती है। यदि हम इसके पैरों का अवलोकन बृहत्प्रदर्शकताल से करें तो हमको इसकी इस शक्ति

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

: In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

र आश्चर्य न होगा। इसके पैरों के नीचे दो गद्दियाँ रहती हैं और उनमें से घूँघरवाले बाल निकले रहते हैं। ये बाल पोले होते हैं और इनमें से गोंद सरीखा रस निकलता है। इस कारण पाँव रखते ही मक्खी का पाँव रस के कारण चिपक सा जाता है और वह गिरती नहीं।

मक्खी के एक विचित्र लम्बी सूँड़ होती है, जिसके छोर पर गद्दी के समान, चूसने के लिए, मुख-सा रहता है। उसी को खाद्य में डालकर वह अपना भोजन प्राप्त करती है। वह किसी भी गीली वस्तु से अपना पेट भर सकती है। जैसे, पसीना, तेल, वार्निश आदि। ठोस वस्तु उसके काम की नहीं। शक्कर खाना हो तो वह सूँड़ से टोंच टोंचकर और रस डाल डालकर पहले गीली करेगी, तब उसे खायगी।

अन्य कीड़ों के चार पङ्ख होते हैं, परन्तु मक्खी के केवल दो ही होते हैं। जहाँ पङ्खों की दूसरी जोड़ी होनी चाहिए, वहाँ केवल डण्ठल से रहते हैं और उनके छोर पर गुट्टे से लगे रहते हैं। इनको तौलक कहते हैं और इन्हें निकाल लेने से मक्खी उड़ नहीं सकती।

—रायबहादुर पं० लज्जाशंकर झा

२—एक प्रीतिभोजन का वर्णन

गत सप्ताह में हमारे बड़े भाई का विवाह था। उसके उपलक्ष्य में एक बृहत् प्रीति-भोज हुआ।

हमारे पिताजी ने एक सुन्दर निमन्त्रण-पत्र छपवाया था, जो लाल कागज़ पर सुनहरी रोशनाई से छपा था। उसमें पहले ईश्वर का नाम था, फिर विवाह के विषय में सूचना थी। फिर प्रार्थना की गई थी कि यदि आप प्रीति-भोज में सम्मिलित होने की कृपा करेंगे तो हम सब आप के बड़े कृतज्ञ होंगे। नीचे हमारे पिताजी के हस्ताक्षर थे। लगभग दो सौ निमन्त्रण-पत्र भेजे गये थे। नगर के पत्र हमारा चपरासी ले गया था; परन्तु बाहर के पत्रों पर डाक का टिकट लगाकर डाक में डाल दिया गया था।

प्रीति-भोज की तैयारी कई दिनों से की जा रही थी। आगन्तुक महाशयों

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

के बैठने के लिए मकान के सामने के मैदान में एक बड़ा शामियाना ताना गया था। इस शामियाने को बन्दनवार, आम और अशोक के पत्तों, फूल की मालाओं तथा कागज की शृङ्खलाओं से सजाया गया था। बीच बीच में केले, नारंगी आदि फल लटकाए गये थे। इधर उधर वेद-मन्त्र सुन्दर अक्षरों में लिखे हुए टाँगे गये थे। शामियाना हिन्दुस्तानी प्रणाली के अनुसार सजाया गया था। कुर्सियाँ नहीं थीं दरियों पर कालीन बिछे थे, एक ओर मखमली तकिये रखे हुए थे।

प्रीतिभोज के लिए साढ़े सात बजे सायंकाल नियत था। जब सात बज चुके तब मेरे पिताजी आनेवालों की प्रतिक्षा में अपने घर के दरवाज़े पर टहलने लगे। थोड़ी देर में लोगों का आना आरम्भ हुआ। कुछ लोग मोटरों में आये, कुछ गाड़ियों में और कुछ जो निकट रहते थे, पैदल ही आये। हम लोगों के लिए एक अच्छा तमाशा हो गया। मेहमानों के साथ बच्चे भी थे, कोई छोटे और कोई बड़े। हमने अपने बराबर वाले कई बच्चों से परिचय कर लिया और खेलने लगे। मेरे पिताजी के एक मित्र बाबू शिवचरणलालजी कानपुर में रहते हैं; वह अपनी धर्मपत्नी तथा बच्चों के साथ आये थे। एक बच्चे का नाम बलवीर है जो हमारी ही कक्षा का विद्यार्थी है। यह लोग एक दिन पूर्व आ गये थे और हमारी इनकी गाढ़ी मित्रता हो गई थी। मैंने बलवीर को अपनी साइकिल दिखलाई। वह उसे देखकर बहुत खुश हुआ।

साढ़े सात बजे तक दो-ढाई सौ मेहमान इकट्ठे हो गये। उनके खिलाने के लिए हमारे मकान की छतों पर प्रबन्ध किया गया और सफेद चादरें चारों ओर बिछा दी गयीं। प्रकाश के लिए कई गैस के हंडे रख दिये गये थे। मैंने स्वयं भी पत्तलों के परोसने में भाग लिया था।

प्रीति-भोज के दिन प्रातःकाल ही से मिठाइयाँ और पकवान तैयार किये थे। एक हलवाई बुलाया गया था, जिसने खोये की बर्फी, गुलाबजामुन, बंगाली रसगुल्ले, मलाई के लड्डू आदि बनाये थे। दालमोट आगरे से मँगाई गई थी। हापड़ के पापड़ मँगाने के लिए भी प्रयत्न किया गया था और हमारे पिताजी के एक मित्र ने एक पार्सल भेजा भी; परन्तु रेलवेवालों की असावधानी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

के कारण वह पार्सल पटने चला गया और हमको दूसरे दिन मिला। इसलिए तुरन्त ही बाजार से जैसे मिले, वैसे ही पापड़ खरीद लिये गये।

मिठाइयों की एक तश्तरी थी। दूसरी तश्तरी में समोसा और दालमोट रखे थे। एक बहुत छोटी तश्तरी में कई प्रकार के अचार और चटनियाँ थीं। एक कशोरा रायते के लिए था और एक जीरे के पानी के लिए। पत्तलों पर पूरी, कचौड़ी, पापड़ और तरकारियाँ परोसी गईं थीं।

मैंने और बलवीर ने पहले से निश्चित कर लिया था कि, हम लोग प्रीति-भोज परोसने का कार्य करेंगे। हमने अपनी, कमीज की बाहें चढ़ा ली थीं और बड़े उत्साह के साथ इधर-उधर दौड़ते थे। पिताजी के अतिरिक्त घर के सभी लोग परोसने में लगे हुए थे। क्योंकि पिताजी मेहमानों को बिठालने और उनके आदर-सत्कार में लगे थे। मेरे चाचाजी ने समझा दिया था कि अमुक पुरुष को अमुक वस्तु के परोसने का काम देना चाहिए। मैं रायता परोसता था और बलवीर तरकारी परोसते थे। मेरा एक छोटा भाई तीन वर्ष का है। उसके मन में भी हमको देखकर खाना परोसने का चाव हुआ। वह यह चाहता था कि सभी कुछ मैं ही परोसूँ। जब चाचाजी ने पूड़ियों की बड़ी टोकरी ली तब वह उसे लेने के लिए आग्रह करने लगा। हम हँसने लगे; परन्तु जब चाचाजी ने वह टोकरी उसको दी तब वह बोझ के मारे दबने लगा। अन्त में यह निश्चित हुआ कि उसको पापड़ परोसने ही का काम दिया जाय। इसलिए वह एक छोटे से बर्तन में दो-तीन पापड़ ले जाता और कहता "पापड़ लीजिये, पापड़ खाइये।" उसकी तोतली बोली पर सब लोग हँस पड़ते और उसके साहस की प्रशंसा करते। कभी कभी वह बिना माँगे ही पापड़ डाल देता और कभी कभी लोग उसका मन रखने के लिए एक दो टुकड़े पापड़ के ले ही लेते।

इस प्रीति-भोज में हमने समान वयस्क बच्चों के साथ अच्छा प्रहसन किया। एक लड़के ने अपनी तश्तरी से एक लड्डू लेकर अपने साथी के जेब में डाल दिया और जब हम लोग उसके पास गये तब कहने लगा, "देखो यह महाशय तो कई दिन आगे का प्रबन्ध भी करते मालूम पड़ते हैं।" पहले तो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उसको पता न चला कि इसका क्या आशय है; परन्तु जब उसके जेब से लड्डू निकाला गया तब बड़ी हँसी हुई।

भोजन लोगों ने धीरे धीरे किया। पौन घंटे के लगभग समय लगा होगा। हमारे आगन्तुकों में दो चार महाराष्ट्र सज्जन भी थे। उनके देश में भोजन के समय संगीत की भी प्रथा है। हमने उनसे आग्रह किया कि "गाइये।" इससे जब भोजन पा चुके तब पन्द्रह-बीस मिनट तक गाना होता रहा।

अन्त में लोगों के हाथ धुलाये गये। कई नौकर पानी के बर्तन और तौलिये लिये खड़े थे। जब लोग हाथ धो चुकते थे तब उनको इलायची और पान दिये जाते थे।

जब प्रीति-भोज समाप्त हुआ तब मेरे पिताजी ने हम सब की ओर से कृतज्ञता प्रकट की और सब मेहमानों ने हमारे बड़े भाई और नई भावज के चिर-जीवन के लिए अशीर्वाद दिया।

इस प्रकार प्रीति-भोज समाप्त हुआ। हमको दो दिन पूर्व से स्कूल से छुट्टी दिला दी गई थी। प्रीति-भोज के दूसरे दिन भी हमको छुट्टी लेनी पड़ी, क्योंकि कुछ तो प्रबन्ध में भाग लेना था और कुछ आये हुए बच्चों के साथ आनन्द-मंगल करने का भी विचार था।

—बा० गंगाप्रसाद, एम० ए०

३—फुटबाल का खेल

ढाँचा

१—स्थान—चौरस भूमि का खुला मैदान, उसकी लम्बाई चौड़ाई।

२—सामान—गोल-पोस्ट, जाल, झंडियाँ, गेंद।

३—खेलनेवाले—दो टोलियाँ, प्रत्येक में ११ खिलाड़ी; उनका स्थापन; खेल का प्रारम्भ कहाँ और कैसे होता है? हार-जीत कैसे होती है?

४—निर्णायक—रेफ़री—और उसका कर्त्तव्य।

५—लाभ—अच्छा व्यायाम, सम्मिलित क्रिया का अभ्यास आदि।

oal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ऐतिहासिक निबन्ध

४—सम्राट् अशोक

ढाँचा

१—वह कौन था ? बाल्यकाल का हाल।

२—राजा होने पर उसका स्वभाव, युद्ध।

३—क्रूरता का दयालुता में परिवर्त्तन कैसे हुआ। दयालुता के कर्म।

४—धार्मिक विचार। विद्वानों का आदर।

५—राज्य-काल। राज्य-विस्तार। प्रताप।

६—शिलालेख आदि।

७—अशोक की जीवनी से उपदेश।

अशोकवर्द्धन सम्राट् चन्द्रगुप्त का पौत्र था। चन्द्रगुप्त के मरने के २५ वर्ष पीछे वह राज-सिंहासन पर बैठा। राज्य के पहले आठ वर्ष उसने शिकार आदि मनबहलाव की बातों में खोये। फिर कलिङ्गराज पर चढ़ाई की।

कलिङ्ग देश आज-कल के उड़ीसा प्रान्त के दक्षिण में था। वह आज-कल के नक्शे में उत्तरी सरकार लिखा जाता है। चन्द्रगुप्त का अधिकार बङ्गाल पर हो चुका था; परन्तु कलिङ्ग देश स्वतन्त्र था। अशोक ने घोर युद्ध करके उस पर भी अधिकार कर लिया। इस युद्ध में कोई डेढ़ लाख मनुष्य बन्दी हुए, एक लाख खेत रहे और कई लाख युद्ध से फैलनेवाले रोगों और दुर्भिक्ष के शिकार हुए।

प्रजा का घोर कष्ट और उसकी दारुण दशा देखकर अशोक का हृदय बदला। करुण और दया ने क्रूरता का स्थान लिया। जो अशोक अपनी क्रूरता के लिये 'चण्ड अशोक' के नाम से प्रसिद्ध था, वह अब बौद्धमत ग्रहण करके 'धर्म अशोक' हो गया। उसने लड़ाई एकदम बंद कर दी और वह धर्म के उपदेश दिलवाने लगा। धर्म की आज्ञाएँ अपने साम्राज्य भर में फैलने को जगह-जगह पत्थरों और खम्भों पर उसने खुदवा दीं निदान अपना सारा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

समय उसने बौद्धधर्म के प्रचार में लगा दिया और अन्त में एक बौद्ध साधु बन गया। उसके कितने ही आदेश अब भी वैसे ही खुदे हुए मिलते हैं। उड़ीसा, मैसूर, पंजाब, बम्बई आदि प्रान्तों में उसके आदेश-लेख मिले हैं। इस बात से सिद्ध है कि इस सम्राट् का राज्य सारे भारतवर्ष पर था। उसने शिकार खेलना, यज्ञ में पशुओं का बलिदान करना एवं और तरह से जीव-हिंसा करना राज्य भर में बंद कर दिया था। यह देखने को कि उसकी आज्ञा का कैसा पालन होता है उसने बहुत से निरीक्षक नियुक्त कर दिये थे। सूबों के कर्मचारियों को आज्ञा दे दी गई कि मनुष्यों को सद्धर्म का उपदेश करें।

सड़कों के किनारे छाया के लिए बरगद आदि के वृक्ष लगवा दिये गये कितने ही कुएँ और बावलियाँ खुदवा दी गईं। स्थान स्थान पर यात्रियों के लिए धर्मशालाएँ और प्यासों के लिए पौशालाएँ स्थापित की गईं। रोगियों के लिए औषधालय खोले गये। उनमें सब प्रकार की औषधियाँ बिना मूल्य मिलती थीं। यद्यपि अशोक ने स्वयं बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था, तथापि वह अन्य सभी धर्मों को बड़े आदर की दृष्टि से देखता था, बल्कि उसकी आज्ञा थी कि कोई किसी धर्म की निन्दा न करे। प्रत्येक मनुष्य निडर होकर अपने धर्म का पालन कर सकता था। धर्म-प्रचार के लिए उसने देश देशान्तरों में भी धर्मोपदेशक भेजे, जो बड़ी-बड़ी दूर पहुँचे। श्याम, मिश्र, यूनान, लङ्का, ब्रह्म-देश चीन आदि संसार के सभी सभ्य देशों में वे गये। जो उपदेशक-मण्डली लङ्का गई थी, उसका नेता महाराज अशोक का पुत्र महेन्द्र था। उसने दूर-दूर तक मठ बनवा दिये थे। इस सम्राट् ने धर्म-प्रचार करने में कोई बात उठा न रखी। यह उसी के परिश्रम का फल था कि बौद्ध-धर्म संसार के अधिकांश देशों में फैल गया। उसने बौद्ध-धर्म की एक बड़ी सभा की; जिसमें बौद्ध धर्म के उपदेश संग्रह करके पुस्तकाकार लिखे गये और सम्प्रदाय-सम्बन्धी झगड़े दूर किये गये।

सम्राट् अशोक प्रतिवर्ष अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में विद्वानों की एक सभा करता था और उनको योग्यता के अनुसार पुरस्कार देता था।

चालीस वर्ष निर्भय राज्य करके अशोक परलोक सिधारा। उससे अधिक प्रतापी, प्रभावशाली, ऐश्वर्यवान् एवं धार्मिक सम्राट् कोई नहीं हुआ। उसके

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राज्य की सीमा बड़ी विस्तृत थी। उत्तर में तुरकिस्तान से लेकर दक्षिण में कृष्णा नदी तक उसी का राज्य था। राज्य की सीमा पर जो अन्य स्वतन्त्र राज्य थे उनके साथ उसका मित्र-भाव था। उसके चालीस वर्ष के शासन-काल में भारतवर्ष में निरन्तर और नितान्त सुख और शान्ति रही।

अशोक के शिला-लेख पाली भाषा में हैं। उनमें से एक लेख, जो मैसूर की रियासत में एक चट्टान पर खुदा हुआ मिला है, अशोक के धर्मोपदेश का सार-रूप है। उसमें लिखा है:—

माता-पिता की आज्ञा पालन करो। जीव-रक्षा में तत्पर रहो। केवल सत्य ही का सेवन करो। इन नियमों का पालन करना ही धर्म-मार्ग है। शिष्य को गुरु की पूजा करनी चाहिए। सबको अपने जाति-बन्धुओं के साथ आदरपूर्वक वर्ताव करना चाहिए।

महाराज अशोक के आदेश बड़े उदार भावों से पूर्ण हैं। उनके अनुसार चलने से सभी सदाचारी बन सकते हैं। केवल बौद्ध-धर्म ही के सिद्धान्त उनमें निहित नहीं हैं। किन्तु सभी धर्मतत्त्वों का उनमें समावेश है। हिन्दू-धर्म के तो बड़े काम के हैं।

अशोक के समय में भारतवर्ष कला-कौशल में भी संसार का सिरताज रहा। उसके स्तम्भों पर की पालिश और कारीगरी आदि उस समय की उन्नति के गवाह हैं।

—बा० रामदास गौड़, एम० ए०

९—राजा राममोहन राय

ईश्वर की लीला विचित्र है। जब संसार में किसी प्रकार का अभाव हो जाता अथवा किसी बात की आवश्यकता से अधिक प्रचुरता हो जाती है तब ऐसा प्रबन्ध कर देता है कि स्थिति पुनः प्रकृति के अनुकूल हो जाती है। संसार की सभी बातों में इस अटल नियम का प्रयोग होते देखा गया है। इसी नियम के अनुसार ऐसे महानुभावों का प्रादुर्भाव भी होता है। जो अपनी प्रतिभा से संसार को चकित कर बुराइयों का मूलोच्छेद कर भलाइयों की स्थापना में दत्तचित्त होते हैं और अपनी दृढ़ता, आदर्शचारिता, सत्यनिष्ठा,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दूरदर्शिता आदि सद्गुणों से जिस देश में उत्पन्न होते हैं उसको भावी उन्नति का मार्ग सुविस्तृत तथा परिमार्जित कर जाते हैं।

राजा राममोहन राय इन्हीं महानुभावों में से थे। ये अपने जीवन-काल में धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक अवस्था के सुधार में प्रशंसनीय उद्योग कर मातृभूमि के कल्याण में दत्तचित हुए थे। यदि इनके जीवन की घटनाओं पर ध्यान दिया जाय तो इनका मूलमन्त्र 'सहृदयता, समानता और स्वतन्त्रता' ही जान पड़ता है। धार्मिक विचारों में ये भिन्न भिन्न सम्प्रदायों के भेदों, उपभेदों को आपत्तिकारक जानकर एक परमपिता जगदीश्वर की उपासना के पक्षपाती और प्रचारक थे। एक स्थान पर इनके जीवन-चरित में लिखा है कि बुद्धदेव का प्रधान भाव था 'विश्वव्यापी मैत्री'; आत्मवीर सुक़रात का प्रधान भाव था 'अपने आपको 'जानो'; पृथ्वी पर स्वर्ग राज्य' ईसा का प्रधान भाव था; 'एक ईश्वर की पूजा और अन्य सब देवताओं का प्रतिवाद' मुहम्मद का प्रधान भाव था; 'धार्मिक चिन्ता के लिए व्यक्तिगत स्वतन्त्रता' लूथर का प्रधान भाव था; चैतन्य देव का प्रधान भाव था 'भक्ति से मुक्ति'। उसी प्रकार 'सार्वभौमिक उपासना' राजा राममोहन राय का प्रधान भाव था। जब जब जिस जिस भाव की आवश्यकता होती है तब तब उसके प्रवर्तक उत्पन्न होकर अपना कार्य कर जाते हैं। राजा राममोहन राय भारतवर्ष को एक ऐसे धार्मिक सूत्र में बाँधना चाहते थे जो आत्मिक स्वतन्त्रता को रक्षित रखता हुआ एकता को प्रधानता देता है। यही भाव पीछे से स्वामी दयानन्द सरस्वती का भी था। अपने इस उद्देश्य की सिद्धि में राजा राममोहन राय ने हिन्दू शास्त्रों को घृणा की दृष्टि से नहीं देखा। वरन् वे उन्हें अपने उपयोग में लाये और उन्हीं के आश्रय पर उन्होंने अपना उद्योग अवलम्बित रखा। उस उद्देश्य के अन्तर्गत सहृदयता, समानता और स्वतन्त्रता के तीनों भाव दृष्टिगोचर होते हैं।

सामाजिक सुधार का सम्बन्ध भारतवर्ष में धार्मिक सुधार से बहुत घनिष्ठ है। एक दूसरे का आश्रित है। एक के बिना दूसरे का होना असम्भव-सा है। जो भाव धार्मिक सुधार में दृष्टिगोचर होते हैं उन्हीं का उपयोग सामाजिक

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सुधार की नींव को दृढ़ करने में किया गया है। दोनों एक ही सूत्र में बँधे हुए हैं। राजा राममोहन राय सामाजिक सुधार का मूल स्त्री-जाति की अवस्था सुधारने में मानते थे और इसी के लिए वे उद्योगशील हुए थे। सती की कुप्रथा को दूर करने, बहुविवाह का विरोध करने, स्त्रियों के दायाधिकार को सुरक्षित रखने, कन्या-विक्रय के घोर पाप को निर्मूल करने तथा जाति-पाँति के झगड़ों को असार वस्तु सिद्ध करने में वे यत्नशील हुए थे। सती की प्रथा रोकने में उन्हें आशातीत सफलता भी प्राप्त हुई थी।

राजनीतिक सुधार में उनके विचार वे ही थे जो आजकल फैल रहे हैं। शासन और विचार विभागों का अलग अलग एक दूसरे से स्वतन्त्र होना, राज्य-व्यवस्था में प्रजा का भाग लेना, भारतीय सरकार का अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी होना, भारतवासियों का उच्च अधिकार पाना, भारतवर्ष की आर्थिक अवस्था का सुधार होना इत्यादि बातें वे इस सम्बन्ध में कह आये हैं। इनके साथ ही ब्रिटिश-शासन से भारतवर्ष को जो लाभ हुए हैं उनको इन्होंने मुक्तकंठ से स्वीकार किया है और यह आशा प्रकट की है कि इनके द्वारा भारतवर्ष में एकता और जातीयता के भावों का उदय होगा। उनको आशा थी कि देश में सभ्यता और ज्ञान की उन्नति के साथ राजनीतिक उन्नति भी होगी और अन्त में भारतवर्ष ब्रिटिश साम्राज्य में उसी पद को प्राप्त करेगा जो उपनिवेशों को प्राप्त है। कौन नहीं स्वीकार करेगा कि राजा राममोहन राय की राजनीतिक दूरदर्शिता इन बातों से स्पष्ट प्रकट होती है?

राजनीतिक सुधार के लिए वे शिक्षा सुधार और विशेषकर अँग्रेजी शिक्षा-प्रचार के कट्टर पक्षपाती थे। यद्यपि वे संस्कृत आदि प्राचीन भाषाओं के पठन पाठन तथा आधुनिक देशी भाषाओं के प्रचार के भी पक्षपाती थे। फिर भी उनके विचार में अँग्रेजी शिक्षा का प्रचार भारतवर्ष के लिए परम आवश्यक था। उसके लिए उन्होंने पूरा उद्योग किया और उन्हें अच्छी सफलता भी प्राप्त हुई।

जिन महानुभाव के ऐसे विचार रहे हों और जिनका उद्योग जन्म भर उनको कार्यरूप में परिणत करने में लगा रहा हो, उनका जीवन-वृत्तान्त

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जानने से हम भारतवासियों का उपकार होगा—इस बात को कौन ऐसा है जो स्वीकार नहीं करेगा ? वास्तव में राजा राममोहन राय का भारतवर्ष में जन्म ईश्वर की अनुकम्पा का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है। ऐसे ही महानुभावों से देश का कल्याण सधता है और वे अपनी मातृ-भूमि का मस्तक ऊँचा करने में समर्थ होते हैं। धन्य है वह देश जहाँ ऐसे महानुभाव जन्म लेते हैं और धन्य हैं वे देशवासी जो इनके पथ का पथिक बनने में अपना गौरव समझते हैं।

—रायबहादुर बा० श्यामसुन्दरदास।

६—गोस्वामी तुलसीदास

ढाँचा

१—समय—मुसलमानी राज्य, हिन्दुओं का ह्रास, अनेक मत-मतान्तर। सुधार की आवश्यकता।

२—जन्म—स्थान राजापुर (जिला बाँदा) में, जन्मकाल बचपन।

३—गृहस्थाश्रम—विवाह आदि, स्त्री के द्वारा विराग।

४—साधुवृत्ति—कहाँ रहे—काशी, अयोध्या, चित्रकूट। बैरागी मत।

५—मृत्यु—समय, अवस्था, स्थान।

६—ग्रन्थ—रामचरित-मानस, विनयपत्रिका आदि। ग्रंथों का महत्त्व।

७—पांडित्य और भक्ति, सांसारिक ज्ञान, चतुरता, सच्चरित्रता आदि।

८—उनके हम क्यों ऋणी हैं ?

विज्ञान-सम्बन्धी निबन्ध

७—फूल

ढाँचा

१—फूलों की सर्वप्रियता। कविता में उनका स्थान। इन्द्रियों की तृप्ति।

२—फूल हमारे लिए नहीं, किन्तु अपने लिए हैं।

३—फूल की बाल्यावस्था और वृद्धि।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

४—फूल के अवयव तथा उनके काम ।
५—फूल के लिए मक्खियों, चींटियों आदि की सेवा । उनका स्वार्थ ।
६—फूलों में असगोत्र विवाह ।
७—बीज पैदा होने की नैर्गिक युक्ति ।
८—फूलों के रंग ।
९—परमात्मा की सृष्टि की अद्‌भुतता ।

फूल किसको प्यारे नहीं लगते ? उन्हें देखते ही किसकी हृदय-कली नहीं खिल उठती ? उनकी रंग-बिरंगी—श्वेत, नीली, पीली, लाल पँखुड़ियों को देखकर किसका हृदय गद्‌गद नहीं हो उठता ? उनकी सुवास किसके मन में नहीं बस जाती ? उनकी शोभा निहार कर जब अकवि की भी चित्त-वृत्ति कवित्व-संपन्न सी भासित होने लगती है, तब सूक्ष्म भावों के प्रकट करने वाले शक्ति-संपन्न सुकवियों का क्या कहना है ? सच पूछिए तो कवियों को जितना मसाला फूलों से मिला है, और मिलता है, उतना शायद ही और कहीं से मिला हो, या मिलता हो। संस्कृत की कविता और तदनुरूप हिन्दी की कविता कमल की उपमाओं से भरी है। पद-पद्म-पराग, कर-कमल पुंडरी-काक्ष, नीलोत्पल-दलश्याम, मुखाब्ज, हृत्पंकज आदि की भरमार तो है ही, कुमुदिनी, चम्पक, केतकी, कुन्द, जपा, प्रियंगु, किंशुक आदि की उपमाएँ भी स्थल-स्थल पर अत्यन्त हृदय-ग्राहिणी हैं। फारसी-उर्दू वालों ने भी 'गुलो-बुलबुल' से अपनी भाषा को और भी सरस बना दिया है। अँगरेजी में भी इस बात की कमी नहीं है।

फूलों की ऐसी क़दर क्यों होती है ? इसके लिए अदृष्ट कारण जो कुछ हो हम नहीं जानते; परन्तु दृष्ट कारण तो यही है कि उनकी सुषमा से नयनेन्द्रिय की तृप्ति होती है; उनकी सुवास से घ्राणेन्द्रिय की परम तुष्टि होती है; उनके कोमल, स्निग्ध स्पर्श से त्वचा को सुख मिलता है और उन सुस्वादु मकरन्द से रसनेन्द्रिय को हर्ष होता है। चार-चार इन्द्रियों को एक साथ मुग्ध करनेवाला गुण पुष्प से अधिक और कहाँ मिलता है ?

साधारण रीति से हम कह सकते हैं कि परमात्मा ने फूल हमारे लिए या अपने लिए बनाये हैं, क्योंकि फूलों को हम सूँघते हैं, उनकी गुलकन्द आदि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दवाएं बनाते हैं, उनका अर्क और इतर निकालते हैं; अगस्त, गोबी आदि को खाने के काम में लाते हैं और देवों पर चढ़ाते है। परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो फूल प्रधानतः उन पौदों की भलाई के लिए हैं, जिनमें वे लगते हैं। फूल फल का पूर्वरूप है; फल का गर्भ फूल में रहता है। जैसे कोई अमूल्य, कोमल पदार्थ रुई या रेशम में लपेट कर पेटी के भीतर रखा जाता है, वैसे ही पौदे का अत्यन्त आवश्यक भाग, अर्थात् भावी फल का गर्भ, कोमल पँखुड़ियों में लपेट कर 'ढोंढ़ी' के भीतर सुरक्षित रहता है।

आइए, प्रथमावस्था से लेकर फूल की परीक्षा करें। पहले नन्हीं-सी हरे रङ्ग की कुछ गोलाकार, ढोंढ़ी, हर तरफ़ से ढकी निकलती है। इस हरी चादर से उसकी रक्षा होती है। पानी, ओस, पाला आदि उसके भीतरी अवयवों को नहीं सता सकते, ढुलक कर नीचे गिर जाते हैं। धूप का प्रभाव एकाएक उन भीतरी अवयवों पर नहीं पड़ता। कीड़े-मकोड़े भी इन्हें शीघ्र नहीं काट सकते। ज्यों-ज्यों भीतर वृद्धि होती जाती है, यह ऊपरी हरी चादर मुख के पास से हटती जाती है, और कली की मुस्कराहट शुरू हो जाती है। शनैः शनैः ओढ़ने की हरी चादर बिछाने की चादर बन जाती है, पँखुड़ियाँ खिलने लगती हैं, और भीतर के आवश्यक अवयव दिखलाई देने लगते हैं।

अब इन आन्तरिक अवयवों में जगत्कर्ता की कारीगरी देखिए। कोई फूल उठा कर निरीक्षण कीजिये। उसमें आपको केसर के पतले लच्छे मिलेंगे। ये लच्छे भी दो तरह के होंगे। किनारे किनारेवाले एक तरह के, बीचवाले दूसरी तरह के। यह बीचवाला लच्छा किनारेवाले लच्छों से या तो कुछ बड़ा होगा या कुछ छोटा। इन लच्छों को केसर कहते हैं। किनारे वाले लच्छे पराग-केसर कहलाते हैं; क्योंकि इन्हीं से पराग या पुष्प-धूलि निकलती है। वह पीले रंग के चूर्ण के समान पुष्प पर झड़ती है। यह पराग ही पुष्प का वीर्य है। इसी के द्वारा पुष्प में गर्भस्थिति होती है। इसके पैदा करने वाले पराग केसर के लच्छे पुरुष या नर हैं। बीच का लच्छा स्त्री है, और वह गर्भ-केसर कहलाती है। इसी के निचले भाग में गर्भ रहता है। वहीं बीज, अर्थात् फल, की उत्पत्ति होती है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गर्भ-केसर के लच्छे का ऊपरी भाग कुछ मोटा सा होता है; अर्थात् उस पर एक चपटा लट्टू-सा रहता है। ध्यान-पूर्वक उँगली से छूकर देखा जाय, तो मालूम होगा कि इस लट्टू पर गोंद या लासे की तरह कोई चिपचिपी चीज लगी है। पराग का जो कण इस लट्टू पर पड़ता है, वह चिपक जाता है, और चिपचिपे पदार्थ के रासायनिक गुण के प्रभाव से फूट कर अपना आवश्यक रस, उसी गर्भ-केसर की पतली नली के द्वारा, गर्भ-स्थान तक भेज देता है। वहाँ फल या बीज पुष्ट होकर यथा-समय पकता है।

भीतर ज्यों-ज्यों गर्भ की पुष्टि होती है, त्यों-त्यों बाहर की पँखुड़ियाँ म्लान हो-होकर झड़ती जाती है, और ठीक समय पर फल छीमी या दाना बाहर निकल आता है। डंठल के पुष्ट होने पर उसे बाह्य आवरण की आवश्यकता नहीं रहती।

गर्भ-स्थिति के लिए पराग के एक या अनेक कणों की ही आवश्यकता होने पर भी, उसके लाखों कण होते हैं; जो व्यर्थ जाते है। पर यह सब इसलिए होता है कि पराग की कमी के कारण पुष्प में बन्ध्यात्व न हो।

गर्भ-केसर के सिरे तक पराग के पहुँचाने का काम मुख्यतः दो प्रकार से होता है—एक तो वायु के द्वारा, और दूसरा, भ्रमरों, मधुमक्खियों, चींटियों तथा अन्य कीड़ों के द्वारा। वायु से डाली हिलती है, या पराग ही उड़कर गर्भ-केसर पर पड़ जाता है। मक्खियाँ आदि, पुष्पों के रंग-विरंगेपन से सुगमता के साथ उनका पता पाकर, उनकी सुगन्ध से आकृष्ट होकर, मधु के लोभ से उनके भीतर घुसती हैं। घुसने में उनके पैरों, और मस्तक आदि में पराग के कण लग जाते हैं, और ये ही कण गर्भ-केसर के सिरे पर झड़ या चिपक जाते हैं। किसी-किसी फूल में गर्भ-केसर का सिरा ऐसे स्थान में होता है कि वहाँ तक वायु के द्वारा पराग का पहुँचना कठिन है। वहाँ ये छोटे जन्तु ही पराग पहुँचाते हैं।

जब एक पुष्प का पराग उसी पौदे के दूसरे पुष्प की गर्भ-केसर पर, या दूसरे पौदे के फूल की गर्भ-केसर पर पड़ता है, तब फल या दाने में अधिक वृद्धि होती है। वनस्पतियों में भी सगोत्रीय कन्या का विवाह न होने से बहुत

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उन्नति होती है। चूँकि मक्खियाँ एक फूल से उड़कर दूसरे फूल पर जाती हैं, इसलिए इनके द्वारा असमानगोत्रासमागम बहुत सरलता से होता है।

यही नहीं, इस विषय में इतनी बारीकियाँ विद्वानों ने मालूम की हैं कि उनके वर्णन में पोथे-के-पोथे तैयार हो गये हैं। यद्यपि ऊपर का वर्णन साधारणतः बहुत प्रकार के फूलों के लिए सही है, तथापि कुछ में इससे विशेषताएँ भी हैं। जैसे, किसी किसी फूल (कमल) में पराग-केसर की बहुतायत होती हैं। परंतु गर्भ-केसर नहीं होती। बीच की कर्णिका (बोंडरा) पर ही गर्भ-यन्त्र के मुँह रहते हैं। किसी जाति (कुम्हड़े आदि) में एक ही पौदे में दो तरह के फूल होते हैं—नर और मादा। नर-फूलोंमें फल नहीं होता। मादा-फूलों में होता है। किसी जाति (पपीते आदि) में नर-पौदे अलग और मादा-पौदे अलग होते हैं, और किसी जाति (मकई) में फल या भुट्टा, अर्थात् कुकड़ी, जो मादा है, नीचे लगती है, और पराग पैदा करनेवाले जीरे की बाली पौदे की चोटी पर लगती है। कुकड़ी के चारों ओर जो रेशम के-से केश होते हैं, वे ही पौदे की गर्भ-केसर हैं। इस प्रकार विचित्रताओं का अन्त नहीं मिलता।

यद्यपि मक्खियाँ सेवा-भाव से प्रेरित होकर फूलों में नहीं जाती, किन्तु स्वार्थ-वश—रस पीने के लिये, शहद इकट्ठा करने के लिये—जाती हैं, तथापि उनसे पौदों का बड़ा काम निकलता है। और, स्वार्थ में भी परार्थ करनेवाले इन जीवनों के प्रलोभन के लिए ही पुष्प में मकरन्द होता है, विविध रंग की पँखुड़ियाँ होती हैं तथा सुवास होती है। एक बात यह भी देखने के योग्य है कि श्वेत पुष्प प्रायः रात्रि को खिलते हैं। कवियों ने चन्द्रमा का नाम कुमुद-बान्धव रखा है; क्योंकि रात्रि को चन्द्रमा का उत्कर्ष होता है, और रात्रि ही में कुमुदिनी फूलती हैं। बेला, चमेली आदि अन्य श्वेत पुष्प भी प्रायः रात्रि ही में खिलते हैं। रात्रि में रंगदार फूलों का रङ्ग नहीं दिखलाई देता; परन्तु श्वेत पुष्प दिखलाई देते हैं। अतः मक्खियाँ आदि उनसे आकृष्ट होकर रात्रि में उनका रस लेने जाती हैं।

हम फूलों के विषय में जहाँ तक निरीक्षण और विचार करते हैं, उनमें उस बड़े कारीगर की कारीगरी ही देखते हैं और उस कारीगरी का अन्त न

bal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पाकर सहसा यही सोचने के लिए विवश हो जाते हैं कि "परमात्मन्, तेरे बिना इस कला-कौशल की अनन्तता और किसमें हो सकती है !"

—चन्द्रमौलि सुकुल

८—वायुयान

नित्य नई-नई अभिलाषाओं का अनुगमन करनेवाली मानवजाति के उत्साहपूर्ण उत्सुक हृदय में आकाशमार्ग से यात्रा करने की प्रबल आकांक्षा अतीत काल से जागरित हो रही थी। कपोलकल्पित कहानियों में परियों के उड़ने तथा पक्षिराज के आकाशमार्ग से गमन करने की कथाएँ अभी तक प्रचलित हैं। पुराणों में पुष्पक विमान की कथा वर्णन की गई है। ग्रीस देशीय पौराणिक गाथाओं में स्वनिर्मित पंखों द्वारा डेअडेलस (Daedalus) के आकाशपथ से उड़ने का वर्णन विख्यात ही है; परन्तु इन सभी गाथाओं को हम लोग कपोलकल्पित ही समझते रहे। मानवजाति वास्तविक रूप से ही आकाशमार्ग से देश-देशान्तर का भ्रमण करेगी—इसका दो तीन सौ वर्ष पहले किसी ने अनुमान तक न किया था। आधुनिक वायुयान के आविष्कार ने मानवजाति की आकांक्षा को चरितार्थ कर दिया।

आधुनिक वायुयान के जन्म की कथा अठारहवीं शताब्दी के शेष होते होते आरम्भ हुई, जब फ्रांस निवासी मन्ट गोल्फिअर (Mont Golfler) नामक दो भाइयों ने उष्ण वायु पूरित बैलून वा गुब्बारे का निर्माण किया। इसके पश्चात् जलजन वायु (Hydrogen Gas) की सहायता से बड़े-बड़े गुब्बारे से बैठकर लोग दूर-दूर तक वायु मण्डल में भ्रमण करने लगे; किन्तु इस भ्रमण कार्य में भारी असुविधा यह थी कि गुब्बारे की चाल सम्पूर्णतः हवा की चाल पर निर्भर थी, जिधर हवा चलती थी उधर ही उसको भी चलना पड़ता था।

इसके पश्चात् कितने ही लोग इस गुब्बारे की उन्नति के लिए प्राणपण से प्रयत्न करने लगे। इसके कारण कितनों ही ने अपना सर्वस्व खो दिया, कितनों ने अपना प्राण तक बलिदान कर दिया। फिर भी मानव-जाति उत्साह हीन न हुई और लोग उद्योग करते ही रहे। अन्त में सन् १६०१ ई० में लोगों

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

को इतनी सफलता प्राप्त हुई कि इस वायुयान को पृथ्वी-तल से सात मील ऊपर उड़ा ले जाने में लोग समर्थ हुए। सन् १९१३ ई० में एक फ्रांसीसी यात्री पेरिस से रूस की वायुयान द्वारा यात्रा निर्विघ्न समाप्त करने में कृतकार्य हुआ। रूस पेरिस से प्रायः १५०० मील की दूरी पर स्थित है। इस यात्रा के निर्विघ्न समाप्त होने के कारण वैज्ञानिकों का उत्साह बहुत बढ़ गया। वैज्ञानिकों ने इस सफलता के पश्चात् वायुमण्डल के सम्बन्ध में सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करनेका विचार किया, और क्रमशः आकाश अवस्थित वायुमण्डल के विन्यास, उसकी गति-विधि तथा उसके सम्बन्ध की अन्य आवश्यक बातोंका विशेष रूप से पता लगाने में कृतकार्य हुए। वायुमण्डल सम्बन्धी इस अपूर्व ज्ञान ही की सहायता से वायुमण्डल का दमन करके वैज्ञानिकों ने व्योम-यान के प्रचालन की सुव्यवस्था आरम्भ की।

इसके पश्चात् सैण्टन डूयमण्ट (Santon Dumont) नामक एक ब्रेजिल निवासी तथा काउण्ट ज़ेप्लिन (Count Zeppelin) नामक एक विख्यात जर्मन वैज्ञानिक की संयुक्त सहायता से व्योम-यान की विशेष उन्नति हुई। ज़ेप्लिन ने अपने विमान को धातु की बनी हुई चादरों में लपेट दिया और उसके भीतर बहुत सी गैस भरनेवाली थैलियों को इस अभिप्राय से कस दिया कि यदि एक थैली दैवात् फट जाय तो अन्य थैलियों की सहायता से वायुयान निर्विघ्न वायुमण्डल में विचरण कर सके। इस प्रकार सन् १९१० ई० में वह नौ घण्टे में तीन सौ मील की यात्रा समाप्त करने में कृतकार्य हुआ। इस बार उनके साथ और भी कई यात्री भ्रमण कर आये। ज़ेप्लिन विमान की गति घण्टे में पचास मील तक रही। गत यूरोपीय महायुद्ध में इसी ज़ेप्लिन विमान द्वारा ही शत्रुओं पर बम के गोले फेंके गये थे। जर्मनों ने इसी की सहायता से उत्तर-समुद्र पार करके पेरिस पर आक्रमण किया था।

काउन्ट ज़ेप्लिन के अतिरिक्त अन्य जिन-जिन व्यक्तियों ने व्योम-यान की उन्नति के लिए प्रयत्न किया उनमें जर्मन निवासी ओटो लिलिएन्थाल (Otto Lilienthal), अमेरिका निवासी आक्टे क्वानूट (Octave Canute), तथा इङ्गलैण्ड निवासी हिरम म्याक्सिस (Hiram Maxim)

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अन्त में ओरविल (Orville) तथा विल्बर राइट (Wilbur Wright) नामक दो अमेरिका-निवासियों ने इसकी अन्तिम उन्नति करके इसको आधुनिक विमान-पोत का रूप प्रदान किया, जिसके कारण उनकी अक्षय कीर्ति संसार में व्याप्त है। विमान-पोत के साथ जलवाष्प-पूर्ण यन्त्र (Steam Engine) को संयुक्त करके लोग सरलता-पूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा अल्प समय में ही समाप्त करने लगे, यहाँ तक कि विमानगामियों ने अल्पस पर्वत को भी पार करके जनता को स्तम्भित कर दिया। वर्त्तमान काल में तो अमेरिका से यूरोप, यूरोप से भारत-वर्ष तथा भारतवर्ष से चीन, जापान, आस्ट्रेलिया इत्यादि तक की यात्रा समाप्त करने लग गये हैं। कप्तान काबहाम (Captain Cobham) का नाम इस प्रसङ्ग में विशेष उल्लेखनीय है।

यद्यपि व्योम-यान की यथेष्ट उन्नति हो गई है, तथापि अभी भी यह उन्नति की चरम सीमा तक नहीं पहुँचा है। वैज्ञानिकगण और भी कितनी अद्भुत वस्तुओं का आविष्कार करेंगे। आज उसकी कल्पना करना भी कठिन है। कितने ही मनुष्यों के मस्तिष्क में व्योम-यान द्वारा चन्द्रलोक की यात्रा की कल्पना चक्कर मार रही है। रेलगाड़ी, स्टीमर तथा जहाज़ के स्थान पर व्योम-यान का विशेष प्रचार होता जा रहा है और आशा की जाती है कि निकट भविष्य में यात्रीगण इसी के द्वारा संसार के भिन्न भिन्न देशों की यात्रा बहुत थोड़े समय में समाप्त करने लगेंगे। सरकारी डाक, पत्र तथा बहुमूल्य द्रव्यादि तो अब बराबर दूर-दूर देशों में व्योम-यान ही द्वारा भेजे जाते हैं।

शान्ति के समय तो व्योम-यान द्वारा कितने ही आवश्यक कार्य किये जा रहे हैं; परन्तु युद्ध के समय भी यह बड़े काम की वस्तु प्रतीत हुई है। गत यूरोपीय महासमर में हमलोगों को इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मिल चुका है। युद्ध के समय यह भीषण रुद्र रूप धारण करके कितने देशों का सर्वनाश कर देता है। विशेषज्ञों का तो यह कथन है कि भविष्य में राष्ट्रों का युद्धकार्य आकाश ही पर संगठित होगा। शत्रुओं के देशों को क्षण भर में विध्वंस करने का इससे सरल दूसरा उपाय नहीं है। यही कारण है कि संसार की सम्भ्रान्त

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तथा पराक्रमी जातियाँ स्वदेश-रक्षा तथा शत्रुओं के देशों पर समय पर आक्रमण करने के लिए व्योम-यान के बनाने के लिए रातदिन प्राणपण से प्रयत्न कर रही हैं। आशा की जाती है कि मेघनाद की भाँति मेघों की आड़ में रह कर युद्ध करने की प्रणाली का प्रचार शीघ्रातिशीघ्र हो जायगा।

—संकलित

९—भोजन का परिपाक

ढाँचा

१—भोजन-परिपाक का वैज्ञानिक विवरण जानने से क्या लाभ है ?

२—मुख के भीतर भोजन में क्या परिवर्त्तन होता है ?

३—मुख से नीचे भोजन ले जानेवाली नली, पास ही वायु की नली।

४—आमाशय की बनावट, उसका काम, दूसरी ओर निकास।

५—यकृत और कफाशय से रसों का आना, उनसे लाभ।

६—छोटी आँतों की बनावट, उनका काम, रस का अन्यत्र पहुँचना।

७—भोजन का महत्त्व, मात्रा, समय, भूख, आदि।

८—भोजन के विषय में अत्यन्त सावधानी।

तार्किक निबन्ध

१०—शिष्टाचार और सत्य

ढाँचा

१—शिष्टाचार क्या है ? लोग उसे क्यों चाहते हैं ? उसमें असत्य का पुट इतना क्यों मिला है ?

२—क्या शिष्टाचार का असत्य, वस्तुतः असत्य है ? उस असत्य से लाभ।

३—बाहरी आडम्बर से भीतरी उन्नति की सम्भावना।

४—सत्य और शिष्टाचार हमारी उन्नति के मूल हैं।

शिष्ट पुरुषों के आचार को शिष्टाचार कहते हैं। यह तो उसका व्यापक अर्थ है; किन्तु इसके प्रचलित अर्थ में भलाई के साथ एक बुरी ध्वनि भी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

निकला करती है। जब लोग कहते हैं कि शिष्टाचार को छोड़ कर वास्तविक बात ऐसी है अथवा शिष्टाचार के पश्चात् मुझे यह निवेदन करना है, तब उनके कथन से व्यञ्जित होता है कि वास्तविक बात शिष्टाचार से बाहर हो सकती है और शिष्टाचार केवल आडम्बर मात्र है। इतना मानते हुए भी जहाँ शिष्टाचार में जरा-सा भी अन्तर पड़ा कि उनका मन मलीन हो जाता है और मन की बात को उनके भ्रू भङ्ग आदि प्रकट कर देते हैं। यदि आपको किसी ने प्रणाम न किया तो आपका क्या बिगड़ गया और यदि आपको किसी ने पूज्य-वर या गुरुवर कह कर सम्बोधन कर दिया तो उसने आपको क्या दे दिया? कोई पूछ सकता है कि किसी मनुष्य के लिए आदरसूचक उत्थान देने से क्या लाभ है? यदि डाक्टर तुरन्त फीस लेकर जेब में रख ले तो वह लालची समझा जाय और यदि झूठमूठ यह कह दे कि इसकी क्या जरूरत थी; यह तो आपकी बड़ी मिहरबानी है तो वही शिष्ट समझा जाता है। यदि अर्जी में 'गरीबपरवर सलामत' न लिखें तो क्या अर्जी नामंजूर हो जाय? यदि पत्र के सरनामे पर 'योग्य सेवा में' न लिखें तो क्या पत्र डाक में न जा सके? अथवा किसी को 'श्रीमान्' न कहा जावे तो क्या वह पुरुष सम्बोधित नहीं किया जा सकेगा? यदि काम करनेवाला पुरुष अपने पुण्य प्रताप की प्रशंसा न करे तो क्या उसका काम न चलेगा? यदि छोटे भाई के घर किसी लड़के या लड़की का ब्याह हो और रुपया भी वही लगावे और निमन्त्रण-पत्र को बड़े भाई के नाम से न छपवावे तो क्या ब्याह न हो? यदि हमारी कारगुजारी अथवा सद्गुणों की कोई प्रशंसा न करे तो उसमें बुराई क्या है? सीधे-सादे ढंग से काम चल जाने पर भी लोग इन सब बातों को करते ही हैं। यदि किसी आदमी के मन में आपके पास बैठने की इच्छा न भी हो तो भी आपके प्रति वह ऐसा प्रकट करेगा कि वह आपकी बातचीत से बहुत ही मुग्ध है, यहाँ तक कि उठना ही नहीं चाहता। यह बात सब जानते हैं कि दूसरे मनुष्य को भी कुछ काम है, वह आपसे वास्तविक प्रेम नहीं करता। लिखने को यदि 'दासानुदास' ही लिखें और बातचीत में यदि अपने को रजकण से भी तुच्छ बतलावें तो भी यदि उसने आपकी बातों से ऊब कर स्पष्ट शब्दों में कहा कि अब हम आपकी बातों से ऊब गये तो आपको क्यों बुरा लगता है?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ये सब ऐसी बातें हैं, जिनसे आदमी को यह सहज ही प्रतीत हो जाता है कि शिष्टाचार में असत्य बातें बहुत सी शामिल हैं। परन्तु इतना होते हुए भी जब तक हम पूर्ण विगतस्पृह संन्यासी न बन जायँ तब तक हम समाज के किसी न किसी प्रकार के असत्य अथवा कम से कम अनावश्यक बातों के पक्षपाती रहते ही हैं। और यह भूल जाते हैं कि 'साँच बरोबर तप नहीं झूठ बरोबर पाप' यह झूठ कहाँ तक ग्राह्य है ? प्रिय भाषण की सभी लोगों ने प्रसंशा की है। कहते हैं कि "सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्" यहाँ तक तो ठीक है; किन्तु यहाँ तो प्रिय असत्य बोलने और बुलवाने की आवश्यकता रहती है। क्या हमारा समाज झूठ पर चलता है ?

यदि सत्य की संकुचित परिभाषा की जाय तो ये सब बातें असत्य हैं, किन्तु विस्तृत दृष्टि से ये बातें एक प्रकार से नम्रता के भाव की द्योतक होने के कारण पुरुष के मानसिक झुकाव का परिचय देती हैं और इसी अंश में सत्य भी हैं। यदि कोई हमको सलाम करता है तो वह कुछ देता नहीं है और यह बात भी नहीं कि प्रणाम या पालागन करनेवाला वास्तविक रूप से नमन करता है। किन्तु इतना सत्य है कि वह हमको इस योग्य समझता है कि हमारे लिए हाथ उठाते अथवा उत्थान देते समय स्वयं शारीरिक कष्ट उठाना चाहता है। इसके अतिरिक्त वह हमारी जातीय सभ्यता और उदारता का परिचय देता है कि हमारा समाज अतिथि को पूजा दृष्टि से देखता है। हम चाहे जो कुछ हों; किन्तु हमारी सभ्यता के विधायक अवश्य नम्र और विनीत भाव रखते थे। इसके अतिरिक्त हमारा प्रणाम करना अथवा किसी को उत्थान देना यह भी बतलाता है कि हम इतनी उद्दण्ड प्रकृति के नहीं हैं कि अपने सामाजिक नियमों का अनुकरण न करें अथवा दूसरों को अपने सामने कुछ न समझें। जब लोग आपस में जय रामजी की, जय राधेश्याम अथवा जय श्रीकृष्ण कहते हैं तब वे इस बात का परिचय देते हैं कि हम सब हिन्दू सभ्यता के सूत्र में बँधे हैं। यदि कोई पुरुष आपके पास अपनी इच्छा के विरुद्ध भी दो घण्टे बैठा रहे तो वह इस बात का प्रमाण देता है कि वह आपके लिए इतना समय देने को तैयार है और कुछ कष्ट उठाने को भी तैयार है। दूसरों के लिए अपनी इच्छाओं का अवरोध करना एक प्रकार से आत्म-त्याग का अभ्यास है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यदि यह कहा जाय कि इन बाहरी बातों से भीतरी भावों का क्या सम्बन्ध तो हमें कहना पड़ेगा कि बाहरी बातों का मानसिक भावों पर बहुत कुछ असर पड़ता है। मनोविज्ञान शास्त्र के आचार्यों का कहना है कि हमारे भावों का उदय बाहरी वस्तु के सम्पर्क से ही होता हैं। वस्तुओं के सम्पर्क से ही उनकी वेदना क्रियात्मक स्नायुओं द्वारा मन के पास तक पहुँचती है और फिर उस चीज का ज्ञान होता है। कुछ विद्वानों की सम्मति इसके विपरीत है। वे बाहरी चीज़ों की प्रधानता की अपेक्षा मन की प्रधानता को ही मानते हैं। यह बात विवादास्पद भले हो कि प्रधानता किसको है, पर यह सभी स्वीकार करते हैं कि बाहरी बातों का मन पर पूरा प्रभाव पड़ता है। यदि हम झूठमूठ भी शोक का भाव बना लें तो मन में कुछ न कुछ शोक की उत्पत्ति हो ही जाती है। झूठे आँसू सच्चे आँसू भी बन जाते हैं। शोक-ग्रस्त मनुष्य को भी यदि एक अच्छी जगह में पहुँचा दिया जाय तो उसका शोक कम हो जाता है। इसी प्रकार नम्रता के अभिनय से भी हृदय में नम्रता के लिए स्थान मिल जाता है। सभ्य पुरुष को स्वयं भी इस बात का ख्याल होने लगता है कि उसका बाहर भीतर एक सा हो जाय। यदि हम ऊपर से भी अच्छा व्यवहार करने लगें तो सम्भव है कि कुछ दिनों के बाद भीतर से भी अच्छा व्यवहार करने लगें। इतना अवश्य है कि ऊपरी तौर के अच्छे व्यवहार से लोग धोके में पड़ जाते हैं। मृगचर्म-परिच्छन्न व्याघ्र होना बुरा है; किन्तु यह बात शिष्टाचार के लिए लागू नहीं हो सकती।

यदि कोई ऐसी बात हो जिसे स्पष्ट रूप से कहना शिष्टाचार के विरुद्ध हो तो भी शिष्टाचार की रक्षा करते हुए वह बात कही जा सकती है। अतएव यह दोष भी इस पर नहीं लगाया जा सकता। शिष्टाचार का व्यवहार करने से आत्मा में नम्रता और शील का मान बढ़ता रहता है। इससे समाज में परस्पर प्रेम और शान्ति बढ़ती है। यदि शिष्टाचार में असत्य की मात्रा है तो कुछ वास्तविक नहीं है। आदर्श की दृष्टि से शिष्टाचार में जो असत्य की मात्रा दिखाई पड़ती है, वह वास्तविक नहीं है। क्योंकि आदर्श भी एक ऐसी मिथ्या कल्पना है जिसका कहीं मान ही नहीं होता। परन्तु ये ऐसी बातें हैं जिनका व्यवहार की दृष्टि में कुछ महत्त्व नहीं है। ये दोनों बातें

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ध्रुव तारे की भाँति पथ-प्रदर्शक ही हमारे जीवन को बनाती हैं। यदि आदर्श ऊँची भावना का उदय करता है तो शिष्टाचार हमें विनय, सत्यता, विश्वास और प्रेम के भावों को बढ़ाता है और समाज में सुख और शान्ति स्थापित करता है।

—बा० गुलाबराय, एम० ए०

११—विद्यार्थियों के कर्तव्य

कर्तव्य का दूसरा नाम कर्म है। मनुष्य का कर्तव्य क्या है—यही विचार सर्वथा मुख्य है। मनुष्य के कर्तव्य के विषय में प्राचीन काल से आज तक बराबर विचार होता चला आया है। बड़े-बड़े देव, देवर्षि एवं सभी विचारशील विद्वान् इसी विषय पर विचार किया करते थे और आज भी विद्वान् इस विषय का विचार करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

इस विषय पर प्राचीन काल से अब तक बहुत कुछ विचार होने पर भी यह निश्चित नहीं हो सका कि मनुष्य का यही कर्तव्य है। इस विषय में अभी तक सन्देह ही बना हुआ है। यह सन्देह कभी मिटनेवाला नहीं। कारण यह है कि मनुष्य का कर्तव्य अवस्था-भेद से, काल-भेद से, देश-भेद से बदलता रहता है। यही कारण है कि इस विषय में नाना विद्वानों के नाना मत पाये जाते हैं।

परन्तु भाग्यवश विद्यार्थियों के कर्तव्य के विषय में इस प्रकार का कोई मतभेद नहीं पाया जाता। ऋषि-प्रणीत ग्रन्थों में जैसा विद्यार्थियों का कर्तव्य कहा है वही आज-कल भी मान्य समझा जाता है। ब्रह्मचारी का चरित्र और उसकी दिनचर्या जैसी हमारे धर्म-शास्त्र में वर्णित है उसी के अनुसार विद्यार्थी अपना कार्य कर सकता है। वही उसका कर्तव्य है।

जो विद्यार्थी अपने ऋषि-प्रणीत ग्रन्थों के आदेश को मान करके तदनुसार अपना व्यवहार रखते हैं वे ही अपने कर्तव्य का पालन करने वाले समझे जाते हैं। जो विद्यार्थी ऐसा नहीं करते, जो अपने कर्तव्यों में उपरति रखते हैं, वे न केवल अपने कार्य में सिद्धि को प्राप्त नहीं होते, किन्तु उनका बहुत कुछ अनिष्ट भी हो जाता है। यह विद्यार्थियों के लिए बड़े सौभाग्य

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

की बात समझनी चाहिए कि अपने कर्तव्य-ज्ञान के लिए उनको वृद्धों के समान भटकना नहीं पड़ेगा। यदि विद्यार्थी एक घंटा भी प्राचीन ग्रन्थों का अवलोकन करेंगे तो उनके अपने कर्तव्य का ज्ञान अच्छी तरह हो जायगा। उन कर्तव्यों में से हम कुछ कर्तव्यों का वर्णन संक्षिप्त रूप से यहाँ करते हैं:—

(१) गुरु के समीप रहकर विद्याध्ययन करना।

(२) गुरु की आज्ञा के अनुसार कार्य करना।

(३) गुरु की सेवा करना।

(४) जीवन-निर्वाह-मात्र के लिए आवश्यक वस्तुओं का संग्रह करना।

(५) सौख्य, विलास के पदार्थों से अलग रहना।

(६) भोजन-वस्त्र आदि का उपयोग आवश्यकतानुसार ही करना।

(७) गप्पबाज़ी से बचना।

(८) ब्रह्मचर्य-व्रत का पूर्ण रीति से पालन करना।

(९) बुरी संगति से बचना।

(१०) विद्याध्ययन में ही सदा लगे रहना और अन्य कोई ऐसा काम न करना जिससे विद्याध्ययन में बाधा पड़ने की आशङ्का हो।

(११) सदा मृदु, शान्त, दान्त, लज्जाशील, धैर्यवान्, क्रोध-रहित, उत्साही, इर्ष्या-शून्य और कर्तव्य-परायण होना।

सारांश यह कि गुरु-सेवापूर्वक शास्त्र पढ़ना ही एक मुख्य कर्तव्य है। इसके अतिरिक्त और कोई काम उतना ही करना जितने से शरीर की रक्षा हो।

—महामहोपाध्याय डाक्टर गङ्गानाथ झा।

१२—कविता की परख

कविता का उद्देश्य हमारे हृदय पर प्रभाव डालना होता है, जिससे उसके भीतर प्रेम, आनन्द, हास्य, करुणा, उत्साह, आश्चर्य इत्यादि अनेक भावों में से किसी का संचार हो। जिस पद्य में इस प्रकार प्रभाव डालने की शक्ति न हो, उसे कविता नहीं कह सकते। ऐसा प्रभाव उत्पन्न करने के लिये कविता पहले कुछ रूप और व्यापार हमारे मन में इस ढंग से खड़ा करती है कि हमें यह प्रतीत होने लगता है कि वे हमारे सामने उपस्थित हैं। जिस मानसिक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

शक्ति से कवि ऐसी वस्तुओं और व्यापारों की योजना करता है और हम अपने मन में उन्हें धारण करते हैं, वह कल्पना कहलाती है। इस शक्ति के बिना न तो अच्छी कविता ही हो सकती है, न उसका पूरा आनन्द ही लिया जा सकता है। सृष्टि में हम देखते हैं कि भिन्न-भिन्न वस्तुओं को देखकर हमारे मन पर भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रभाव पड़ता है। किसी सुन्दर वस्तु को देखकर हम प्रफुल्ल हो जाते हैं, किसी अद्भुत वस्तु या व्यापार को देखकर आश्चर्य मग्न हो जाते हैं, किसी दुःख के दारुण दृश्य को देखकर करुणा से आर्द्र हो जाते हैं। यही बात कविता में भी होती है।

जिस भाव का उदय कवि को पाठक के मन में करना होता है उसी भाव को जगानेवाले रूप और व्यापार वह अपने वर्णन द्वारा पाठक के मन में लाता है। यदि सौन्दर्य की भावना उत्पन्न करके मन को प्रफुल्ल और आह्लादित करना होता है तो कवि किसी सुन्दर व्यक्ति अथवा किसी सुन्दर और रमणीय स्थल का शब्दों द्वारा चित्रण करता है। सूरदासजी ने श्रीकृष्ण के अंग-प्रत्यंग का जो वर्णन किया है, उसे पढ़कर या सुनकर मन सौन्दर्य की भावना में लीन हो जाता है। गोस्वामी तुलसीदासजी की गीतावली में चित्रकूट का यह वर्णन कितनी सुन्दरता हमारे समक्ष लाता है—

"सोहत स्याम जलद मृदु घोरत धातु-रँगमगे शृङ्गनि।"

इसी प्रकार भय का भाव उत्पन्न करने के लिए कवि जो रूप सामने रक्खेगा वह बहुत ही विकराल होगा। जैसे कुंभकर्ण का रूप रामचरित-मानस में है। राम के वन-गमन पर अयोध्या की दशा का जो वर्णन रामायण में है, उससे किसका हृदय दुःख और करुणा का अनुभव न करेगा?

अपने वर्णनों में कवि लोग उपमा आदि का भी सहारा लिया करते हैं। वे, जिस वस्तु के वर्णन का प्रसङ्ग होता है, उस वस्तु के समान कुछ और वस्तुओं का उल्लेख भी किया करते हैं। जैसे, मुख को चन्द्र या कमल के समान, नेत्र को मीन, खंजन, कमल आदि के समान; कायर को शृगाल के समान, वीर और पराक्रमी को सिंह के समान प्रायः कहा करते हैं। ऐसा कहने में उनका वास्तविक लक्ष्य यही होता है कि जिस वस्तु का वे वर्णन कर रहे

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हैं, उसको सुन्दरता, कोमलता, मधुरता या उग्रता, कठोरता, भीषणता, वीरता, कायरता इत्यादि की भावनाएँ और तीव्र हो जायँ। किसी के मुख की मधुर कान्ति की भावना उत्पन्न करने के लिए कवि उस मुख के साथ एक और अत्यन्त मधुर कान्तिवाला दूसरा पदार्थ—चन्द्रमा—भी रख देता है, जिससे मधुर कान्ति की भावना और भी बढ़ जाती है। सारांश यह कि उपमा का उद्देश्य भावना को तीव्र करना ही होता है; किसी वस्तु का बोध या परिज्ञान कराना नहीं। बोध या परिज्ञान कराने के लिए भी एक वस्तु को दूसरी वस्तु के समान कह देते हैं। जैसे, जिसने हारमोनियम बाजा न देखा हो, उससे कहना "अजी! वह सन्दूक के समान होता है।" पर इस प्रकार की समानता उपमा नहीं।

कोई उपमा कैसी है, इसके निर्णय के लिए पहले तो यह देखा जाता है कि कवि किस वस्तु का वास्तव में वर्णन कर रहा है और उस वर्णन द्वारा उस वस्तु के सम्बन्ध में कैसी भावना उत्पन्न करना चाहता है। उसके पीछे इसका विचार होता है कि उपमा के लिए जो वस्तु लाई गई है, उससे वही भावना उत्पन्न होती है और बहुत अधिक परिमाण में, तो उपमा अच्छी कही जाती है। केवल आकार, छोटाई-बड़ाई आदि में ही समानता देखकर अच्छे कवि उपमा नहीं दिया करते। वे प्रभाव की समानता देखते हैं। जैसे यदि कोई आकार और बड़ाई को ही ध्यान में रखकर आँख की उपमा बादाम या आम की फाँक से दे तो उसकी उपमा भद्दी होगी; क्योंकि उक्त वस्तुओं से सौंदर्य की भावना वैसी नहीं जागती। कवि लोग आँख की उपमा के लिए कभी कमल-दल लाते हैं, जिससे रंग की मनोहरता, प्रफुल्लता, कोमलता आदि की भावना एक साथ उत्पन्न होती है; कभी मीन या खंजन लाते हैं, जिससे स्वच्छता और चंचलता प्रकट होती है। उठे हुए बादल के टुकड़े के ऊपर उदित होते हुए पूर्ण चन्द्रमा का दृश्य कितना रमणीय होता है! यदि कोई उसे देखकर कहे कि "मानो ऊँट की पीठ पर घंटा रखा है" तो यह उक्ति रमणीयता की भावना में कुछ भी योग न देगी, थोड़ा-बहुत कुतूहल चाहे भले ही उत्पन्न कर दे।

कवि लोग प्रेम, शोक, करुणा, आश्चर्य, भय, उत्साह इत्यादि भावों

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

को पात्रों के मुँह से प्रायः प्रकट कराया करते हैं। वाणी के द्वारा मनुष्य के हृदय के भावों की पूर्ण रूप से व्यजना हो सकती है। मनुष्य के मुख से प्रेम में कैसे वचन निकलते हैं, क्रोध में कैसे, शोक में कैसे, आश्चर्य में कैसे, उत्साह में कैसे—इसका अनुभव सच्चे कवियों को पूरा पूरा होता है। शोक के वेग में मनुष्य थोड़ी देर के लिए बुद्धि और विवेक भूल जाता है, उचित अनुचित का ध्यान छोड़ देता है। इसी बात को ध्यान में रखकर तुलसीदासजी ने लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम के मुँह से कहलाया है कि:—

"जौ जनतेउँ बन बन्धु बिछोहू।
पिता वचन मनतेउँ नहिं ओहू॥"

जो काव्य के सिद्धान्तों को नहीं जानते वे कहेंगे कि इस वचन से राम के चरित्र में दूषण आ गया। पर जो सहृदय और मर्मज्ञ हैं, वे इसे शोक की उक्ति मात्र समझेंगे।

पात्र के मुख से भाव की व्यंजना कराने में कवि में बड़ी निपुणता अपेक्षित होती है। पहले तो उसे मनुष्य की सामान्य प्रकृति का ध्यान रखना पड़ता है, फिर पात्र के विशेष ढंग के स्वभाव का। इसी से एक ही भाव की व्यंजना अनन्त प्रकार से हो सकती है। रामचरित-मानस में देखिए कि जब राम कभी अपना क्रोध प्रकट करते हैं, तब किस संयम और गम्भीरता के साथ, और लक्ष्मण उग्र अधीरता और उग्रता के साथ। यही बात उत्साह आदि और भावों के सम्बन्ध में भी समझनी चाहिए।

—पं० रामचन्द्र शुक्ल।

उद्धरण निबन्ध

१३—पाई का लेखा, रुपये की भूल

मनुष्य समाज में ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं, जो पद पद पर जीवन में उपर्युक्त कहावत चरितार्थ करते हैं। उनकी दृष्टि ही क्षुद्रता की ओर सतर्क रहती है। महत्ता को देखने में उनके चर्मचक्षु अकृतकार्य रहते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि मानव-जीवन किसी महान् उद्देश्य के लिए है। यदि कोई

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

छोटे-छोटे कार्यों का लेखा तैयार करने में अपने अमूल्य समय और अपूर्व शक्ति का अपव्यय करेगा तो उससे महान् कार्यों में त्रुटि होना अनिवार्य होगा। पाई का लेखा करते-करते वह रुपये की भूल कर बैठेगा। इसीलिए विद्वानों का कहना है कि छोटी-छोटी बातों की चिन्ता में अपने मस्तिष्क को मत खपाओ। इन्हें जीवन की पगडंडियों में रेलपेल करने के लिये छोड़कर तुम तो राजमार्ग का अनुसरण करने चलो। उनके जटिलता में उलझ जाने पर फिर कहीं के न रहोगे। इस छोटे जीवन में इतना समय और सुयोग ही कहाँ है कि तुम फूँक-फूँक कर पैर रखते हुए निकल जाओगे? छोटी से छोटी बात के विषय में सतर्क रह सकोगे?

अपने पवित्रतम सर्वस्व को उत्सर्ग कर देने के महिमामय भाव की ओर से विरत होकर लोग वैदिक कर्मकाण्ड की जटिलता के समय, यज्ञों में पशुबलि की ओर स्वभावतः प्रवृत्त हो गये थे। हिंसा की धूम मच गई थी। उसी को लोगों ने धर्म मान लिया था। क्या यह रुपये की भूल न थी। अन्त में प्रतिक्रिया होकर हिंसा के स्थान पर अहिंसा की प्रस्थापना हुई। पर धीरे-धीरे वह भी पाई की जटिलता में पड़ गई। फलस्वरूप यहाँ तक प्रयत्न किया जाने लगा कि श्वास लेते समय जो वायु अन्दर जाती है उसमें असंख्य क्षुद्रकाय जीव होते हैं, पेट में पहुँच कर उनकी हत्या हो जाती है। इसलिए उनकी रक्षा की जाय।

जहाँ इस प्रकार की सूक्ष्म-विचार-प्रणाली की व्यावहारिक जीवन में स्थान मिलने लगा, वहाँ समझ लेना चाहिए कि मनुष्य अपने महान् उद्देश्य से पथ-भ्रष्ट होकर जटिलता के बन्धन में अपने आपको कस रहा है। क्षुद्रता के अंश-अंश का हिसाब रखकर भला किसी ने कोई महान् काम किया है? माली यदि व्यर्थ के झाड़-झंखाड़ों और फूस को उपेक्षापूर्वक उखाड़-उखाड़ कर फेंकता न जाय तो उपवन के सौन्दर्य का अपूर्व दर्शन हमें कैसे हो? घास-फूस का लेखा रखने से माली का महान उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता। यदि कोई उसे निर्दयता के दोष से कलंकित करे तो अनुचित होगा। घास-फूस और झाड़-झंखाड़ों के प्रति उसकी थोड़ी सी निर्दयता उसके कार्य की महत्ता को देखते हुए अवश्य क्षम्य है।

इस प्रकार हम इस निर्णय पर पहुँच जाते हैं कि कार्य जितना ही महान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हो, उसके प्रति हमें उतना ही अधिक ध्यान देना चाहिए और उसकी पूर्ति में उतनी ही तत्परता से प्रयत्नशील होना चाहिए। उसकी प्राप्ति में यदि कोई क्षुद्र महत्त्ववाले कार्यों की उपेक्षा भी करनी पड़े तो अनुचित नहीं। यदि हम इसके विपरीत करेंगे तो हमारी दृष्टि में दोष है कि हम उस कार्य के वास्तविक महत्त्व का अन्दाज नहीं लगा सकते, क्षुद्र वस्तुओं को महान और महान वस्तुओं को क्षुद्रतम देखने का हमें अभ्यास पड़ गया है, अथवा हम रुपये की परवाह नहीं करते, हमारा सारा ध्यान तो पाई के लेखे पर है।

अब एक साधारण उदाहरण देकर हम अपने कथन को और भी स्पष्ट करना जाहते हैं। एक सज्जन ने, जो इसी श्रेणी के थे, सौ डेढ़ सौ रुपया खर्च करना उचित न समझा और इसलिए अपने मुक़दमे के सबूत के कुछ ज़रूरी काग़ज़ात तलब नहीं कराये। इसके कारण वे अपना कई हज़ार का मुक़दमा हार गये। बाद को उसी मुकदमे के लिए उन्होंने ऊँची अदालत में पाँच-छः सौ रुपये ख़र्च किये। अब देखिये यदि वे उनमें से केवल सौ-डेढ़ सौ रुपये पहले ही खर्च कर देते, तो मुकदमा भी जीत लेते और ख़र्च भी बचा लेते। लेकिन ऐसा वे क्यों करते? उनका ध्यान तो पाई के हिसाब की तरफ़ था।

बहुतसे ऐसे लोग देखने में आते हैं जो बाजार में सौदा खरीदने के समय आने दो आने के फायदे के लिए सारी दूकानें छान डालते हैं। उन्हें यह ध्यान भी नहीं आता कि वे अपना जो समय खो रहे हैं उसकी क़ीमत उस लाभ से कहीं अधिक है, जिसके लिये वे इतना परिश्रम कर रहे हैं। यदि वे इसी समय को किसी उपयोगी कार्य में लगाते तो निश्चय ही आने दो आने से कहीं अधिक का फ़ायदा कर लेते। ऐसे ही लोगों के लिए किसी का उपदेश है कि "दुअन्नी को अपनी आँख के इतने पास मत ले जाओ कि उसकी ओट में का रुपया भी तुम्हें दिखलाई न पड़े।" अर्थात् जहाँ दो आने खर्च करने से एक रुपये का लाभ होता हो वहाँ दो आने का मुँह मत देखो।

सफल दूकानदार इस प्रकार के मनोविज्ञान से खूब परिचित होते हैं। वे चार पैसे के पान या इलायची आदि से ग्राहक की खातिर करके उसे सदा के लिए अपना चेला बना लेते हैं। फिर बराबर उससे लाभ उठाते हैं। यदि वे

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पहले कुछ छींटा खाना पसन्द न करते तो वे ग्राहक का मन अपनी ओर कैसे आकर्षित कर पाते ? कैसे उनको उससे आगे चलकर लाभ होता ?

कहने का प्रयोजन इतना ही है कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता सम्पादन करने के लिए पाई के लेखे पर ध्यान न देना ही ठीक होगा। यदि हम पाई के लेखे का विचार अपने मस्तिष्क से निकाल नहीं देते तो निश्चय ही रुपये की भूल कर बैठेंगे—अर्थात् हम कभी अपने कार्य में सफल नहीं होंगे। उपन्यासकार जो उपन्यास लिखने बैठता है, वह भी हर एक बात यथावत् नहीं लिखता। बहुत सी बातें भुलाकर केवल उन्हीं का वह ज़िक्र करता है जो उसके उद्देश्य को प्रभावशाली बनानेवाली हैं। यदि वह ऐसा न करे तो उसका उपन्यास भानुमती का पिटारा बन जाय। उससे आनन्द उठाने के बदले पाठक उसके इन्द्रजाल में भटकता ही रह जाय।

भला, हमारी आँखें क्या केवल उन्हीं पदार्थों को देखती हैं जिनका हमें ज्ञान होता है ? कदापि नहीं। हम चलते-चलते असंख्य वस्तुएँ देखते जाते हैं; पर हमारे ध्यान में केवल कुछ ही रह जाती हैं। ये कुछ वे ही होती हैं जो विशेष प्रयोजनीय होती हैं। अप्रयोजनीय वस्तुओं पर दृष्टिपात करके भी हमारी आँखें उनको ध्यान में नहीं लातीं।

ऐसी हालत में यदि हम पाई का लेखा रखने और रुपये की भूल करने की कहावत अपने जीवन में चरितार्थ करेंगे तो अवश्य ही हमारा आचरण अनैसर्गिक होगा। वह हमारी सफलता में बाधक होगा। हम कभी उन्नति और विजय की महत्ता अपने जीवन में अनुभव न कर सकेंगे।

—श्री शम्भूदयाल सक्सेना

१४—"अपनी करनी पार उतरनी"

ढाँचा

१—संसार की तुलना नदी या समुद्र से 'उतरने' का तात्पर्य—सफलता।
२—दूसरे लोग अपने स्वार्थ को अधिक समझते हैं।
३—दूसरों से सहायता तभी मिलेगी जब तुम स्वयम् कर्मण्य बनोगे।
४—कार्य में परिश्रम, दृढ़ता आदि की आवश्यकता।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आलोचनात्मक निबन्ध

१८--साहित्य की महत्ता

ज्ञान-राशि के संचित कोश ही का नाम साहित्य है। सब तरह के भावों को प्रकट करने की योग्यता रखनेवाली और निर्दोष होने पर भी, यदि कोई भाषा अपना निज का साहित्य नहीं रखती तो वह, रूपवती भिखारिनी की तरह, कदापि आदरणीय नहीं हो सकती। उसकी शोभा, उसकी श्रीसम्पन्नता, उसकी मान-मर्यादा उसके साहित्य ही पर अवलम्बित रहती है। जाति-विशेष के उत्कर्षापकर्ष का, उसके उच्च-नीच भावों का, उसके धार्मिक विचारों और सामाजिक संगठन का, उसके ऐतिहासिक घटनाचक्रों और राजनैतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब देखने को यदि कहीं मिल सकता है तो उसके ग्रन्थ-साहित्य ही में मिल सकता है। सामाजिक शक्ति या सजीवता, सामाजिक अशक्ति या निर्जीवता और सामाजिक सभ्यता तथा असभ्यता का निर्णायक एकमात्र साहित्य है। जिस जाति-विशेष में साहित्य का अभाव या उसकी न्यूनता आपको देख पड़े, आप यह निःसन्देह निश्चित समझिए कि वह जाति असभ्य किंवा अपूर्णसभ्य है। जिस जाति की सामाजिक अवस्था जैसी होती है उसका साहित्य भी ठीक वैसा ही होता है। जातियों की क्षमता और सजीवता यदि कहीं प्रत्यक्ष देखने को मिल सकती है तो उनके साहित्य रूपी आइने में मिल सकती है। इस आइने के सामने जाते ही हमें यह तत्काल मालूम हो जाता है कि अमुक जाति की जीवनी-शक्ति इस समय कितनी या कैसी और भूतकाल में कितनी और कैसी थी।

आप भोजन करना बन्द कर दीजिए या कम कर दीजिए, आपका शरीर क्षीण हो जायगा और अचिरात् नाशोन्मुख होने लगेगा। इसी तरह आप साहित्य के रसास्वादन से अपने मस्तिष्क को वंचित कर दीजिए, वह निष्क्रिय होकर धीरे-धीरे किसी काम का न रह जायगा। बात यह है कि शरीर के जिस अंग का जो काम है वह उससे यदि न लिया जाय, तो उसकी वह काम करने की शक्ति नष्ट हुए बिना नहीं रहती। शरीर का खाद्य भोजनीय पदार्थ है और

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मस्तिष्क का खाद्य साहित्य। अतएव यदि हम अपने मस्तिष्क को निष्क्रिय और कालान्तर में निर्जीव सा नहीं कर डालना चाहते तो हमें साहित्य का सतत सेवन करना चाहिए और उसमें नवीनता तथा पौष्टिकता लाने के लिए उसका उत्पादन भी करते जाना चाहिए। पर याद रखिए, विकृत भोजन से जैसे शरीर रुग्ण होकर बिगड़ जाता है वैसे ही विकृत साहित्य से मस्तिष्क भी विकारग्रस्त होकर रोगी हो जाता है। मस्तिष्क का बलवान् और शक्तिसम्पन्न होना अच्छे ही साहित्य पर अवलम्बित है। अतएव यह बात निर्भ्रान्त है कि मस्तिष्क के यथेष्ट विकास का एकमात्र साधन अच्छा साहित्य है। यदि हमें जीवित रहना है और सभ्यता की दौड़ में अन्य जातियों की बराबरी करनी है तो हमें श्रमपूर्वक बड़े उत्साह से, सत् साहित्य का उत्पादन और प्राचीन साहित्य की रक्षा करनी चाहिए।

आँख उठाकर ज़रा और देशों तथा और जातियों की ओर तो देखिए। आप देखेंगे कि साहित्य ने वहाँ की सामाजिक और राजकीय स्थितियों में कैसे-कैसे परिवर्तन कर डाले हैं। साहित्य ही ने वहाँ समाज की दशा कुछ की कुछ कर दी है; शासन-प्रबन्ध में बड़े-बड़े उथल-पुथल कर डाले हैं; यहाँ तक कि अनुदार धार्मिक भावों को भी जड़ से उखाड़ फेंका है। साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पाई जाती। योरप में हानिकारिणी धार्मिक रूढ़ियों का उत्पादन साहित्य ने किया है, जातीय स्वातन्त्र्य के बीज उसी ने बोए हैं, व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य के भावों को भी उसी ने पाला पोसा और बढ़ाया है; पतित देशों का पुनरुत्थान भी उसी ने किया है। पोप की प्रभुता को किसने कम किया है? फ्रांस में प्रजा की सत्ता का उत्पादन और उन्नयन किसने किया है? पदाक्रान्त इटली का मस्तक किसने ऊँचा उठाया है? साहित्य ने, साहित्य ने, साहित्य ने। जिस साहित्य में इतनी शक्ति है, जो साहित्य मुर्दों को भी ज़िन्दा करनेवाली संजीवनी औषधि का आकार है, जो साहित्य पतितों का उठाने वाला और उत्थितों के मस्तक को उन्नत करने वाला है, उसके उत्पादन और संवर्धन की चेष्टा जो जाति नहीं करती वह अज्ञानान्धकार के गर्त में पड़ी रह कर किसी दिन अपना अस्तित्व ही खो बैठती है। अतएव समर्थ होकर भी जो मनुष्य इतने महत्त्वशाली साहित्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आलोचनात्मक निबन्ध

१८--साहित्य की महत्ता

ज्ञान-राशि के संचित कोश ही का नाम साहित्य है। सब तरह के भावों को प्रकट करने की योग्यता रखनेवाली और निर्दोष होने पर भी, यदि कोई भाषा अपना निज का साहित्य नहीं रखती तो वह, रूपवती भिखारिनी की तरह, कदापि आदरणीय नहीं हो सकती। उसकी शोभा, उसकी श्रीसम्पन्नता, उसकी मान-मर्यादा उसके साहित्य ही पर अवलम्बित रहती है। जाति-विशेष के उत्कर्षापकर्ष का, उसके उच्च-नीच भावों का, उसके धार्मिक विचारों और सामाजिक संगठन का, उसके ऐतिहासिक घटनाचक्रों और राजनैतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब देखने को यदि कहीं मिल सकता है तो उसके ग्रन्थ-साहित्य ही में मिल सकता है। सामाजिक शक्ति या सजीवता, सामाजिक अशक्ति या निर्जीवता और सामाजिक सभ्यता तथा असभ्यता का निर्णायक एकमात्र साहित्य है। जिस जाति-विशेष में साहित्य का अभाव या उसकी न्यूनता आपको देख पड़े, आप यह निःसन्देह निश्चित समझिए कि वह जाति असभ्य किंवा अपूर्णसभ्य है। जिस जाति की सामाजिक अवस्था जैसी होती है उसका साहित्य भी ठीक वैसा ही होता है। जातियों की क्षमता और सजीवता यदि कहीं प्रत्यक्ष देखने को मिल सकती है तो उनके साहित्य रूपी आइने में मिल सकती है। इस आइने के सामने जाते ही हमें यह तत्काल मालूम हो जाता है कि अमुक जाति की जीवनी-शक्ति इस समय कितनी या कैसी और भूतकाल में कितनी और कैसी थी।

आप भोजन करना बन्द कर दीजिए या कम कर दीजिए, आपका शरीर क्षीण हो जायगा और अचिरात् नाशोन्मुख होने लगेगा। इसी तरह आप साहित्य के रसास्वादन से अपने मस्तिष्क को वंचित कर दीजिए, वह निष्क्रिय होकर धीरे-धीरे किसी काम का न रह जायगा। बात यह है कि शरीर के जिस अंग का जो काम है वह उससे यदि न लिया जाय, तो उसकी वह काम करने की शक्ति नष्ट हुए बिना नहीं रहती। शरीर का खाद्य भोजनीय पदार्थ है और

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मस्तिष्क का खाद्य साहित्य। अतएव यदि हम अपने मस्तिष्क को निष्क्रिय और कालान्तर में निर्जीव सा नहीं कर डालना चाहते तो हमें साहित्य का सतत सेवन करना चाहिए और उसमें नवीनता तथा पौष्टिकता लाने के लिए उसका उत्पादन भी करते जाना चाहिए। पर याद रखिए, विकृत भोजन से जैसे शरीर रुग्ण होकर बिगड़ जाता है वैसे ही विकृत साहित्य से मस्तिष्क भी विकारग्रस्त होकर रोगी हो जाता है। मस्तिष्क का बलवान् और शक्तिसम्पन्न होना अच्छे ही साहित्य पर अवलम्बित है। अतएव यह बात निर्भ्रान्त है कि मस्तिष्क के यथेष्ट विकास का एकमात्र साधन अच्छा साहित्य है। यदि हमें जीवित रहना है और सभ्यता की दौड़ में अन्य जातियों की बराबरी करनी है तो हमें श्रमपूर्वक बड़े उत्साह से, सत् साहित्य का उत्पादन और प्राचीन साहित्य की रक्षा करनी चाहिए।

आँख उठाकर ज़रा और देशों तथा और जातियों की ओर तो देखिए। आप देखेंगे कि साहित्य ने वहाँ की सामाजिक और राजकीय स्थितियों में कैसे-कैसे परिवर्तन कर डाले हैं। साहित्य ही ने वहाँ समाज की दशा कुछ की कुछ कर दी है; शासन-प्रबन्ध में बड़े-बड़े उथल-पुथल कर डाले हैं; यहाँ तक कि अनुदार धार्मिक भावों को भी जड़ से उखाड़ फेंका है। साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पाई जाती। योरप में हानिकारिणी धार्मिक रूढ़ियों का उत्पादन साहित्य ने किया है, जातीय स्वातन्त्र्य के बीज उसी ने बोए हैं, व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य के भावों को भी उसी ने पाला पोसा और बढ़ाया है; पतित देशों का पुनरुत्थान भी उसी ने किया है। पोप की प्रभुता को किसने कम किया है? फ्रांस में प्रजा की सत्ता का उत्पादन और उन्नयन किसने किया है? पदाक्रान्त इटली का मस्तक किसने ऊँचा उठाया है? साहित्य ने, साहित्य ने, साहित्य ने। जिस साहित्य में इतनी शक्ति है, जो साहित्य मुर्दों को भी ज़िन्दा करनेवाली संजीवनी औषधि का आकार है, जो साहित्य पतितों का उठाने वाला और उत्थितों के मस्तक को उन्नत करने वाला है, उसके उत्पादन और संवर्धन की चेष्टा जो जाति नहीं करती वह अज्ञानान्धकार के गर्त में पड़ी रह कर किसी दिन अपना अस्तित्व ही खो बैठती है। अतएव समर्थ होकर भी जो मनुष्य इतने महत्त्वशाली साहित्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

की सेवा और अभिवृद्धि नहीं करता अथवा उससे अनुराग नहीं रखता, वह समाजद्रोही है, वह देशद्रोही है, वह जातिद्रोही है, किंबहुना, वह आत्मद्रोही और आत्महन्ता भी है।

कभी-कभी कोई समृद्ध भाषा अपने ऐश्वर्य के बल पर दूसरी भाषाओं पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेती है, जैसा जर्मनी, रूस और इटली आदि देशों की भाषाओं पर फ्रेंच भाषा ने बहुत समय तक कर लिया था। स्वयं अँगरेज़ी भाषा भी फ्रेंच और लैटिन भाषाओं के दबाव से नहीं बच सकी। कभी-कभी यह दशा राजनैतिक प्रभुत्व के कारण भी उपस्थित हो जाती है और विजित देशों की भाषाओं को विजेता जाति की भाषा दबा लेती है। तब उनके साहित्य का उत्पादन यदि बन्द नहीं हो जाता तो उसकी वृद्धि की गति मन्द जरूर पड़ जाती है। यह अस्वाभाविक दबाव सदा नहीं बना रहता। इस प्रकार की दबी या अधःपतित भाषायें बोलनेवाले जब होश में आते हैं तब इस अनैसर्गिक आच्छादन को दूर फेंक देते हैं। जर्मनी, रूस, इटली और स्वयं इंगलैंड चिरकाल तक फ्रेंच और लैटिन भाषाओं के मायाजाल में फँसे थे। पर बहुत समय हुआ, उस जाल को उन्होंने तोड़ डाला। अब वे अपनी ही भाषा के साहित्य की अभिवृद्धि करते हैं, कभी भूलकर भी विदेशी भाषाओं में ग्रन्थ-रचना करने का विचार तक नहीं करते। बात यह है कि अपनी भाषा का साहित्य ही स्वजाति और स्वदेश की उन्नति का साधक है। विदेशी भाषा का चूड़ान्त ज्ञान प्राप्त कर लेने और उसमें महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ-रचना करने पर भी विशेष सफलता नहीं प्राप्त हो सकती और अपने देश को विशेष लाभ नहीं पहुँच सकता। अपनी माँ को निःसहाय, निरुपाय और निर्धन दशा में छोड़कर जो मनुष्य दूसरे की माँ की सेवा-शुश्रूषा में रत होता है, उस अधम कृतघ्नता का क्या प्रायश्चित्त होना चाहिए, इसका निर्णय कोई मनु, याज्ञवल्क्य या आपस्तम्ब ही कर सकता है।

मेरा यह मतलब कदापि नहीं कि विदेशी भाषायें सीखनी ही न चाहिए। नहीं; आवश्यकता, अनुकूलता, अवसर और अवकाश होने पर हमें एक नहीं अनेक भाषायें सीखकर ज्ञानार्जन करना चाहिए; द्वेष किसी भी भाषा से न करना चाहिए; ज्ञान कहीं भी मिलता हो उसे ग्रहण ही कर लेना चाहिए।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रन्तु अपनी ही भाषा और उसी के साहित्य को प्रधानता देनी चाहिए; क्योंकि अपना, अपने देश का, अपनी जाति का उपकार और कल्याण अपनी ही भाषा के साहित्य की उन्नति से हो सकता है। ज्ञान, विज्ञान, धर्म्म और राजनीति की भाषा सदैव लोकभाषा ही होनी चाहिए। अतएव अपनी भाषा के साहित्य की सेवा और अभिवृद्धि करना, सभी दृष्टियों से हमारा परम धर्म है।

—पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी।

१६—रामायण में राम का चरित्र-चित्रण

ढाँचा

१—रामायण की कथा से राम की कहानी के अतिरिक्त अन्य बहुत से लाभ।

२—भारत की तात्कालिक दशा का ज्ञान।

३–राम एक आदर्श पुरुष थे।

४—माता पिता के प्रति उनका व्यवहार।

५—भाइयों के प्रति उनका व्यवहार।

६—स्त्री के प्रति उनका व्यवहार।

७—ऋषियों के प्रति उनका व्यवहार।

८—सहायकों के प्रति उनका व्यवहार।

९—प्रजा के प्रति उनका व्यवहार।

१०—फल, लेख की समाप्ति।

आत्मकथा

१७—कोयले की आत्मकहानी

आज मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ कि आप मुझ जैसी तुच्छ वस्तु की आत्मकहानी सुनने के लिये तैयार हैं। सहानुभूति के साथ मेरा हाल सुननेवाला ऐसा दयावान् मुझे आज तक न मिला था। आज मेरे भाग्य का उदय हुआ कि आपने दया कर मेरी सुध ली। अपने दिल का गुबार निकाल

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

लूँ तब अपनी कथा कहूँ । मैं किस-किस की शिकायत करूं, सभी ने मेरा अनादर और तिरस्कार किया है ।

आप ही बतलाइये कि जब आप किसी काली वस्तु को घृणा से देखते हैं, तब क्या कहते हैं 'कोयले सी काली' ? परन्तु जब आपके बच्चे कभी बाज़ार से मिठाई लाते होंगे, तब माता उनसे कह देती होगी कि मिठाई में कोयले का टुकड़ा अवश्य डाल लाना । आपका नन्हा-सा बच्चा जब बाहर निकलता है, तब उसको माता माथे पर काजल का टीका लगाती है । इस प्रकार मैं आपके बच्चों को नज़र से बचाता रहता हूँ । फिर भी मेरा अपमान, मेरा अनादर, मेरी उपेक्षा !

मैं और भी न मालूम कितने उपकार आप पर करता हूँ। उसका भी कुछ हाल सुन लीजिये । तब शायद आप मुझ पर दया करने लगें ।

सुनिये मैं आपकी देह में, आपकी हड्डी में, आपके मांस में, आप की त्वचा में, आपकी नस-नस में व्याप रहा हूँ । "तू ब्रह्म है ?" नहीं-नहीं महाराज, मैं वही काला-कलूटा कोयला हूँ, ब्रह्म नहीं; परन्तु दरजे में बहुत कम भी नहीं हूँ । संसार में राजराजेश्वर सबसे बड़े हैं, उनसे ऊपर भगवान् ही समझे जाते हैं; पर यह भी आपकी समझ की बलिहारी है कि मुझे आप भूल ही जाते हैं। राजराजेश्वर से बड़ा उनके सिर पर मैं हूँ, फिर मेरे ऊपर भगवान् को समझिये । पर वहाँ तक जाने का काम क्या ? आपकी देह का तो मैं ही आधार हूँ । मैं अलग हो जाऊँ तो यह देह कितने क्षण खड़ी रहेगी !

पृथ्वी से अन्तर्धान हो जाऊँ, तो रेल तो रेल, पृथ्वी का ही एञ्जिन रुक जाय । एञ्जिन के नाते सारे कारबारों की आँखें खुल जायँ । सड़क कैसे इतनी जल्दी कुटवाओगे ? आटा इतना बारीक और सस्ता कैसे पिसवाओगे ? आपके जितने काम एञ्जिनों से चलते हैं, वे सब थम जायँगे ।

आप शाम को बाग की सैर को जाया करते हैं । वहाँ गुलाब, चमेली, मोगरे के फूलों की महक से दिमाग़ मुअत्तर हो जाता है, हृदय की कली खिल जाती है, जी खुश हो जाता है । आँखें भी इनके रङ्ग-रूप, अद्भुत हरियाली और सौन्दर्य को देख मस्त हो जाती हैं। दिन भर की थकान आन की आन

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

में मिट जाती है। परन्तु आप जानते हैं, यह सब सृष्टि जिसकी रचं हुई है, इन सबमें ऐसी कौन सी व्याप्त वस्तु है, जिसके अभाव से यह गुलशन वियाबान हो जायगा? फूलों को यह तरह-तरह के रङ्ग किसकी बदौलत मिले, उनको अनेक प्रकार की सुगन्ध किसने दी? शोक है ब्रह्म की खोज में आप मुझे तुच्छ जान खो बैठे, नहीं तो आप मुझे ही सब कुछ समझते।

दिन-रात ईश्वर की दी हुई पवित्र हवा को आप बिगाड़ा करते हैं। जिस प्रकार एञ्जिन, भट्ठी इत्यादि से धुआँ निकलता रहता है, उसी प्रकार मनुष्य के पेट से भी गैस निकलता रहता है। यदि सब गैस संसार में जमा होता रहता, तो आज क्या मनुष्य पृथ्वी पर दिखाई देते? सारी हवा चीजों के जलने और प्राणियों के साँस लेने से इस समय तक खतम हो चुकी होती। इस काम के लिए भी मनुष्य-जाति मुझसे उऋण नहीं हो सकती। मैं ही हरित हरि रूप क्लारोफ़िल होकर पत्तियों के हरे रङ्ग में मौजूद रहता हूँ और जली हुई हवा को शुद्ध करता रहता हूँ।

स्वादिष्ट मिठाइयाँ खाने से मनुष्य का जी बड़ा प्रसन्न होता है; परन्तु शक्कर का पितामह भी मैं ही हूँ। मेरा ही रुधिर उसकी नस-नस में बह रहा है! इतना ही नहीं, जब गन्ने से शक्कर बनाते हैं और किसी यत्न से गुड़ का पीला, मैला रङ्ग नहीं जाता, तब भी मेरा ही आश्रय लेते हैं। उस मैले रङ्ग को मैं ही ग्रहण करता हूँ और उसे सफेद चीनी बना देता हूँ।

जितने प्रकार के अनाज, फल, फूल हैं, सब में मैं हूँ, सब ही मेरे अंशज, सब ही मेरे वंशज हैं। इन सब रूपों में मैं सृष्टि के आदि से उनका पालन करता आया हूँ और प्रलय तक करता रहूँगा।

"क्या? जब तुम ही तुम हो, तो तुम स्वयं ही अपने अंशज और वंशज कैसे हुए?" यह अच्छा प्रश्न है! महाराज, आप हमारी रङ्गतवाले श्याम सलोने का वेदान्त पढ़े होते, तो ऐसी शङ्का न करते। खैर, यह तो सुना होगा— "आत्मा वै जायते पुत्रः"; अजी, "आदि सृष्टि उपजी जबै, तब उत्पति भइ मोरि" मेरा जन्म दूसरा नहीं हुआ, न मैंने विवाह किया; किन्तु अचरज यह है कि मेरे पिता, पितामह, पुत्र, पौत्र, कुटुम्बी, सम्बन्धी इतने हैं कि नभ तारे भले ही गिन लो, पर उनका नहीं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

यह जो कुछ मैंने कहा, बहुत थोड़ा है। यदि इस उपकार पर मुझे आप केवल भूल ही जाते, तो मुझे शोक न होता। परन्तु मुझ पर अत्याचार भी बहुत हुए हैं, जिनसे मैं बहुत दुखी हूँ। वह भी सुन लें तो बड़ी दया होगी।

मैंने जब देखा कि मेरे साँवले, सुहावने रूप का निरादर होता है, तब मैंने पृथ्वी के गर्भ में ज्योतिर्मय गौर रूप को धारण किया। रूप पर मोह जानेवाले भोले-भाले सौन्दर्य के भक्तों, तुमने तब जाकर मेरा कुछ आदर किया! परन्तु यद्यपि मैं राजा महाराजाओं के मुकुटों का रत्न हूँ, फिर भी मेरी जो-जो दुर्दशा हुई, कहाँ तक गिनाऊँ? मेरा अङ्ग काटा छीला गया, मैंने अपने को कितना ही कठोर बनाया; पर कृतघ्नियों के कठोर हृदय से हार गया। मनुष्यों ने मुझे काट छील कर ही सन्तोष नहीं किया। मेरा सुन्दर रूप अनन्त विपद का कारण हुआ। मुझे ज़बरदस्ती बड़ी तप्त आँच देकर गले लोहे के गर्भ में डाल दिया। मैंने कितना ही बचना चाहा, पर लाचार हुआ। आखिर को राजी-खुशी से काम न लेने से मैंने गौर कलेवर में जन्म तो लिया, पर अत्यन्त दुबला पतला।

दूसरा अत्याचार मुझ पर वैज्ञानिकों ने किया। वे सब उपकार भूलकर अपकार करने लगे। दधीचि ऋषि की तरह अपना शरीर होम कर मैं उनके एञ्जिन चलाता था, सहस्रों रुपये दिलवाकर उनका पालन पोषण करता था; पर उन्हें तृप्ति न हुई। उन्होंने मुझे फाँसी देनी चाही; दम घोंट कर मरना इष्ट था मुझे एक कोठरी में ऐसा मूंद दिया कि हवा बन्द हो गई। फिर चारों ओर प्रचण्ड अग्नि से उस लोहे की कोठरी को लाल कर डाला। हाय! तब भी मैं न मरा; मुझे तो ब्रह्माजी का वरदान है। मैं देवताओं की नांईं अमर हूँ। हिन्दुओं के पुनर्जन्म-सिद्धान्त का सच्चा प्रमाण दे सकता हूँ! इस अत्याचार से क्या हुआ? मैं उस कोठरी से माया के अनेक रूप धारण कर अन्त को निकल ही आया। तो भी मैंने इनका उपकार ही किया। मैं अपनी सज्जनता क्यों छोड़ूं? "काटे परसु मलय सम भाई। निज गुन देइ सुगन्ध बसाई॥"

इन्हें गैस जलाने को दी अमोनिया इनके सिर का दर्द मिटाने को दिया और एक और वस्तु कोलतार (अलकतरा, डामर) दिया, जो सच पूछो तो पारस से भी अधिक अनमोल है।

पहले ये अपने ही अपकार के भ्रम से डामर को फेंक दिया करते थे।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

परन्तु ये मेरे सच्चे भक्त भी हैं। मैं यही समझूँगा कि ये मेरी वैसी ही भक्ति करते हैं, जैसे रावण की राम में थी।

धीरे-धीरे कोलतार को, काठ की चीज़ों को दीमक से और लोहे की चीज़ों को मोरचे से बचाने के काम में लाने लगे।

जितने चटकीले रङ्ग आज-कल आपको दिखलाई देते हैं, जितने सत—नारङ्गी, केला, सन्तरा इत्यादि के आपके काम में आते हैं, जितने इत्र आप लगाते हैं—वे सब मैंने कोलतार से दिलवाये हैं।

बतलाइये कहाँ तक कहूँ ? मनुष्य का शरीर, जीवन निर्वाह, सुख, उसकी सभ्यता और उसकी उन्नति मुझ पर ही निर्भर है। यदि वह इतने पर भी मुझे भूले, तो क्या मुझे दुख न होगा।

क्या वैज्ञानिकों ने ?—हाँ, वैज्ञानिकों ने मेरी सुधि ली; अवश्य ली! आपको मालूम होगा कि इन्होंने मेरे साथ कैसा साधु व्यवहार किया। यह भी गनीमत है; मैं यही समझूँगा कि वह वैरभाव से ही मेरी भक्ति करने में तत्पर हैं।

अब "परोपकाराय सतां विभूतयः"—इसी सिद्धान्त को स्मरण करके बुढ़ापे में सुख, सन्तोष और शान्ति से रहूँगा! पुरानी कहानी बहुत रुचती है, इससे थोड़े विस्तारपूर्वक मैंने अपनी जीवनी सुनाई।

आपका सेवक और उपकारक,

कोयला

—पं० गोपाल स्वरूप भार्गव, एम० एस-सी०।

१८—रुपये की आत्म-कथा

ढाँचा

१—चाँदी कहाँ से किस रूप में निकली।

२—उसकी शुद्धि भट्ठी में कैसे हुई।

३—चाँदी सिक्के के रूप में कैसे ढाली गई।

४—रुपये के दोनों ओर क्या छाप पड़ी।

१३

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

५—रुपये का संसार-भ्रमण कैसे हुआ।

६—रुपये का महत्त्व।

कथोपकथन

१९—कर्ण और अर्जुन

[अर्जुन के बाणों से विद्ध होकर जब कर्ण युद्धक्षेत्र में गिर पड़ा तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बतलाया कि कर्ण उसका ज्येष्ठ भ्राता है। अतः शोक-विह्वल होकर अर्जुन ने कर्ण के मस्तक को अपनी गोद में रख लिया और उसकी सेवा करने लगा। कर्ण अर्जुन की गोद में सिर रख कर विलाप कर रहा है।]

कर्ण—यह कौन है ? किसका स्पर्श है ? दुर्योधन ! हाँ, दुर्योधन ही जान पड़ता है। आओ भाई, कर्ण ने शक्ति भर तुम्हारे लिए युद्ध किया। आओ मित्र, अब उसे अन्तिम विदा दो।

अर्जुन—दुर्योधन नहीं हूँ, भाई ! मैं पार्थ हूँ, तुम्हारा अर्जुन, तुम्हारा छोटा भाई।

कर्ण—कौन ? पार्थ ? हाँ सचमुच यह तो पार्थ है। यह क्या बात है ? तुम्हारा चिर-शत्रु मृतप्राय हो रहा है, शस्त्रहीन, आहत, पराभूत पड़ा हुआ है। अब और क्या चाहिये ?

अर्जुन—मुझे क्षमा करो, भाई ! मैंने बड़ा अपराध किया है। तुम मेरे सहोदर हो, मेरे ज्येष्ठ भ्राता हो। यह मैंने अभी जाना है।

कर्ण—सहोदर ! ज्येष्ठ भ्राता ! शत्रुओं के प्रति यह कैसा सम्भाषण ! मैं तुम्हारा शत्रु हूँ, तुम मेरे शत्रु हो ! हम लोगों में यही सम्बन्ध है। क्या मैं तुम्हारा ज्येष्ठ भ्राता हूँ ? हाँ, सचमुच, तुम्हारा बड़ा भाई हूँ। आज प्रातःकाल मैंने सुना कि तुम मेरे अनुज हो, मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ। आज ही यह सुना-इसके पहले किसी ने आकर यह नहीं कहा कि मेरी जननी तुम्हारी माता है। चिरद्वेषी, चिरद्वन्द्वी, चिरशत्रु सर्प और नकुल एक ही गर्भ से उत्पन्न हुए ! भाई यह भूल है; यह विधाता की भूल है। कर्ण तुम्हारा चिरद्वेषी शत्रु तुम्हारा ज्येष्ठ

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भाई हो, यह विधाता की भूल नहीं तो क्या है ? कर्ण अधिरथ का पुत्र है, यही ठीक है, यही अच्छा है ? शत्रु के हाथ से मारा गया हूँ, यही सोचकर पीड़ा हो रही है। बड़ी व्यथा है; बड़ा क्लेश है। पद्मावती ! वृषकेतु ! कोई नहीं है ?

अर्जुन—शोक मत करो। धैर्य रक्खो। शान्त हो।

कर्ण—शान्त हूँगा ! चिन्ता मत करो। यह देखो मेरे चिरआराध्य, मेरे पिता, सूर्य अस्त हो रहे हैं। पिता, मैं अब जा रहा हूँ। मैं शान्त हो जाऊँगा। भाई, सदा के लिए चला जाऊँगा, पृथ्वी पर तुम्हारा कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं रहेगा। तुम्हारा दर्प, तुम्हारा शौर्य, तुम्हारा यश अक्षुण्ण बना रहेगा। तुम अद्वितीय वीर रहोगे। पर—नहीं, नहीं, मैं अब क्रोध नहीं करूँगा, द्वेष नहीं करूँगा। हिंसा का भाव भी अब मुझमें नहीं है। मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ, तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, तुम्हारी कल्याणकामना करता हूँ। मृत्यु आ रही है, चिरशान्ति आ रही है। जान पड़ता है, अब मैं अधिक देर तक नहीं रहूँगा। दो बातें कह देना चाहता हूँ, सिर्फ दो बातें, अपने हृदय की वेदना।

अर्जुन—सुनूँगा, तुम्हारी सभी बातें सुनूँगा। कौन जानता था कि अन्त-काल में यह वेदना, यह व्यथा सहनी पड़ेगी।

कर्ण—हाँ, भाई, सचमुच बड़ी वेदना है, बड़ा दुःख है। आज तक मैं इसे अपने हृदय में छिपाता आया हूँ। पार्थ, भाई, मैं आज तुम्हीं से अपने दुःख की वह बात कहता हूँ। आज तक मैंने और किसी से यह बात नहीं कही। पार्थ, सोचकर देखो, बाल्यकाल से मैं कितना अपमान, अवज्ञा, अवहेलना, तिरस्कार सहता आया हूँ। संसार से मैंने अपमान छोड़कर और कुछ नहीं पाया। पदपद पर मुझे लज्जित होना पड़ा, क्षण-क्षण में मुझे अपनी व्यर्थता का अनुभव हुआ। मेरे जन्म से मेरी जननी को लज्जा हुई। उसने मुझे फेंक दिया। जन्म-काल में ही मुझे माता का तिरस्कार सहना पड़ा। किशोरावस्था में जब मेरे हृदय में वीरत्व जागरित हुआ, आकांक्षा हुई तब मैंने अस्त्रगुरु द्रोण से अस्त्र शिक्षा के लिए प्रार्थना की। गुरु ने राधा-सुत को अवज्ञा-पूर्वक लौटा दिया, फिर मैं जामदग्न्य के पास गया, उनकी सेवा की, उनसे अस्त्र-शिक्षा प्राप्त की। परन्तु मैं क्षत्रिय हूँ—यह जानते ही उन्होंने शाप दे दिया। और शाप भी कैसा ? प्रतिद्वन्द्वी के सम्मुख तेरा यह बाण-बल व्यर्थ हो जायगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उस दिन की तुम्हें सुध है, जब तुम अपनी अस्त्र-परीक्षा दे रहे थे, मैं तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी होकर आया। मैं भी अपनी अस्त्रकुशलता दिखलाना चाहता था, परन्तु लोगों ने अधिरथ-सुत कहकर मेरा उपहास किया। दुर्योधन ने उस समय अपने गुणों से मुझे गौरान्वित अवश्य कर दिया। परन्तु ज्योंही अस्त्र-कौशल दिखाने के लिए उद्यत हुआ, त्योंही खबर आई कि कुन्ती के अकस्मात् पीड़ा होने लगी और सभा भंग हो गयी। मेरी शिक्षा व्यर्थ हो गई। हृदय की अभिलाषा हृदय ही में रह गई। सारी आशा नष्ट हो गई। बड़ा क्षोभ हुआ, बड़ी व्यथा हुई। आज भी समाज के उस अविचार और अन्याय का स्मरण कर मैं जला जाता हूँ।

अर्जुन—भाई, गत दुःख का स्मरण मत करो। मैं स्वयं लज्जित हो रहा हूँ।

कर्ण—गत दुःख तो गत हो ही गया। परन्तु हृदय की व्यथा बनी रहेगी। मैंने सदैव अपने भाग्य से ही युद्ध किया और अन्त में व्यर्थता ने मुझे पराजित कर दिया। अभी और भी सुनो! इतने में ही मेरी व्यथा समाप्त नहीं हुई। मुझे और भी अपमान सहना पड़ा, अपनी व्यर्थता का और भी अनुभव करना पड़ा। जब द्रौपदी का स्वयंवर हुआ और कोई भी क्षत्रिय लक्ष्य-भेद करने में समर्थ नहीं हुआ तब मैं दर्प से उठकर लक्ष्य-भेद करने के लिए खड़ा हुआ। उस समय द्रौपदी ने कहा—मैं अधिरथ-सुत को नहीं वरूँगी। अपमान और लांछन से मैं मस्तक नत कर चला आया। मेरी शक्ति व्यर्थ हुई; आशा व्यर्थ हुई, कामना व्यर्थ हुई; परन्तु जैसे सिंह मनुष्य को अपने सम्मुख देखकर एकमात्र बन्धन के कारण कुछ भी नहीं कर सकता वैसे ही मैंने भी अपने अपमान को सह लिया।

अर्जुन—भाई, मनुष्य भाग्य का खिलौना है, उसकी क्रीड़ा का साधन मात्र है।

कर्ण—आज प्रातःकाल ही मैंने मन ही मन दृढ़ प्रतिज्ञा की कि आज मैं अपने चिर-शत्रु पार्थ का दम्भ नष्ट कर दूँगा। आज उसे अवश्य ही मारूँगा, आज अपने पथ को निष्कंटक करूँगा, आज कर्ण के जयघोष से सारी पृथ्वी मुखरित होगी। उसी समय देखा, कुन्ती खड़ी है। उसने

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सर नीचा कर, व्यथित हृदय से, मुझे बतलाया कि मैं उसका पुत्र हूँ। क्षण भर में अन्धकार नष्ट हो गया, हृदय में हर्ष भी हुआ और विषाद भी। परन्तु मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा शिथिल हो गयी। मन्त्र-बद्ध सर्प के समान मैं स्तम्भित होकर रणभूमि की ओर चला। उसी समय एक ब्राह्मण ने आकर भिक्षा माँगी। और जब मैंने भिक्षा देना स्वीकार कर लिया तब उसने मेरे जीवन के रक्षक कवच और कुण्डल को माँग लिया। मैंने चुप-चाप कवच और कुण्डल दे दिये और उसी के साथ मेरे जीवन की अन्तिम आशा भी चली गयी। तो भी मेरी शक्ति प्रचंड थी। तुमने स्वयं मेरा प्रताप देखा। मेरी शक्ति कितनी दुर्धर्ष थी! परन्तु हाय, रथ का चक्र पृथ्वी में धँस गया। सिंह बन्धन में फँस गया। जन्मकाल से मैं यही व्यर्थता देखता आया हूँ मैं विधाता का शापरूप हूँ। मेरा जीवन कीर्तिहीन और निष्फल रहा। पुत्र होकर माता से त्यक्त हुआ, शिष्य होकर गुरु से तिरस्कृत हुआ। वीर होकर ख्याति नहीं प्राप्ति की, विजय का लाभ नहीं किया। आकाश के धूमकेतु की तरह प्रकाश पाकर व्यर्थ ही हुआ। भाई, तुम्हें अपने वंश का गर्व है, माता के स्नेह पर अधिकार है। तुमने सर्वत्र यश प्राप्त किया, सर्वत्र जय-प्राप्ति की। मैं ज्येष्ठ अवश्य हूँ, पर श्रेष्ठ नहीं! मेरा नाम लुप्त हो जायगा; परन्तु मुझे खेद नहीं है। तुमसे मेरा यही अनुरोध है कि मन में तुम मेरी लांछना, मेरी यह अपमान-व्यथा मत भूलना। भाई समझकर मन में स्थान देना। पृथ्वी पर जो नहीं हुआ वही स्वर्ग में होगा। हम लोग भाई भाई होकर रहेंगे। और कुछ नहीं। अब जाता हूँ, भाई, तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, तुम सदैव सुखी रहो।

—बा० पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बी० ए०।

२०—सोना और लोहा

ढाँचा

सोना—मूल्य, राजाओं से समादृत।

लोहा—कार्यकुशलता, बिना उसके किसी का निर्वाह नहीं।

सोना—एक तोले सोने से लगभग दस हज़ार तोले लोहा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

लोहा—सोने पर चोटें लगानेवाला, उसे शिक्षा देनेवाला।
सोना—लोहे से घृणा, दूर रहना।
लोहा—लोहे के सन्दूकों में लोहे के तालों से ही सोने की रक्षा।
सोना—लोहे से मनुष्यों का संहार (युद्ध में)।
लोहा—सोने के लिए चोरी, डाके, मनुष्य-वध आदि।
सोना—सुख देने की शक्ति, अधिकार आदि।
लोहा—सोना मनुष्यों की मति भ्रष्ट कर देता है; आलस्य। उसके लिए चिन्ता, कलह, निद्रा नाश आदि।

कहानी

अच्छी रीति से कहानी लिख सकना या कह सकना एक कला है। शिक्षा और अभ्यास के बिना कहानी कहने या लिखने में बहुत सी त्रुटियाँ हो सकती हैं; जैसे आवश्यक अंगों को छोड़ जाना, और स्मरण आने पर बाद में उन्हें अनुपयुक्त स्थानों पर कहना; बातों को बार-बार कहना, आवश्यक बातों का संकेत-मात्र कर देना तथा अनावश्यक बातों को विवरण के साथ कहना; कथा का स्पष्ट स्थापन न कर सकना, आदि। सबसे आवश्यक तो यह है कि कहानी की बातें मन में स्पष्ट हों, उनके क्रम में कोई सन्देह न हो, कहानी के भिन्न-भिन्न अङ्गों का सम्बन्ध स्वाभाविक हो, और उसकी भाषा सरल, सरस तथा स्वाभाविक हो।

इस अभ्यास में तुम्हें नई कहानियाँ बनाने को न दी जायँगी; किन्तु छोटी छोटी कहानियों के ढाँचे दिये जायँगे, जिनके द्वारा पूरी कहानियाँ लिख सकना तुम्हारे लिए सम्भव होगा। हमारा लक्ष्य तो यह है कि कम से कम संकेत मिलने पर तुम अधिक लिख सको, अर्थात् अपनी भावनाशक्ति को व्यक्त करने का प्रयोग कर सको।

तुम्हारी सहायता के लिए कुछ संकेत नीचे लिखे जाते हैं:—

(१) लिखने से पहले कहानी के सब अङ्ग स्पष्ट हो जाने चाहिए।

(२) ढाँचे में दी हुई कोई बात न छोड़ो, और जिस क्रम से संकेत दिये गये हैं उसी क्रम से लिखो।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(३) ढाँचे में दिये हुए संकेतों का स्वाभाविक सम्बन्ध जोड़ो, जिससे कहानी में ठोसपन आ जाय, वह बिखरी हुई न प्रतीत हो।

(४) जहाँ कहीं कथोपकथन या बातचीत का मौक़ा हो वहाँ कहानी के पात्रों से उपयुक्त बातचीत कराओ। परन्तु कहीं भी कहानी की स्वाभाविकता नष्ट न होने पाये।

(५) कहानी का अंत महत्व का हो; ऐसा प्रतीत हो कि अन्तिम शृङ्खला तक पहुँचने ही के लिए कहानी की अन्य शृङ्खलाएँ स्थापित हुई हैं। अन्तिम शृङ्खला से कुछ न कुछ मनोविनोद या आश्चर्य प्राप्त होना चाहिए।

(६) भाषा शुद्ध, सरल, व्याकरणानुमोदित होनी चाहिए।

(७) यदि ढाँचे में संकेत कम दिये हैं या कहानी अपूर्ण छोड़ दी गई है तो अपनी बुद्धि से काम लो; उसे पूर्ण करो।

उदाहरण के लिए ढाँचा

युवक की यात्रा। वृद्ध से भेंट। वट वृक्ष के पास दोनों का पार्थक्य। युवक का वृद्ध को ५०) धरोहर देना। वापसी। युवक का रुपया माँगना। वृद्ध की इन्कारी। युवक की नालिश। हाकिम का गवाह माँगना। वट वृक्ष के अतिरिक्त अन्य गवाह नहीं। वृक्ष को बुलाने के लिए युवक का भेजा जाना। देर तक न लौटना। हाकिम का वृद्ध से देरी का कारण पूछना। वृद्ध का पेड़ को बहुत दूर बतलाना। वृद्ध को वृक्ष-विषयक जानकारी का अनुमान। युवक का लौटना। हाकिम का युवक को डिग्री देना।

२१—उपर्युक्त ढाँचे से बनी पूरी कहानी

एक बार एक युवक कहीं जा रहा था। मार्ग में उसे एक वृद्ध मनुष्य मिला। दोनों बहुत दूर तक साथ गये। वृद्ध ने ऐसी बातें कीं कि युवक को उसकी हितैषिता पर पूर्ण विश्वास हो गया। उसे मार्ग के चोरों डाकुओं का हाल भी मिल गया। उसके पास ५०) थे, जिनकी रक्षा का कोई उपाय वह न सोच सका।

एक वट वृक्ष के पास जब दोनों के मार्ग भिन्न-भिन्न होने लगे तब

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

युवक ने कहा, "बाबा, क्या आप मेरी कुछ धरोहर अपने पास रख सकते हैं ?" वृद्ध ने उत्तर दिया, "हाँ, भैया, जैसी तुम्हारी रुचि हो। जहाँ मेरे घर में अपना निज का इतना रुपया रखा है, तुम्हारा धन भी पड़ा रहेगा। परन्तु यह तो बताओ तुम्हारी धरोहर क्या है ?" युवक ने थैली खोलकर ५०) गिन दिये और कहा "मैं कुछ दिनों में लौटूँगा तब अपना रुपया ले लूँगा।" वृद्ध ने पूरा विश्वास दिलाकर घर की राह ली। युवक भी आगे बढ़ा।

कुछ समय के पश्चात् युवक उसी मार्ग से लौटा। वृद्ध के घर पहुँचकर उसने उससे अपनी धरोहर माँगी।

वृद्ध—कैसी धरोहर, भैया ? मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं। क्या तुम ऐसे भोले भाले हो कि अपना धन एक अपरिचित व्यक्ति को सौंप दोगे। सीधे चले जाओ, नहीं तो इस धूर्तता का फल भोगोगे।

बेचारा युवक अवाक् रह गया। धन का धन गया, और डाट ऊपर से सही। क्या करता ! विवश हो अदालत की शरण लेनी पड़ी। पेशी के दिन अदालत में दोनों हाज़िर हुए।

हाकिम—तुम्हारी क्या नालिश है ?

युवक—हुज़ूर, इस बुड्ढे के पास मैंने ५०) की धरोहर रखी थी। अब माँगता हूँ तो यह रुपया देने से इन्कार करता है। कृपा करके मेरे रुपये मुझे दिलाये जायँ।

हा०—बुड्ढे, तुम इसकी धरोहर क्यों नहीं वापस करते ?

वृ०—हुज़ूर, मैं इस आदमी को जानता भी नहीं, और न कभी इसने मेरे पास कोई धरोहर रखी थी।

हा०—(युवक से) क्यों, तुम्हारी धरोहर का कोई गवाह भी है ?

यु०—हुज़ूर, एक वट वृक्ष के पास मैंने इस बुड्ढे को रुपया दिया था; वहाँ कोई मनुष्य नहीं था।

हाकिम बड़ा बुद्धिमान् था। मामला समझ गया। वह युवक से बोला, "देखो, तुम उसी वट वृक्ष को गवाही देने के लिए बुला लाओ।"

यु०—हुज़ूर, वृक्ष भी कहीं आ सकता है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हा०—अदालत का हुक्म है। तुम जाओ। यदि वृक्ष नहीं आयेगा तो दूसरा उपाय सोचा जायगा।

युवक चला गया और बहुत देर तक नहीं लौटा। तब हाकिम ने बुड्ढे से कहा।

हा०—क्यों जी, इतनी देर हो गई, वह युवक अभी तक क्यों नहीं लौटा ?

वृ०—हुजूर, वह वट वृक्ष यहाँ से कई मील है, अभी युवक को आते आते बहुत देर लगेगी।

कुछ देर में युवक आया। उसने हाकिम से कहा, "हजूर, वह वृक्ष नहीं आता।"

हा०—इसकी चिन्ता न करो। वह वृक्ष यहाँ आकर गवाही दे गया है कि इस बुड्ढे ने तुम्हारा रुपया लिया है। अगर इसने लिया न होता तो उस वृक्ष का ठीक पता कैसे जानता ? मैं आज्ञा देता हूँ कि बुड्ढा तुम्हारी धरोहर वापस करे।

युवक अपना रुपया पाकर प्रसन्न हुआ और हाकिम को धन्यवाद देकर अपने घर गया।

अभ्यास के लिए ढाँचे

२२—एकता में बल है

कृषक के कई पुत्र। परस्पर फूट और कलह। कृषक के उपदेश निष्फल। एक रस्सी तोड़ने के लिए प्रत्येक पुत्र को कृषक की आज्ञा। प्रत्येक असफल। रस्सी की लड़ें अलग करने पर सरलता से उनका टूट जाना। उपदेश।

२३—अंगूर खट्टे हैं

भूखी लोमड़ी। ऊँचे स्थान में अंगूरों का गुच्छा। लोमड़ी का कई बार कूदना। अंगूर न मिलना। लज्जा और बात बनाकर उसका जाना।

२४—भेड़िया और सारस

भेड़िये के गले में अटकी हड्डी। सारस से उसे निकालने की प्रार्थना।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सारस को भय। भेड़िए का इनाम के लिए वादा। सारस का हड्डी को खींच लेना। भेड़िए का उसका सिर न कुचल देना ही इनाम बतलाना।

२५

स्वच्छ जल, बारहसिंघे का पानी पीना। प्रतिबिम्ब। सींगों की प्रशंसा, पतली टाँगों की निन्दा। शिकारी और कुत्ते। बारह सिंघे का भागना। सींगों का पेड़ में फँसना। गिर जाना। मृत्यु समय के विचार।

२६

पेड़ पर चढ़ने में रामू की रुचि। माता का निषेध। दोपहर में माता की निद्रा। रामू का चुपके चले जाना। जामुन पर आधी दूर चढ़ जाना। डाल का चरचराना.......................[आगे स्वयम् पूरा करो]

२७

मोहन का कमरे में सोना। सुनसान। अँधेरा। भय का भाव। कमरे में किसी के होने का सन्देह। चुपके से सुनते रहना। लैम्प जलाने का इरादा। तब तक..[पूरा करो]

२८

चोर का घण्टी चुराना। पहाड़ पर ले जाना। सिंह द्वारा मृत्यु। बन्दर घण्टी बजाने लगे। शब्द सुनना। कारण न समझना। राक्षस का सन्देह। मनुष्यों को खा जाने का भय। राक्षस का भगाना आवश्यक। राजा की ओर से इनाम की घोषणा। एक वृद्धा स्त्री......................[पूरा करो]

निबन्धलेख के लिए कुछ विषय

वर्णनात्मक—हमारे स्कूल में पुरस्कार वितरण का समारोह, (कोई) मेला, हमारे स्कूल में हाकी (फुटबाल अथवा क्रिकेट) का मैच, फुटबाल (हाकी, क्रिकेट अथवा कबड्डी), काशी में गंगा का दृश्य, (कोई) नौका (रेल, मोटर अथवा बैलगाड़ी) यात्रा, भारत में यात्रा के साधनों का विकास,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भारत में रेल (अथवा मोटर) से सुविधाएँ, गाँव की हाट का दृश्य, गाँव का जीवन, वर्षा में एक दिन, छुट्टी में एक दिन, चाँदनी रात, मेरा आदर्श वीर, मेरा देश, मेरा स्कूल, मेरी प्रिय पुस्तक, मेरी कक्षा का सर्वश्रेष्ठ छात्र, मेरा गाँव, मेरा नगर, भारत की नदियाँ, शारदा नहर, हिमालय, भारत में ऋतुओं की सुषमा, भारत के वन, स्कूल में मेरा पहला दिन, मेरे स्कूल का पुस्तकालय, बालचर, मैंने ग्रीष्मावकाश कैसे बिताया, किसी मेला का वर्णन; काशी-विश्वनाथ जी का मन्दिर, ताजमहल, सँपेरा, खोंचेवाला, भारत के पालतू पशु, भारत के वन्य जीव, भारत के पक्षी, गाय, घोड़ा कुत्ता, हाथी, दिवाली, विजया-दशमी, होली, भैयादूज, हिन्दुओं के कुछ महत्त्वपूर्ण पर्व और उत्सव, कुछ अन्धविश्वास, गङ्गा, किसी ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण स्थान की यात्रा, मेरे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण दिवस, भूकम्प, रेलवे स्टेशन, मेरे नगर में हड़ताल का एक दिन।

परिचयात्मक—(जीवनचरित और आत्मकथा) तुलसीदास, सूरदास, गौतम बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, कबीर, अकबर, महाराणा प्रताप, शेरशाह, शिवाजी, छत्रसाल, रणजीतसिंह, महादेव गोविन्द रानडे, दादाभाई नौरोजी, जमशेदजी नसरवानजी ताता, रवीन्द्रनाथ, गोपाल कृष्ण गोखले, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीरप्रसाद द्विवेदी, प्रेमचन्द, रामचन्द्र शुक्ल।

छड़ी की आत्म-कहानी, लेखनी की रामकहानी, पैसा की कहानी, पुस्तक की आत्मकथा, मेरे स्कूल की घड़ी बोल उठी, रुपये ने क्या कहा, सुई की आत्मचर्चा, दीपक की आत्मश्लाघा।

वैज्ञानिक—आधुनिक आविष्कार रेलगाड़ी, वायुयान, चलचित्र, बिजली के आश्चर्यजनक कार्य, आधुनिक विज्ञान की उपयोगिता, रेडियो, बेतार का तार, वायु पर विजय, समुद्र पर विजय, ग्रामोफोन, टेलीफ़ोन, बाष्प की महिमा, वैज्ञानिक आविष्कारों से संसार की उन्नति, वैज्ञानिक आविष्कारों से संसार का अहित।

विचारात्मक—पराधीनता से हानियाँ, स्वतन्त्रता के सुख, समय का सदुपयोग, प्रातःकाल उठना, मितव्ययता, मित्रता, निर्धनता के कुफल, टेव का

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

चरित्र पर प्रभाव, चरित्रबल, सदाचार, देशाटन, प्रतिस्पर्धा, उदारता, स्वच्छता, पशुओं के प्रति निर्दयता, नागरिक जीवन के सुख, नगर-निवास में असुविधायें, पुस्तकालय, स्त्रीशिक्षा, यात्रा से लाभ, आत्मनिर्भरता, देशभक्ति, वर्षा की उपयोगिता, समाचारपत्रों से लाभ, एकान्त वास के सुख, व्यायाम से लाभ, विद्यार्थी-जीवन के उद्देश्य, जीवन में आदर्शों का महत्त्व, आनन्द के साधन, स्कूलों में खेल (अथवा सैनिक शिक्षा) अनिवार्य होनी चाहिए, यात्रा के आधुनिक साधन और उनका भारतीय जीवन पर प्रभाव, मुझे एक लाख रुपये मिल जायँ तो मैं क्या करूँ, मेरे जीवन के आदर्श, आधुनिक शिक्षा के गुण-दोष, पुस्तकों का आनन्द, यात्रा ज्ञान-वृद्धि का साधन, अवकाश कैसे बिताना चाहिए, भूगोल पढ़ने की उपयोगिता, स्कूल छोड़ने पर मैं क्या करूँगा, मेरी सब से उत्कट इच्छा, सिनेमा का प्रभाव, स्कूल में प्रतियोगिता, सभा की उपयोगिता, प्रकृति निरीक्षण, मादक पदार्थों से हानि, दूसरे धर्मवालों के प्रति व्यवहार, सामाजिक उन्नति के साधन, व्यायाम क्यों करना चाहिए, माता-पिता के प्रति कर्तव्य।

तार्किक—नगर एवं ग्राम-निवास की तुलना, लेखनी और खड्ग की सापेक्ष्य श्रेष्ठता, भारत में सहशिक्षा, घर और छात्रावास की तुलना, ग्रीष्म और वर्षा की मानव-हित की दृष्टि से तुलना, समय का सदुपयोग और दुरुपयोग, किसी बड़े नगर का जीवन, सुविधाएँ और कष्ट, क्या हमारा वर्तमान जीवन हमारे पुरुषाओं के जीवन से अधिक सुखद है ? क्या खेल छात्रों के लिए अनिवार्य होने चाहिए।

उद्धरणात्मक—पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं, जैसी बहै बयारि पीठ तब तैसी दीजै, पैये कहाँ ते अटारी अटा, जिनके लिखी भाल में टूटी सी छानी, वीर योग्या वसुन्धरा, जैसी सङ्गति वैसी बुद्धि, सङ्गति ही गुन उपजैं संगति ही गुन जायँ, जैसी नीयत वैसी बरकत, जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये, प्रभुता पाय काहि मद नाहीं, एक पन्थ दो काज।

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अध्याय ७

पत्र-लेखन (Letter Writing)

पत्र में कोई व्यक्ति किसी दूसरे को अपने और उससे सम्बन्ध रखनेवाली बातों का वर्णन किया करता है। कुछ पत्र ऐसे होते है जो अपने सम्बन्धियों, मित्रों या परिचितों को लिखे जाते हैं; और कुछ सरकारी या अन्य पदाधिकारियों अथवा व्यवसाय आदि से सम्बन्ध रखनेवालों को। पहले प्रकार के पत्रों को **निजी** और दूसरे प्रकारवालों को **कामकाजी** कहते हैं।

निजी पत्रों में लेखक उन बातों का उल्लेख करता है जिनका उससे किसी प्रकार सन्बन्ध रहता है जिसे वह पत्र लिखता है। इसमें सभी तरह की बातों के लिखने की स्वसन्त्रता होती है। परन्तु **कामकाजी** पत्रों में प्रचलित नियमों और प्रथा को रक्षा करते हुए केवल मतलब की बातें लिखी जाती हैं।

पत्र लिखने के दो ढंग हिन्दी में प्रचलित हैं—उन्हें **पुरानी** और **नयी** प्रथा कहते हैं। **पुरानी प्रथा** में पत्र-प्रेषक का स्थान, मिति, प्रशास्त आदि नयी प्रथा में लिखे पत्रों से भिन्न प्रकार से लिखी जाती है। पुराने लोगों के निजी और पुराने ढंग के व्यवसायियों के पत्रों में ही अब पुरानी प्रथा का पालन होता है।

परन्तु अँगरेज़ी की शिक्षा के प्रचार और हिन्दी की शिक्षा-प्रणाली पर भी उसके बढ़ते हुए प्रभाव के कारण अब अँगरेजी ढंग के अनुकरण पर पत्र लिखने की चाल अधिक बढ़ रही है। इस प्रणाली में निजी और सब प्रकार के कारबारी पत्र लिखे जाते हैं।

हर पत्र में ये बातें किसी न क़िसी प्रकार कहीं न कहीं लिखी जाती हैं— (१) लेखक का नाम, (२) उसका पता, (३) पत्र लिखने की मिति या तारीख, दिन, महीना, संवत् या सन् आदि, (४) प्रशस्ति, (५) हाल तथा (६) जिसको पत्र लिखा जाता है उसका नाम और पता। इनके लिखने की रीति दोनों प्रथाओं में है।

नीचे उक्त दोनों प्रणालियों से लिखे जानेवाले पत्रों के नियम और उदाहरण दिये जाते हैं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पुरानी प्रथा के पत्र

(१) पत्र प्रारम्भ करने के पहले, काग़ज़ के सिरे से कुछ नीचे, उसके बीचोबीच, 'श्रीगणेशायनमः', 'श्रीहरिः, 'ॐ' आदि मंगलवाचक शब्द या वाक्यांश लिखने की रीति है।

(२) प्रशस्ति के आदि में बड़ों को पत्र लिखते समय 'सिद्धि' और बराबर वालों या छोटों के लिए 'स्वस्ति' लिखा जाता है। इसके बाद 'श्री' शब्द का प्रयोग किया जाता है। तत्पश्चात् कोई अङ्क लिखा जाता है। गुरु, माता, पिता और इन-जैसे बड़ों के लिए '६', स्वामी के लिए '५', शत्रु के लिए '४', मित्र के लिए '३', नौकर के लिए '२', तथा स्त्री, पुत्र, शिष्य, अनुज आदि छोटों के लिए '१' का अङ्क लिखना उचित है। संन्यासी, धर्माचार्य, राजा आदि के लिए '१०८' का अङ्क लिखने का रिवाज है। परन्तु 'सिद्धि श्री' या 'स्वस्ति श्री' के पश्चात् अङ्क का प्रयोग बहुत आवश्यक नहीं। इसके अनन्तर संबन्ध, पद आदि के सूचक शब्द के प्रयोग के पहले कुछ उपयुक्त विशेषण लगा दिये जाते हैं। जैसे, बड़ों को 'सर्व उपमा योग्य, सकल गुण-निधान, सर्वोपरि विराजमान' आदि; बराबरवालों को 'परम प्रिय, अभिन्नहृदय' आदि; और छोटों को प्रेमपात्र, चिरजीवि' आदि।

इसके बाद अभिवादन-सूचक शब्द लिखा जाता है। जैसे, बड़ों को, 'प्रणाम, दण्डवत, चरणस्पर्श' आदि, बराबरवालों को 'नमस्कार, राम-राम, जै गोपाल' आदि और छोटों को 'आशीर्वाद, तुम्हारा कल्याण हो।

तदनन्तर अपना कुशल-क्षेम लिखकर जिसे पत्र लिखा जाता है उसके कल्याण की आशा या कामना किसी देवता के द्वारा प्रकट की जाती है।

तब पत्र का विषय लिखा जाता है और अन्त में मिती दी जाती है। उक्त बातें नीचे दिये हुए कुछ नमूनों में देखने से अधिक स्पष्ट हो सकेंगी—

(१) पिता को

सिद्धि श्री ६ अनेक उपमा योग्य, स्नेहसागर, प्रयाग शुभस्थान विद्यमान श्री पिताजी की सेवा में आज्ञाकारी देवदत्त के प्रणाम-समूह पहुँचे। मैं आपके

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आशीर्वाद से सकुशल हूँ; आपके कुशल-वृत्त का श्रीनारायण से आकांक्षी रहता हूँ। वृत्त यह है कि मैं आपके भेजे हुए ५०) रुपये पा गया। आपके आज्ञानुसार घर आते समय इनकी चाँदी लेता आऊँगा। इति शुभम्। मिति फागुन बदी ७ संवत् १९८७।

(२) बड़े भाई को।

सिद्धि श्री चुनार शुभस्थान विराजमान मान्यवर भाईजी को अयोध्या से सेवक रुद्रदत्त का चरण छूना स्वीकार हो। यहाँ सब कल्याण है। आपके कुशल का श्री रामजी से सदा अभिलाषी रहता हूँ। बहुत दिन से आपका कृपा-पत्र नहीं आया। इससे चित्त में चिंता है। यदि मुझसे कोई अपराध हुआ हो तो उसे क्षमा करके कुशल-वृत्त शीघ्र लिखिए। इति शुभम्। मिति आषाढ़ सुदी ३, संवत १९९२।

(३) प्रतिष्ठा में बड़े को।

सिद्धि श्री हरद्वार शुभस्थान सर्वगुणालंकृत मान्यवर पंडित ईश्वरप्रसाद को अजमेर से आनन्दीदास का नमस्ते पहुँचे। दोनों ओर परमात्मा कुशल करे। एक विषय में आपको कुछ कष्ट देता हूँ; आशा है आप कृपा करके मेरे लिए उसका उद्योग करेंगे। मेरा नौकर रामदीन, जिसे आप अच्छी तरह जानते हैं, घर से एक कपड़ों का सन्दूक चुराकर आज पाँच दिन हुए भाग गया है। यदि आपको वह कहीं दिखलायी पड़े तो कृपया उसे गिरफ्तार करके पुलिस के सुपुर्द कर दीजिए। और मुझे भी सूचित कीजिएगा। इति। मिति आश्विन बदी ५, संवत् १९९३।

(४) पुत्र को।

स्वस्ति श्री १ चिरजीवि प्रिय वत्स मथुराप्रसाद को इन्द्रदत्त का अनेक आशीर्वाद। ईश्वर तुम्हें सर्वदा सुखी रखे जिससे हमलोगों को आनन्द हो। तुम्हारी माता बहुत दिनों से तुम्हें देखना चाहती हैं। इससे तुम यथासमय शीघ्र चले आओ। इति। मिति, चैत सुदि ७, संवत १९८०।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(५) प्रतिष्ठा में छोटे को।

स्वस्ति श्री काशी शुभस्थान अनेक उपमा योग्य श्रीबाबू बैजनाथसिंह जी को छपरा से प्रद्युम्नकृष्ण का जय गोपाल बाँचिएगा। आगे मेरे पिताजी रुद्राभरण बनवाना चाहते हैं। इसलिए कृपा करके रुद्राक्ष के एक सहस्र बड़े दाने लेकर पारसल द्वारा मेरे पास भेज दीजिए और जो व्यय हो उसका ब्योरा भी लिखिए। मै उसका दाम तुरन्त भेज दूँगा और इस कृपा से बाधित हूँगा। इति शुभ। मिति जेठ बदि ६, संवत् १६८३।

(६) दूकानदार को।

स्वस्ति श्री स्थान बम्बई श्री सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास को कानपुर से सीतानाथ का यथायोग्य। कल १० पुस्तकें भेजने के लिए मैंने आपको लिखा है। भूल से एक वाल्मीकि रामायण नामक पुस्तक लिख गई है। इसलिए उसे छोड़कर, शेष ६ पुस्तकें शीघ्र भेजिएगा। इति। मिति सावन सुदि १०, संवत् १६६३।

सूचना—लिफाफे या कार्ड पर जिसको पत्र लिखा जाता है उसका पता लिखने का ढंग वही है जो आगे वर्णित नयी प्रथा के पत्रों में रहता है। उसे वहीं देखना और समझना चाहिए।

नयी प्रथा के पत्र।

(१) नयी प्रथा के पत्रों में भी कुछ लोग आरंभ में मंगलसूचक शब्दों—जैसे, श्री, श्रीहरिः, श्रीहरिः शरणम्, श्रीरामो जयति, श्रीसरस्वत्यै नमः आदि—का प्रयोग पत्र के बीच में सबसे ऊपर करते हैं। कुछ लोग इनकी आवश्यकता नहीं समझते।

परन्तु प्रार्थना-पत्रों या सरकारी वा संस्थाओं के काम के पत्रों में इन शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता।

(२) फिर पत्र के दाहिने सिरे के पास लेखक अपने स्थान का नाम लिखता है। यह नाम इस तरह लिखा जाय कि उससे लेखक का पूरा पता ज्ञात हो सके। जैसे, यदि किसी शहर से पत्र लिखा जाय तो मकान का नंबर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मुहल्ले का और फिर शहर का नाम; और यदि किसी गाँव से लिखा जाय तो उसका नाम, उसका डाकघर और फिर ज़िले का नाम। ये एक-एक नाम अलग-अलग पंक्तियों में लिखे जायँ। प्रत्येक नाम के बाद अल्पविराम रहना उचित है।

(३) पत्र लिखने का स्थान लिख चुकने पर उसके लिखने की तिथि लिखी जाती है। तिथि, महीना और साल एक दूसरे से अल्पविराम चिह्न द्वारा अलग किये जाते है। तिथि चाहे देशी वर्षगणना के अनुसार लिखी जाय, चाहे अँगरेज़ी के अनुसार। परन्तु खिचड़ी न हो।

सूचना—प्रार्थना-पत्रों में पत्र लिखने का स्थान और तारीख, पत्र की समाप्ति के बाद, नीचे लिखी जाती हैं। परन्तु जो लोग ऐसे कागज़ में प्रार्थना पत्र लिखते हैं जिनमें उनका पता ऊपर छपा होता है और पत्र लिखने की तिथि के लिए वहीं स्थान निर्दिष्ट होता है वे ऐसा नहीं करते।

(४) इसके पश्चात्, पत्र की बाईं ओर, तिथि की पंक्ति के नीचे सम्बोधन शब्द लिखे जाते हैं। सम्बोधन शब्दों का निश्चय संबोधित व्यक्ति के सम्बन्ध, पद या प्रतिष्ठा आदि के अनुसार किया जाता है। जैसे, मान्यवर पिताजी, परम श्रद्धेय गुरुवर्य, पूज्यपाद भ्राताजी, प्रिय बन्धु, अभिन्नहृदय मित्र आदि। बराबरवालों, घनिष्ठ सबंध वाले लोगों या छोटों का सम्बोधन करते समय संबोधन शब्द के बाद उनके नाम का कोई अंश भी बहुधा जोड़ दिया जाता है। जैसे, परमप्रिय रमेश, प्रियवर मुन्नू, प्रिय शर्माजी आदि।

(५) संबोधन के बाद, जहाँ उसका अन्तिम अक्षर समाप्त होता हो उसके नीचे से अभिवादन-सूचक शब्द प्रारंभ किया जाता है। अभिवादन के शब्द—प्रणाम, दण्डवत्, नमस्कार, आशीर्वाद आदि—यथोचित रूप में प्रयुक्त होते हैं।

सूचना—परन्तु व्यावसायिक, राजकीय या अन्य कामकाजी पत्रों में अभिवादन-सूचक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता।

(६) अभिवादन के अन्तिम अक्षर के नीचे से कभी-कभी कुशल-सूचना

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

और कुशल-कामना की जाती है। जैसे, अत्र कुशलं तत्रास्तु; यहाँ कुशल है, आप भी, आशा है, सानन्द होंगे आदि।

परन्तु अब इसका प्रचार लुप्त-सा हो रहा है। व्यावसायिक, सरकारी या प्रार्थनापत्रों में तथा नये ढ़ंग के निमन्त्रणपत्रों में ये शब्द स्थान पा ही नहीं सकते।

(७) इसके बाद (अथवा प्रायः अभिवादन या कहीं-कहीं सम्बोधन शब्द के नीचे से ही) पत्र का मुख्य विषय लिखा जाता है। इसके लिखने में हरेक बात को अलग-अलग अनुच्छेदों में लिखना चाहिए। जहाँ तक हो सके सरलता और निष्कपटता के साथ अपने विचार पत्र में लिखे जायँ, निरर्थक या विस्तार की बातें लिखने से पत्र अच्छा नहीं रह जाता।

(८) पत्र का विषय समाप्त कर चुकने पर सम्बोधित व्यक्ति से लेखक के सम्बन्ध को सूचित करनेवाला शब्द, जहाँ पत्र का विषय समाप्त होता है उसके नीचे दाहिनी ओर, ऊपर लिखे स्थान और तिथि के ठीक सीध में लिखा जाता है। जैसे, भवदीय आज्ञाकारी पुत्र, आपका कृपाकांक्षी, तुम्हारा स्नेही, तुम्हारा ही, आप का अनुचर, आदि। सूचना-पत्र, निमन्त्रणपत्र आदि में 'निवेदक' और व्यावसायिक पत्रों या साधारण परिचय वालों को लिखे गये पत्रों में 'आपका' या 'भवदीय' ही पर्याप्त होता है। इन शब्दों के बाद अल्प-विराम का चिह्न लगाया जाता है।

(९) इसके बाद पत्रलेखक का नाम होना चाहिए। अधिक घनिष्ठ लोगों के पत्र में नाम का पूर्वार्द्ध ही बहुधा पर्याप्त होता है। परन्तु व्यावसायिक, सरकारी आदि पत्रों में पूरा नाम लिखना चाहिये। ऐसे पत्रों में बहुधा नाम के नीचे लेखक को अपना पद भी लिखना उचित होता है।

प्रार्थनापत्रों में पत्र के नीचे लिखे नामादि के ठीक सीध में बाईं ओर स्थान का नाम और उसके आगे अल्प-विराम देकर नीचे तिथि लिखी जाती है।

(१०) प्रायः पत्र डाक से या किसी आदमी के द्वारा भेजे जाते हैं। वे ठीक स्थान पर ही पहुँचें—इसलिए आवश्यक है कि पोस्टकार्ड या लिफ़ाफे पर जिसको पत्र लिखा गया हो उसका पता ठीक ढंग से लिखा जाय।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पोस्टकार्ड में पता के लिए निर्दिष्ट स्थान में या लिफ़ाफे पर ऊपर कुछ भाग छोड़कर पता लिखना चाहिये। पहले नाम, फिर उसके बाद, यदि हों तो उपाधियाँ लिखी जायँ। दूसरी पंक्ति में उसके गाँव या मकान के नम्बर सहित मुहल्ले का नाम लिखा जाय। फिर उसके बाद अल्प-विराम लगाकर यदि गाँव में डाकघर न हो तो उसके नीचे डाकखाना लिखना चाहिये। इसके बाद भी अल्प-विराम रहे। तब जिले या शहर का नाम लिखा जाय। यदि पत्र दूसरे प्रान्त या देश में भेजना हो तो सबसे नीचे, बहुधा कोष्ठक में, उसका भी नाम लिख दिया जाता है।

लिफ़ाफे में बाईं ओर, नीचे कोने में, प्रायः पत्र-प्रेषक भी अपना नाम और पता लिख देते हैं। इससे एक सुविधा होती है। यदि किसी कारण से जिसको पत्र लिखा जाता है उसको नहीं मिलता तो डाकखानेवाले उसे प्रेषक के पास लिफ़ाफा खोले बिना ही, लौटा देते हैं।

सूचना—व्यावसायिक, सरकारी, अर्ध-सरकारी तथा अन्य शिष्टाचारयुक्त पत्रों में पता कभी-कभी सम्बोधन शब्दों के ऊपर और स्थान, तिथि आदि के नीचे, बाईं ओर, किनारे से मिला हुआ अथवा पत्र के निचे, बाईं ओर किनारे से मिला हुआ भी लिखा जाता है। लिफ़ाफ़े पर तो वह रहता ही है।

नीचे दिये हुए पत्रों के कुछ नमूनों को पढ़कर उपर्युक्त नियमों का पालन करना सीखा जा सकता है। इन्हें ध्यानपूर्वक देखना चाहिए।

कुछ पत्रों के नमूने

१—पिता को

श्रीगणेशाय नमः

५, जगतगंज
बनारस कैंट,
७ दिसंबर, सन् १९३५

आदरणीय पिताजी,

सादर चरणस्पर्श

आपका कृपापत्र मिला। आप किसी प्रकार की चिन्ता न

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कीजिये। अब आपको यहाँ आने में शीघ्रता करने की विशेष आवश्यकता नहीं है। कारण, भैया का ज्वर छूट गया है और वे दो दिन हुए पथ्य पा चुके हैं। उनको कमजोरी अवश्य है; परन्तु भूख खुल रही है। जिससे आशा है, वे थोड़े ही दिनों में स्वस्थ हो जायँगे। चिरंजीवि रामू आपको प्रणाम कह रहा है। जब आप आइयेगा तब उसके लिए खिलौने लाना न भूलियेगा। शेष आपकी दया से कुशल है।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,
दिनेश

(लिफ़ाफ़े पर पता)

श्रीमान् बाबू गोविन्द प्रसाद सिंह,
माधवनिवास,
२७, नयागंज,
कानपुर।

२—शिष्य को

श्री श्रीहरिः शरणम्

बादशाही मंडी,
इलाहाबाद
भाद्रपद ११, १९९३ वि०

चिरंजीवि श्यामलाल,
आयुष्मान्

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। तुम्हें क्या हो गया जो मुझसे मिले बिना ही घर चले गये ? मैं तुम्हारी आर्थिक स्थिति जानता हूँ। परन्तु तुम्हें इस प्रकार हताश होकर पढ़ना छोड़ने का विचार मन में आने ही न देना चाहिए। तुम इस पत्र को पाते ही चले आओ। यहाँ तुम्हारे व्यय, रहने आदि का उचित प्रबन्ध हो जायगा। आज ही मेरे पास एक रईस किसी सच्चरित्र और परिश्रमी 'ट्यूटर' की खोज में आये थे। मैंने उनसे तुम्हारे विषय में कह दिया

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

है। वे तुम्हारा पूरा व्यय देना स्वीकार करते हैं। अस्तु, अब आशा है तुम्हारा अध्ययन निर्विघ्न समाप्त हो सकेगा।

(पता)
चि० रामेश्वरनाथ द्विवेदी, गाँव—जमुनीपुर, डाकघर—हनुमानगंज- ज़िला—इलाहाबाद।

तुम्हारा शुभैषी,
कल्याणचन्द्र

६—मित्र को

ॐ

डी. ए. वी. हाई स्कूल,
लखनऊ
अप्रैल १५, १६३३

परम प्रिय राघव,
नमस्ते

तुम्हारा पत्र आया आज घर से लौटने पर, मिला। मुझे इधर कई दिन तक स्कूल से छुट्टी नहीं मिल सकती। इसका कारण यह है कि आजकल हमारे कई सहयोगी अध्यापक किसी न किसी काम से छुट्टी पर हैं। हेडमास्टर साहब ने कहा है कि एक सप्ताह के पश्चात् तुम जा सकते हो। इससे मैं आगामी २३ तारीख को साढ़े पाँच बजे वाली सवारी गाड़ी से तुम्हारे यहाँ के लिए प्रस्थान कर सकूँगा। आशा है तब तक मेरे बिना ही तुम उत्सव की तैयारी कर रखोगे। मैं पहुँचकर शेष सब व्यवस्था कर लूँगा। शेष मिलने पर।

तुम्हारा अभिन्न,
श्यामसुन्दर

(पता) बाबु राघव प्रसाद कपूर, गाँव और पो० आ० मोहनलालगंज, जिला लखनऊ

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

व्यावसायिक पत्र

(क)

नन्दकिशोर ब्रदर्स
पुस्तक प्रकाशक और विक्रेता

चौक,
बनारस सिटी,
१२ जुलाई, सन् १६२६

संख्या—५२६

श्रीयुत मैनेजर,
इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स,
हिवेट रोड, इलाहाबाद।

प्रिय महाशय,

इस पत्र के साथ पाँच तिरंगे और बारह रेखा-चित्र भेजे जाते हैं। उनके 'ब्लाक' यथासंम्भव शीघ्र बनाकर भेजने की कृपा कीजिए। उनकी तैयारी का 'बिल' पाने पर हम आपको सब रुपया तुरन्त भेज देंगे।

भवदीय-
नन्दकिशोर भार्गव,
अध्यक्ष।

सूचना—लिफ़ाफ़ों पर वही पता लिखना होगा जो ऊपर ब्लाक वर्क्स का लिखा गया है।

(ख)

श्रीतुलसी स्मारक मंडल,

पो० राजापुर
जि० बाँदा,
१४ जून, सन् १६३६

श्रीयुत सम्पादक,
दैनिक भारत,
इलाहाबाद

महाशय,

स्थानीय श्रीतुलसी-स्मारक की रक्षा के लिए गोस्वामी तुलसीदास के प्रेमियों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए हमारे मण्डल ने अपने

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पिछले अधिवेशन में जिस 'अपील' को स्वीकार किया था उसकी एक प्रति आपकी सेवा में अलग डाक से भेजी जाती है। आशा है उसे आप अपने बहुमूल्य पत्र में उचित स्थान पर प्रकाशित कीजियेगा। यह भी निवेदन है कि आप इस विषय में अपनी सम्पादकीय टिप्पणी द्वारा भी इस महत्त्वपूर्ण कार्य की उपयोगिता और इस पर जनता का कर्तव्य बतलाकर हमारी सहायता कीजिये।

भवदीय,
रामप्रसाद रुचौलिहा,
मन्त्री

प्रार्थना पत्र

श्रीयुत हेडमास्टर साहेब,
हिन्दू हाई स्कूल,
रायबरेली।

महाशय,

मेरे भतीजे का विवाह ता० ५ मई, सन् १६३५ को है। उसमें मेरा पुत्र जगन्नाथ प्रसाद, जो आपके स्कूल के नवें दर्जे में पढ़ता है, शरीक होगा। आशा है कि आप कृपा करके उसे ४ मई से १० तक एक सप्ताह की छुट्टी दे देंगे।

बछरावाँ, ज़िला रायबरेली।
१ मई, १६३५ ई०

प्रार्थी,
रघुनाथ प्रसाद

सरकारी पत्र

प्रेषक
खानबहादुर एस. यू. खाँ, बी. ए., एल. टी.,
मन्त्री, हाई स्कूल एण्ड इंटरमीजिएट एजूकेशन, यू. पी.
इलाहाबाद,
१५ अगस्त, १६३५

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्रीयुत मैनेजर,
गौतम ब्रदर्स एण्ड कंपनी,
पुस्तक प्रकाशक,
मेस्टन रोड,
कानपुर

महाशय,

आपकी 'हिन्दी मुक्तावली' भाग १, २, ३, और ४ को पाठ्य-क्रम समिति ने विचारार्थ स्वीकार कर लिया है। अतएव उसके प्रत्येक भाग की पाँच-पाँच प्रति समालोचकों के पास भेजने के लिए मुझे शीघ्र भेज दीजिये।

भवदीय
(हस्ताक्षर) एस० यू० खाँ
मन्त्री

निमन्त्रण पत्र

(१) उत्सव

(पहला पृष्ठ)

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

—गीता

श्रीयुत पण्डित रामनारायण मिश्र जी,

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हमलोगों ने आनन्दकन्द भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जी की जयन्ती रविवार, भाद्र कृष्णाष्टमी संवत् १९९३ वै०, तदनुसार तारीख ९ अगस्त, १९३६ ई० को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मनाने का निश्चय किया है। अतएव आपसे प्रार्थना है कि अपने इष्ट-मित्रों के साथ उत्सव में सम्मिलित होकर हम लोगों को प्रोत्साहन देने की कृपा करें।

भवदीय,

काशी, तिथि, भाद्र कृष्ण तृतीया १९९३ वै०

छात्रमण्डल,
क्वीन्स कालेज होस्टल,
बनारस कैण्ट

(दूसरा पृष्ठ)

कार्यक्रम

सायङ्काल ७॥ बजे से ८ बजे तक—ईश प्रार्थना।

८ से १० बजे तक श्रीमान रङ्गस्वामी आयङ्गर, प्रिंसिपल, आर्ट्स कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय काशी; श्रीमान् वी० संजीवराव, पिंसिपल, क्वींस कालेज, काशी तथा अन्य महानुभावों के व्याख्यान।

१० बजे से १२ बजे तक गायन।

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी की झाँकी का दर्शन, तदनन्तर प्रसाद-वितरण।

(लिफ़ाफ़े पर पता)

सेवा में
श्रीयुत पण्डित रामनारायण मिश्र, बी० ए०,
हेडमास्टर,
सेंट्रल हिन्दू स्कूल,
बनारस

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(२) सूचना पत्र

नागरीप्रचारिणी सभा

सं० २५७ बनारस सिटी, १२--८--१९३६

प्रिय महाशय,

प्रान्तीय लाट, हिज़ एक्सेलेंसी सर हेरी ग्रेहम हेग सोमवार तारीख १७ अगस्त को प्रातःकाल साढ़े आठ बजे सभा-भवन में पधारने की कृपा करेंगे। अतः आपका भी रहना उस समय आवश्यक है।

कृपा करके उनके आने के समय से आध घंटा पहले सभा-भवन में पधारने का कष्ट कीजिए।

भवदीय,
कृष्णदेव प्रसाद गौड़
प्रधान मन्त्री

पुनश्च—

यदि आप आने का निश्चय करें तो कृपया सूचित कीजिए
कृ० प्र० गौ०

श्रीमान् पंडित चन्द्रमौलि सुकुल, एम. ए., दुर्गाकुण्ड, काशी

अभ्यास ८

अपठित (Unseen)

अपठित अवतरण से सम्बन्ध रखने वाले प्रश्नों का उत्तर किस प्रकार देना चाहिए--इस विषय में कुछ आवश्यक बातों का ध्यान में रखना उपयोगी होगा। अपठित अवतरण को समझने के लिए विद्यार्थी को पाठ्य पुस्तकों के

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अतिरिक्त बाहरी पुस्तकों का स्वाध्याय अनिवार्य है। इस प्रकार के लगातार अभ्यास से अपठित अवतरण का बोध आसानी से हो जाता है।

जब अभ्यास के लिए अपठित अवतरण दिया जाय तब उसको आदि से लेकर अन्त तक खूब ध्यान से पढ़ा जावे। ऐसा करते समय ध्यान प्रत्येक शब्द पर रहे, न कि केवल रेखांकित अंशों पर ही। इस प्रकार यह समझने का प्रयास किया जाय कि अवतरण में किस विषय का उल्लेख है। जब तक ऐसा न हो जाय तब तक आवश्यकतानुसार अवतरण को कई बार भी पढ़ा जा सकता है। पूरे अवतरण का अर्थ और भाव अच्छी तरह समझ में आ जाने पर ही उसके रखांकित अंश पर विचार करना चाहिए।

इस प्रकार रेखांकित अंश का तात्पर्य जान लेने पर उसका अर्थ लिखना चाहिए। ऐसा करते सयय उसका सरलार्थ न किया जाय, अर्थात् उसके कठिन शब्दों के स्थान पर उनके सरल पर्याय ही न दिये जायँ; प्रत्युत उसका सम्पूर्ण संघटन तथा कथन का ढंग ही बदल दिया जाय। दूसरे शब्दों में, उस उक्ति के पूरे आशय को अपने ढंग से अच्छी तरह व्यक्त किया जाय, और जहाँ तक सम्भव हो सरल शब्दों में तथा स्पष्ट रीति से ऐसा किया जाय। लेकिन यह अर्थ अनावश्यक लम्बा न होने पाये। दिये हुए अंश की अन्तर्कथा अलंकार अथवा गूढ़ विचारावलि को अर्थ करते समय पूरी तरह से स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

यह ध्यान रहे कि अर्थ केवल अभीष्ट अंश का रहे। उसके इधर-उधर के शब्दों को साथ मिला लेने से जो तात्पर्य निकलता हो उसको बतलाना निरर्थक है। इस प्रकार जो अर्थ दिया जाय वह ऐसा हो कि मूल अंश के स्थान पर रखा जा सके। और तब उसे पढ़ने से पूरे प्रसंग में एक भी शब्द निरर्थक न हो और न वाक्य-संघटन में ही दोष हो।

उद्धृत अवतरण से सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नों का उत्तर देते समय अवतरण की भाषा का ही प्रयोग कदापि न होना चाहिए। उस उत्तर का भाव पूर्णतया अवतरण से ही लिया जाय; परन्तु उसे व्यक्त अपने स्वतंत्र ढंग से, अपनी भाषा में, किया जाय। ऐसे उत्तर में व्यर्थ विस्तार न हो, वह जहाँ तक हो सके संक्षिप्त हो और उसमें विषयान्तर न हो। ऐसा करते समय

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यह कभी न भूलना चाहिए कि अवतरण सम्बन्धी प्रश्नों का एकमात्र उद्देश्य विषय बतलाकर उसको विद्यार्थी के अपने ढंग से प्रकट करने की परीक्षा करना होता है।

अवतरण का सारांश लिखने के पहले उसको चार, पाँच बार मनोयोगपूर्वक पढ़ लेना चाहिए। ऐसा करते समय अवतरण के मुख्य विचार को ग्रहण करने का प्रयत्न होना चाहिए। इसके अनन्तर गौण विचारों को एकदम छोड़कर मुख्य विचार तथा उसके सहायक विचार या विचारों को सरल और छोटे छोटे वाक्यों में भाव के क्रमिक विकास का ध्यान रखते हुए लिखा जाय।

बहुधा किसी अवतरण में एक ही प्रधान विचार विकसित होता है। इससे अवतरण का सारांश लिखते समय उसके संक्षिप्त होने के कारण भय से अपनी ओर तत्सम्बन्धी विचारों का समावेश अनुचित है।

इस प्रकार सारांश में, (१) मुख्य विचार ही एक दूसरे से पूर्णतया सम्बद्ध वाक्यों द्वारा कहा जाय; (२) अन्तर्कथा आलंकारिक प्रयोग आदि को स्थान न दिया जाय; (३) भाषा के अलंकृत रूप, कथोपकथन, प्रश्नात्मक वाक्य आदि को सरल रीति से कहा जाय; (४) अवतरण की भाषा और शैली से स्वतन्त्र अपनी भाषा और शैली का प्रयोग हो; (५) और यथासम्भव संक्षिप्त विषय से सम्बद्ध स्पष्ट विचार, सरल भाषा में व्यक्त हों।

और उद्धृत अवतरण में शब्दों के व्याकरण सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर उनके रूप को ही देखकर न देना चाहिये, परन्तु उनके प्रसंगानुकूल अर्थ की दृष्टि से ही उनके पारस्परिक सम्बन्ध के अनुसार ही उन पर व्याकरण विषयक विचार करना उचित है।

इन परामर्शों को ध्यान में रखकर नीचे उद्धृत अवतरणों पर दिये हुए प्रश्नों के उत्तर लिखो।

[१]

इस संसार में धन ही सब कुछ नहीं है। धन की पूजा तो बहुत कम जगहों में होती देखी गयी है। संसार का इतिहास उठाकर देखिये और उदाहरण ढूँढ़-ढूँढ़कर सामने रखिये तो आपको विदित हो जायगा कि जिनकी हम

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

उपासना करते हैं, जिनके लिए हम अपनी आँखें बिछाने तक को तैयार रहते हैं, जिनकी स्मृति तरोताज़ा रखने के लिए हम अनेक तरह के स्मारक-चिह्न बनाकर खड़ा करते हैं, उन्होंने रुपया कमाने में अपना समय नहीं बिताया था; बल्कि उन्होंने कुछ ऐसे काम किये थे जिनकी महत्ता को हम रुपये से मूल्यवान् समझते हैं। जिन लोगों के जीवन का उद्देश्य केवल रुपया बटोरना है उनकी प्रतिष्ठा कम हुई है। अधिकांश अवस्थाओं में तो उन्हें किसी ने पूछा तक नहीं है। उन्होंने जन्म लिया है, रुपया कमाया है, परलोक-यात्रा की है। किसी ने जाना तक नहीं कि वे कौन थे और कहाँ गये। मानवसमाज स्वार्थी अवश्य है, पर वह स्वार्थ की उपासना करना नहीं जानता। अन्त में वे ही पूजे जाते हैं जिन्होंने अपने जीवन को अर्पण करते समय सच्चे मनुष्यत्व परिचय दिया।

प्रश्न

(१) उपर्युक्त अवतरण का सारांश लिखो।
(२) 'धन की पूजा' से क्या अभिप्राय है ?
(३) संसार में किन लोगों की प्रतिष्ठा अधिक होती है ?
(४) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।
(५) कुछ ऐसे कामों के नाम बतलाओ जो रुपया कमाने से अधिक मूल्यवान् समझे जाते हैं।
(६) समास बतलाओ—
तरोताज़ा, स्मारक-चिह्न, परलोक-यात्रा, मानव-समाज।

[२]

हमारी हिन्दी सजीव भाषा है। इसी से, संपर्क के प्रभाव से उसने अरबी, फ़ारसी और तुर्की भाषाओं तक के शब्द ग्रहण कर लिये हैं और अब अँगरेज़ी भाषा के भी शब्द ग्रहण करती जा रही है इसे दोष नहीं, गुण ही समझना चाहिये। क्योंकि अपनी इस ग्राहिका-शक्ति के प्रभाव से हिन्दी अपनी वृद्धि ही कर रही है, ह्रास नहीं। ज्यों ज्यों इसका प्रचार बढ़ेगा त्यों त्यों इसमें नये नये शब्दों का आगमन होता जायगा। क्या नियन्त्रण के किसी भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पक्षपाती में यह शक्ति है कि वह जातियों के पारस्परिक सम्बन्ध को तोड़ दे अथवा भाषाओं की सम्मिश्रण-क्रिया में रुकावट पैदा कर दे ? यह कभी सम्भव नहीं। हमें केवल यह देखते रहना चाहिये कि इस सम्मिश्रण के कारण कहीं हमारी भाषा अपनी विशेषता को तो नहीं खो रही है—कहीं बीच में अन्य भाषाओं के बेमेल शब्दों के योग से वह अपना रूप विकृत तो नहीं कर रही है। मतलब यह है कि दूसरे के शब्द, भाव और मुहाविरे ग्रहण करने पर भी हिन्दी हिन्दी ही बनी है या नहीं; बिगड़ कर कहीं वह और कुछ तो नहीं होती जा रही है। बस।

प्रश्न

(१) उपर्युक्त अवतरण के लिए उपयुक्त शीर्षक बतलाओ

(२) 'सजीव-भाषा' का क्या तात्पर्य है ?

(३) हिन्दी में नये शब्दों का आगमन क्यों उचित है ?

(४) हिन्दी में नये शब्दों, मुहाविरों आदि को अपनाते समय किस बात को ध्यान में रखना चाहिए ?

(५) पुष्टाक्षरों में दिये हुए शब्दों के अर्थ लिखो।

(६) अन्तिम वाक्य का विश्लेषण करो।

[३]

पचास वर्ष पहले * हमारे गाँवों की वह दशा नहीं थी, जो आज है। गाँवों के पुरुष ही नहीं, बल्कि स्त्रियाँ भी बराबर किसी न किसी उद्योग धन्धे में लगी रहती थीं। देश की उत्पादक शक्ति* में स्त्रियों का काफ़ी हाथ था। जो स्त्रियाँ खेत पर जाकर काम नहीं कर सकती थीं और घर में रहकर ही काम करती थीं, उनमें अधिकांश चरखे पर सूत निकालती थीं, घर में चक्की पीस लेती थीं, धान कूट लेती थीं; और चरखी पर कपास ओट कर रुई बिनौले अलग-अलग करती* थीं। रुई कातने के काम में आती थी, और बिनौला गौ-भैंस को खिलाया जाता था जिससे घी बहुत होता था। यह नहीं कि गरीब घरों की स्त्रियों के ही ये काम हों; बल्कि जो कुटुम्ब सब प्रकार से सम्पन्न रहते थे उनके घरों की स्त्रियाँ भी इस प्रकार के उद्योग-धन्धे घर में बैठे बैठे किया करती थीं। इससे उनकी गृहस्थी की आमदनी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

चढ़ती थी और वे प्रसन्न रहती थीं। पुरुष लोग खेतों और* खलिहानों में काम करते, अथवा बाहर बाजारों में कोई **व्यवसाय** करते अथवा ज़मींदारी के काम करते थे। घर स्त्री और पुरुषों का कोई ऐसा* भाव नहीं था कि पुरुष लोग रुपया कमाकर लावें; और स्त्रियाँ घर में रहकर* केवल रोटी-पानी के सम्बन्ध से ही घर-गृहस्थी का प्रबन्ध करती रहें; गृहस्थी की **उत्पादक शक्ति** में कोई भी भाग न ले। यह भाव पहले पहल शहरों में फैला; और अब तो देहातों में भी फैल गया है।

प्रश्न

(१) पचास वर्ष पहले स्त्रियाँ धन के उत्पादन में किस प्रकार पुरुषों का हाथ बटाया करती थीं ?

(२) आजकल की स्थिति में पहले से क्या परिवर्तन हो गया है ?

(३) उपर्युक्त अवतरण का सारांश लिखो।

(४) पुष्पांकित शब्दों की पद-व्याख्या करो।

(५) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।

[४]

लार्ड चेस्टरफील्ड ने एक स्थान पर लिखा है कि अधिकांश मनुष्य अपने विचार से युक्तिपूर्वक अपनी प्रशंसा आरम्भ करते हैं। वे बहुत से दोषों को अपने ऊपर आरोपित करके उनको निवारण करने के लिए इस प्रकार अपने सद्गुणों की सूची दे डालते हैं कि 'हम स्वीकार करते हैं कि हमारा अपने विषय में कुछ कहना बहुत अनुचित है और इस बात से हमें बहुत घृणा होती है; किन्तु यदि अन्याय से हमारे ऊपर दोषारोपण नहीं किया जाता तो हम कभी अपने गुणों के विषय में न कहते।' ऐसे मनुष्य यह नहीं समझते कि **मिथ्याभिमान** के ऊपर पड़ा हुआ यह **विनय का पतला परदा** इतना **पारदर्शक** है कि जिन मनुष्यों में थोड़ी भी **विचारशक्ति** है उनसे यह छिप नहीं सकता। मिथ्याभिमानी पुरुष ऐसी मूर्खता की सहस्रों बातें किया करते हैं। फल यह होता है कि वे अपने अभिप्राय को भी पूर्ण नहीं कर पाते। उलटे **उपहास और घृणा के पात्र** बनते हैं। इससे बचने का यही एक सर्वोत्तम उपाय है कि अपने विषय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

में मौन रहा जाय। परन्तु यदि कोई प्रसङ्ग ऐसा ही आकर उपस्थित हो जाय जहाँ अपने विषय में कुछ कहना ही पड़े, वहाँ उतना ही कहना चाहिये जिसमें आत्मप्रशंसा की झलक न हो। परिचय में जहाँ आत्मप्रशंसा का आभास मिला कि उपस्थित लोगों के होंठों और भौंहों पर तिरस्कार की हँसी और घृणा का बल पड़ने लगेगा। इसलिए अपना परिचय देते समय अपने आप को सुरक्षित रखने का एक ही उपाय है कि हम अपनी वाणी में आत्मश्लाघा की छाप न पड़ने दें।

प्रश्न

(१) अपने दोष बतलाकर अपने गुण कैसे प्रकट किये जा सकते हैं ?
(२) 'मिथ्याभिमान' का क्या आशय है ?
(३) आत्मप्रशंसा से क्या हानि होती है ?
(४) अपना परिचय किस प्रकार देना उचित है ?
(५) उपयुक्त अवतरण का सारांश लिखो।
(६) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों का अर्थ लिखो।

[५]

कुछ समय से हिन्दू-समाज में संघटन और शुद्धि का आन्दोलन हो रहा है। इसी आन्दोलन के कारण हिन्दू और मुसलमानों में वैमनस्य भी हो गया है। हिन्दू और मुसलमानों की समस्या ने अब उग्र रूप धारण कर लिया है। हिन्दू-पत्र हिन्दुओं को सावधान कर रहे हैं और मुसलमान-पत्र मुसलमानों को। दोनों जाति के लोगों को यह आशंका हो रही है कि उनके **धर्म के मूल पर कुठाराघात** हो रहा है। यदि ये लोग सावधान नहीं होंगे तो इनके धर्म का अस्तित्व ही न रहेगा। धर्म-नाश की इस आशंका ने दोनों को **विचलित** कर दिया और दोनों स्वधर्म-रक्षा के लिए **कटिबद्ध** हो गये हैं। धर्म की रक्षा करना सचमुच प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है; परन्तु ऐसा कोई भी धर्म न होगा जिसका यह उद्देश्य हो कि मनुष्य अपने मनुष्योचित गुणों को भूलकर धर्म की रक्षा करे। दुर्बलों पर अत्याचार करना किसी भी धर्म को मान्य नहीं है। प्रेम, दया, **सहिष्णुता**, न्याय, आदि गुणों के विकास के लिए सभी धार्मिक **सम्प्रदायों** के लोग प्रयत्न करते हैं। यदि इन्हीं गुणों को भूलकर हम अपने धर्म की उन्नति

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

करना चाहें तो वह धर्म की उन्नति कभी नहीं कही जा सकती। आश्चर्य की बात यही है कि धर्म-रक्षा में **सचेष्ट** हिन्दू और मुसलमान अपने **उन** सद्गुणों की रक्षा में सचेष्ट नहीं जान पड़ते जिनके कारण उनकी गणना पशुओं में न होकर मनुष्यों में होती है।

प्रश्न

(१) हिन्दू और मुसलमानों की समस्या ने अब उग्ररूप धारण कर लिया है—इसका आशय भली भाँति समझाओ।
(२) 'हिन्दू-पत्र' 'मुसलमान-पत्र' का क्या तात्पर्य है ?
(३) आशंका और सम्भावना का अन्तर उदाहरण-वाक्य द्वारा स्पष्ट करो।
(४) धर्म का सच्चा स्वरूप क्या है ?
(५) किन गुणों के कारण हम पशु न समझे जाकर मनुष्य समझे जाते हैं ?
(६) उपर्युक्त अवतरण के लिए उपयुक्त शीर्षक निश्चित करो।
(७) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।

[६]

राष्ट्र-भाषा से यह अभिप्राय है कि वह **अन्तर-प्रान्तीय** व्यापार और **सार्वजनिक-व्यवहार** में सभी प्रान्तों में रहनेवालों द्वारा बरती जाय और कन्या-कुमारी से बदरिकाश्रम तक और अटक से कटक तक सभी जगहों में एक दूसरे के साथ बातें करने और **विचार विनिमय** में काम में लायी जाय। राष्ट्रभाषा होने की **अधिकाधिक योग्यता** हिन्दी में आनी और लानी चाहिए। आज के युग में जब **वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण** दुनिया से दूरी और समय का भेद उठता जा रहा है, कोई भी भाषा दूसरी भाषा के सम्पर्क से अपने को अछूती नहीं रख सकती। हिन्दी-भाषा के गुण में एक विशेष गुण यह है कि हिन्दुओं की भाषा होती हुई भी उसने अरबी फ़ारसी के ही नहीं, बल्कि तुर्की, पुर्तगाली और अँगरेज़ी इत्यादि के शब्दों को भी **अछूत नहीं समझा**। **बहिष्कार** की नीति तो वह कदापि स्वीकार नहीं कर सकती और न विदेशी शब्दों को बाहर रखकर वह अपनी उन्नति कर सकती है। हिन्दी संस्कृत नहीं है। हिन्दुस्तान में हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, सिख बसते हैं तो भी वह हिन्दुस्तान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

है। इस प्रकार हम सभी भाषाओं से उत्तम और आवश्यक शब्द ले लेंगे तो भी वह हिन्दी ही रहेगी।

प्रश्न

(१) राष्ट्रभाषा से क्या अभिप्राय है ?
(२) वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण दूरी और समय का भेद आजकल कैसे उठता जा रहा है ? अच्छी तरह समझाओ।
(३) हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं से कौन सा गुण विशेष है ?
(४) 'बहिष्कार की नीति' का क्या आशय है ? हिन्दी इस नीति को क्यों स्वीकार नहीं कर सकती ?
(५) उक्त अवतरण का सारांश लिखो।
(६) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों का अर्थ लिखो।

[७]

मैंने देखा है परीक्षोत्तीर्ण* लड़के घर की खेती का काम नहीं कर सकते, वे दूकानदारी भी नहीं कर सकते। सुनार, कुँभार या चमार के पढ़े-लिखे लड़के, अपने घर की कारीगरी का काम करने में अपनी तौहीनी समझते हैं। आफिस की नौकरी के सिवा वे सभी कामों में प्रायः असमर्थ* हो जाते हैं। झूठे आत्माभिमान के वश होकर अपना काम अपने हाथों करने में उन्हें लज्जा मालूम होती है। बाज़ार से दो-चार सेर चीज़ खरीद कर लाने में उन्हें कुली की जरूरत होती है। बोझ लाना उन्हें अपनी शान के खिलाफ जँचता है। घर में झाड़ू देना, कपड़े धोना आदि कार्य करने में तो लाज मानों मूर्तिमान् होकर खड़ी हो जाती है। घर का काम तो अलग रहा, कई लोगों को तो असभ्य-से लगने वाले माता-पिता और बहिन-भाइयों* के साथ रहना तक बुरा मालूम होता है। सच पूछिए तो इसी कारण, आजकल बेकारी भी ज्यादा बढ़ रही है। सभी को नौकरी चाहिए। झूठी इज्जत के मोह में खर्च बढ़ा ही रहता है। परिणाम में आत्महत्या* की नौबत आती है। किसी कारीगर या मजदूर ने आत्महत्या की हो—ऐसी बात शायद नहीं सुनने में आती। आत्महत्या बेकार बाबू ही करते हैं। जो नौकरी और वकीलो आदि के सिवा अन्य काम नहीं कर सकते उनको ये लोग हेय दृष्टि* से देखते हैं। इस मनोभावना को लिए हुए हर वे दूकानदारी भी नहीं कर सकते। सुनार, कुँभार या चमार के पढ़े-लिखे लड़के,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

साल विश्वविद्यालयों से हज़ारों विद्यार्थियों का पास होकर निकलते रहना, भविष्य में बेकारी का कैसा भयंकर रूप सामने लायेगा और उसका परिणाम कितना भयंकर होगा—यह कौन कह सकता है ?

प्रश्न

(१) उक्त अवतरण के लिए उपयुक्त शीर्षक निश्चित करो ।
(२) परीक्षोत्तीर्ण लड़कों की आजकल क्या हालत है ?
(३) आजकल बेकारी क्यों बढ़ रही है ?
(४) बेकार बाबू ही आत्महत्या क्यों करते हैं, कारीगर या मज़दूर क्यों नहीं ?
(५) विश्वविद्यालयों से हर साल हजारों विद्यार्थियों के पास होकर निकलने से लेखक को किस बात का डर है ? क्यों ?
(६) कारीगर और मजदूर और दूकानदार में क्या अन्तर है ? सुनार, चमार और कुंभार इनमें से किस वर्ग में आते हैं ?
(७) उद्धृत अवतरण का सारांश लिखो ।
(८) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ बतलाओ ।
(९) पुष्पांकित शब्दों के समास सविग्रह बतलाओ ।

[८]

हर्ष के समय में शिक्षा का बहुत* प्रचार था—यह ह्यूनत्वाँग के लेखों से ज्ञात होता है । उस समय के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के नाम हम इस सुदूर-काल में भी जानते हैं । तक्षशिला वैद्यक की और उज्जैन ज्योतिष की शिक्षा* के लिए बहुत प्रसिद्ध था । काशी सब शास्त्रों का शिक्षा-केन्द्र था । इन सबसे अधिक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय नालन्द था । ह्यूनत्वाँग ने भी इस विद्यापीठ में विद्या प्राप्त की थी । उसने इसका विस्तृत वर्णन किया है । वह लिखता है—"इसमें शिक्षा पानेवाले विद्यार्थियों की संख्या कई हजार है । वे लोग अत्यन्त योग्य और बुद्धिमान हैं । उनकी* योग्यता आजकल बहुत बढ़ी चढ़ी है । उनमें से कई सौ ऐसे भी हैं जिनकी ख्याति दूर देशों में भी फैली हुई है । उनका आचरण शुद्ध और निर्दोष है । वे नैतिक नियमों का पालन सचाई के साथ करते हैं । इस मठ के नियम कड़े हैं । और उन्हें व्यवहार में लाने के लिए सब भिक्षु बाध्य हैं । प्रश्नों के पूछने और उत्तर पाने के लिए दिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पर्याप्त नहीं होता। सबेरे से रात तक वे लोग वाद-विवाद में लगे रहते हैं। बुड्ढे और जवान सब एक दूसरे की सहायता करते हैं। वाद-विवाद में प्रसिद्धि चाहने वाले विद्वान् भिन्न भिन्न नगरों से अपने सन्देह* दूर करने आते हैं। फिर भी उनकी विद्वत्ता की धाक दूर दूर* देशों में फैल जाती है। इस कारण कुछ* लोग अपने को जबरदस्ती नालन्द का विद्यार्थी कहने लगते हैं और परिणाम यह होता है कि उनका सर्वत्र सम्मान होता है। यहाँ प्रविष्ट होने के पहले हर एक को प्राचीन और नवीन ग्रंथ अच्छी तरह अध्ययन कर लेना होता है। इससे जो विद्यार्थी यहाँ **अजनबी** की भाँति आते हैं उन्हें अपनी योग्यता कठिन वाद-विवाद के द्वारा दिखलानी* पड़ती है।"

प्रश्न

(१) हर्ष के समय में किन किन स्थानों में मुख्य तया किस किस विषय की शिक्षा दी जाती थी?
(२) ह्यूनच्वाङ्ग ने किस विश्यविद्यालय में शिक्षा पायी थी?
(३) ह्यूनच्वांग ने तक्षशिला के विषय में क्या लिखा है?
(४) 'वादविवाद' का क्या आशय है?
(५) कुछ लोग अपने को ज़बरदस्ती नालन्द का विद्यार्थी क्यों कहते थे?
(६) नालन्द में विद्यार्थी किस प्रकार प्रविष्ट हो सकते थे?
(७) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।
(८) पुष्पाङ्कित शब्दों की पद-व्याख्या करो।

[६]

किंवदन्ती है कि पहले शालीमार का निर्माण और नामकरण श्रीनगर बसानेवाले द्वितीय प्रवरसेन द्वारा हुआ था, फिर उसीके भग्नावशेष पर जहाँगीर ने अपने प्रमोद-उद्यान की नींव डाली। अब तो उसकी अनन्त प्रतीक्षा में जीर्ण वृक्षों की पंक्ति में, किसी परिचित पदध्वनि को सुनने के लिए निःस्तब्ध पल्लवों में, ऊपर क्षणिक वितान बना देनेवाले फौवारों के सीकरों में और भंगिमामय प्रपातों में पारस्य देश की कला की अमिट छाप है। हमारे अजस प्रवाहिनी सरिताओं से निरन्तर सिक्त देश ने जल को इतने बंधनों में बाँधकर नर्तकी के समान लास सिखाने की आवश्यकता नहीं समझी थी;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

परन्तु मुसलमान शासकों के प्रभाव से इसने हमारे सजीव चित्र-से उपवनों को सजल भी बना दिया। जिस समय सारे फौवारे सहस्रों जल-रेखाओं में विभाजित हो होकर आकाश में उड़ जाने की विफल चेष्टा में अपने तरल हृदय को खंड खंड कर पृथ्वी पर लौट आते हैं, सूखे प्रपातों से अश्रुपात होने लगता है, उस समय पानी के बीच में बनी हुई राजसी काले पत्थर की चौकी पर किसी अनन्त अभाव की छाया पड़ कर उसे और भी कालिमामय कर देती है।

प्रश्न

(१) श्रीनगर कहाँ है ? उसे किसने बसाया था ?
(२) शालीमार के निर्माण के विषय में क्या बतलाया जाता है ?
(३) दूसरे वाक्य का भावार्थ समझाओ।
(४) इस अवतरण का अपने ढङ्ग में सरल शब्द से रूपान्तर करो।
(५) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों का अर्थ लिखो।
(६) इस उद्धरण के लिए उपयुक्त शीर्षक बताओ।
(७) अन्तिम वाक्य का विश्लेषण करो।

[१०]

फूल की पँखुड़ियों, दीपकों की पंक्तियों और चाँदी-सोने की थालियों से यदि भोजन-गृह सजा हुआ हो तो अच्छा है; किन्तु यदि निमन्त्रित व्यक्ति को आतिथेय से आदर न मिले, प्रसन्नता न प्राप्त हो, तो उसे यह सब सजावट और सुन्दरता अच्छी नहीं लगती; क्योंकि यही प्रसन्नता अन्दर का ऐश्वर्य है। प्रसन्नता की मीठी हँसी, मीठे वचन और मीठा बर्ताव इतना सुन्दर होता है कि वह केले के पत्ते का, सोने की थाली की अपेक्षा, अधिक मूल्य करता है। सब ही उसका अधिक मूल्य करते हैं, यह नहीं कहा जा सकता। बहुत से लोग एक बहुत आडम्बर वाले भोज में अपमानपूर्वक भी सम्मिलित होने के लिए तैयार देखे जाते हैं। इसलिए कि भोजन से बड़े तात्पर्य को उससे बड़े सौन्दर्य को वे जानते नहीं हैं। वास्तव में भोजन और सजावट ही सहभोजन के प्रधान अंग नहीं हैं। कली की पँखुड़ियाँ जिस तरह अपने अन्दर ही संकुचित रहती हैं उसी तरह स्वार्थ में लगे हुए मनुष्य की शक्तियाँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हमेशा अपनी ओर संकुचित रहती हैं। एक दिन उसके बन्धन को ढीला करके, उसको दूसरों की ओर **अभिमुख** करते ही विकसित फूल के समान संसार की ओर उसके मिलने की मधुरता से भरा अति सुन्दर विस्तार होता है। यज्ञ के उस आन्तरिक गम्भीर सौन्दर्य को जो व्यक्ति सम्पूर्णतया नहीं देख सकता, वह **भोज्य और पेय** की अधिकता और सजावट के आडम्बर को ही बड़ा समझ लेता है। उसकी **असंयत प्रवृत्ति** उसकी दान-दक्षिणा और खाने-पीने के प्रति अतिशय लालसा, यज्ञ की विशाल मधुरता को अच्छी तरह देखने नहीं देती।

प्रश्न

(१) निमन्त्रित व्यक्ति की प्रसन्नता किस प्रकार होती है ? क्यों ?
(२) कुछ लोग अपमानपूर्वक भोज में क्यों सम्मिलित होते हैं ?
(३) 'भोजन के बड़े तात्पर्य' का अभिप्राय स्पष्ट करो।
(४) 'यज्ञ की विशाल मधुरता' क्या है ? वह किन लोगों को और क्यों अदृश्य रहती है ?
(५) उद्धृत अवतरण का सारांश लिखो।
(६) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ बतलाओ।
(७) सविग्रह समास बतलाओ—भोजन-गृह, सहभोज, विकसित फूल, गम्भीर सौन्दर्य, दान-दक्षिणा।

[११]

आर्य सभ्यता के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है उसके द्वारा इहलोक में सर्वाङ्गीण (शारीरिक, मानसिक, साम्पत्तिक और नैतिक) अभ्युदय और परलोक में **परम निःश्रेयस** मोक्ष—की प्राप्ति। ऋषियों की दृष्टि में विद्या वही है जो हमें अज्ञान के बन्धन से विमुक्त कर दे—सा विद्या या विमुक्तये। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में 'अध्यात्मविद्या विद्यानाम्' कहकर इसी सिद्धान्त का समर्थन किया है। इसी उद्देश्य से आर्य जाति के पवित्र हृदय और **समदर्शी त्रिकालज्ञ** ऋषियों ने चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) की सुन्दर व्यवस्था की थी। ब्रह्मचर्य के कठोर नियमों को पालन करता हुआ ब्रह्मचारी विद्यार्थी संयम की **व्यावहारिक** शिक्षा के साथ-ही-साथ लौकिक और

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

पारलौकिक कल्याणकारी विद्याओं को पढ़कर सब प्रकार से शरीर, मन और वाणी से स्वस्थ एवं संयमी होकर गुरुकुलाश्रम से निकलता था, और तब वह गृहस्थ में प्रवेश कर क्रमशः जीवन को और भी संयममय और त्यागमय बनाता हुआ अन्त में सर्वत्याग करके परमात्मा के स्वरूप में निमग्न हो जाता था। यही आर्य संस्कृति का स्वरूप था।

प्रश्न

(१) उपर्युक्त अवतरण के लिए शीर्षक बतलाओ।
(२) इसका सारांश लिखो।
(३) आर्य सभ्यता के अनुसार शिक्षा का क्या उद्देश्य है ?
(४) 'ऋषि' से क्या तात्पर्य है ? ऋषियों के द्वारा विद्या का क्या आशय लिया जाता है ?
(५) 'आश्रम' का अर्थ लिखो। उसके प्रकारों को भली-भाँति समझाओ।
(६) ब्रह्मचर्य और गृहस्थ आश्रमों में लोग क्या-क्या करते थे ?
(७) सभ्यता और संस्कृति का तात्पर्य समझाकर लिखो।
(८) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।

[१२]

योरप की सामाजिक तथा आर्थिक अवस्था से भारतवर्ष की सामाजिक तथा आर्थिक अवस्था में आकाश-पाताल का अन्तर है। हमारा भारतवर्ष भूमण्डल के मध्य उष्ण कटिबन्ध पर स्थित एक कृषिप्रधान देश है। यहाँ की संस्कृति और प्रकृति मानव-जाति में एक ऐसी मनोवृत्ति उत्पन्न करती है जो योरप के निवासियों की मनोवृत्ति के सर्वथा प्रतिकूल है और उसके कारण भारतवासियों में एक विशेष प्रकार के जीवन के दृष्टिकोण का निर्माण होता है। हमारे देश में परम्परा से यह शिक्षा चली आ रही है कि समस्त भौतिक विभूतियाँ निःसार एवं निरर्थक हैं, अतएव सरल जीवन व्यतीत करके धर्म-चिन्तन में समय व्यतीत करना ही मनुष्य का प्रधान कर्तव्य है। इस शिक्षा के कारण मनुष्य के हृदय में एक भिन्न प्रकार की ही प्रवृत्ति उत्पन्न होती है और यही एक ऐसी बात है जिसके कारण पूर्व और पश्चिम कभी मिल नहीं सकते। इस विचारधारा और प्रवृत्ति के ही कारण जब कभी हमारे देशवासी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पाश्चात्य सभ्यता तथा रीति-नीति का कुछ अंश **अस्वाभाविक भाव** से ग्रहण कर लेते हैं तब उनमें **सामंजस्य** नहीं आता, उनके उस पूर्व और पश्चिम के सम्मिश्रण में **तेल और जल का सा पार्थक्य** स्पष्ट रूप से विद्यमान रहता है। वास्तव में हमारे देशवासियों के लिए यह बहुत ही कठिन बात है कि पाश्चात्य संस्कारों को ग्रहण करके अपने जीवन में इस प्रकार मिला लें कि उनमें ज़रा भी **कृत्रिमता** न मालूम पड़े। हमारे **नागरिक-जीवन** में धीरे धीरे पाश्चात्य रीति-नीति की बहुत-सी बातें सम्मिलित हो गयी हैं, तथापि ग्राम्य जीवन में यह बात नहीं है। देहातों का जीवन नागरिक जीवन से बहुत ही भिन्न प्रकार का है। आज भी देहातों में हमारी कुछ प्राचीन प्रथायें बहुत ही अधिक मात्रा में अपनी प्रभुता स्थापित किये हुए हैं। ग्रामीण और नागरिक जीवन में इस प्रकार की भिन्नता का कारण है वहाँ की आर्थिक भिन्नता।

प्रश्न

(१) इस अवतरण के लिए उपयुक्त शीर्षक बतलाओ।
(२) भारत और योरप की अवस्था और विचार पद्धति में क्या अन्तर है और क्यों ?
(३) भारतवासियों का दृष्टिकोण क्या है ?
(४) 'पूव और पश्चिम नहीं मिल सकते' इसका आशय बतलाओ। ऐसा क्यों नहीं हो सकता ?
(५) हमारे ग्रामीण और नागरिक जीवन में क्या भिन्नता है और क्यों ?
(६) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।
(७) वाक्य-विश्लेषण करो—
इस पर विचार-धारा............विद्यमान रहता है।

[१३]

चित्रकूट में अपनी **कुटिलता** का **अनुभव** करती हुई कैकेयी से राम बार-बार इसलिए मिलते हैं कि उसे यह निश्चय हो जाय कि उनके मन में उस कुटिलता का ध्यान कुछ भी नहीं है और उसकी **ग्लानि** दूर हो। वे बार-बार उसके मन में यह बात जमाना चाहते हैं कि जो कुछ हुआ, उसमें उसका कुछ भी दोष नहीं है। **अपने साथ बुराई करनेवाले के हृदय को शांत और शीतल**

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

करने की चिन्ता राम के सिवा और किसको हो सकती है ? दूसरी बात यह ध्यान देने की है कि राम का यह शील-प्रदर्शन उस समय हुआ, जिस समय कैकेयी का अन्तःकरण अपनी कुटिलता का पूर्ण अनुभव करने के कारण इतना द्रवीभूत हो गया था कि शील का संस्कार उस पर सब दिन के लिए जम सकता था। गोस्वामीजी के अनुसार हुआ भी ऐसा ही—

कैकेयी जौ लौं जियति रही
तौ लौं बात मातु सी मुँह भरि भरत न भूलि कही।
मानी राम अधिक जननी तें, जननिहुँ गँस न गही॥

इतने पर भी कहीं गाँस रह सकती है ?

प्रश्न

(१) इस अवतरण के उपयुक्त शीर्षक निश्चित करो।
(२) चित्रकूट में कैकेयी अपनी किस कुटिलता का अनुभव कर रही थी ?
(३) राम कैकेयी से चित्रकूट में बार-बार क्यों मिलते थे ?
(४) राम के इस प्रकार मिलने का कैकेयी पर क्या प्रभाव हुआ ?
(५) उक्त अवतरण का अभिप्राय अपने शब्दों में लिखो।
(६) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ बतलाओ।
(७) सविग्रह समास बतलाओ— शील-प्रदर्शन, पूर्ण अनुभव।

[१४]

विद्वानों ने मनुष्य की तीन अवस्थाएँ निर्द्धारित की हैं। पहली अवस्था है पाशविक। इस अवस्था में मनुष्य की चित्त-वृत्ति वैसी ही होती है जैसी पशुओं की। क्षुधा, निद्रा, भय, क्रोध, आकृष्ट आदि भाव मनुष्य और पशु में समान हैं। द्वितीय* अवस्था मध्यावस्था है। इसमें मनुष्य की बुद्धि-वृत्ति परिपुष्ट होती है। अपनी इसी वृत्ति के कारण मनुष्य पशुओं से पृथक् किया जाता है। तृतीय अवस्था वह है जब मनुष्य अपनी आध्यात्मिक और नैतिक वृत्तियों के कारण अपने पाशविक भावों से बहुत ऊँचा चला जाता है। ये तीन अवस्थाएँ मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में जिस प्रकार लक्षित होती हैं उसी प्रकार उसके सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में भी व्यक्त होती हैं। बाल्यावस्था में उसकी बुद्धि-वृत्ति की पुष्टि होती है। वृद्धावस्था में आध्यात्मिकता* का विकास

lepal Sanskrit University, Balmeeki Ca

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

होता है। यही बात समाज और राष्ट्र के जीवन में देखी जाती है। जिस प्रकार किसी तेजस्वी और सुखान्वेषी युवक में वृद्धोचित विज्ञता और संयम की आशा करना* अनुचित है उसी प्रकार किसी नवोत्थित और तेजोदृप्त सभ्य जाति से प्राचीन और पुष्ट सभ्यता के नैतिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष की आशा करना असंगत है। एक बात और भी है। उन्नतिशील जाति के हृदय में तीव्र आकांक्षा रहती है और पतनोन्मुख जाति में उदासीनता* और वैराग्य के भाव प्रबल रहते हैं। मध्यावस्था में उसकी सुखलिप्सा खूब बढ़ी हुई रहती है। तभी जाति में विलासिता की वृद्धि होती है।

प्रश्न

(१) मनुष्य के व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के अर्थ भली भाँति समझाकर लिखो।
(२) किसी जाति में विलासिता की वृद्धि किस अवस्था में अधिक रहती है?
(३) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों का भाव अपने शब्दों में सरल भाषा में लिखो।
(४) पुष्पचिह्नित शब्दों का पद व्याख्या करो।
(५) उपर्युक्त गद्य-खंड के दूसरे वाक्य का विश्लेषण करो।

[१५]

साहित्योन्नति* के साधनों में पुस्तकालयों का स्थान अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। इनके द्वारा साहित्य के जीवन की रक्षा, पुष्टि और अभिवृद्धि होती है। पुस्तकालयों द्वारा सुरक्षित साहित्य, सभ्यता के इतिहास का जीता-जागता गवाह है। इसी सत्य-प्रिय साक्षी के बल पर वर्तमान भारत को अपने अतीत गौरव का अभिमान है। पुस्तकालय भारत के लिए कोई नयी वस्तु नहीं है। लिपि के आविष्कार से आज तक लोग निरन्तर पुस्तकें संग्रह करते आये हैं। पहले देवालय, विद्यालय और राजमहल, इन संग्रहों के प्रमुख स्थान होते थे। इन स्थानों के अतिरिक्त विद्वज्जनों* के अपने निजी पुस्तकालय भी होते थे। उन दिनों—मुद्रण-कला के आविष्कार के पूर्व—पुस्तकों का संग्रह करना आज कल की तरह सरल बात न थी। आजकल साधारण स्थिति के पुस्तकालय में जितनी संपत्ति लगती है, उतनी उन दिनों कभी-कभी एक एक पुस्तक की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तैयारी में लग जाया करती थी। भारत के पुस्तकालय॰ संसार भर में अपना सानी नहीं रखते थे। अतीतकाल से लेकर मुग़ल-सम्राटों के समय तक यही स्थिति रही। चीन, जापान, फारस, मध्य एशिया, तुर्किस्तान प्रभृति सुदूर-स्थित देशों से झुण्ड-के-झुण्ड विद्यानुरागी लम्बी-लम्बी* यात्राएँ करके भारत आया करते थे।

प्रश्न

(१) मुद्रण-कला के आविष्कार द्वारा साहित्य की अभिवृद्धि में किस प्रकार सहायता मिली ?

(२) साहित्य की उन्नति के कौन कौन प्रधान साधन हैं ? उनमें तुम कि सबसे अधिक महत्वपूर्ण समझते हो ? उत्तर कारण सहित लिखो।

(३) पहले पुस्तकालय किन स्थानों में रहा करते थे ?

(४) पुराने समय में पुस्तकालयों में अधिक व्यय क्यों लगा करता था ?

(५) पुष्टाक्षरों में दिए हुए अंशों के अर्थ लिखो।

(६) पुष्प-चिह्नित शब्दों में विग्रह-पूर्वक समास बताओ।

(१६)

हिन्दी-भाषा के भंडार में शब्दों की जो न्यूनता है, उसकी पूर्ति कहाँ से की जाय ? जिन **विषयों के प्रतिपादन** के लिए, वा जिन वस्तुओं और **मनोभावों** के **संकेत** के लिए हिन्दी-भाषा में शब्द नहीं मिलते, उनका प्रतिपादन वा संकेत किस भाषा के शब्दों द्वारा किया जाय ? कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि इस विचार में भी विद्वानों का मतभेद है, और इस मतभेद के कारण आज हिंदी लिखने की शैली भिन्न-भिन्न प्रचलित हो रही है। बहुत से विद्वानों का विचार है कि हिन्दी भाषा में शब्दसमूह संस्कृत से ही लेना चाहिए; संस्कृत के द्वारा ही हिन्दी-भाषा का पालन-पोषण पूर्वकाल से होता रहा है, और अब भी उसके ही द्वारा उसकी पुष्टि होना संभव है। दूसरे कई एक विद्वान इस बात के पक्षपाती हैं कि जिस विषय वा वस्तु के लिए जिस भाषा का शब्द **जनसाधारण** के लिए **समझने में सुकर** हो, उस भाषा से ही उसके लिए शब्द ले लेना चाहिये। अथवा यों कहो कि जिन शब्दों द्वारा हम जनसाधारण को शीघ्र किसी अड़चन के

lepal Sanskrit University, Balmeeki Ca

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बिना समझा सकें, वे शब्द चाहे किसी भाषा के हों, उन्हें ही हिन्दी में स्थान देना चाहिये। इससे फारसी, अरबी, अंगरेजी, संस्कृत आदि सभी भाषाओं के शब्द अपेक्षानुसार हिन्दी में लेना उचित प्रतीत होता है। तीसरे कुछ विद्वान इस विचार के भी हैं कि कम-से-कम हिन्दी भाषा के दो रूप अवश्य बनेंगे—एक संस्कृत-मिश्रित, दूसरा अरबी-फारसी-मिश्रित। लेखक का जिस प्राचीन भाषा से परिचय होगा, उसी प्रकार की हिन्दी वह लिखेगा और ऐसा रूप-भेद होना कोई दोष नहीं, बल्कि भाषा के देशव्यापक होने के लिए आवश्यक है। यों ही, और भी कुछ अवान्तर मतभेद इस विचार में दिखायी देते हैं, और ये मतभेद हिन्दी-लेख की शैली निश्चित करने में बाधक हो रहे हैं। आवश्यक है कि विद्वान् लोग परस्पर विचार कर इस मतभेद का शीघ्र निपटारा कर दें, और एक शैली स्थिर कर लें।

प्रश्न

(१) इस अवतरण का सारांश लिखो।
(२) हिन्दी लिखने की भिन्न-भिन्न शैलियों के होने का क्या कारण है ?
(३) आवश्यकता पड़ने पर हिन्दी में कहाँ से शब्द लिये जाँय ? इस विषय में विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत बतलाओ।
(४) हिन्दी में शैली-भेद के बाधक कारण बतलाओ।
(५) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।
(६) अन्तिम वाक्य का विश्लेषण करो।

(१७)

स्वराज्य है क्या ? शब्द के अर्थ से यही प्रकट होता है कि जो स्वयं अपना राजा है स्वराज्य उसी के हस्तगत है। जो स्वयं अपना* राजा होगा उसे निर्भय ही होना चाहिये। वह न्यायवान् होगा और मनुष्यमात्र पर प्रेम रखेगा। निर्भीक होने से ही उसे जब कोई यह कहेगा कि तुम मेरी आज्ञा मानो, तब वह यही उत्तर देगा कि जो आज्ञा मेरे विवेक के विरुद्ध उसे है मैं कभी नहीं मान सकता। जो कानून हमारे प्रतिनिधियों से नहीं बनाये गये हैं उन्हें मानने के लिए हम* बाध्य नहीं हैं। इसके लिए उसे कितना ही दण्ड क्यों न दिया जाय, वह अपने निश्चय से नहीं टलेगा। जिसमें ऐसी निर्भीकता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

उसने अपने लिए स्वराज्य* अवश्य प्राप्त कर लिया। परन्तु यह निर्भीकता* उसे प्राप्त नहीं हो सकती जो स्वार्थ के वशीभूत है, जो **अपनी प्रवृत्तियों का दास है**। जो अमरत्व पर विश्वास करता है उसी को यह **अक्षयपद** प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति **न्याय-निष्ठ** भी होगा। जो दूसरों के **न्यायोचित अधिकारों में हस्तक्षेप** करेगा ऐसे अन्यायी• के हृदय **में नैतिक साहस** का भी अभाव रहता है। जो न्यायनिष्ठ है वह मनुष्यमात्र से प्रेम करेगा। न्याय मनुष्य-प्रेम पर ही प्रतिष्ठित है। अतएव जो स्वराज्य• की कामना करते हैं वे न्याय और प्रेम का तिरस्कार नहीं कर सकते। जिस जाति में स्वराज्य प्रेमी व्यक्ति होंगे वह पराधीन नहीं हो सकती। सच तो यह है कि ऐसे ही व्यक्तिगत चरित्र पर जातीय चरित्र का निर्माण• होता है। **जातीय चरित्र में भी व्यक्तिगत चरित्र की तरह निर्भीकता, न्याय और मनुष्य-प्रेम होना चाहिए**। तभी उसकी सार्थकता है।

प्रश्न

(१) स्वराज्य का शब्दार्थ और तात्पर्य क्या है ?
(२) जो स्वयं अपना राजा होगा उसके क्या विचार होंगे ?
(३) न्यायनिष्ठ का क्या स्वभाव और दूसरों के प्रति क्या व्यवहार होता है ?
(४) उक्त अवतरण के लिए उपयुक्त शीर्षक बतलाओ।
(५) इस गद्य-खंड का सारांश लिखो।
(६) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों का अर्थ बताओ।
(७) पुष्पांकित शब्दों की पदव्याख्या करो।

[१८]

हिन्दी-साहित्य की वर्तमान प्रगति भविष्यत् के लिए आशाजनक है। जो नित्य नयी रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं उनकी संख्या पर दृष्टिपात करने से **हमारे कथन की सत्यता** सिद्ध हो सकती है। हम यहाँ नवप्रकाशित पुस्तकों या उनके लेखकों के **आँकड़े** नहीं देना चाहते। सभी जानते हैं कि हिन्दी में इस समय सभी विषयों के उच्च कोटि के लेखक विद्यमान हैं और वे अपनी **उत्कृष्ट रचनाओं से राष्ट्रभाषा** के साहित्य-भांडार को अलंकृत करते जा रहे हैं। परन्तु हिन्दी के इस अभ्युदय काल में हमारे मार्ग में एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बड़ी बाधा है, जिसकी ओर हमारा ध्यान होते हुए भी हम कुछ कर-धर नहीं सकते। वह है कुछ लोगों का अनुचित हस्तक्षेप। ये कुछ लोग हिन्दी के नये प्रतिभाशाली लेखकों को सदा दबाये रखने में ही हिन्दी का गौरव समझते हैं। इन्होंने अपने गुट बना लिये हैं, जिनके द्वारा सत्य समालोचनाओं के मार्ग में बाधाएँ डाली जा रही हैं। यह हिन्दी का दुर्भाग्य है कि यही लोग हमारे अगुआ हैं। इस सम्बन्ध में सन्तोष की बात इतनी ही है कि वास्तविक साहित्यकारों पर इनका प्रभाव नहीं पड़ता और वे अपने सत्साहित्य की रचना के कार्य में बराबर लगे रहते हैं।

प्रश्न

(१) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक निश्चित करो।
(२) हिन्दी की वर्तमान स्थिति से उसके भविष्यत् की क्या आशा की जाती है ?
(३) हिन्दी के मार्ग में सबसे बड़ी क्या बाधा है ? अच्छी तरह समझाओ।
(४) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।
(५) अन्तिम वाक्य का विश्लेषण करो।
(६) सविग्रह समास बतलाओ—साहित्य-भाण्डार, अभ्युदयकाल, हस्तक्षेप, सत्साहित्य।

[१६]

काश्मीर के असंख्य फूलों में मुझे* दो जंगली फूल 'मजारपोश' और 'लालापोश' बहुत ही प्रिय लगे। मजारपोश अधिक से अधिक संख्या में समाधि पर फूल कर, अपनी नीली अधखुली पँखड़ियों से, अस्थिपंजर की ढकी हुई धूलि को नन्दन* बना देता है और लालापोश हरे लहलहाते खेतों में अपने आप उत्पन्न होकर, अपने गहरे लाल रंग के कारण, हरित धरातल पर जड़े पद्मराग की स्मृति दिला जाता है। फूलों के अतिरिक्त उस स्वर्ग के बालक भी स्मरण की वस्तु रहेंगे। उनकी मजारपोश जैसी आँखें लालापोश जैसे होंठ, हिम जैसा वर्ण और धूलि जैसा मलिन वस्त्र उन्हें ठीक प्रकृति का एक अंग बनाये* रखते हैं। अपनी सारी मलिनता में कैसे प्रिय लगते हैं वे! मार्ग में चलते न जाने किस कोने से कोई भोला* बालक निकल आता और

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

"सलाम जनाब पासा" कहकर विश्वासभरी आँखों से हमारी ओर देखने लगता। उसकी* गम्भीरता देखकर* यही प्रतीत होता था कि उसने सलाम करके अपने गुरुतम कर्तव्य का पालन कर दिया है, अब*उसे सुनने वाले के कर्तव्य-पालन की प्रतीक्षा है। शीत ने इन मोम के पुतलों को अंगारों में पाला है और दरिद्रता ने पाषाणों में। प्रायः सवेरे कुछ सुन्दर सुन्दर बालक नंगे पैर पानी में करम का साग लाने दौड़ते दिखाई देते थे और कुछ अपना शिकार लिए "सलाम जनाब पार पहुँचायेगा" पुकारते हुए। ऐसी ही कम अवस्थावाले बालकों को कारखानों में शाल आदि पर गम्भीर भाव से सुन्दर बेल बूटे बनाते देखकर हमें आश्चर्य हुआ।

प्रश्न

(१) उपर्युक्त अवतरण का सारांश लिखो।

(२) मजारपोश और लालापोश के रंग, और उत्पत्ति-स्थान का वर्णन करो!

(३) काश्मीर के बालक किस कारण स्मरण की वस्तु हैं?

(४) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।

(५) पुष्पचिह्नित शब्दों की पद-व्याख्या करो।

[२०]

बरसों के परिश्रम के बाद अन्त में मुमताज का मक़बरा पूर्ण हो गया। शाहजहाँ की बरसों की साध पूरी हुई। एक महान यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। जब इस मक़बरे के पूर्ण होने पर शाहजहाँ पूर्ण समारोह के साथ उसे देखने गया होगा, आगरा के लिए वह दिन कितना गौरवपूर्ण रहा होगा। इतिहासकारों ने उस दिन का भारत के ही नहीं—संसार के शिल्पकला के उस महान दिवस का वर्णन कहीं नहीं किया है। कितने सहस्र नर-नारी उस दिन उस अपूर्व मक़बरे के, संसार की उस महान कृति के दर्शनार्थ एकत्र हुए होंगे। उस दिन उस मक़बरे को देखकर भिन्न-भिन्न दर्शकों के हृदय में कितने विभिन्न भाव उत्पन्न हुए होंगे। किसी को इस महान कृति की पूर्ति पर हर्ष हुआ होगा, किसी ने इसे देखकर गौरव का अनुभव किया होगा कि उसके देश में एक ऐसी वस्तु का निर्माण हुआ है जिसकी तुलना करने के लिए संसार में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कदाचित् ही कोई दूसरी वस्तु मिले; कई एक उस मक़बरे की छवि को देखकर मुग्ध हो गये होंगे; न जाने कितने चित्रकार उस सुन्दर कृति को अंकित करने के लिए दौड़ पड़े होंगे; न जाने कितने कवियों के मस्तिष्क में क्या क्या अनोखी सूझें पैदा हुई होंगी।

प्रश्न

(१) मुमताज़ का मक़बरा कहाँ पर, किसने बनवाया था ?
(२) उक्त मक़बरा के पूर्ण होने पर जो समारोह हुआ होगा उसका वर्णन इतिहासकारों ने क्यों नहीं किया ?
(३) पूर्ण होने पर मक़बरा देखनेवालों के मन में क्या-क्या विचार उठे होंगे ?
(४) उपर्युक्त अवतरण का आशय सरल शब्दों में लिखो।
(५) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।
(६) अन्तिम वाक्य का विश्लेषण करो।

[२१]

गान-विद्या की हृदयहारिता● और पुष्पों की नयनानन्द-दायिनी छटा का अकथनीय प्रबल प्रभाव प्रकट है; पर जो आँखें और कान नहीं रखते, वह बेचारे उस आनन्द से वञ्चित हैं। इसी प्रकार जो अन्तः करण भावना और सहृदयता से शून्य हैं वह कविता के चमत्कार को क्योंकर समझें ! इससे बढ़कर यह कि कुछ ऐसे भी सज्जन हैं कि जिन्हें कविता से एकदम बैर और द्वेष है और इसका कारण यह बतलाते हैं कि 'कविता से कुछ लाभ नहीं यदि लाभ से अभिप्राय यह है कि जिससे चार पैसे हाथ आये, तो निःसन्देह कविता व्यर्थ का व्यापार है, और इसमें सन्देह नहीं कि संसारी व्यापारियों ने आजकल कविता को ऐसी ही दशा में डाल दिया है। तथापि कविता अर्थ-कारिणी* हो सकती है। बहुत से महात्मा कहते हैं कि कविता कुरुचि उत्पन्न करती है और गुमराह करती है। निःसन्देह● आजकल की कविता का अधिकांश ऐसा ही है, पर यह कविता का नहीं; कवियों का अपराध है, कारीगरी का दुरुपयोग करने वाले कारीगर बुरे हैं, कारीगरी बुरी नहीं'। शैतान सकल-गुणनिधान* और फरिश्तों का 'आदिगुरु'● होकर भी 'गुमराह' हो गया तो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

क्या इससे वह विद्याएँ जिनका शैतान आचार्य था, बुरी हो गईं ? देव-गुरु* का नाम धारण करनेवाले 'वृहस्पति' ने तर्कशास्त्र का उपयोग नास्तिकतावाद में किया तो क्या तर्क और दर्शन शास्त्र हेय हैं ? सन्मार्गदर्शक* महर्षि वाल्मीकि, भगवान् वेदव्यास जी और गोसाईं तुलसीदास जी भी तो कवि थे। यदि उद्धत कवियों के दोष से कविता में कुछ दोष आ गये हैं तो उनका निराकरण होना चाहिए, कविता का निरादर नहीं।

प्रश्न

(१) इस अवतरण का सारांश लिखो।

(२) कविता की उपयोगिता के सम्बन्ध में इसके लेखक के क्या विचार हैं ?

(३) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।

(४) इन वाक्यों का आशय स्पष्ट करो—

(क) शैतान..........बुरी हो गई ?

(ख) देव-गुरु..........हेय हैं ?

(५) पुष्पाङ्कित शब्दों के समास सविग्रह बतलाओ।

[२२]

दुइज से बढ़ते-बढ़ते चन्द्र पूर्णता को पहुँचा। यह पूनों का पूरा चाँद किसके मन को न भाता होगा। इन गोल-गोल प्रकाश के पिंड को देख* भाँति-भाँति की कल्पनाएँ मन में उदय होती हैं कि क्या यह निशा-नायिका के मुख देखने की आरसी है; या उसके कान का कुंडल अथवा फूल है; या रजनी-रमणी के लिलार पर बुक्के का सफेद* तिलक है, अथवा स्वच्छ नीले आकाश में यह चन्द्र मानो त्रिनेत्र शिव की जटा में चमकता हुआ, कुन्द के सफेद फूलों का गुच्छा है। कामवल्लभा रति की अटा* में कूजता हुआ यह कबूतर है, अथवा आकाशरूपी बाजार में तारारूपी मोतियों का बेचनेवाला सौदागर है। कुईं की कलियों को विकसित* करते, छिटकी हुई चाँदनी से सब दिशाओं को धवलित करते, अन्धकार को निगलते चन्द्रमा सीढ़ी-सीढ़ी होकर शिखर के समान आकाश-रूपी विशाल पर्वत के मध्य भाग में चढ़ा चला आ रहा है। क्षपा तमस्काण्ड का हटानेवाला यह चन्द्रमा* ऐसा [illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

होता है मानो आकाश महासरोवर में श्वेत-कमल खिल रहा है, जिसमें बीच-बीच जो कलंक की कालिमा है सो मानो भौंरे गूँज रहे हैं। अथवा* सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी के स्नान करने की यह बावड़ी है; या कामदेव की कामिनी रति का यह चूनापोता धवल गृह है; या आकाश-गंगा के तट पर विहार करनेवाला हंस है जो सोती हुई कुइयों के जगाने को दूत बनकर आया है; या देव-नदी आकाश-गंगा का पुण्डरीक है, या चाँदनी का अमृत-कुण्ड है; अथवा आकाश में जो* तारे देख पड़ते हैं वे सब गौएँ हैं उनके झुण्ड में यह सफेद बैल है या यह हीरे से जड़ा हुआ पूर्व-दिग्गना का कर्णफूल है।

प्रश्न

(१) इस अवतरण में किस रात के चन्द्रमा का वर्णन है?

(२) चन्द्रमा के विषय में यहाँ कौन-कौन सी कल्पनाएँ की गई हैं?

(३) इस अवतरण का उपयुक्त शीर्षक बतलाओ।

(४) पुष्पाक्षरों में दिये हुए अंशों का अर्थ लिखो।

(५) पुष्पांकित शब्दों की पद-व्याख्या (Parsing) करो।

(२३)

आज जो अमृत उद्दाम वासनाएँ विषय के आसन पर बैठने-बिठाने के लिए हमारे राष्ट्र की शिक्षित महिलाओं को सदा ही दंश दे रही हैं, जिनके विष से उनका स्वर्णोज्वल * शृंगार-शरीर प्रतिदिन स्याह पड़ता जा रहा है, इसका कारण वास्तव में यह है कि आवश्यकताओं की पूर्ति के विशद उपायों को ही वे भूल गई हैं। वे इतना बहिर्मुख* तथा दूसरे राष्ट्रों की ऐश्वर्यवती महिलाओं के रूप-रंग, हाव-भाव, केश-वेश* आदि की ओर बढ़ी हुई हैं कि उन्हें अपनी आत्मा की ओर देखने का अवकाश ही नहीं मिलता। दर्पण में अपने ही चित्रों को वे दूसरी स्त्रियों के चित्रों में कल्पित कर देखती हैं, और उस मानसिक आदर्श से बहुत पीछे रहने के कारण अपने अम्लान रूप* के पुष्प को नहीं पहिचान पातीं, बल्कि उसे देखकर पाला की मारी हुई फूली डाल की तरह मुरझा जाती हैं। यह आत्मिक दैन्य है, जहाँ दृष्टि रूप में नहीं, उसके साधनों पर पड़ती है; जहाँ अपने ही साथ राष्ट्र की

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

स्वाधीन सत्ता स्वप्न के छाया-चित्रों* की तरह विलीन हो जाती है और निद्रा क्रमशः प्रगाढ़ होते हुए स्तब्धान्धकार* पर सत्य का भान होने लगता है। मरीचिका सत्य नहीं, सत्य जल ही है, और तृष्णार्त के लिए आवश्यक भी वही है; पर मरीचिका की ज्योति, रम्यता तथा आकर्षण अपार अतुल* है। तृष्णा की सताई हुई आत्मा में क्षणिक धैर्य के आये बिना मरीचिका की माया प्रत्यक्ष भी नहीं होती। वह उसी के पीछे भटकना अपना उद्देश्य समझती है।

प्रश्न

(१) इस अवतरण के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखो।
(२) इसका आशय अपने शब्दों में प्रकट करो।
(३) हमारे राष्ट्र की शिक्षित महिला पर पड़े किस बुरे प्रभाव का इसमें उल्लेख किया गया है?
(४) इसका क्या दुष्प्रभाव पड़ रहा है?
(५) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।
(६) पुष्पाङ्कित शब्दों के समास सविग्रह बतलाओ।

[२४]

संस्कृत-साहित्य में जो विधाता की आदि शृङ्गार-सृष्टि, वनपादपों के पाद-मूल में खड़ी सखियों के साथ आलवालों में जल सींचकर कौतुकालाप* करती हुई, महाकवि की कल्पना की उज्ज्वल* प्रतिमा, शकुन्तला वन्य वल्कलों से अपने पीनपुष्ट भरे-उभरे हुए नवीन यौवनांगों को ढँके सलज-सप्रेम दृष्टि से चतुर्दिक* चंचल हेर[illegible] मिलती है वह केवल नाटक की प्रधान नायिका या पुराण की कल्पित पात्री ही नहीं, किन्तु तत्कालीन* राष्ट्र की सर्वोत्तम आदर्श नारियों की ज्योतिर्मयी* साहित्य की प्रधान अभिनेत्री है। संस्कृत-साहित्य में दूसरी शकुन्तला नहीं। उसके सरस-कोमल मधुर उपाख्यान* के स्वर्गीय प्रेम का रसास्वादन* करने के साथ ही साथ हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कि वह तपोवन* की तपस्या, प्रेममयी नारी शिरोमणि* शकुन्तला ही उस समय के एकच्छत्र सम्राट् भरत की **जन्मदात्री** थी। भारत की सम्राज्ञी, भारत की सम्राट्-माता शकुन्तला के चरित्र में भारत राष्ट्र की आदर्श नारियों को अनेक प्रकार की शिक्षाएँ मिलती हैं, जिनमें एक ही साथ अपार रूप तथा **अविचल*** **तपस्या, एकनिष्ठ पतिपरायणता** तथा आश्चर्यकर ओज, एक ही देह की द्युति में लावण्य तथा **अपारसंयम** की **विद्युत्-शिखा, अपांगों** में **अचूक** **सम्मोहनास्त्र*** तथा अपार धैर्य और शान्ति मिलती हैं। प्रेमशृङ्गार जितना ऊँचा, त्याग भी उतनी दूर तक **समान्तराल*** रेखा की तरह खिचा चलता हुआ। यह तत्कालीन* भारत-राष्ट्र की **कल्याणी** नारी मूर्ति है, जिसे देखकर कामनाएँ आपही मुरझा कर मर जाती हैं--शान्ति के रूप में स्वर्गीय सुख का **अनर्गल*** प्रवाह* बह चलता है।

प्रश्न

(१) इस अवतरण का सारांश लिखो।

(२) शकुन्तला के चरित्र से कौन-कौन सी शिक्षाएँ मिलती हैं ?

(३) शकुन्तला के पति और पुत्र का क्या नाम था।

(४) शकुन्तला की किस-किस महत्ता का उल्लेख यहाँ हुआ है ?

(५) पुष्टाक्षरों में दिये हुए अंशों के अर्थ लिखो।

(६) पुष्पांकित शब्दों का सन्धि-विग्रह कीजिए और सन्धियों का नाम बतलाइये।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

परिशिष्ट

प्रश्नपत्र

हाई स्कूल परीक्षा (यू० पी०)

सन् १९४१

सूचना—प्रश्नपत्रों से केवल वही प्रश्न यहाँ दिये गये हैं जिनके विषय का विवेचन इस पुस्तक में हुआ है।

प्रायः लोगों का विचार है कि कल्पना केवल कवि की ही सम्पत्ति है; चित्रकार का उससे विशेष प्रलोभन नहीं है। पर यह बात सत्य की सीमा से परे है। कवि और चित्रकार दोनों ही स्वर्गीय पक्षी की भाँति कल्पना के रंग-विरंगे पंखों पर उड़कर अमर्त्य एवं अपार्थिव सौन्दर्य की खोज में उन्मत्त हो जाते हैं। चित्रकार की कला की पराकाष्ठा अनुकरण करने में नहीं है। यह तो वर्णनात्मक कविता की भाँति निकृष्ट कोटि की कला है। शिल्पकार का चातुर्य इसमें नहीं है कि वह किसी वस्तु का प्रतिरूप बना दे। उसकी कला आदर्श रूप बनाने में है चित्रकार और कवि के लिए भी यह बात है।

(क) उपर्युक्त अवतरण में कवि और चित्रकार की किस विषय में तुलना की गयी है ? लेखक के अनुसार कवि और चित्रकार की सर्वोत्तम रचना में क्या विशेषता होनी चाहिए ?

(ख) वर्णनात्मक कविता किसको कहते हैं ? किसी वर्णनात्मक कविता की चार पंक्तियाँ उद्धृत कीजिये।

(ग) पुष्टाक्षरों में दिये हुए वाक्यांशों का अर्थ सरल हिन्दी में लिखिये।

२—(क) निम्नलिखित महावरों में से किन्हीं तीन का प्रयोग वाक्यों में कीजिये:—

काठ का उल्लू ; हाथों के तोते उड़ जाना; हाथ पैर फूलना; कान का कच्चा; जान पर खेलना।

(ख) निम्नलिखित का वाक्य-विश्लेषण कीजिए (Clause analy

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्राय: देखने में आता है कि गांवों में से जो लोग नगरों में जीविका आदि के लिये आते हैं उनका जी बहुत दिन तक संगी साथी न रहने से बहुत घबराता है। कभी उन्हें ऐसे लोगों का साथ कर लेना पड़ता है जो उनकी रुचि के अनुकूल नहीं होते।

(ग) द्वितीय प्रश्न के (ख) खण्ड में दिये हुए वाक्य में पुष्टाक्षरों में दिये हुए शब्दों की पदव्याख्या (Parsing) कीजिये।

सन् १९४२

१—यह बात स्पष्ट है कि **मानव समाज** की उन्नति उस समाज के **अन्तर्भूत व्यक्तियों के सहयोग और साहचर्य से** होती है; पर इस सहयोग और साहचर्य का साफल्य तभी सम्भव है जब **परस्पर भावों या विचारों के विनिमय का साधन** उपस्थित हो। भाषा ही इसके लिये मूल साधन है और इसी की सहायता से मानव-समाज की उन्नति हो सकती है। अतएव भाषा का समाज की उन्नति के साथ बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है; यहाँ तक कि एक के बिना दूसरे का अस्तित्व ही सम्भव नहीं। पर यहीं **उनके सम्बन्ध के साफल्य की इति श्री भी नहीं होती**। दोनों साथ ही साथ चलते हैं। समाज की उन्नति के साथ भाषा की उन्नति और भाषा की उन्नति के साथ समाज की उन्नति होती रहती है। इसलिये हम कह सकते हैं कि **उनका अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है**।

(क) उपर्युक्त अवतरण का सारांश अपनी भाषा में लिखिये।

(ख) भाषा के अतिरिक्त विचार-विनिमय के क्या साधन हो सकते हैं?

(ग) पुष्टाक्षरों में दिये हुए वाक्यांशों का अर्थ सरल हिन्दी में लिखिये।

२—निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं तीन का प्रयोग वाक्यों में कीजिये:—

नाम बड़े दर्शन थोड़े; मन चङ्गा कठौती में गङ्गा; जितनी मुँह उतनी बातें; नाक का बाल; दूध का दूध पानी का पानी।

(ख) निम्नलिखित वाक्यांशों का वाक्य-विश्लेषण (clause analysis) दे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

(अ) यदि आप बालक को सत्यभाषण की शिक्षा देना चाहते हैं तो सच बोलने को आकर्षक बनाइये।

(आ) जिस कवि के जीवन ने हमारे दिलों में अपना घर कर लिया हो उसकी स्मृति बनाये रखना हमारा परम कर्तव्य है।

(ग) द्वितीय प्रश्न के (ख) खण्ड में दिये हुए वाक्यों में पुष्टाक्षरों में दिये हुए शब्दों की पद-व्याख्या (parsing) कीजिये।

३—नीचे लिखे हुए विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखियेः—

(क) देश-देशान्तरों के भ्रमण से लाभ।

(ख) आधुनिक युग में मनोरञ्जन के प्रधान साधन।

(ग) किसी मनोहर प्राकृतिक दृश्य का वर्णन।

(घ) वर्तमान योरोपीय युद्ध का संसार-व्यापी प्रभाव।

नीचे लिखे हुए अँग्रेज़ी गद्य-खण्ड का हिन्दी में अनुवाद कीजियेः—

It is well known that the great Vidyasagar came of very poor parents. Poverty almost to destitution was the companion of his boyhood and early youth. In those days he had rarely any curry or pulse or milk to eat with his rice, but had to be satisfied with only a pinch of salt. He was, however, blessed with an excellent appetite and so did not miss these things much but ate a hearty meal of what he had. Indeed he seemed to look upon this scarcity in the light of discipline and all through his life, even when at the height of his success, he would at certain times have nothing but the coarse and simple dish of his early youth. Here was the moderation in practice which perhaps, few people have carried further.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सन् १९४३

१—निम्नलिखित मुहाविरों में से किन्हीं तीन का प्रयोग वाक्यों में कीजिए :—

आम के आम गुठली के दाम, तीरथ गए मुड़ाये सिद्ध, एक पंथ दो काज, चार दिन की चाँदनी, दाँत से कौड़ी पकड़ना।

२—नीचे लिखे वाक्य का रूपान्तर कीजिए:—

(१) विद्या सबसे बढ़कर धन है। (विधानार्थक वाक्य का निषेधात्मक वाक्य में परिवर्तन)

(२) अब मैं रोटी नहीं खाता। (कर्तृवाच्य का भाववाच्य में परिवर्तन)

अथवा

(क) निम्नलिखित वाक्य का वाक्य-विश्लेषण (clause analysis) कीजिए :—

यह प्रायः देखा जाता है कि बहुत से **युवक** तो जीवन संग्राम में पुस्तकों का बोझ लादे बिना प्रवेश **करते हैं**, अपनी **व्यावहारिक** कार्यशीलता के कारण अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

(ख) उपर्युक्त वाक्य के रेखांकित शब्दों की पद-व्याख्या (parsing) कीजिए।

३—नीचे लिखे हुए विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिये :—

(क) समाचार-पत्र और उसकी उपयोगिता।

(ख) जीवन में राष्ट्रीयता का महत्व।

(ग) मित्रता का आदर्श।

(घ) वीर पूजा।

४—नीचे लिखे हुए अँग्रेजी गद्य-खण्ड का सरल हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

Self-respect is the noblest garment with which a [illegible]n clothes himself. This sentiment carried into daily

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

life, will be found at the root of all the virtues cleanlines, chastity, morality and religion. To think meanly of one's self is to sink in one's own estimation as well as in the estimation of others. And as the thoughts are, so will the acts be. Man cannot aspire if he looks down, if he will rise he must look up.

सन् १९४४

१—नीचे लिखे मुहावरों में से किन्हीं चार का प्रयोग वाक्यों में कीजिए :—

उलटी माला फेरना, ईद का चाँद, नौ नकद न तेरह उधार, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू, गुदड़ी का लाल, धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों का वाक्य-विश्लेषण (clause analysis) कीजिये।

यदि वे युवक जो अपनी जीवन-यात्रा सफल बनाने के इच्छुक हों, उद्योग और संयम का व्रत ले लें तो साधारण कठिनाइयाँ उनके मार्ग में विशेष बाधा नहीं डाल सकतीं।

(ख) उपर्युक्त वाक्य के पुष्टाक्षरों की पद-व्याख्या (parsing) कीजिये।

२—नीचे लिखे हुए विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिये :—

(क) स्वाधीनता और उसके लाभ।

(ख) ग्राम्य जीवन तथा उसके गुण और दोष।

(ग) ब्रह्मचर्य तथा उसका जीवन और प्रभाव।

(घ) आत्म सम्मान।

३—नीचे लिखे हुए अँग्रेजी गद्य-खण्ड का सरल हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

Nanak at the early age of twenty-eight abandoned all his wordly connections and put on the garb of a faqir. The considerations of home and family did not matter much to him. His friends and relatives could not persuade him to stay at home. In him was surging a strong desire to serve humanity with truth, and bring peace and contentment to the hearts of the distressed and the poor. He had drunk at the fountain of divine knowledge and wanted others to taste the sweetness of the nectar of truth.

सन् १९४६

१—निम्नलिखित मुहाविरों में से किन्हीं चार का प्रयोग वाक्यों में कीजिये :—

आँधी के आम, उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना, गूलर का फूल, दाँत काटी रोटी, आटे दाल का भाव मालूम होना, मन चंगा कठौती में गंगा।

२—निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिये :—

(अ) हमने कलकत्ते जाना है।

(आ) मेरे को तो यह बात मालूम नहीं है।

(इ) अनेकों राजे महाराजे वहाँ पधारे थे।

(ई) ताजमहल की सौन्दर्यता पर हम लोग मुग्ध हो गए।

३—अपने निकट मित्र के नाम एक पत्र लिखिये जिसमें अपने जीवन की सबसे मनोरंजक घटना का उल्लेख कीजिये।

अथवा

आँखों देखा हुआ किसी जादूगर के खेलों की चर्चा कीजिए।

अथवा

एक आदर्श अध्यापक की व्याख्या कीजिये।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

अथवा

अपने छोटे नटखट भाई का दैनिक कार्यक्रम लिखिए।

४—हिन्दी में रूपान्तर कीजिये :—

There was once a proud jackal who lived quite close to a village. Though he was no better than the rest of the pack, he was so vain that he wanted to become their king. One day, as he was wandering about looking for something to eat he fell into an indigo tank, and when he crept out, he found that his hair had been coloured. He ran back to the forest, and calling all the other jackals together he said, 'Good people, the goddess of the wood, with her own divine hand, had had made me king. Look at my kingly colour. In future obey me in all things.'

सन् १९४६

१—नीचे लिखे मुहावरों में से किन्हीं चार का प्रयोग वाक्यों में कीजिये :—

आँखों में धूल झोंकना, कोयलों पर मोहर छाप, बन्दर के गले में मोतियों की माला, भरे समुद्र घोंघा हाथ, दिन ईद रात शब्बरात, नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

२—नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए :—

(क) सु, अनु और दुः उपसर्ग लगाकर प्रत्येक प्रकार के तीन तीन शब्द बनाइये।

(ख) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं तीन का सन्धि विग्रह कीजिए और समास-भेद लिखिए :—

रामोपासक, यावज्जीवन, धर्माधर्म, नराधम।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

३—अपने पिता के नाम एक पत्र लिखिये जिसमें किसी बड़े नगर का आँखों देखा वर्णन कीजिए।

अथवा

इस बर्ष पढ़ी हुई सबसे उत्तम पुस्तक की चर्चा कीजिए।

अथवा

अपने मित्र की बरात की घटनाओं का उल्लेख कीजिए।

४. हिन्दी में अनुवाद कीजियेः—

Most of us have watched ants carrying much bigger than themselves, and have wondered at their strength. An ant is wonderfully strong for its size, and it is never idle. It runs here and there, but always as if it had something to do. Sometimes two ants meet, stop for a second, and then run on again. They seem to have stopped to talk but it is only to touch each other with their feelers, which look like two long hairs growing out of their heads.

सन् १९४७

१—निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं चार का प्रयोग वाक्यों में कीजिये :—

पैर उखड़ना। पानी भरना। हाथ मलना। हाथ डालना। ऊँची दूकान फीका पकवान। चार दिन की चाँदनी फिर अँधियारी पाख। काला अच्छर भैंस बराबर। का वर्षा जब कृषि सुखानी।

२—अपने विद्यालय के सबसे अच्छे पढ़ानेवाले अध्यापक अथवा अच्छी पढ़ानेवाली अध्यापिका का चित्रण कीजिए।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

अथवा

उदाहरण देते हुए हिन्दी के सबसे उत्तम कवि की प्रशंसा में एक निबन्ध लिखिये।

अथवा

'जिसकी लाठी उसकी भैंस'—इस विषय के पक्ष में बोलने के लिए व्याख्यान लिखिये।

३—हिन्दी में अनुवाद कीजिये:—

In the district of Cawnpore there lived a Zamindar called Govardhan. He was very fat and heavy and so he grew old very soon. When he fell ill for the last time he knew he would die. He had no sons but his brothor had three. Before his death he called his young nephews and said to them, 'you know I have seventeen elephants. They are all big and strong fellows. You must not sell them but divide them among yourselves. This is the way how you should divide them, the eldest should get one-half, the second one-third, and the third one-ninth.'

एडमिशन परीक्षा (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय)

सन् १९४१

१—नीचे लिखे शब्दों में प्रयुक्त समासों और सन्धियों का नाम लिखिये:— उत्कर्षापकर्ष, आत्मसंस्कार, विडम्बना, विकीर्ण, द्वन्द्व, भराविशेष, परम्परागत, विषण्ण, वक्तृतोत्तेजक, कोमल-कान्त पदावली, वाग्दिग्धता, श्लाघनीय, पिष्टपोषण, शैली, रागात्मक, मार्दव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

२—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर ऐसा निबन्ध लिखिये जिसमें अनावश्यक संक्षेप या विस्तार न हो:—

(क) जीविका और जिविका। (ख) प्रदर्शिनी। (ग) वैज्ञानिक युद्ध और वीरता। (घ) हड़ताल (ङ) शरीर और शरीररक्षा। (च) यदि मैं राजा होता। (छ) उपवन विहार। (ज) तैराकी का दंगल।

३—अपने पिता अथवा अपने बड़े भाई को एक पत्र लिखिये जिसमें आपके भावी जीवन का समूचा कार्यक्रम अथवा छात्रावास का पूरा चित्र हो।

सन् १९४२

१—(क) नीचे लिखे शब्दों का विग्रह-पूर्वक समास बतलाइए:—

...रपूर, घर बैठी, सतसई, रातदिन, खटमिट्ठा और अनादि।

(ख) निम्नाङ्कित शब्दों में से केवल तीन में विच्छेद करके संधि का नाम बतलाइए:—

गंगोदक, षड़ानन, पावक, यशोगान, उद्घाटन और मनोरथ।

२—एक पत्र अपने मित्र को लिखिये उसमें समझाइये कि वर्तमान हिन्दू-समाज अथवा स्कूलों के प्रचलित पाठ्यक्रम में क्या परिवर्तन करने की आवश्यकता है और किन उपायों का प्रयोग उचित होगा।

३—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिये जिसका विस्तार सौ पंक्तियों से अधिक न हो।

(क) चाँदनी रात। (ख) तीर्थ यात्रा। (ग) जीवन का लक्ष्य। (घ) सिनेमा। (ङ) अपना प्रिय पाठ्य-विषय।

सन् १९४३

१—नीचे लिखे शब्दों का संधि-विच्छेद करके अर्थ स्पष्ट करिए:—

संख्यातीत, निर्ग्रंथ, उत्कर्षापकर्ष, ज्योतिर्विद्, विद्वन्मंडली।

२—निम्नलिखित वाक्यों में से केवल तीन में रिक्त स्थानों की पूर्ति करके उन्हें पूर्ण कीजिए:—

(क) इन……खाकर मेरे……खट्टे हो गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

(ख) बसन्त की······बड़ी······लगती है।

(ग) अच्छा···मैं तुम्हारे······अपना······छोड़ता हूँ।

(घ) अशोक के···में उसके···की···लिखी है।

(ङ) सिंह अपनी···के कारण मृगराज······जाता है।

३—निम्नलिखित पदों को क्रम से लिखकर वाक्य बनाइयेः—

(क) वेदों में युग में वैदिक भारतवासी प्रमाण हैं यथेष्ट कि आर्य व्यापार समुद्रयात्रा इस बात के लिये करते थे।

(ख) भारतेन्दु जी जीवन के का अपने देश की मार्ग को उन्नति के साफ़-सुथरा बनाना और था लंम्बा-चौड़ा उद्देश्य।

४—एक पत्र अपने पिता को लिखिए जिसमें विद्यार्थी को राजनीतिक झगड़ों में पड़ना चाहिये अथवा नहीं इसपर आपके मत का उल्लेख हो अथवा वर्तमान शिक्षा का ढंग आपके भावी जीवन के लिए कहाँ तक लाभदायक है इसपर आपके स्वतन्त्र विचार हों।

५—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर ऐसा निबन्ध लिखिए जिसमें अनावश्यक विस्तार न होः—

(क) ग्राम्यजीवन।

(ख) विद्याध्ययन भी एक तपस्या है।

(ग) दूसरे की नकल करना अपने व्यक्तित्व को कुचल देना है।

(घ) गोरक्षा।

(ङ) यातायात के साधनों के गुण-दोष।

(च) हाय! मैं कुछ न हुआ।

(छ) मेरा पालतू तोता।

सन् १९४४

१—निम्नलिखित वाक्यों में से केवल तीन के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः—

(क) मुगल सम्राट् बड़े ही······थे, यह उनके बनवाए चित्रों, प्रासादों आदि······स्पष्टतया······है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

२—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर ऐसा निबन्ध लिखिये जिसमें अनावश्यक संक्षेप या विस्तार न हो:—

(क) जीविका और जिविका। (ख) प्रदर्शिनी। (ग) वैज्ञानिक युद्ध और वीरता। (घ) हड़ताल (ङ) शरीर और शरीररक्षा। (च) यदि मैं राजा होता। (छ) उपवन विहार। (ज) तैराकी का दंगल।

३—अपने पिता अथवा अपने बड़े भाई को एक पत्र लिखिये जिसमें आपके भावी जीवन का समूचा कार्यक्रम अथवा छात्रावास का पूरा चित्र हो।

सन् १९४२

१—(क) नीचे लिखे शब्दों का विग्रह पूर्वक समास बतलाइए:—

भरपूर, घर बैठी, सतसई, रातदिन, खटमिट्ठा और अनादि।

(ख) निम्नाङ्कित शब्दों में से केवल तीन में विच्छेद करके संधि का नाम बतलाइए:—

गंगोदक, षड़ानन, पावक, यशोगान, उद्घाटन और मनोरथ।

२—एक पत्र अपने मित्र को लिखिये उसमें समझाइये कि वर्तमान हिन्दू-समाज अथवा स्कूलों के प्रचलित पाठ्यक्रम में क्या परिवर्तन करने की आवश्यकता है और किन उपायों का प्रयोग उचित होगा।

३—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिये जिसका विस्तार सौ पंक्तियों से अधिक न हो।

(क) चाँदनी रात। (ख) तीर्थ यात्रा। (ग) जीवन का लक्ष्य। (घ) सिनेमा। (ङ) अपना प्रिय पाठ्य-विषय।

सन् १९४३

१—नीचे लिखे शब्दों का संधि-विच्छेद करके अर्थ स्पष्ट करिए:—

संख्यातीत, निर्ग्रंथ, उत्कर्षापकर्ष, ज्योतिर्विद्, विद्वन्मंडली।

२—निम्नलिखित वाक्यों में से केवल तीन में रिक्त स्थानों की पूर्ति करके उन्हें पूर्ण कीजिए:—

(क) इन······खाकर मेरे······खट्टे हो गए।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

(ख) वसन्त की······बड़ी······लगती है।

(ग) अच्छा···मैं तुम्हारे······अपना······छोड़ता हूँ।

(घ) अशोक के···में उसके···की···लिखी है।

(ङ) सिंह अपनी···के कारण मृगराज······जाता है।

३—निम्नलिखित पदों को क्रम से लिखकर वाक्य बनाइयेः—

(क) वेदों में युग में वैदिक भारतवासी प्रमाण हैं यथेष्ट कि आर्य व्यापार समुद्रयात्रा इस बात के लिये करते थे।

(ख) भारतेन्दु जी जीवन के का अपने देश की मार्ग को उन्नति के साफ़-सुथरा बनाना और था लंम्बा-चौड़ा उद्देश्य।

४—एक पत्र अपने पिता को लिखिए जिसमें विद्यार्थी को राजनीतिक झगड़ों में पड़ना चाहिये अथवा नहीं इसपर आपके मत का उल्लेख हो अथवा वर्तमान शिक्षा का ढंग आपके भावी जीवन के लिए कहाँ तक लाभदायक है इसपर आपके स्वतन्त्र विचार हों।

५—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर ऐसा निबन्ध लिखिए जिसमें अनावश्यक विस्तार न होः—

(क) ग्राम्यजीवन।

(ख) विद्याध्ययन भी एक तपस्या है।

(ग) दूसरे की नकल करना अपने व्यक्तित्व को कुचल देना है।

(घ) गोरक्षा।

(ङ) यातायात के साधनों के गुण-दोष।

(च) हाय ! मैं कुछ न हुआ।

(छ) मेरा पालतू तोता।

सन् १९४४

१—निम्नलिखित वाक्यों में से केवल तीन के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः—

(क) मुगल सम्राट् बड़े ही······थे, यह उनके बनवाए चित्रों, प्रासादों आदि······स्पष्टतया······है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, K

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(ख) वर्तमान महायुद्ध पाश्चात्य···के दिवाले का···पीट रहा है।

(ग) मतिमानों का···है कि मनुष्य को गोजाति के प्रति सदैव······रखना चाहिए।

(घ) जब सावित्री···सुना···पति···से···आ रहे हैं तो उसके······की···न रही।

(ङ) ······प्रत्येक भाग से प्रतिवर्ष लाखों हिन्दू···के···गंगास्नानार्थ काशी आते हैं।

२—निम्नलिखित शब्दसमूहों में से किसी एक को क्रम से सजाकर वाक्य बनाइये:—

(क) संस्कृत की नहीं रही भाषा अब बोलचाल कारण उसके विस्तृत का साहित्य है दुर्लभ लिए हमारे इस।

(ख) हैं गान्धीजी युग-पुरुष आते हैं सुधारक समय समय पर हमारे धर्म-संस्थापन बीच के लिए जो।

३—अपने बड़े भाई के नाम एक पत्र लिखिए जिसमें बरना की पिछली भयानक बाढ़ और उस अवस्था पर आपके सेवाकार्य का वर्णन हो अथवा अपने मित्र को एक पत्र लिखिए जिसमें वर्तमान युद्ध से उत्पन्न कष्टों का वर्णन हो।

४—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर एक निबन्ध लिखिए, जो आपके उत्तर-पुस्तक के पाँच पृष्ठों से अधिक न हो—

(क) सदाचार का महत्त्व। (ख) सिनेमा से हानि और लाभ।
(ग) विद्या धन से कहीं बढ़कर है। (घ) किसी मेले का वर्णन
(ङ) विद्यार्थीजीवन में व्यायाम की उपयोगिता।

सन् १९४६

१—नीचे लिखे विषयों मे से किसी एक पर अपनी उत्तर पुस्तक के ४—६ पृष्ठों का एक निबन्ध लिखिए :—

(१) पुस्तकों का महत्त्व। (२) 'शरीर ही सब धर्मों का साधन है'।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

(२) 'शरीर ही सब धर्मों का साधन है'।

(३) चरित्रबल।

(४) एक आदर्श पुरुष।

(५) जीवन का उद्देश्य।

२—शुद्ध कीजिए:—

(१) मैंने घर को चिट्ठी लिख दिया।

(२) वह हमारे घर गए रहे पर हमसे मुलाकात नहीं हुई।

(३) आप किन किन प्रश्नों का उत्तर दिए हैं।

(४) मेरे घर पांच कुर्सी हैं।

(५) आपने उन्हें कितनी पुस्तकें भेंट किया।

३—रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:—

(१) पार्वती तू लिखी पढ़ी है हम······साथिन हैं। दुःख में शोक ······सन्ताप······हम तेरी साथिन हैं।

(२) नवयुवक युवावस्था में कितना उद्दण्ड रहता है। परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ·· पर पड़ते ही उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील······ शान्तचित्त हो जाता है।

(३) जो अपना मित्र हो वह शत्रु का व्यवहार करे और गले पर······ फेरे! इसे समय के······के सिवा और क्या कहें!

(४) बाबाजी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की······दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका······भी अधीर हो गया।

(५) खिलौना क्यों नहीं। कभी कन्धे······रखा, बन्दूक हो गई। हाथ में ले लिया, फकीरों का······हो गया। चाहूँ तो······मजीरे का काम ले सकता हूँ।

सन् १९४६

१—निम्नांकित वाक्यों का तात्पर्य समझाइए—

(क) दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ ज[illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Can

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(ख) ज्ञानराशि के संचित कोश का नाम साहित्य है।

(ग) प्रलोभन में आ जाना जितना सुगम होता है उतना उसका अवरोध करना नहीं।

(घ) भारतीय शिल्प की विभूति ग्रीष्म-रजनी की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी।

(ङ) मनुष्य का मूल्य उसके चरित्र में है।

२—(क) अधोलिखित में से केवल दस शब्दों का अर्थ लिखिए—

संलाप, प्रगल्भता, कराह, उत्तरीय, पौ बारह, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना, पार्श्व, धवल, चूडांत, विनिमय, अपघात, प्रकोष्ठ, क्रियमाण, उपत्यका, सम्भ्रान्त, उड़ान-छू, आर्द्र, प्रशस्ति, पिष्टपेषण, स्तेयवृत्ति।

(ख) यमक और श्लेष अथवा अर्थातरन्यास और दृष्टान्त की परिभाषा लिखिए।

(ग) दोहा और सोरठा अथवा इन्द्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा का लक्षण लिखिए।

सन् १९४८

१—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए:—

(क) किसी पहाड़ की सैर।

(ख) भगवान रामचन्द्र का चरित्र।

(ग) काशी की महिमा।

(घ) ग्राम-जीवन के सुख।

२—(क) उदाहरण के साथ समझाइए कि मुहावरा और कहावत आप किसे कहते हैं।

(ख) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताइए और अपने बनाए ... उनका प्रयोग कीजिए:—

...आँख दिखाना, सिर चढ़ना, हवा खाना, हवा बाँधना।

...pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman...

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

३—हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

In my own time there was no building at Eton which could hold the whole school, so that on no occasion did I ever see the school assembled. There were two chapels the schoolrooms were considerably scattered, even on the occasions when the headmaster made a speech to the school he did not even invite the lower boys to attend, while there was no compulsion on the upper boys to be present so that it was not necessary to go unless on thought it likely to be amusing.

१८६४८

Nepal Sanskrit University ... Campus, Kathm...

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

Shri Haribamsha Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय वास्कोटा,
Ishwariniwas, Nepalganj, (Banke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके)
P. O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U. P.)

...pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman...

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:
epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding:

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu